गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिका नवम्बर-2020

गुरुत्व ज्योतिष

दीपावली विशेष



Nonprofit Publications

FREE
E CIRCULAR
For Premium User

गुरुत्व ज्योतिष
मासिक ई-पत्रिका
नवम्बर-2020

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in
http://gk.yolasite.com/
www.shrigems.com
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

अनुक्रम

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

संपादकीय

हिन्दू संस्कृति में दीपावली के दिन देवी लक्ष्मी, गणेश, सरस्वती, कुबेर आदि का पूजन करने का विधान है। क्योकि देवी लक्ष्मी की उत्पत्ती दीपावली के दिन मानी जाती हैं और शास्त्रोक्त वर्ण हैं धन की देवी लक्ष्मी हैं और धन के देवता कुबेर हैं, जिनके प्रसन्न होने से मनुष्य को धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्राप्त होता हैं। मां लक्ष्मी चंचल हैं। अर्थात लक्ष्मी जी वह एक जगह टिकती नहीं है। किस प्रकार लक्ष्मी का आगमन आपके घर में हो और जिदंगी दुःख, दरिद्र, कष्टो से छुट कर खुशियों से भर जाए उससे जुडे रहस्यो को भारतीय ऋषि मुनियों ने खोज निकाला हैं। यह भी एक प्रमुख कारण हैं की दीपावली का पर्व मनाया जाता हैं और लक्ष्मीजी का पूजन अर्चन किया जाता हैं।

हिन्दू धर्म शास्त्रों में वर्णित हैं की धन कि देवी लक्ष्मी हैं जो धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्रदान करती हैं। लेकिन बिना बुद्धि के धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य व्यर्थ हैं। इसके पीछे मुख्य कारण हैं की भगवान श्री गणेश समस्त विघ्नों को टालने वाले हैं, दया एवं कृपा के महासागर हैं, एवं तीनो लोक के कल्याण हेतु भगवान गणपति सब प्रकार से योग्य हैं। समस्त विघ्न बाधाओं को दूर करने वाले गणेश विनायक हैं। अतः बुद्धि कि प्राप्ति के लिये बुद्धि और विवेक के अधिपति देवता गणेश का पूजन करने का विधान हैं। गणेशजी समस्त सिद्धियों को देने वाले देवता माना गया है। क्योकि समस्त सिद्धियाँ भगवान गणेश में वास करती हैं। इस लिये लक्ष्मीजी के साथ में श्री गणेशजी कि आराधना आवश्यक हैं।

एसी पौराणिक मान्यता हैं कि धन तेरस के दिन धनवंतरी नामक देवता अमृत कलश के साथ सागर मंथन से उत्पन्न हुए थे। धनवंतरी धन, स्वास्थय व आयु के अधिपति देवता हैं। धनवंतरी को देवों के वैध व चिकित्सक के रुप में जाना जाता हैं।

धन तेरस के दिन चांदी के बर्तन-सिक्के खरीदना विशेष शुभ होता हैं। क्योकि शास्त्रों में धनवंतरी देव को चंद्रमा के समान माना गया हैं। धन तेरस के धनवंतरी के पूजन से मानसिक शान्ति, मन में संतोष एव स्वभाव में सौम्यता का भाव आता हैं। जो लोग अधिक से अधिक धन एकत्र करने कि कामना करते हों उन्हें धनवंतरी देव कि प्रतिदिन आराधना करनी चाहिए।

धनतेरस पर पूजा करने से व्यक्ति में संतोष, स्वास्थय, सुख व धन कि विशेष प्राप्ति होती हैं। जिन व्यक्तियों के उत्तम स्वास्थय में कमी तथा सेहत खराब होने कि आशंकाएं बनी रहती हैं उन्हें विशेष रुप से इस शुभ दिन में पूजा आराधना करनी चाहिए। धनतेरस में खरीदारी शुभ मानी जाती हैं। लक्ष्मी जी एवं गणेश जी कि चांदी कि प्रतिमा-सिक्को को इस दिन खरिदना धन प्राप्ति एवं आर्थिक उन्नति हेतु श्रेष्ठ होता हैं। धनतेरस के दिन भगवान धनवन्तरी समुद्र से अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे, इसलिये धनतेरस के दिन खास तौर से बर्तनों कि खरीदारी कि जाती हैं। इस दिन स्टील के बर्तन, चांदी के बर्तन खरीदने से प्राप्त होने वाले शुभ फलो में कई गुणा वृद्धि होने कि संभावना बढ़जाती हैं।

मां लक्ष्मी कि कृपा प्राप्त करने हेतु एवं उनका स्थायी निवास हो सके इस उद्देश्य से घर-दुकान-व्यवसायिक कार्यालय में दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन हेतु दिन के सबसे शुभ मुहूर्त को लिया जाता हैं। दीपावली चौघ़डिया मुहूर्त समय को घर व परिवार में लक्ष्मी पूजन करने के लिये शुभ माना जाता हैं। श्रीमहालक्ष्मी पूजन एवं दीपावली का महापर्व कार्तिक कृष्ण अमावस्या में प्रदोष काल एवं रात्रि समय में स्थिर लग्न समय में करना शुभ होता है लक्ष्मी पूजन, दीप प्रजवल्लित करने के लिये प्रदोषकाल मुहूर्त समय ही विशेषतया शुभ माना गया हैं।

आज के भौतिक युग में हर व्यक्ति की चाह होती हैं की उसे अधिक से अधिक धन-संपत्ति एवं ऐश्वर्य प्राप्त हो। हर व्यक्ति अपनी धन-संपत्ति को दिन दोगुनी रात चौगुनी रफ्तार से बढ़ाना चाहते हैं, इसलिए व्यक्ति लक्ष्मी प्राप्ति हेतु विभिन्न मंत्र, यंत्र एवं तंत्र के प्रयोगो को अपना कर लक्ष्मी कारक विभिन्न सामग्रीयों को अपने घर, दुकान, ऑफिस आदि व्यवसायीक स्थान पर स्थापित कर उसका पूजन-अर्चन करते हैं।

जिन लोगों ने लक्ष्मी प्राप्ति के लिए अपने घर में सुख समृद्धि कारक विभिन्न दुर्लभ सामग्रीयां जैसे श्रीयंत्र, दक्षिणावर्ति शंख इत्यादि सामग्री को अपने घर में पहले से स्थापित कर उसका नियमित पूजन-अर्चन कर रहे हो, उन्हें अधिक लाभ की प्राप्ति हेतु लक्ष्मी प्राप्ति के अन्य सरल उपायों को भी अपने जीवन में अवश्य आजमाना चाहिए अथवा जिन लोगों ने इन लक्ष्मी कारक दुर्लभ वस्तुओं को अभी तक अपने घर में को स्थापित नहीं किया हैं या वह लोग इस सामग्रीयों को स्थापित करने में असमर्थ हैं, उन लोगों को लक्ष्मी प्राप्ति हेतु यहां दिये गये अनुभूत उपायो को अपनाकर जीवन में निश्चित रुप से सुख-समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए एवं इन उपायों से लाभ की प्राप्ति होने पर विभिन्न दुर्लभ वस्तुओं को प्राप्त कर अपने घर में अवश्य स्थापित कर उसना नियमित पूजन-अर्चन करना चाहिए। दीपावली के शुभ मुहूर्त में धन प्राप्ति के विशेष उपायों को प्रारंभ कर निश्चित रुप से अपने जीवन में धन-वैभव, सुख-समृद्धि का आगमन किया जा सकता हैं।

इस अंक में पाठको के मार्गरशन हेतु लक्ष्मी प्राप्ति के सरल उपायों को 3 भागों में दिया गया हैं, जो क्रमश: दीपावली पर करें धन प्राप्ति हेतु विशेष उपाय, दैनिक जीवन में अपनाये लक्ष्मी प्राप्ति के सरल उपाय और दरिद्रता निवारण हेतु विशेष उपाय हैं।

दीपावली पर किये जाने वाले उपायों को आवश्यक्ता अनुसार अन्य शुभ मुहूर्त एवं अवसरों पर किया जा सकता हैं। विद्वानों का अनुभव हैं की इन दीपावली पर्व पर किये जाने वाले धन प्राप्ति के उपायों को दीपावली पर करने से विशेष लाभ की प्राप्ति होती हैं।

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो मां लक्ष्मी की कृपा आपके परिवार पर बनी रहे। मां महालक्ष्मी से यही प्राथना हैं...

आपको एवं आपके परिवार के सभी सदस्यों को गुरुत्व कार्यालय परिवार की और से दीपावली की शुभकामनाएं एवं नूतनवर्षा अभिनंदन

चिंतन जोशी

***** मासिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा प्रकाशित किये गये सभी लेख, जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

नवम्बर 2020 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	रवि	कार्तिक	कृष्ण	प्रतिपदा	22:45	भरणी	20:56	व्यतिपात	29:21	बालव	09:32	मेष	17:20
2	सोम	कार्तिक	कृष्ण	द्वितीया	25:05	कृतिका	23:49	वरियान	30:10	तैतिल	11:57	वृष	-
3	मंगल	कार्तिक	कृष्ण	तृतीया	27:12	रोहिणि	26:29	परिघ	-	वणिज	14:11	वृष	-
4	बुध	कार्तिक	कृष्ण	चतुर्थी	29:05	मृगशिरा	28:50	परिघ	06:47	बव	16:09	वृष	19:26
5	गुरु	कार्तिक	कृष्ण	पंचमी	30:20	आद्रा	-	शिव	07:07	कौलव	17:44	मिथुन	-
6	शुक्र	कार्तिक	कृष्ण	षष्ठी	-	आद्रा	06:44	सिद्धि	07:05	गर	18:48	मिथुन	21:10
7	शनि	कार्तिक	कृष्ण	षष्ठी	07:06	पुनर्वसु	08:04	शुभ	29:33	वणिज	07:06	कर्क	-
8	रवि	कार्तिक	कृष्ण	सप्तमी - अष्टमी	07:12 -30:34	पुष्य	08:45	शुक्ल	27:56	बव	07:12	कर्क	-
9	सोम	कार्तिक	कृष्ण	नवमी	29:12	आश्लेषा	08:42	ब्रह्म	25:43	तैतिल	17:59	कर्क	00:01
10	मंगल	कार्तिक	कृष्ण	दशमी	27:9	मघा-पूर्वाफाल्गुनी	07:55-30:28	इन्द्र	22:55	वणिज	16:16	सिंह	-
11	बुध	कार्तिक	कृष्ण	एकादशी	24:30	उत्तराफाल्गुनी	28:25	वैधृति	19:36	बव	13:54	सिंह	01:05
12	गुरु	कार्तिक	कृष्ण	द्वादशी	21:21	हस्त	25:54	विषकुंभ	15:51	कौलव	10:59	कन्या	-
13	शुक्र	कार्तिक	कृष्ण	त्रयोदशी	17:53	चित्रा	23:05	प्रीति	11:48	गर	07:39	कन्या	03:07
14	शनि	कार्तिक	कृष्ण	चतुर्दशी	14:15	स्वाति	20:08	आयुष्मान	07:33	शकुनि	14:15	तुला	-

15	रवि	कार्तिक	कृष्ण	अमावस्या	10:36	विशाखा	17:15	शोभन	23:03	नाग	10:36	तुला	05:16
16	सोम	कार्तिक	शुक्ल	प्रतिपदा-द्वितीया	07:09-27:59	अनुराधा	14:36	अतिगंड	19:05	बव	07:09	वृश्चिक	-
17	मंगल	कार्तिक	शुक्ल	तृतीया	25:26	जेष्ठा	12:21	सुकर्मा	15:29	तैतिल	14:40	वृश्चिक	07:31
18	बुध	कार्तिक	शुक्ल	चतुर्थी	23:28	मूल	10:39	धृति	12:20	वणिज	12:22	धनु	-
19	गुरु	कार्तिक	शुक्ल	पंचमी	22:13	पूर्वाषाढ़	09:38	शूल	09:45	बव	10:45	धनु	09:35
20	शुक्र	कार्तिक	शुक्ल	षष्ठी	21:46	उत्तराषाढ़	09:22	गंड	07:47	कौलव	09:54	मकर	-
21	शनि	कार्तिक	शुक्ल	सप्तमी	22:06	श्रवण	09:53	ध्रुव	29:44	गर	09:50	मकर	11:14
22	रवि	कार्तिक	शुक्ल	अष्टमी	23:10	धनिष्ठा	11:08	व्याघात	29:34	विष्टि	10:33	कुंभ	-
23	सोम	कार्तिक	शुक्ल	नवमी	24:51	शतभिषा	13:04	हर्षण	29:51	बालव	11:56	कुंभ	-
24	मंगल	कार्तिक	शुक्ल	दशमी	26:59	पूर्वाभाद्रपद	15:31	वज्र	30:29	तैतिल	13:52	कुंभ	13:07
25	बुध	कार्तिक	शुक्ल	एकादशी	29:25	उत्तराभाद्रपद	18:20	सिद्धि	-	वणिज	16:11	मीन	-
26	गुरु	कार्तिक	शुक्ल	द्वादशी	-	रेवति	21:20	सिद्धि	07:21	बव	18:42	मीन	14:12
27	शुक्र	कार्तिक	शुक्ल	द्वादशी	07:58	अश्विनी	24:22	व्यतिपात	08:18	बालव	07:58	मेष	-
28	शनि	कार्तिक	शुक्ल	त्रयोदशी	10:30	भरणी	27:18	वरियान	09:14	तैतिल	10:30	मेष	-
29	रवि	कार्तिक	शुक्ल	चतुर्दशी	12:52	कृतिका	30:2	परिघ	10:04	वणिज	12:52	मेष	15:57
30	सोम	कार्तिक	शुक्ल	पूर्णिमा	14:59	रोहिणि	-	शिव	10:44	बव	14:59	वृष	-

नवम्बर 2020 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	रवि	कार्तिक	कृष्ण	प्रतिपदा	22:45	पवित्र कार्तिक मास प्रारंभ, दामोदर मास प्रारंभ, शास्त्रोक्त मत से चातुर्मास के व्रती के लिए कार्तिक में दाल खाना वर्जित, कार्तिक में मासपर्यन्त तुलसीदल से श्रीहरि की पूजा करना उत्तम, तुलसी माता को पूरे मास दीप-दान करें।
2	सोम	कार्तिक	कृष्ण	द्वितीया	25:05	अशून्य शयन व्रत,
3	मंगल	कार्तिक	कृष्ण	तृतीया	27:12	-
4	बुध	कार्तिक	कृष्ण	चतुर्थी	29:05	संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (चं.उ.रा.8:12), करवाचौथ व्रतोत्सव, दशरथ चतुर्थी (प.बंगाल)
5	गुरु	कार्तिक	कृष्ण	पंचमी	30:20	-
6	शुक्र	कार्तिक	कृष्ण	षष्ठी	-	स्कन्दषष्ठी व्रत,
7	शनि	कार्तिक	कृष्ण	षष्ठी	07:06	
8	रवि	कार्तिक	कृष्ण	सप्तमी - अष्टमी	07:12 -30:34	भानु सप्तमी, कालाष्टमी व्रत, कराष्टमी (महाराष्ट्र), अहोई अष्टमी व्रत, बहुलाष्टमी, दाम्पत्याष्टमी व्रत, राधा कुण्ड स्नान
9	सोम	कार्तिक	कृष्ण	नवमी	29:12	-
10	मंगल	कार्तिक	कृष्ण	दशमी	27:9	-
11	बुध	कार्तिक	कृष्ण	एकादशी	24:30	रमा (रम्भा) एकादशी व्रत सर्वे, आज से आकाश में दीपदान प्रारंभ
12	गुरु	कार्तिक	कृष्ण	द्वादशी	21:21	गोवत्स द्वादशी (गौ बछड़ा बारस) व्रत, रात 21:21 बजे पश्चयात त्रयोदशी,
13	शुक्र	कार्तिक	कृष्ण	त्रयोदशी	17:53	धनत्रयोदशी, धनतेरस, धन्वन्तरि जयंती, प्रदोष व्रत, कामेश्वरी जयंती, गोत्रिरात्र प्रारंभ, यमपंचक-दीपदान प्रारंभ, संध्या 17:53 बजे पश्चयात चतुर्दशी, काली चतुर्दशी, काळीचौदस, श्रीहनुमान जयंती, मासिक शिवरात्रि व्रत(शिव चतुर्दशी), नरकहरा चतुर्दशी (नरका चौदस), माँ धूमावती जयंती (तांत्रिक पंचांगानुसार), यम तर्पण, रुपचतुर्दशी (रात्रि के अंतिम प्रहर में अभ्यंग स्नान)

14	शनि	कार्तिक	कृष्ण	चतुर्दशी	14:15	दोपहर 14:15 बजे पश्चयात अमावस्या, दीपावली, दीपोत्सव, श्रीगणेश-लक्ष्मी-कुबेर का पूजन, लक्ष्मी पूजा, कमला महाविद्या जयंती, कार्तिकी अमावस्या, गौरी-केदार व्रत (द.भा.), श्रीमहावीर स्वामी निर्वाण उत्सव (जैन), सोमवती अमावस,
15	रवि	कार्तिक	कृष्ण	अमावस्या	10:36	स्नान-दान हेतु उत्तम कार्तिक अमावस्या, दिन बजे पश्चयात अन्नकूट, गोवर्द्धन पूजन, बलि पूजा, गो संवर्धन सप्ताह प्रारंभ, गुजराती सम्वत्सर 2077 प्रारंभ, भगवान महावीर निर्वाण सम्वत् प्रारंभ, नेपाली संवत् प्रारंभ,
16	सोम	कार्तिक	शुक्ल	प्रतिपदा-द्वितीया	07:09-27:59	भइया दूज, भाई बीज, नवीन चंद्र दर्शन, यमद्वितीया स्नान, चित्रगुप्त पूजन, विश्वकर्मा पूजन, बग्वाली (उत्तराखण्ड), यमपंचक समाप्त, वृश्चिक संक्रान्ति, वृश्चिक-संक्रान्ति के स्नान व दान का पुण्य काल एवं महा पुण्य काल सुबह 06:54 बजे से सुबह 07:10 बजे तक,
17	मंगल	कार्तिक	शुक्ल	तृतीया	25:26	-
18	बुध	कार्तिक	शुक्ल	चतुर्थी	23:28	वरदविनायक चतुर्थी व्रत (चं. अस्त.रा.08:27), दूर्वागणपति व्रत, सूर्यषष्ठी व्रत प्रारंभ (मिथिलांचल), 3 दिन की छठपूजा शुरू- नहाय खाय
19	गुरु	कार्तिक	शुक्ल	पंचमी	22:13	सौभाग्य पंचमी, लाभ पंचमी, लाभ पांचम, पाण्डव पंचमी, ज्ञानपंचमी (जैन), छठपूजा का दूसरा दिन-खरना (बिहार-झारखण्ड)
20	शुक्र	कार्तिक	शुक्ल	षष्ठी	21:46	स्कन्दषष्ठी व्रत, सूर्यषष्ठी व्रत-प्रतिहारषष्ठी व्रत (मिथिलांचल), डाला छठ (काशी), छठपूजा का मुख्य दिन सायंकाल सूर्यास्त के समय सूर्यदेवको प्रथम अर्घ्य,
21	शनि	कार्तिक	शुक्ल	सप्तमी	22:06	प्रातः उदीयमान सूर्यको द्वितीय अर्घ्यदान, छठव्रत का पारण, सामा पूजा शुरू (मिथिलांचल), जगद्धात्री पूजा 3 दिन (प.बंगाल),
22	रवि	कार्तिक	शुक्ल	अष्टमी	23:10	गोपाष्टमी (ब्रज), गोपाल अष्टमी (जम्मू-कश्मीर), श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, श्रीअन्नपूर्णाष्टमी व्रत,
23	सोम	कार्तिक	शुक्ल	नवमी	24:51	अक्षयनवमी व्रत, आंवला नवमी पूजन, माँ कूष्माण्ड नवमी, अनला नवमी (ओड़ीसा), सत्ययुगादि तिथि, वेद संस्थापना महोत्सव, जगद्धात्री नवमी महापूजा (प.बंगाल), विष्णु त्रिरात्र प्रतारंभ,

24	मंगल	कार्तिक	शुक्ल	दशमी	26:59	आशा दशमी, कंशवध लीला महोत्सव (मथुरा),
25	बुध	कार्तिक	शुक्ल	एकादशी	29:25	श्रीहरि प्रबोधिनी एकादशी, देवउठनी ग्यारस, देव उठी अग्यारस, देवोत्थान उत्सव, ईख-रस प्राशन, विष्णु त्रिरात्र पूर्ण, चातुर्मास व्रत नियम समाप्त, भीष्मपंचक प्रारंभ, तुलसी विवाह,
26	गुरु	कार्तिक	शुक्ल	द्वादशी	-	दामोदर द्वादशी (ब्रज), श्यामबाबा द्वादशी, गरुड़ द्वादशी (ओड़ीसा), मत्स्य द्वादशी,
27	शुक्र	कार्तिक	शुक्ल	द्वादशी	07:58	प्रदोष व्रत,
28	शनि	कार्तिक	शुक्ल	त्रयोदशी	10:30	वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत, महानिशीथकाल में महाविष्णु पूजा, रात्रि के अंतिम प्रहर में अरुणोदयकाल में मणिर्किणका-स्नान (काशी), अर्धरात्रि में हरि-हर मिलन (उज्जयिनी),
29	रवि	कार्तिक	शुक्ल	चतुर्दशी	12:52	व्रत हेतु उत्तम कार्तिकी पूर्णिमा,
30	सोम	कार्तिक	शुक्ल	पूर्णिमा	14:59	स्नान-दान हेतु उत्तम रोहिणि नक्षत्रयुता कार्तिकी पूर्णिमा, श्रीगुरु नानकदेव जयंती, देव-दीपावली, देव दीवाळी, निम्बार्काचार्य जयंती, तुलसी विवाहोत्सव समाप्त, भीष्म पंचक पूर्ण, सामा-विसर्जन (मिथिलांचल), पुष्कर मेला (राज.), कार्तिक-स्नान समाप्त, कार्तिकेय-दर्शन

नवम्बर 2020 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
02	रात 11:50 से अगले दिन प्रात: 06:35 तक	16	सुबह 06:45 से दोपहर 02:37 तक,
04	प्रात: 06:35 से अगले दिन प्रात: 04:51 तक	20	सुबह 09:49 से अगले दिन सुबह 09:54 तक
06	प्रात: 06:45 से अगले दिन प्रात: 06:38 तक	24	दोपहर 03:32 से अगले दिन सुबह 06:52 तक
08	प्रात: 06:38 से दिन 08:46 तक	26	सुबह 06:53 से अगले दिन सुबह 06:53 तक
12	प्रात: 04:25 से प्रात: 06:42 तक	27	सुबह 06:53 से देर रात 12:23 तक
14	प्रात: 06:43 से रात 08:09 तक	30	सुबह 06:56 अगले दिन सुबह 06:57 तक
त्रिपुष्कर योग (तीन गुना फल दायक)		**द्विपुष्कर योग (दोगुना फल दायक)**	
01	दिन 10:49 से अगले दिन प्रात: 06:34 तक	21	दिन 09:54 से रात 09:48 तक
07	सुबह 07:23 से सुबह 08:05 तक		
विघ्नकारक भद्रा			
03	दोपहर 02:21 से देर रात 03:24 तक	18	दोपहर 12:11 से रात 11:16 तक
07	सुबह 07:23 से रात 07:31 तक	21	रात 09:48 से अगले दिन सुबह 10:14 तक
10	संध्या 04:30 से देर रात 03:22 तक	25	दोपहर 03:54 से अगले दिन प्रात: 05:10 तक
13	संध्या 05:59 से अगले दिन प्रात: 04:09 तक	29	दोपहर 12:47 से देर रात 01:55 तक

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- द्विपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ दोगुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

नवम्बर 2020 रवि योग			
06	प्रात: 06:45 से सुबह 08:30 तक	21	सुबह 06:49 से सुबह 09:54 तक
07	सुबह 08:05 से अगले दिन प्रात: 06:38 तक	23	दोपहार 01:05 से अगले दिन सुबह 06:51 तक
08	प्रात: 06:38 से सुबह 08:46 तक	24	सुबह 06:51 से अगले दिन सुबह 06:52 तक
17	दोपहार 12:22 से अगले दिन सुबह 06:46 तक	25	सुबह 06:52 से संध्या 06:21 तक
18	सुबह 06:46 से अगले दिन 10:40 तक	28	देर रात 00:23 से सुबह 06:54 तक
19	सुबह 09:39 से दोपहार 02:28 तक	28	सुबह 06:54 से देर रात 03:19 तक
20	सुबह 09:23 से अगले दिन सुबह 06:49 तक		

सूर्यभाद्वेदगोतर्क दिग्विश्व नखसम्मिते ।
चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसङ्घविनाशकाः

अर्थात: सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनती करने पर यदि यह 4, 6, 9, 10, 13, 20 (नक्षत्र क्रम से आगे हो) यह क्रम में कोई भी एक क्रम का नक्षत्र जिस दिन हो उस दिन **रवि योग** होता है। नक्षत्र का यह समय **रवि योग** का समय होता है।

सूर्य ग्रह सभी ग्रहों का राजा है। सौरमंडल में सबसे उर्जावान ग्रह सूर्य है जिस्से हमें प्रकाश एवं प्रत्यक्ष या परोक्ष रुपसे उर्जा जीवन उर्जा प्राप्त होती है। सूर्य को हिंदू धर्म में सूर्य को बहुत पवित्र देव माना जाता है एवं सूर्य की पूजा-उपासना की जाती है। नौ ग्रहों में सूर्य को श्रेष्ठ ग्रह माना जाता है।

- इस लिए रवि योग भी योगों में उत्तम एवं शुभफलदाय माना जाता है। यह रवि योग सभी प्रकार के दोषों एवं अशुभ प्रभावों को दूर करता है।
- यदि किसी दिन शुभ कार्य करना अनिवार्य हो एवं एवं उस दिन कोई शुभ मुहूर्त न हो तो शुभ कार्य **रवि योग** में कर सकते है।
- रवि योग में कार्यों में वांछित अफलता प्राप्त होती हैं इस लिए यह अत्यंत लाभदायक योग है।
- रवि योग के दिन भगवान सूर्य की पूजा करना उत्तम होता है।
- रवि योग के दिन सूर्य देवता को अर्घ्य देना भी विशेष लाभ होता है।
- रवि योग के दिन सूर्य मंत्र का जप करना विशेष लाभदायक होता है।
- रवि योग को सूर्य देव का वरदान प्राप्त है इस लिए यह अत्याधिक प्रभावशाली है।
- रवि योग में किए गए सभी शुभ कार्यों में किसी भी प्रकार के विघ्न एवं बाधाएं उत्पन्न नहीं होती है तथा कार्य में शीघ्र सफलता मिलती है।
- रवि योग में दूरस्थान की यात्राएं शुभफलदायक होती है।
- रवि योग में कर्ज मुक्ति के प्रसाय करने से कर्ज से शीध्र मुक्ति मिल सकती है।
- रवि योग में स्वास्थ्य वृद्धि के सभी प्रकार के प्रयास अथवा शल्य चिकित्सा उत्तम होती है।
- रवि योग में लंबे समय से रुके हुए कार्य को पूर्ण करने का प्रयास भी विशेष लाभदाय सिद्ध होता है।

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

वृश्चिक संक्रान्ति का राशिफल

संकलन गुरुत्व कार्यालय

16 नवंबर 2020 से 15 दिसम्बर 2020 तक

जन्मकालीन चन्द्रराशि से वृश्चिक संक्रान्ति का राशिफल

वृश्चिक संक्रान्ति का सामान्य फल

- शास्त्रोक्त मत से वृश्चिक संक्रान्ति मुख्य रुप से सरकार और सरकारी कर्मचारियों के लिए शुभकारी हो सकती है।
- उत्पादन एवं वस्तुओं की लागत सामान्य होगी।
- लोगों में भय और चिन्ता लाती की वृद्धि संभव है।
- लोगों के स्वास्थ्य में सुधार होगा, देशों के बीच सम्बन्ध मधुर होंगे और अनाज भण्डारण में वृद्धि हो सकती है।



मेष

सूर्य का अष्टम स्थान पर गोचर हो तो कार्यक्षेत्र में सावधानी बरतने अन्यथा व्यर्थ के वाद-विवाद से चुनौतीयों का सामना करना पड़ सकता है। मानसिक तनाव में वृद्धि हो सकती है। खाने-पीने का विशेष ध्यान रखे तथा स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें अन्यथा उदर से संबंधित समस्याएं हो सकती है। आर्थिक में समस्याएं संभव है। परिवार के लोगों से अनबन हो सकती हैं अतः शांति पूर्वक रिश्तों को मजबूत बनाये रखने का प्रयास करें।

वृषभ

सूर्य का सातवें स्थान पर गोचर हो तो पति-पत्नी के रिश्तों में कुछ समस्याएं हो सकती है। व्यावसायिक साझेदारी के कार्यों में मतभेद हो सकता है। धैर्य व संयम बर्ते अन्यथा अत्याधिक कलह से रिश्ते खराब हो सकते हैं। यात्रा में कष्ट हो सकता हैं। नौकरी, व्यवसाय में विघ्न-बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। इस दौरान उदर में पीड़ा होती है। साझेदारी के कार्य में मतभेद हो सकते हैं अतः सावधान रहें।





मिथुन

सूर्य का षष्ठम स्थान पर गोचर हो तो विभिन्न कार्यों में सफलता प्राप्त होती हैं। सरकार से लाभ प्राप्ति संभव हैं। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। से इस दौरान कोर्ट-कचहरी के कार्य अथवा वाद-विवाद में विजय प्राप्त हो सकती हैं। इस दौरान उचित उपायों से स्वास्थ्य लाभ होगा तथा पुराने रोगों से छुटकारा मिल सकता है। वाहन इत्यादि से सावधान रहे अन्यथा दुर्घटना हो सकती है। पूंजि निवेश कार्यों के लिए यह समय उत्तम हो सकता हैं।



कर्क

सूर्य का पंचम स्थान पर गोचर हो तो शिक्षा प्राप्ति में बाधा संभव है। प्रेम संबंधित मामले में समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। मानसिक चिंता, भ्रम इत्यादि की प्रबलता हो सकती हैं। कार्यक्षेत्र में आवश्यक्ता से अधिक परिश्रम करने के उपरांत भी वांछित सफलता मिलने मे कष्ट संभव हैं। इस दौरान कार्यक्षेत्र में परिवर्तन संभव है। संतान पक्ष को कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। उदर विकार हो सकता हैं, अतः खान-पान का विशेष ध्यान रखें।

सिंह



सूर्य का चतुर्थ स्थान पर गोचर हो तो पारिवारीक सुख में वृद्धि होगी। घर-परिवार के सुख साधनों में वृद्धि होगी। दूरस्थ स्थानों की यात्राएं हो सकती है। भूमि-भवन के मामलों में लाभ की प्राप्ति हो सकती हैं। नया वाहन इत्यादि की प्राप्ति हो सकती है। कार्य क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होगी, नौकरी से जुडे है तो पदौन्नति के अवसर प्राप्त हो सकते है। इस दौरान माता को कुछ कष्ट हो सकता हैं। इस दौरान अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें हृदय संबंधित समस्याएं उत्पन्न हो सकती है अतः सेहत के प्रति विशेष सावधान रहें।



कन्या

सूर्य का तृतीय स्थान पर गोचर हो तो कार्यक्षेत्र में साहस एवं पराक्रम से सफलता प्राप्त हो सकती हैं। सरकारी विभाग से जुडे कार्यों से लाभ की प्राप्ति हो सकती हैं। नौकरी से जुडे लोगों को पदोन्नति के अवसर प्राप्त हो सकते है। आर्थिक स्थिती मजबूत होगी। मित्रों एवं सहोदर से लाभ प्राप्ति संभव हो सकती हैं। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। विरोधि एवं शत्रुपक्ष परास्त होंगे। सामाजिक मान-सम्मान में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होती हैं।

तुला



सूर्य का द्वितीय स्थान पर गोचर हो तो प्रियजनों एवं उच्चाधिकारियों से बातचित में अपनी वाणी पर नियंत्रण रखे अन्यथा रिश्ते बिगड़ सकते है। परिवार में अशांति का माहौल रह सकता है। इस दौरान विपरित परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में गलत निणयों अथवा आवश्यकता से अधिक खर्च के कारण समस्याओं का सामना करना पड़ सकता हैं। सेहत का विशेष ध्यान रखे इस दौरान आंख, दांत एवं मुख से जुड़ी समस्याएं कष्ट दे सकती हैं।

वृश्चिक



सूर्य का प्रथम स्थान पर गोचर हो तो इस दौरान दैनिक जीवन में कुछ नया कार्य में सफलता प्राप्त हो सकती है। कार्यक्षेत्र में थोड़े से परिश्रम समसय से रुके हुए कार्य पूरे हो सकते है। आपके आत्म विश्वास में वृद्धि होगी। अपने खान-पान का विशेष ध्यान रखें किसी प्रकार से पित्त-विकार में वृद्धि हो सकती हैं या अन्य कोई रोग से पीड़ा संभव हैं। इस दौरान यात्रा करना प्रतिकूल साबित हो सकता है। आवश्यक्ता से अधिक क्रोध के कारण पारिवारिक रिश्तों में नोक-झोक हो सकती है।



धनु

सूर्य का द्वादश स्थान पर गोचर हो तो कार्यक्षेत्र में मिश्रित परिणाम प्राप्त हो सकते हैं जिस कारण कई बार उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। इस दौरान अपने खर्चों पर नियंत्रण रखे तथा बड़े कर्ज लेने से बचे अन्यथा कर्ज के भुगतान में विलम्ब संभव हैं। अनावश्यक यात्रा तथा भ्रमण से बचने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा इससे नुक़सान संभव है। सरकारी कार्यों में थोड़ा विलंब सम्भाव है। इस दौरान अपनी आंखों एवं पेट का ध्यान रखें अन्यथा समस्याएं संभव है। प्रियजनों के साथ रिश्तों में गलतफहमी के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

मकर



सूर्य का एकादश स्थान पर गोचर हो तो कार्यक्षेत्र तथा विभिन्न स्त्रोत से आकस्मिक धन लाभ संभव है, जिससे आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। पूंजि निवेश की योजना बनेगी। कार्यक्षेत्र सहकर्मी एवं उच्चाधिकारीयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा एवं थोड़े से प्रयासों से कार्यक्षेत्र में विशेष लाभ की प्राप्ति हो सकती हैं। आपके प्रयासों से परिवार में आपसी रिश्तों में मधुरता आयेगी। स्वाथ्य उत्तम रहेगा तथा कोई रोग हैं तो उचित चिकित्सा से स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं दूर हो सकती हैं।



कुंभ

सूर्य का दशम स्थान पर गोचर हो तो आपके सामाजिक मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में विशेष रुप से सफलता प्राप्त होती हैं। यदि जीवन में कोई पूरानी समस्याएं हैं तो इस दौरान उचित प्रयासो से अपनी समस्याओं को दूर करने में आप सक्षम होंगे। सरकार से विशेष लाभ की प्राप्ति हो सकती हैं। सहकर्मी एवं उच्चाधिकारीयों के सहयोग से पदौन्नति संभव हैं। पारिवारीक सुख में वृद्धि होगी।

मीन



सूर्य का नवम स्थान पर गोचर हो तो इस दौरान कार्यक्षेत्र में नई योजनाओं बन सकती। इस दौरान महत्व पूर्ण कार्यों में विशेष लाभ की प्राप्ति हो सकती है। आर्थिक मामलों में कठिन परिश्रम से विशेष लाभ की प्राप्ति होगी।वाद-विवाद में सफलता की प्राप्ति होगी। कोर्ट-कचहरी के कार्य में विजय प्राप्त हो सकती है। धार्मिक यात्रा पर जाने की योजना बन सकती है। इस दौरान महत्व पूर्ण निर्णय समझदारी से ले। खाने-पीने का ध्यान रहें अन्यथा समस्त्याएं संभव हैं।

रमा एकादशी (रम्भा एकादशी) व्रत कथा 11-नवम्बर-2020

संकलन गुरुत्व कार्यालय

कार्तिक : कृष्ण पक्ष एकादशी

अर्जुन ने भगवान् श्री कृष्ण से कहा हे भगवन् ! कृप्या मुझे कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी की कथा सुनाइए। इस एकादशी का नाम क्या है तथा इसमें किस देवता का पूजन किया जाता है । इस एकादशी का व्रत करने से क्या फल मिलता है ? कृपा करके यह सब विस्तारपूर्वक बताएं।

भगवान् श्रीकृष्ण बोले हे अर्जुन ! कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम रमा ह। इसके व्रत से व्यक्ति के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं ।

व्रत की कथा तुम ध्यान से सुनों

प्राचीनकाल में मुचुकुन्द नाम का एक राजा राज्य करता था । इन्द्र, वरूण, कुबेर आदि देवगण उसके मित्र थे । वह बड़ा सत्यवादी तथा भगवान् विष्णु का भक्त था । उसका राज्य सभी प्रकार से संपन्न था । राजा की चन्द्रभागा नामक एक कन्या थी जिसका विवाह उसने राजा चन्द्रसेन के पुत्र सोभन से करवा दिया । चन्द्रभागा राजा एकादशी का व्रत बड़े ही नीति-नियम के साथ करता था और अपने राज्य में सभी लोग यथा संभव कठोरता से इस नियम का पालन करते थे । एक बार की बात है कि सोभन कार्तिक महीने में अपने ससुराल आया था। उसी दौरान अतिपुण्यदायिनी रमा एकादशी आ गई । राज्य के नियम के अनुसार इस दिन सभी व्रत रखते थे । राजा की कन्या चन्द्रभागा ने सोचा कि मेरे पति तो व्रत-कर्म इत्यादि कार्यों में बड़े कमजोर हैं, वे एकादशी का व्रत कैसे करेंगे ! जबकि पिता के यहां तो सभी को व्रत करने का नियम है ।

मेरे पति ने यदि राजाज्ञा मानी, तो उन्हें बहुत कष्ट होगा । नियमानुसार राजा ने आज्ञा जारी की कि सारी प्रजा विधि-विधान पूर्वक एकादशी का व्रत करे । जब दशमी आई तब राज्य में ढिंढोरा पिटा, उसे सुनकर सोभन अपनी पत्नी के पास गया और बोला हे प्रिये ! तुम मुझे कुछ उपाय बतलाओ क्योंकि मैं व्रत नहीं कर सकता, यदि मैं व्रत करुंगा तो जीवित नहीं रह सका ।

पति की बात पर चन्द्रभागा बोली हे प्राणनाथ ! मेरे पिताजी के राज्य में एकादशी के दिन कोई भी भोजन नहीं कर सकता । यहां तक कि प्राणी-पशु-पक्षी आदि भी घास, अन्न, जल आदि ग्रहण नहीं करते; फिर भला मनुष्य कैसे भोजन कर सकता हैं ? यदि आप व्रत नहीं कर सकते तो किसी दूसरे राज्य में चले जाइए । क्योंकि यदि आप यहां रहें तो आपको व्रत अवश्य ही करना पड़ेगा ।

चन्द्रभागा बात पर सोभन ने कहा हे प्रिये ! तुम्हारा सुझाव उचित है । किन्तु मैं व्रत के डर से किसी दूसरे स्थान पर नहीं जाऊंगा अब मैं यह व्रत अवश्य ही करुंगा, परिणाम चाहे कुछ भी हो, भाग्य में लिखा कौन मिटा सकता है ।

उसने एकादशी का व्रत किया लेकिन दिन बीतते-बीतते सोभन भूख और प्यास से अत्यन्त व्याकुल होने लगा । सूर्य अस्त होया और रात्रि जागरण का समय आ गया। लेकिन रात्रि सोभन को अत्याधिक कष्ट देने वाली थी । दूसरे दिन का सूर्योदय होने से पूर्व ही भूख-प्यास से सोभन के प्राण निकल गए ।

राजा ने सोभन के मृत शरीर को जल-प्रवाह करा दिया और अपनी पुत्री को आज्ञा दी कि वह सती न हो कर भगवान् विष्णु पर भरोसा रखे ।

चन्द्रभागा अपने पिता की आज्ञानुसार सती नहीं हुई । वह अपने पिता के घर रहकर नीति-नियम से एकादशी के व्रत करने लगी ।

उधर रमा एकादशी के प्रभाव से सोभन को जल से निकाल लिया गया और भगवान् विष्णु की कृपा से उसे नया जीवन प्राप्त हुवा और उसे मन्दराचल पर्वत पर धन-धान्य से युक्त देवपुर नाम का एक उत्तम नगर राजा बना दिया गया । सोभन स्वर्ण तथा रत्नजड़ित सिंहासन पर सुन्दर वस्त्र तथा आभूषण धारण किए

बैठता और गन्धर्व तथा अप्सरा नृत्य कर उसकी स्तुति करतेथे । उस समय राजा सोभन इन्द्र के समान प्रतीत हो रहा था ।

उस समय मुचुकुन्द नगर का सोमशर्मा नाम का एक ब्राह्मण तीर्थयात्रा के लिए निकला। जो घूमते-घूमते सोभन के राज्य में जा पहुंचा, सोभन को देखा । वह ब्राह्मण सोभनको अपने राज्य के राजा का जमाई जानकर उसके निकट गया । राजा सोभन ब्राह्मण को देख आसन से उठ खड़ा हुआ और अपने ससुर तथा स्त्री चन्द्रभागा के कुशल-मंगल पूछने लगा ।

सोमशर्मा बोला हे राजन् ! हमारे राजा तथा आपकी पत्नी चन्द्रभागा दोनों कुशल है । अब आप अपना वृत्तान्त बतलाइए । आपने तो रमा एकादशी के दिन अन्न-जल ग्रहण न करने के कारण प्राण त्याग दिए थे । मुझे बड़ा आश्चर्य है कि ऐसा सुंदर नगर आपको किस प्रकार प्राप्त हुआ ?

सोभन बोला हे ब्राह्मण देव ! यह सब कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की रमा एकादशी के व्रत का फल है । इसी से मुझे यह सुंदर नगर प्राप्त हुआ है, लेकिन यह अस्थिर है ।

इस पर ब्राह्मण बोला हे राजन् ! यह अस्थिर क्यों है और स्थिर किस प्रकार हो सकता है, आप मुझे समझाइए । यदि इसके स्थिर करने के लिए मैं कुछ कर सका तो वह उपाय मैं अवश्य ही करुंगा ।

सोभन बोला हे देव ! मैंने वह व्रत विवश होकर तथा श्रद्धारहित किया था । उसके प्रभाव से मुझे यह अस्थिर नगर प्राप्त हुआ हैं, लेकिन यदि आप इस वृत्तान्त को में पत्नी चन्द्रभागा से कहोगे तो वह इसको स्थिर कर सकती है ।

ब्राह्मण अपने नगर लौटकर उसने चन्द्रभागा से समस्त वृत्तान्त कहा । इस पर राजकन्या चन्द्रभागा बोली हे ब्राह्मण देव ! आप क्या वह सब आप देखकर आये हैं ! या अपना स्वप्न में देखा दृश्य कह रहे हैं ?

ब्राह्मण बोला हे पुत्री ! मैंने तेरे पति सोभन तथा उसके नगर को प्रत्यक्ष देखा है, परन्तु वह नगर अस्थिर है । तूम कोई ऐसा उपाय करो जिससे कि वह स्थिर हो जाय ।

चन्द्रभागा बोली हे महाराज ! आप मुझे उस नगर में ले चलिए, मैं अपने पति को देखना चाहती हूं । मैं अपने व्रत के प्रभाव से उस नगर को स्थिर कर लूंगी ।

चन्द्रभागा के बात को सुनकर ब्राह्मण उसे वामदेवजी के आश्रम में ले गया । वामदेवजी ने उसके वृत्तान्त को सुनकर चन्द्रभागा का मन्त्रों से अभिषेक किया । चन्द्रभागा मन्त्रों तथा व्रत के प्रभाव से दिव्य देह धारण करके पति के पास गई । सोभन ने अपनी स्त्री चन्द्रभागा को देखकर उसे प्रसन्नतापूर्वक आसन पर अपने पास बैठा लिया ।

चन्द्रभागा बोली हे प्राणनाथ ! अब आप मेरे एकादशी व्रत के पुण्य को सुनिए, जब मैं अपने पिता के गृह में आठ वर्ष की थी, तब ही से मैं पूर्ण विधि-विधान से एकादशी का व्रत कर रही हूं । उन्हीं व्रतों के प्रभाव से आपका यह नगर स्थिर हो जाएगा जो अब प्रलय के अन्त तक स्थिर रहेगा। चन्द्रभागा दिव्यरुप धारण करके तथा दिव्य वस्त्र-अलंकारों से सुशोभित होकर अपने पति के साथ मन्दराचल पर्वत पर सुखपूर्वक रहने लगी ।

हे पार्थ ! यह रमा एकादशी का विशेष माहात्म्य है । जो मनुष्य रमा एकादशी के व्रत को विधि-विधान से करते हैं, उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं । जो मनुष्य रमा एकादशी का माहात्म्य सुनते हैं, वह अन्त समय विष्णुलोक को जाते हैं ।

श्रीहरि प्रबोधिनी (देवउठनी) एकादशी 25-नवम्बर-2020 (बुधवार)

संकलन गुरुत्व कार्यालय

देवउठनी एकादशी कि व्रत कथा कि पौराणिक कथा के अनुसार किसी एक राजा के राज्य में सभी लोग एकादशी का व्रत रखते थे। एकादशी के दिन राज्य कि प्रजा तथा नौकर-चाकरों से लेकर पशुओं तक भोजन में अन्न नहीं दिया जाता था।

एक दिन दूसरे राज्य का एक व्यक्ति राजा के पास आकर बोला- महाराज! कृपा करके मुझे आपके यहां काम पर रख लें। तब राजा ने उस व्यक्ति के सामने एक शर्त रखी कि तुम्हें रोज खाने को सब कुछ मिलेगा, पर एकादशी को भोजन में अन्न नहीं मिलेगा।



उस व्यक्ति ने नौकरी कि लालच में उस समय राजा को हाँ कर दी, पर एकादशी के दिन जब उसे फलाहार का सामान दिया गया तो वह राजा के सामने जाकर गिड़-गिड़ाने लगा महाराज! फलाहार से मेरा पेट नहीं भरेगा। मैं भूखा ही मर जाऊँगा। कृप्या मुझे भोजन में अन्न दे दो। राजा ने उसे शर्त याद दिलाई, पर वह अन्न छोड़ने को राजी नहीं हुआ, तब राजा ने उसे भोजन में अन्न कि सामग्री आदि दिए।

वह अपनी दिनचर्या के अनुसार नदी किनारे पहुँचा और स्नान कर भोजन पकाने लगा। जब भोजन बन गया तो वह भगवान को बुलाने लगा आओ भगवान! भोजन तैयार हैं। बुलाने पर पीताम्बर धारण किए भगवान चतुर्भुज रूप में आ पहुँचे तथा प्रेम से उसके साथ भोजन करने लगे। भोजनादि करके भगवान अंतर्धान हो गए तथा वह अपने काम पर चला गया।

पंद्रह दिन बाद अगली एकादशी को वह राजा से कहने लगा कि महाराज, मुझे दुगुना सामान दीजिए। उस दिन तो मैं भूखा ही रह गया। राजा ने कारण पूछा तो उसने बताया कि हमारे साथ भगवान भी खाते हैं। इसीलिए हम दोनों के लिए ये सामान पूरा नहीं होता। यह सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। राजा बोले मैं नहीं मान सकता कि तुम्हारे साथ भगवान भी खाते हैं। मैं तो इतना व्रत रखता हूँ, पूजा करता हूँ, पर भगवान ने मुझे कभी दर्शन नहीं दिए।

राजा कि बात सुनकर वह बोला- महाराज! यदि विश्वास न हो तो साथ चलकर देख लें। राजा एक पेड़ के पीछे छिपकर बैठ गया। उस व्यक्ति ने भोजन बनाया तथा भगवान को शाम तक पुकारता रहा, परंतु भगवान न आए। अंत में उसने कहा- हे भगवान! यदि आप नहीं आए तो मैं नदी में कूदकर प्राण त्याग दूँगा।

लेकिन भगवान नहीं आए, तब वह प्राण त्यागने के उद्देश्य से नदी कि तरफ बढ़ा। प्राण त्यागने का उसका दृढ़ इरादा जान शीघ्र ही भगवान ने प्रकट होकर उसे रोक लिया और साथ बैठकर भोजन करने लगे। खा-पीकर वे उसे अपने विमान में बिठाकर अपने धाम ले गए। यह देख राजा ने सोचा कि व्रत-उपवास से तब तक कोई फायदा नहीं होता, जब तक मन शुद्ध न हो। इससे राजा को ज्ञान मिला। वह भी मन से व्रत-उपवास करने लगा और अंत में स्वर्ग को प्राप्त हुआ।

दूसरी कथा

एक राजा था। उसके राज्य में प्रजा सुखी थी। एकादशी को कोई भी अन्न नहीं बेचता था। सभी फलाहार करते थे। एक बार भगवान ने राजा कि परीक्षा लेनी चाही। भगवान ने एक सुंदरी का रूप धारण किया तथा सड़क पर बैठ गए। तभी राजा उधर से निकला और सुंदरी को देख चकित रह गया। उसने पूछा- हे सुंदरी! तुम कौन हो और इस तरह यहाँ क्यों बैठी हो?

तब सुंदर स्त्री बने भगवान बोले- मैं निराश्रिता हूँ। नगर में मेरा कोई जाना-पहचाना नहीं हैं, किससे सहायता माँगू? राजा उसके रूप पर मोहित हो गया था। वह बोला- तुम मेरे महल में चलकर मेरी रानी बनकर रहो।

सुंदरी बोली- मैं तुम्हारी बात मानूँगी, पर तुम्हें राज्य का अधिकार मुझे सौंपना होगा। राज्य पर मेरा पूर्ण अधिकार होगा। मैं जो भी बनाऊँगी, तुम्हें खाना होगा। राजा उसके रूप पर मोहित था, अतः उसने उसकी सभी शर्तें स्वीकार कर लीं। अगले दिन एकादशी थी। रानी ने हुक्म दिया कि बाजारों में अन्य दिनों कि तरह अन्न बेचा जाए। उसने घर में मांस-मछली आदि पकवाए तथा परोसकर राजा से खाने के लिए कहा। यह देखकर राजा बोला-रानी! आज एकादशी हैं। मैं तो केवल फलाहार ही करूँगा। तब रानी ने शर्त कि याद दिलाई और बोली- या तो खाना खाओ, नहीं तो मैं बड़े राजकुमार का सिर काट लूँगी। राजा ने अपनी स्थिति बड़ी रानी से कही तो बड़ी रानी बोली- महाराज! धर्म न छोड़ें, बड़े राजकुमार का सिर दे दें। पुत्र तो फिर मिल जाएगा, पर धर्म नहीं मिलेगा।

इसी दौरान बड़ा राजकुमार खेलकर आ गया। माँ कि आँखों में आँसू देखकर वह रोने का कारण पूछने लगा तो माँ ने उसे सारी वस्तुस्थिति बता दी। तब वह बोला- मैं सिर देने के लिए तैयार हूँ। पिताजी के धर्म कि रक्षा होगी, जरूर होगी।

राजा दुःखी मन से राजकुमार का सिर देने को तैयार हुआ तो रानी के रूप से भगवान विष्णु ने प्रकट होकर असली बात बताई- राजन! तुम इस कठिन परीक्षा में पास हुए। भगवान ने प्रसन्न मन से राजा से वर माँगने को कहा तो राजा बोला- आपका दिया सब कुछ हैं। हमारा उद्धार करें। उसी समय वहाँ एक विमान उतरा। राजा ने अपना राज्य पुत्र को सौंप दिया और विमान में बैठकर वैकुंठ धाम को चला गया।

कार्तिक शुक्ल एकादशी का धार्मिक महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

कार्तिक माह की शुक्ल पक्ष की एकादशी को देवउठनी एकादशी कहा जाता है। इसे देवोत्थान एकादशी, देवउठनी ग्यारस, प्रबोधिनी एकादशी आदि नामों से भी जाना जाता है। आषाढ़ शुक्ल एकादशी अर्थात देवशयनी एकादशी को देव सो जाते हैं, और इस दिन से चातुर्मास प्रारंभ होने के कारण सभी मांगलिक कार्य रुक जाते हैं। देवउठनी एकादशी को देव उठते हैं, क्योकि, एसी मान्यता है कि देवशयनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु चार माह तक क्षीरसागर में सोए थे, जो चार माह उपरान्त देवउठनी एकादशी जागे थे। इस लिए इसे देवोत्थान अर्थात देवउठनी एकादशी कहा जाता है।

देवउठनी एकादशी से सभी मांगलिक कार्य शुरू हो जाते हैं। एकादशी के दिन पवित्र नदि-तीर्थ इत्याति में स्नान-दान, होम, यज्ञ तथा उपासना आदि का विशेष महत्व है। इस दिन से सभी मांगलिक कार्यों का प्रारंभ हो जाते हैं। इस दिन भगवान विष्णु-लक्ष्मी के सम्मुख शुद्ध घी का दीपक जलाएं। हिन्दू शास्त्रोंमें कार्तिक मास को सर्वश्रेष्ठ मास माना गया है।

इस कलियुग में कार्तिक मास भगवान विष्णु की आराधना के लिए अत्यंत दुर्लभ हैं। विद्वानों का मत हैं की, भगवान विष्णु की आराधना हेतु कार्तिक मास के समान और कोई भी मास नहीं है। कार्तिक मास मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष चारों प्रदान करने वाला है। कार्तिक मास में स्नान-दान एवं तुलसी का पूजन विशेषरुप से फलदायी होता है।

शास्त्रोंक्त मान्यता हैं, की कार्तिक मास में दीपदान करने से मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। स्कंद पुराण में वर्णित है कि कार्तिक मास में यदि कोई मनुषय मंदिर, पवित्र नदी के किनारे, तुलसी के निकटा, घर के पूजा स्थान एवं शयन कक्ष में दीपक जलाता है उसे सकल सुखों की प्राप्ति सरलता से होती हैं।

कार्तिक मास में भगवान विष्णु एवं देवी लक्ष्मी की आराधना विशेष रुप से फलदायी सिद्ध होती हैं एवं उनके समक्ष दीपक जलाने से अतुल्य फलों की प्राप्ति होती हैं।

विद्वानों का मत हैं, की यदि स्नान में कुशा, दान करते समय हाथ में जल, एवं जप करते समय संख्या का संकल्प अवश्य करलेना चाहिए, अन्यथा किये गये कर्म के फल की प्राप्ति नहीं होती है।

इस वर्ष देवउठनी एकादशी से क्यों नहीं होगा मांगलिक कार्यो का शुभारंभ !

इस वर्ष 2020 में देव उठनी एकादशी 25 नवम्बर बुधवार को है। ज्योतिष के अनुसार सूर्य के वृश्चिक राशि में प्रवेश होते ही विभिन्न मांगलिक कार्य प्रारंभ हो जाते हैं। लेकिन इस वर्ष 2020 में सूर्य का वृश्चिक राशि में प्रवेश 16 नवंबर को हो रहा हैं तथा देवउठनी एकादशी 25 नवम्बर को हैं। सामान्यतः देवउठनी एकादशी के दिन से सभी प्रकार के मांगलिक कार्य प्रारंभ हो जाते हैं, सूर्य का गोचर 16 नवंबर 2020 से 15 दिसम्बर 2020 तक वृश्चिक राशि में रहेगा। तक गुरु का गोचर मकर राशि में अस्त रहेगा जो 5 अप्रेल 2021 तक रहेगा । इस वर्ष देवउठनी एकादशी के दिन से मांगलिक कार्यो का शुभारंभ नहीं होगा।

करवा चौथ व्रत 4-नवम्बर-2020

संकलन गुरुत्व कार्यालय

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष कि चतुर्थी के दिन विवाहित महिलाओं द्वारा करवा चौथ का व्रत किया जाता है। करवा का अर्थात मिट्टी के जल-पात्र कि पूजा कर चंद्रमा को अर्ध्य देने का महत्व हैं। इसीलिए यह व्रत करवा चौथ नाम से जाना जाता हैं। इस दिन पत्नी अपने पति की दीर्घायु के लिये मंगलकामना और स्वयं के अखंड सौभाग्य रहने कि कामना करती हैं। करवा चौथ के पूरे दिन पत्नी द्वारा उपवास रखा जाता हैं। इस दिन रात्रि को जब आकाश में चंद्रय उदय से पूर्व सोलह सृंगार कर चंद्र निकलने कि प्रतिक्षा करती हैं। व्रत का समापन चंद्रमा को अर्ध्य देने के साथ ही उसे छलनी से देखा जाता हैं, उसके बाद पति के चरण स्पर्श कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। ऐसी मान्यता है कि इस व्रत को करने से महिलाएं अखंड सौभाग्यवती होती हैं, उसका पति दीर्घायु होता हैं।

यदि इस व्रत को पालन करने वाली पत्नी अपने पति के प्रति मर्यादा से, विनम्रता से, समर्पण के भाव से रहे और पति भी अपने समस्त कर्तव्य एवं धर्म का पालन सुचारु रुप से पालन करें, तो एसे दंपत्ति के जीवन में सभी सुख-समृद्धि से भरा जाता हैं।

कथा : एसी मान्यता हैं, कि भगवान श्रीकृष्ण ने द्रोपदी को यह व्रत का महत्व बताया था। पांडवों के वनवास के दौरान अर्जुन तप करने के लिए इंद्रनील पर्वत पर चले गए। बहुत दिन बीत जाने के बाद भी जब अर्जुन नहीं लौटे तो द्रोपदी को चिंता होने लगी। जब श्रीकृष्ण ने द्रोपदी को चिंतित देखा तो फौरन चिंता का कारण समझ गए। फिर भी श्रीकृष्ण ने द्रोपदी से कारण पूछा तो उसने यह चिंता का कारण श्रीकृष्ण के सामने प्रकट कर दिया। तब श्रीकृष्ण ने द्रोपदी को करवाचौथ व्रत करने का विधान बताया। द्रोपदी ने श्रीकृष्ण से व्रत का विधि-विधान जान कर व्रत किय और उसे व्रत का फल मिला, अर्जुन सकुशल पर्वत पर तपस्या पूरी कर शीघ्र लौट आए।

पूजन-विधि: करवा चौथ के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर स्नान के स्वच्छ कपडे पहन कर करवा की पूजा-आराधना कर उसके साथ शिव-पार्वती कि पूजा का विधान हैं। क्योकि माता पार्वती नें कठिन तपस्या कर के शिवजी को प्राप्त कर अखंड सौभाग्य प्राप्त किया था। इस लिये शिव-पार्वती कि पूजा कि जाती हैं।

करवा चौथ के दिन चंद्रमा कि पूजा का धार्मिक और ज्योतिष दोनों ही द्रष्टि से महत्व है।

छांदोग्य उपनिषद् के अनुशार जो चंद्रमा में पुरुषरूपी ब्रह्मा कि उपासना करता है, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं, उसे जीवन में किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। उसे लंबी और पूर्ण आयु कि प्राप्ति होती हैं।

ज्योतिष दृष्टि से चंद्रमा मन का कारक देवता हैं। अतः चंद्रमा चंद्रमा कि पूजा करने से मन की चंचलता पर नियंत्रित रहता हैं। चंद्रमा के शुभ होने पर से मन प्रसन्नता रहता हैं और मन से अशुद्ध विचार दूर होकर मन में शुभ विचार उत्पन्न होते हैं। क्योकि शुभ विचार ही मनुष्य को अच्छे कर्म करने हेतु प्रेरित करते हैं। स्वयं के द्वारा किये गई गलती या एवं अपने दोषों का स्मरण कर पति, सास-ससुर और बुजुर्गो के चरणस्पर्श इसी भाव के साथ करें कि इस साल ये गलतियां फिर नहीं हों।

सर्व कार्य सिद्धि कवच



जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

द्रोपदी ने भी किया था करवा चौथ का व्रत !

संकलन गुरुत्व कार्यालय

पौराणिक कथा के अनुसार जब पांडव पुत्र अर्जुन नीलगिरी पर्वत पर तपस्या करने गए। तब किसी कारणसे अर्जुन को वहीं रूकना पड़ा। उस समय पांडवों पर अत्याधिक संकट आ पड़ा। तब चिंतित होकर द्रौपदी ने भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान किया। श्रीकृष्ण प्रकट होने पर द्रौपदी ने पांडवों के कष्टों के निवारण का उपाय पूछा।

तब कृष्ण ने द्रौपदी को आश्वस्त करते हुए कहा मैं तुम्हारी चिंता एवं संकट का कारण जानता हूं। तुम्हें इन कष्टों के निवारण के लिए एक उपाय करना होगा। शीघ्र ही कार्तिक माह की कृष्ण चतुर्थी आने वाली है, उस दिन तुम पूर्ण विधि-विधान से इस करवा चतुर्थी का व्रत रखना। तुम भगवान शिव-पार्वती एवं गणेशजी की उपासना करना, तुम्हारे सारे कष्ट शीघ्र दूर हो जाएंगे।

श्रीकृष्ण से व्रत का विधि-विधान जानकर द्रोपदी ने उसी प्रकार ही करवा चौथ का व्रत किया। जिस के फलस्वरुप शीघ्र ही द्रोपदी को अर्जुन के दर्शन हुए और द्रोपदी की सारी चिंताएं दूर हो गईं।

माता पार्वती नें भगवान शिव से पति की दीर्घायु एवं सुख-संपत्ति की कामना की विधि पूछी तब शिवजी ने माँ पार्वती को करवा चौथ व्रत की कथा सुनाई थी।

जो करवा चौथ व्रत की कथा भगवान श्रीकृष्ण ने दौपदी को सुनाई थी वह इस प्रकार हैं...

करवा नाम की एक पतिव्रता धोबिन अपने पति के साथ तुंग भद्रा नदी के किनारे स्थित गांव में रहती थी। उसका पति बूढा और निर्बल था। एक दिन जब धोबी नदी के किनारे कपड़े धो रहा था तभी वहां अचानक एक मगरमच्छ आया, और धोबी के पैर को अपने दांतों में दबाकर खींचने लगा। धोबी यह देख घबराया और जब उससे कुछ कहते नहीं बना तो वह अपनी पत्नी को करवा..! करवा..! कहकर पुकारने लगा।

पति की पुकार सुनकर उसकी पत्नी करवा वहां पहुंची, तो मगरमच्छ उसके पति को यमलोक पहुंचाने ही वाला था। तब करवा ने मगर को एक धागे से बांध दिया और मगरमच्छ को लेकर यमराज के द्वार पहुंची। वहाँ करवा ने यमराज से अपने पति की रक्षा करने की गुहार लगाई और साथ ही मगरमच्छ को उसके इस कार्य के लिए कठिन से कठिन दंड देने का आग्रह कर बोली- हे भगवन्! मगरमच्छ ने मेरे पति के पैर पकड़ लिए है। आप मगरमच्छ को इस अपराध का दंड दें। करवा की विनती सुन यमराज ने कहा अभी मगर की आयु शेष नहीं हुई है, मैं उसे अभी यमलोक नहीं भेज सकता। इस पर करवा ने यमराज से कहा यदि आपने मेरे पति को बचाने में मेरी सहायता नहीं कि तो मैं आपको श्राप दे दूंगी और नष्ट कर दूँगी।

करवा का साहस देख यमराज डर गए और मगर को यमलोक में भेज दिया। साथ ही करवा के पति को दीर्घायु होने का वरदान दिया। तब से कार्तिक कृष्ण की चतुर्थी को करवा चौथ व्रत का प्रचलित हैं।

यह करवा चौथ का व्रत आज भी विवाहित स्त्रीयां विधि-विधान के साथ करती है, और भगवान से अपने पति की लंबी उम्र की कामना करती हैं।

अहोई अष्टमी 8-नवम्बर-2020

संकलन गुरुत्व कार्यालय

अहोई अष्टमी व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन किया जाता है। विद्वानों के मतानुसार पुत्रवती महिलाओं के लिए यह व्रत अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अहोई अष्टमी व्रत में स्त्रीयां अपनी संतान की लम्बी आयु और सुखमय जीवन की कामना से यह व्रत में दिन भर उपवास रखती हैं और सायंकाल तारों का दय के समय होई का पूजन किया जाता है। तारों को करवा से अर्घ्य देने का विधान है। पूजन हेतु होई को गेरु आदि के द्वारा दीवार पर बनाई जाती है अथवा किसी मोटे वस्त्र पर होई काढकर पूजा के समय उसे दीवार पर टांग दिया जाता है।

होई के चित्रांकन में ज्यादातर आठ कोष्ठक की एक पुतली बनाई जाती है। उसी के पास साही तथा उसके बच्चों की आकृतियां बना दी जाती हैं।

विभिन्न अंचलों में अहोईमाता का स्वरूप वहां की स्थानीय परंपरा के अनुसार अंतर हो जाता है। धनाढ्य घर की स्त्रीयां चांदी की होई बनवा कर उसका पूजन करती हैं। जमीन पर गोबर से लीपकर कलश की स्थापना होती है। अहोईमाता की पूजन करके उन्हें दूध-चावल का भोग लगाया जाता है। तत्पश्चात एक पाटे पर जल से भरा लोटा रखकर अहोईअष्टमी की कथा सुनी जाती है। पौराणिक ग्रंथों में अहोईअष्टमी की कथ का उल्लेख मिलता हैं।

कथा : प्राचीन काल में एक साहुकार था, जिसकी एक बेटी, सात बेटे और सात बहुएं थी। साहुकार बेटी दीपावली में ससुराल से मायके आई थी। दीपावली में घर को लीपने के लिए घर की सातों बहुएं मिट्टी लाने जंगल में गई तो साहुकार बेटी भी उनके साथ हो ली। साहुकार की बेटी जहां मिट्टी निकाल रही थी उस स्थान पर स्याहु (स्याही) नामक जीव अपनी सात बेटों से साथ रहती थी। मिट्टी निखालते हुए ग़लती से साहूकार की बेटी की खुरपी के चोट से स्याहु (स्याही) का एक बच्चा मर गया। इस पर क्रोधित होकर स्याहू बोली मैं तुम्हारी कोख बांधूंगी।

स्याहु (स्याही) की वाणी सुनकर साहूकार की बेटी, अपनी सातों भाभीयों को बारी-बारी से विनती करती हैं कि वह उसके बदले अपनी कोख बंधवा लें। तब सबसे छोटी भाभी ननद के बदले अपनी कोख बंधवाने के लिए तैयार हो जाती है। कथा कहती हैं, इसके फल स्वरुप छोटी भाभी के जो बच्चे होते हैं वे सात दिन बाद मर जाते हैं। सात पुत्रों की इस प्रकार मृत्यु होने के बाद उसने गाँव के पंडित को बुलवाकर इसका कारण पूछा। पंडित ने सुरही गाय की सेवा करने की सलाह दी।

सुरही गाय बहु की सेवा से प्रसन्न होती है और उसे स्याहु (स्याही) के पास ले जाती है। रास्ते में थक जाने पर दोनों आराम करने लगते हैं अचानक साहुकार की छोटी बहू की नज़र एक तरफ जाती हैं, वह देखती है कि एक सांप गरूड़ पंख के बच्चे को डंसने जा रहा है और वह सांप को मार देती है। इतने में गरूड़ पंख वहां आ जाता है और खून बिखरा हुआ देखकर उसे लगता है कि छोटी बहु ने उसके बच्चे के मार दिया है इस पर वह छोटी बहू को चोंच मारना शुरू कर देता है। छोटी बहू इस पर कहती है कि उसने तो उसके बच्चे की जान बचाई है। गरूड़ पंख इस पर खुश होती है और सुरही सहित उन्हें स्याहु (स्याही) के पास पहुंचा देती है।

वहां स्याहु (स्याही) छोटी बहू की सेवा से प्रसन्न होकर उसे सात पुत्र और सात बहु होने का अशीर्वाद देती है। स्याहु (स्याही) के आशीर्वाद से छोटी बहु का घर पुत्र और पुत्र वधुओं से हरा भरा हो जाता है।

अहोईअष्टमी के व्रत में चन्द्रोदय-व्यापिनी कार्तिक कृष्ण अष्टमी को चुना जाता है। 8 नवम्बर 2020 रात्रिव्यापिनी अष्टमी होने से शास्त्रीय निर्देश के अनुसार अहोई अष्टमी का व्रत इसी दिन करना चाहिए।

वैकुण्ठ चतुर्दशी 28 नवम्बर 2020

संकलन गुरुत्व कार्यालय

कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत या वैकुण्ठ चौदस व्रत के नाम से जाना जाता हैं। मान्यता हैं, कि इस दिन स्वर्ग के द्वार हरी भक्तों के लिए खुले होते हैं। वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत में भगवान शिवजी और विष्णुजी का पूजन किया जाता हैं। वैकुण्ठ चतुर्दशी के दिन भगवान विष्णु का पूर्ण विधि-विधान से पूजन-अर्चन करना चाहिए। इस दिन भगवत गीता एवं श्रीसुक्त का पाठ करना विशेष लाभप्रद होता है। विद्वानों का मत हैं की वैकुण्ठ चतुर्दशी के दिन श्रीविष्णु का पूज एवं श्रीविष्णु की कथा का श्रवण करने से मनुष्य के समस्त पापों का नाश होता है। विष्णु मंत्र का जाप एवं स्तोत्र का विधि-विधान से पाठ करने से मनुष्य को वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

वैकुण्ठ चतुर्दशी पौराणिक कथा के अनुसार एक बार नारद जी ने भगवान श्री विष्णु से प्रश्न किया भक्ति व मुक्ति का सरल उपाय क्या हैं। नारद जी के का प्रश्न सुनकर भगवान श्री विष्णु जी ने कहां, हे देवर्षि, कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को जो मनुष्य व्रत रखते हैं, और पूर्ण श्रद्धा व भक्ति से मेरा पूजन-अर्चन करते हैं। उन्हें मेरी प्रसन्नता से वैकुण्ठ की प्राप्ति होती हैं।वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत का विशेष लाभ प्राप्ति हेतु प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर व्रत का संकल्प करना चाहिए। शास्त्रों मान्यता के अनुसार इस दिन यदि कोइ मनुषय एक सहस्त्र (एक हजार) कमल पुष्पों से भगवान श्री विष्णु और शिवजी का पूजन-अर्चन करते हैं, उन्हें संसार के समस्त बंधनों से मुक्ति मिलती हैं, और उन्हें अंत समय में वैकुण्ठ की प्राप्ति होती हैं।

कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी अर्थात वैकुण्ठ चतुर्दशी भगवान विष्णु तथा शिवजी के संयुक्त पूजन का प्रतीक है। शास्त्रोक्त मतानुसार एक बार भगवान विष्णुजी काशी में भगवान शिवजी को एक सहस्त्र (हजार) स्वर्ण कमल के पुष्प चढ़ाने का संकल्प करते हैं। लेकिन जब अनुष्ठान का समय आता हैं, तब शिवजी, विष्णुजी की परीक्षा लेने के उद्देश्य से एक स्वर्ण पुष्प कम कर देते हैं। पुष्प कम होने की बात विष्णुजी को ज्ञात होती ही वह अपने दोनों कमल नयनों को स्मरण करके अपना एक नेत्र शिवजी को अर्पित करने के लिए तैयार होते हैं। विष्णुजी की श्रद्धा-भक्ति देखकर भगवान शिव प्रकट होते हैं, आज से कार्तिक मास की इस शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी वैकुण्ठ चतुर्दशी के नाम से प्रसिद्ध होगी। मान्यता हैं की इसी दिन शिवजी ने विष्णुजी को करोड़ो सूर्य की कांति के समान सुदर्शन चक्र भेट किया था।

धनतेरस शुभ मुहूर्त सोमवार 13-नवम्बर-2020 (शुक्रवार)

संकलन गुरुत्व कार्यालय

एसी पौराणिक मान्यता हैं कि धन तेरस के दिन धनवंतरी नामक देवता अमृत कलश के साथ सागर मंथन से उत्पन्न हुए थे। धनवंतरी धन, स्वास्थय व आयु के अधिपति देवता हैं। धनवंतरी को देवों के वैध व चिकित्सक के रुप में जाना जाता हैं। धन तेरस के दिन चांदी के बर्तन-सिक्के खरीदना विशेष शुभ होता हैं। क्योकि शास्त्रों में धनवंतरी देव को चंद्रमा के समान माना गया हैं। धन तेरस के धनवंतरी के पूजन से मानसिक शान्ति, मन में संतोष एव स्वभाव में सौम्यता का भाव आता हैं। जो लोग अधिक से अधिक धन एकत्र करने कि कामना करते हों उन्हें धनवंतरी देव कि प्रतिदिन आराधना करनी चाहिए। धनतेरस पर पूजा करने से व्यक्ति में संतोष, स्वास्थय, सुख व धन कि विशेष प्राप्ति होती हैं। जिन व्यक्तियों के उत्तम स्वास्थय में कमी तथा सेहत खराब होने कि आशंकाएं बनी रहती हैं उन्हें विशेष रुप से इस शुभ दिन में पूजा आराधना करनी चाहिए। धनतेरस में खरीदारी शुभ मानी जाती हैं। लक्ष्मी जी एवं गणेश जी कि चांदी कि प्रतिमा-सिक्को को इस दिन खरिदना धन प्राप्ति एवं आर्थिक उन्नति हेतु श्रेष्ठ होता हैं। धनतेरस के दिन भगवान धनवन्तरी समुद्र से अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे, इसलिये धनतेरस के दिन खास तौर से बर्तनों कि खरीदारी कि जाती हैं। इस दिन स्टील के बर्तन, चांदी के बर्तन खरीदने से प्राप्त होने वाले शुभ फलो में कई गुणा वृद्धि होने कि संभावना बढ़जाती हैं।

धनतेरस पूजा मुहूर्त (17:28 से 17:59)

प्रदोष काल 2 घण्टे एवं 24 मिनट का होता हैं। अपने शहर के सूर्यास्त समय अवधि से लेकर अगले 2 घण्टे 24 मिनट कि समय अवधि को प्रदोष काल माना जाता हैं। अलग- अलग शहरों में प्रदोष काल के निर्धारण का आधार सूर्योस्त समय के अनुसार निर्धारीत करना चाहिये। धनतेरस के दिन प्रदोषकाल में दीपदान व लक्ष्मी पूजन करना शुभ रहता है। इस वर्ष 13 नवम्बर 2020 (धनतेरस) को भारतीय समय अनुसार नई दिल्ली में संध्या सूर्यास्त के बाद सांय 05 बज कर 28 मिनिट से आरम्भ होकर रात के 07 बजकर 52 मिनट तक का समय प्रदोष काल रहेगा। इस समया अवधि में सांय 05:32 से लेकर रात 07:28 के मध्य स्थिर लग्न (वृषभ) रहेगा, यह संयोग प्रदोष मुहुर्त समय में होने के कारण घर-परिवार में स्थायी लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। **लेकिन त्रयोदशी तिथि संध्या 05:59 तक ही रहेगी तत्पश्च्यात चतुर्दशी तिथि लग जायेगी, अतः संध्या 05:28 से लेकर 05:59 पूर्व का समय सर्वश्रेष्ठ रहेगा।**

13 नवम्बर 2020 को प्रदोष काल में भी स्थिर लग्न (वृषभ राशि) रहेगा, लक्ष्मी पूजन हेतु स्थिर लग्न का समय सबसे उतम माना जाता हैं। धन तेरस के दिन प्रदोष काल व स्थिर लग्न दोनों का संयोग संध्या 05:32 बजे से लेकर रात्री 07:28 बजे तक का समय रहेगा जिससे मुहुर्त की शुभता में वृद्धि होती हैं।

इसके अलावा अन्य चौघाडिया मुहूर्त (सूर्योदय : सुबह 06:42 बजे सूर्यास्तः संध्या 05:28 बजे)

- लाभ मुहूर्त सुबह 08.03 से 09.24 तक
- अमृत मुहूर्त सुबह 09.24 से 10.45 तक
- शुभ मुहूर्त दोपहर 12.05 से 01.26 तक
- लाभ मुहूर्त रात 08.47 से 10.26 तक
- शुभ मुहूर्त रात 12.06 से 01.45 तक
- अमृत मुहूर्त रात 01.45 से 03.24 तक

शुभ महूर्त का समय धन तेरस की पूजा के लिये विशेष शुभ रहेगा। लाभ मुहूर्त पूजन करने से प्राप्त होने वाले लाभों में वृद्धि होती हैं। शुभ काल मुहूर्त कि शुभता से धन, स्वास्थय व आयु में वृद्धि होती हैं। सबसे अधिक शुभ अमृत काल में पूजा करने का होता हैं।

नोटः उपरोक्त वर्णित सूर्यास्त का समय निरधारण नई दिल्ली के अक्षांश रेखांश के अनुसार आधुनिक पद्धति से किया गया हैं। इस विषय में विभिन्न मत एवं सूर्यास्त ज्ञात करने का तरीका भिन्न होने के कारण सूर्यास्त समय का निरधारण भिन्न हो सकता हैं। सूर्यास्त समय का निरधारण स्थानिय सूर्यास्त के अनुसार हि करना उचित होगा।

दीपावली पूजन मुहूर्त बुधवार 14-नवम्बर-2020 (शनिवार)

संकलन गुरुत्व कार्यालय

मां लक्ष्मी कि कृपा प्राप्त करने हेतु एवं उनका स्थायी निवास हो सके इस उद्देश्य से घर-दुकान-व्यवसायिक कार्यालय में दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन हेतु दिन के सबसे शुभ मुहूर्त को लिया जाता हैं।

इस वर्ष दीपावली का पर्व शनिवार, 14 नवम्बर 2020 को सूर्योदय कालीन तिथि चतुर्दशी दोपहर 02:17 बजे तक रहेगी, नक्षत्र स्वाति रात 08:09 बजे तक रहेगा, तत्पश्चयात विशाखा नक्षत्र रहेगा तथा चन्दमा का भ्रमण तुला राशि में रहेगा, सूर्योदय कालीन योग आयुष्मान् सुबह 07:32 बजे तक, तत्पश्चयात सौभाग्य योग रहेगा, कार्तिक मास कि अमावस्या तिथि दोपहर 02:17 बजे से रविवार, 15 नवम्बर 2020 सुबह 10:36 बजे तक रहेगी, दीपावली के दिन अमावस्या तिथि, प्रदोष काल, शुभ लग्न व चौघाडिया मुहूर्त विशेष का अत्याधिक महत्व होता हैं।

प्रदोष काल 2 घण्टे एवं 24 मिनट का होता हैं। अपने शहर के सूर्यास्त समय अवधि से लेकर अगले 2 घण्टे 24 मिनट कि समय अवधि को प्रदोष काल माना जाता हैं। अलग- अलग शहरों में प्रदोष काल के निर्धारण का आधार सूर्योस्त समय के अनुसार निर्धारीत करना चाहिये। प्रदोष काल मुहूर्त अपने शहर के सूर्यास्त समय से 2 घन्टे 24 मिनट तक का समय शुभ मुहूर्त समय के लिये प्रयोग किया जाता हैं. इसे प्रदोष काल समय कहा जाता हैं। इस वर्ष 14 नवम्बर 2020 (दीपावली) को भारतीय समय अनुसार नई दिल्ली में सूर्यास्त संध्या 05 बज कर 27 मिनिट पर होगा। सूर्यास्त के बाद सांय 05 बज कर 27 मिनिट से आरम्भ होकर रात के 07 बजकर 51 मिनट तक का समय प्रदोष काल रहेगा। इस समया अवधि में सांय 05:28 से लेकर रात 07:24 के मध्य स्थिर लग्न (वृषभ) रहेगा, यह संयोग प्रदोष मुहुर्त समय में होने के कारण घर-परिवार में स्थायी लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

प्रदोष काल व स्थिर लग्न दोनों का संयोग संध्या 05.28 बजे से लेकर रात्री 07:24 बजे तक का समय रहेगा जिससे मुहुर्त की शुभता में वृद्धि होती हैं। प्रदोष काल के दौरान संध्या 05:28 बजे से 07:07 तक लाभ चौघडिया होने से मुहुर्त की शुभता में वृद्धि होती हैं।

जिसमें विशेष रूप से श्री गणेशपूजन, श्री महालक्ष्मी पूजन, कुबेर पूजन, व्यापारिक खातों का पूजन, दीपदान एवं इस समय के अंतर्गत अपने सेवकों को उपहार देना शुभ रहता हैं। इस मुहूर्त समय में अपने परिवार के बडे सदस्यों एवं मित्र वर्ग से आशीर्वाद लेना एवं उन्हें मिठाईयां, वस्त्र व उपहार आदि देना भी शुभ रहता हैं। विद्वानो के मत से इस मुहूर्त में परिवार के बडे सदस्यों एवं मित्र वर्ग से प्राप्त होने वाला आशीर्वाद शुभ फलप्रद सिद्ध होता हैं। इस मुहूर्त समय में मंदिर इत्यादि धर्मस्थलो पर दान इत्यादि करना भी विशेष लाभ दायह एवं कल्याणकारी होता हैं।

दीपावली चौघडियां मुहूर्त

दीपावली चौघडिया मुहूर्त समय को घर व परिवार में लक्ष्मी पूजन करने के लिये शुभ माना जाता हैं। श्रीमहालक्ष्मी पूजन एवं दीपावली का महापर्व कार्तिक कृष्ण अमावस्या में प्रदोष काल एवं रात्रि समय में स्थिर लग्न समय में करना शुभ होता है लक्ष्मी पूजन, दीप प्रजवल्लित करने के लिये प्रदोषकाल मुहूर्त समय ही विशेषतया शुभ माना गया हैं।

इसके अलावा अन्य चौघाडिया मुहूर्त (सूर्योदय : सुबह 06:43 बजे सूर्यास्त: संध्या 05:28 बजे)

- शुभ मुहूर्त सुबह 08:04 से 09:24 तक
- लाभ मुहूर्त दोपहर 01:26 से 02:47 तक
- अमृत मुहूर्त दोपहर 02:47 से 04.07 तक
- लाभ मुहूर्त संध्या 05:28 से 07:07 तक
- शुभ मुहूर्त रात 08:47 से 10:26 तक
- अमृत मुहूर्त रात 10:26 से 12:06 तक

नोट: उपरोक्त वर्णित सूर्यास्त का समय निरधारण नई दिल्ली के अक्षांश रेखांश के अनुसार आधुनिक पद्धति से किया गया हैं। इस विषय में विभिन्न मत एवं सूर्यास्त ज्ञात करने का तरीका भिन्न होने के कारण सूर्यास्त समय का निरधारण भिन्न हो सकता हैं। सूर्यास्त समय का निरधारण स्थानिय सूर्यास्त के अनुसार हि करना उचित होगा।

धनत्रयोदशी पर यम को करे दीपदान होगा अकालमृत्यु रक्षण ?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

धनत्रयोदशी के दिन किये जाने वाले कर्म में एक महत्वपूर्ण कर्म यम के निमित्त किया जाने वाला दीपदान हैं।

हिन्दू धर्म शास्त्र में निर्णयसिन्धु के अंतर्गत निर्णयामृत और स्कन्दपुराण उल्लेख हैं कि कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी की संध्या प्रदोष काल के समाय घर से बाहर यम के निमित्त दीपदान करने से परिवार में अकालमृत्यु का भय दूर होता हैं।

शास्त्रोंक्त मत के अनुसार यमदेवता भगवान सूर्य और माता संज्ञा के पुत्र हैं। वैवस्वत मनु, अश्विनीकुमार एवं रैवंत उनके भाई हैं तथा यमुना उनकी बहन है। यमदेव की सौतेली माँ छाया से शनि, तपती, विष्टि, सावर्णि मनु आदि 10 सौतेले भाई -बहन भी हैं। पौराणिक मान्यता के अनुसार यम शनि ग्रह के अधिदेवता हैं।

यमदेवता प्रत्येक प्राणी के शुभ-अशुभ कर्मों के अनुसार फल देने का कार्य करते हैं। इसी कारण उन्हें यमदेवता को धर्मराज कहा गया हैं। क्योकि अपने कर्तव्य के प्रति यमदेव त्रुटि रहित कार्य व्यवस्था की स्थापना करते हैं। यमदेव का अपना अलग से एक लोक हैं, जिसे उनके नाम से ही यमलोक कहा जाता हैं। ऋग्वेद में उल्लेख है कि यमलोक में निरन्तर अनश्वर अर्थात् जिसका नाश न हो ऐसी ज्योति जगमगाती रहती हैं। यमलोक अनश्वर हैं और यमलोक में कोई मरता नहीं हैं।

यमदेवताके स्वरुप का वर्णन करते हुवे ग्रंथकारो ने लिखा हैं। यम की आँखें लाल हैं, उनके हाथ में पाश रहता हैं। इनका शरीर नीला है और ये देखने में उग्र हैं। भैंसा इनकी सवारी हैं। ये साक्षात् काल हैं।

यमदीपदान:

यमदीपदान के विषय में स्कन्दपुराण में कहा गया है कि कार्तिक के कृष्णपक्ष में त्रयोदशी के प्रदोषकाल में यमराज के निमित्त दीप और नैवेद्य समर्पित करने पर



अकाल मृत्यु का नाश होता हैं। यह स्वयं यमराज का कथन था।

यमदीपदान केवल प्रदोषकाल में करने का विधान हैं। यमदीपदान के लिए मिट्टी का एक बड़ा दीपक लेकर उसे उसे स्वच्छ जल से धो लेना चाहिए। फिर स्वच्छ रुई लेकर दो लम्बी बत्तियाँ बना लें।

बत्तियां इतनी लम्बी बनाये की दीपक से उसके दोनों और के छोर निकले हुए हो। बत्तियाँ को दीपक में एक-दूसरे पर इस प्रकार रखें कि दीपक के बाहर बत्तियों के चार मुँह दिखाई दें। अब दीपक को तिल के तेल से भर दें और साथ ही उसमें एक छुटकी काले तिल भी डाल दें।

प्रदोषकाल में इस प्रकार विधि से तैयार किए गए दीपक का रोली, अक्षत एवं पुष्प से पूजन करना चाहिए।

तत पश्चात् घर के मुख्य द्वार पर बाहर थोड़ी सी खील, चावल अथवा गेहूँ से ढेरी बनाकर उसके ऊपर दीपक को रखना चाहिए। दीपक को ढेरी पर स्थापित करने से पूर्व

उसे प्रज्वलित कर लें और दक्षिण दिशा की ओर देखते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए चारमुँह के दीपक को खील, चावल, गेहूँ आदि की ढेरी के ऊपर रख दें।

मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालेन च मया सह।
त्रयोदश्यां दीपदानात् सूर्यजः प्रीयतामिति॥

अर्थात्: त्रयोदशी को दीपदान करने से मृत्यु, पाश, दण्ड, काल और लक्ष्मी के साथ सूर्यनंदन यम प्रसन्न हों।

उक्त मन्त्र के उच्चारण के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए यमदेव को दक्षिण दिशा में नमस्कार करें।

ॐ यमदेवाय नमः। नमस्कारं समर्पयामि॥

तत पश्चयात पुष्प दीपक के पास रख दें और पुनः हाथ में नैवेद्यं के रुप में एक बताशा लें तथा निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए उसे दीपक के समीप ही रख दें ।

ॐ यमदेवाय नमः। नैवेद्यं निवेदयामि॥

तत पश्चयात हाथ में थोड़ा सा जल लेकर आचमन के निमित्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए दीपक के समीप जल को छोड़े।

ॐ यमदेवाय नमः। आचमनार्थे जलं समर्पयामि॥

तत पश्चयात पुनः यमदेव को **ॐ यमदेवाय नमः।** मन्त्र का उचारण करते हुए दक्षिण दिशा में नमस्कार करें।

यमदीपदान के पीछे छुपा गूढ आध्यात्मिक रहस्य

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शास्त्रोंक्त मत के अनुसार धनत्रयोदशी के किये जाने वाले कर्मो में यमदीपदान को विशेष प्रमुखता दी जाती हैं। लेकिन धनत्रयोदशी पर यमदीपदान क्यों किया जाता हैं इस के पीछे छुपी धार्मिक मान्यता से कम लोग ही परीचित होंगे!

हिन्दू धर्म में किये जाने वाली प्रत्येक व्रत-तयोहार, उत्सव, पूजन विधि-विधान, इत्यादि के पीछे कोई न कोई पौराणिक कथा अवश्य जुडी होती हैं । इसी प्रकार धनत्रयोदशी पर यमदीपदान करना भी इसी प्रकार पौराणिक कथा से जुड़ा हुआ हैं। स्कन्दपुराण में वैष्णवखण्ड के अन्तर्गत कार्तिक मास महात्म्य में इससे सम्बन्धित पौराणिक कथा का संक्षिप्त उल्लेख किया गया हैं।

पौराणिक कथा के अनुसार एक बार यमदूत बालकों एवं युवाओं के प्राण हरते समय परेशान हो उठे। यमदूत को बड़ा दुःख हुआ कि वे बालकों एवं युवाओं के प्राण हरने का कार्य करते हैं, परन्तु यमदूत करते भी क्या? उनका कार्य ही प्राण हरना ही हैं। यमदूत अपने कर्तव्य से वे कैसे विमुख होते? यमदूत के लिए एक और कर्तव्यनिष्ठा का प्रश्न था, दुसरी ओर जिन बालक एवं युवाओं का प्राण हरकर लाते थे, उनके परिजनों के दुःख एवं विलाप को देखकर स्वयं को होने वाले मानसिक क्लेश का प्रश्न था। ऐसी स्थिति में जब यमदूत बहुत दिन तक रहने लगे, तो विवश होकर वे अपने स्वामी यमराज के पास पहुँचे और कहा कि महाराज आपके आदेश के अनुसार हम प्रतिदिन वृद्ध, बालक एवं युवा व्यक्तियों के प्राण हरकर लाते हैं, परन्तु जो अपमृत्यु के शिकार होते हैं, उन बालक एवं युवाओं के प्राण हरते समय हमें मानसिक क्लेश होता हैं। उसका कारण यह है कि उनके परिजन अत्याधिक विलाप करते हैं और जिससे हमें बहुत अधिक दुःख होता हैं। क्या बालक एवं युवाओं को असामयिक मृत्यु से छुटकारा नहीं मिल सकता है?

यमदूत के मुख से इतना सुनकर धर्मराज बोले दूतगण तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया हैं। इससे मृत्यु लोकवासियों का कल्याण होगा। कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को प्रतिवर्ष प्रदोषकाल में जो अपने घर के दरवाजे पर निम्नलिखित मन्त्र से उत्तम दीप देता हैं, वह अपमृत्यु होने पर भी यहाँ ले आने के योग्य नहीं है ।

मृत्युना पाश्दण्डाभ्यां कालेन च मया सह।
त्रयोदश्यां दीपदानात् सूर्यजः प्रीयतामिति॥

उसके बाद से ही अपमृत्यु अर्थात् असामयिक मृत्यु से बचने के उपाय के रूप में धनत्रयोदशी पर यम के निमित्त दीपदान एवं नैवेद्य समर्पित करने का कर्म प्रतिवर्ष किया जाता हैं।

यमराज की सभा: यमराज की सभा का वर्णन करते हुए ग्रंथ कारों ने लिखा हैं कि देवलोक की चार प्रमुख सभाओं में से एक है यमसभा । इस सभा का निर्माण विश्वकर्मा जी ने किया था। यमसभा अत्यन्त विशाल सभा है, इसकी 100 योजन लम्बाई एवं 100 योजन चौड़ाई है। इस प्रकार यह वर्गाकार है। यमसभा का तापक्रम अत्यन्त सुहावना अर्थात् न तो अधिक शीतल है और न ही अधिक गर्म है । यमसभा सभी के मन को अत्यन्त आनन्द देने वाली है। यमसभा में न शोक, न बुढ़ापा है, न भूख है, न प्यास है और न ही यमसभा में कोई अप्रिय वस्तु हैं। इस प्रकार यमसभा दुःख, कष्ट एवं पीड़ा के करणों का अभाव रहता हैं। यमसभा में दीनता, थकावट अथवा प्रतिकूलता नाममात्र को भी नही है। यमसभा में सदैव पवित्र सुगन्ध वाली पुष्प मालाएँ एवं अन्य कई रम्य वस्तुएँ विद्यमान रहती हैं।

यमसभा में अनेक राजा, ऋर्षि और ब्रह्मर्षि यमदेव की उपासना करते रहते हैं। ययाति, नहुश, पुरु, कार्तवीर्य, अरिष्टनेमी, कृति, निमि, मान्धाता, प्रतर्दन, शिवि आदि राजा मृत्यु के उपरान्त यहां बैठकर धर्मराज की उपासना करते हैं। कठोर तपस्या करने वाले, उत्तम व्रत का पालन करने वाले सत्यवादी, शान्त, संन्यासी तथा अपने पुण्यकर्म से शुध्द एवं पवित्र महापुरुषों का ही यमसभा में प्रवेश होता हैं।

श्री धनवंतरि व्रत कथा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

प्रथम अध्याय

सनकादिक मुनियों ने सूत जी से कहा-हे सूत महामुने! आपने भगवान् धनवंतरि की पूजा-विधि का विस्तार पूर्वक वर्णन किया, किन्तु इसे सुनने पर भी हमें तृप्ति नहीं हुई। अतः श्री धनवंतरि का माहात्म्य अधिक विस्तार से बताइए।

मुनिश्रेष्ठ सुत जी ने कहा-हे मुनियों! आप पापविनाशिनी कथा को सुनिए। इस कथा को सुनने से सभी रोगों का नाश होता हैं :

एक समय नारद जी सभी लोगों के कल्याण की इच्छा से समुद्र द्वीप पर्वत सहित सम्पूर्ण पृथ्वी का भ्रमण कर रहे थे। वहाँ उन्होंने सभी लोगों को विविध रोगों से दुःखी देखा। यह देखकर नारद जी चिन्तित हुए और वहाँ से स्वर्ग जा पहुँचे। स्वर्ग में इन्द्र आदि देवता भी रोगी हो रहे थे। यह देखकर नारद जी की चिन्ता और बढ़ गई। चिन्ता करते हुए वे वैकुण्ठ में पहुँचे।



वैकुण्ठ में नारद जी ने शंख चक्र अमृत कलश धारी और अभय हस्त धनवंतरि विष्णु को देखा। श्री (लक्ष्मी), भू (पृथ्वी) और नीला देवी उनकी चरण सेवा कर रही थी। ऐसे महात्मा धनवंतरि रुपी श्री विष्णु को नारद जी ने भक्ति पूर्वक प्रणाम किया और हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करने लगे।

श्री नारद जी बोले-हे देवों के देव जगन्नाथ भक्तों पर दया करने वाले दीनबन्धु दयासागर जगत् की रक्षा में तत्पर आप मुझे शरणागत जानकर सन्तुष्ट कीजिए।

हे भगवन् मैंने पृथ्वी आदि सभी लोकों में पर्यटन किया और वहाँ के निवासी जनों को नाना रोगों से दुःखी पाया। किसी को ज्वर ने गिराया हैं, तो किसी को राज यक्ष्मा ने धर दबाया। कोई अतिसार, श्वास, खाँसी,संग्रहणी और पाण्डुरोगादि से पीड़ित हैं। कोई वातरोगों से पीड़ित हैं। कोई फोड़े, गिल्टी, प्लेग आदि से युक्त सन्निपात रोग और प्रमेहादि रोगों से घेरे गये हैं। इस प्रकार लोग अनेक रोगों से ग्रस्त और दुःखी हैं। उन्हें देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ और बारम्बार मैंने चिन्ता की। मैंने सोचा कि ये लोग कैसे नीरोग होंगे और प्रसन्न होंगे ? इसी चिन्ता से मन में व्याकुल होकर मैं आपकी शरण में आया हूँ।

हे विश्वात्मन् शरणागत भूम्यादि लोकों की आप रक्षा कीजिये। त्रैलोक्य में आपके अतिरिक्त इनका कोई रक्षक नहीं हैं।

भगवान् श्री विष्णु नारद जी के उक्त वचनों को सुनकर गम्भीर वाणी से बोले-हे मुने आप भय न कीजिये। मैं 'आदि धनवंतरि' इन्द्र से आयुर्वेद प्राप्त कर पुनः अवतार लेकर सभी लोकों को नीरोग करूँगा। मैं कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी, गुरुवार, हस्त नक्षत्र के समय अवतार लेकर 'आयुर्वेद' का उद्धार करूँगा। इसमें सन्देह न करो।

द्वितीय अध्याय:

भगवान् विष्णु के उक्त वचनों को सुनकर नारद

मुनि अति प्रसन्न हुए और हर्ष से बोले-हे भगवन् आप 'धनवंतरि पूजा' की विधि बताइए। 'धनवंतरि पूजा में कौन सा ध्यान या विधान किया जाए ? उसका नियम क्या हैं ? उसका फल क्या हैं ? किस समय, किसने उस पूजा को किया हैं ? पूजा में क्या क्या चीजें चाहिए ? हे देव देवेश्वर लोकों पर अनुग्रह करने की इच्छा से कृपा पूर्वक यह सब मुझे बताइए। श्री भगवान् ने कहा- हे मुने तुमने लोकोपकार की इच्छा से पूछा हैं। अतएव तुमसे 'पापनाशिनी, रोगनाशिनी कथा' कहता हूँ।

धनगुप्त राजा के निमित्त कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी गुरुवार हस्त नक्षत्र के समय मैं रात्रि के प्रथम प्रहर में गुप्त धन के समान 'धनवंतरि' नाम से अवतीर्ण होता हूँ। अतएव वह दिन संसार में 'धनत्रयोदशी' (धनतेरस) नाम से प्रसिद्ध होगा। यह तिथि सभी कामनाओं को देने वाली हैं।

नारद जी ने पूछा- हे भगवन् कृपया विस्तार पूर्वक बताइए कि बड़ बागी धनगुप्त कहाँ हुआ और आपके दर्शन की प्राप्ति के लिए उसने कौनसा व्रत किया था और हे दयासागर नारायण उसने आपका पूजन क्यों किया था?

श्री भगवान् ने कहा- पहले अवन्तीपुर (उज्जैन) में 'धनगुप्त' नामक राजा धर्ममार्ग से प्रजा का पालन करने वाला हुआ था। वह सभी लोगों का प्यारा, उदारचित्त था। उसे क्षयरोग हो गया। उससे वह दिन-रात पीड़ित होने लगा। पीड़ा की निवृत्ति के लिए उसने जप, होम, नाना प्रकार की औषधियाँ की, परन्तु नीरोग न हुआ। तब वह खिन्न होकर विलाप करने लगा।

राजा की स्त्री त्रिलोक में प्रसिद्ध, पतिव्रता, सदाचारिणी थी। उसने भी पति के मंगल की आकांक्षा से अनेक नियम, उपवास आदि किए, पर इससे भी राजा नीरोग न हुआ और अन्त में वह स्त्री भी अतीसार रोग से रोगिणी हो गई। हे मुने उस राजा से उस पतिव्रता स्त्री के पाँच पुत्र हुए। वे क्रमशः आमवात, प्लीहा, कुष्ठ, खाँसी और श्वास से पीड़ित हुए। उनको भी रोग से छुटकारा न मिला। राजा और रानी अपने पुत्रों को रोगार्त देखकर अत्यन्त दुःखी हुए।

स्त्री-पुत्रों को रोग के सागर से मुक्त कराने की इच्छा से चिन्तित राजा घोर वन को चला गया। वन में राजा ने महामुनि 'भरद्वाज' को बैठे देखा। राजा ने उन्हें भक्तिपूर्वक प्रणाम किया और अपना दुःख बताया। महामुनि भरद्वाज से राजा ने रोग-कष्ट निवारण हेतु उपाय पूछा।

भरद्वाज मुनि ने कहा-हे राजन् तुम्हारा वृत्तान्त मैंने जान लिया। तुम अति शीघ्र महाविष्णु धनवंतरि की शरण में जाओ। मनुष्य उनके दर्शन मात्र से घोर दुस्तर रोगों से मुक्त हो जाता हैं। राजा ने भरद्वाज मुनि से उक्त बात सुनकर उनसे पूछा-हे महात्मन् आप कृपा कर उनकी आराधना विधि मुझे भली-भाँति बताइए। ऋषि भरद्वाज ने कहा-हे महाभाग राजन् उस विधि को मैं कहता हूँ, सावधान चित्त से सुनिए।

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के शुभ दिन, प्रातः काल उठकर शौच-मुख मार्जन आदि से निवृत्त होकर स्नान करे। शुद्ध वस्त्र आदि धारण कर गुरु से प्राप्त उपदेशानुसार भगवान् धनवंतरि का ध्यान करे। निम्न मन्त्र पढ़कर व्रत का प्रारम्भ करे :

करिष्यामि व्रतं देव त्वद् भक्तस्त्वत् परायणः।
श्रियं देहि जयं देहि, आरोग्यं देहि मे प्रभो

अर्थात् हे देव मैं आपका भक्त हूँ, आप में चित्त लगाकर आपका व्रत करुँगा। आप मुझे लक्ष्मी दीजिए, विजय दीजिए, आरोग्य दीजिए।

श्री धनवंतरि से उक्त प्रार्थना कर, उनकी षोडशोपचार से पूजा करे। पूजा करने के बाद तेरह धागों का सूत्र लेकर तेरह गाँठ वाला 'दोरक' बनाए। इस 'दोरक' की भक्तिपूर्वक पूजा करे और निम्न मन्त्र पढ़कर पुरुषों के दाहिने हाथ में तथा स्त्रियों के बाँएँ हाथ में बाँधे:

धन्वन्तरे महाभाग जरारोगनिवारक।
दोररुपेण मां पाहि, सकुटुम्बं दयानिधे॥
आधिव्याधिजरा मृत्यु भयादस्मादहर्निशम्।
पीड्यमानं देवदेव रक्ष मां शरणागतम्॥

अर्थात्-हे धन्वन्तरे हे महाभाग आप जरा (बुढापा) और रोग के मिटाने वाले हैं। इसलिए हे दयानिधे आप इस सूत्ररुप से सकुटुम्ब मेरी रक्षा कीजिये। मैं दिन-रात आधि (मानसिक दुःख) और व्याधि (रोग), जरा (बुढापा) तथा मृत्यु के भय से त्रस्त हो रहा हूँ। हे देव-देव शरण में आए हुए मेरी अब आप रक्षा करें। सूत्र बन्धन के बाद 'देव देव धनवंतरि' को भक्ति पूर्वक 'अर्घ्य' निवेदन करे। अर्घ्य प्रदान करने का मन्त्र इस प्रकार हैं :

जातो लोक हितार्थाय, आयुर्वेदाभिवृद्धये।
जरा मरण नाशाय, मानवानां हिताय च॥
दुष्टानां निधनायाय, जात्त धन्वन्तरे प्रभो।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं, देव देव कृपा कर॥

अर्थात्- हे देव देव, दया कारी धनवंतरि! आप लोकापकार के लिए, आयुर्वेद की अभिवृद्धि के निमित्त, मनुष्यों के हित तथा जरा मरण का नाश करने के लिए अवतरित हुए हैं। मैं आपको अर्घ्य प्रदान करता हूँ। इसे स्वीकार कीजिए।

अर्घ्य प्रदान करने के बाद ब्राह्मण को बायन दान करे। बायन दान के लिए गेहूँ के आटे में दूध, घी डालकर पकाए। पकने पर शक्कर डाले। केसर, कपूर, इलायची, लौंग, जावित्री डालकर इस सिद्ध नैवेद्य को भगवान् को अर्पित करे। आधा प्रसाद वेदज्ञ ब्राह्मण को अर्पित करे और आधा स्त्री पुत्रादि सहित स्वयं प्रसाद स्वरुप ग्रहण करे। हे राजन् इस विधि से व्रत करने से साक्षात् धनवंतरि स्वयं प्रकट होकर तुम्हारा अभीष्ट सिद्ध करेंगे। इतनी कथा सुनाकर भरद्वाज मुनि ने विश्राम लिया।

तृतीय अध्याय:

सूत जी बोले-हे मुनि वरों राजा धनगुप्त ने मुनि की आज्ञा पाकर उनके कहे अनुसार तेरह वर्ष पर्यन्त भक्ति पूर्वक व्रत किया।

एक दिन व्रत समाप्ति के अवसर पर साक्षात् धनवंतरि प्रकट हुए। राजा ने साष्टांग प्रणाम कर उनकी स्तुति की। भक्ति पूर्वक की गई स्तुति स्वीकार कर भगवान् धनवंतरि ने कहा-हे राजन् अब तुम डरो मत, तुम्हारा मंगल होगा। तुम हमसे वर माँगो। राजा ने यह सुनकर उन्हें पुनःसाष्टांग प्रणाम किया और उनकी स्तुति की:

धन्वन्तरे नमस्तुभ्यं, नमो ब्रह्माण्ड नायक।
सुरासुराराधितांघ्रे, नमो वेदैक गोचर ।
आयुर्वेद स्वरुपाय, नमस्ते जगदात्मने॥१॥
प्रपन्नं पाहि देवेश जगदानन्द दायक।
दया निधे महा देव त्राहि मामपराधिनम्।
जन्म मृत्यु जरारोगैः, पीड़ितं सकुटुम्बिनम्॥२॥

अर्थात्- हे धन्वन्तरे ब्रह्माण्ड नायक आपको नमस्कार! आयुर्वेद स्वरुप जगत् के अन्तर्यामी आपको नमस्कार। हे जगत् के सुखदायी देव देव दया सागर, महा देव आप मुझ शरणागत अपराधी की रक्षा करें।
मैं कुटुम्ब सहित जन्म मृत्यु जरा आदि रोगों से पीड़ित हूँ।

भगवान् धनवंतरि ने यह स्तुति सुनकर मेघ गर्जन के समान गम्भीर वाणी से मुस्कुराते हुए कहा-हे महा राज ठीक हैं, ठीक हैं, मैं तुम्हारी स्तुति से प्रसन्न हूँ। अब हमसे वर माँग लो।

राजा बोले-हे देव यदि आप प्रसन्न हैं, तो सबसे पहले स्त्री पुत्रों सहित मुझे आरोग्य दीजिए।

यह प्रार्थना सुनकर भगवान् ने कहा-राजन् तुमने जो प्रार्थना की हैं, वह पूर्ण होगी। इसके अतिरिक्त भी मैं वर देता हूँ। उसे सावधान होकर सुनो : तुमने जिस प्रकार यह व्रत किया हैं। इसी तरह जो व्रत करेंगे, उनको आरोग्य प्रदान कर मैं उन्हें अपनी स्थिर भक्ति दूँगा। सूत जी बोले-भगवान् धनवंतरि यह कहकर अन्तर्धान हो गए और राजा धनगुप्त अपनी पुरी में लौट गया। राजा नित्य स्त्री-पुत्रों सहित अमृत पाणि धनवंतरि की स्तुति करने लगा। उसने पृथ्वी लोक में नाना प्रकार के सुख भोगे और अन्त में भगवान् धनवंतरि की कृपा से मोक्ष पद प्राप्त किया। इस प्रकार मैंने तुम लोगों को भगवान् धनवंतरि की जन्मोत्सव कथा सुनाई। इसके सुनने से सभी पापों का नाश होता हैं।

धनतेरस से जुडी पौराणिक कथा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

भारत में धनतेरस पर्व से संबंघित लोकप्रिय कथा प्रचलित है। पुराने जमाने में एक राजा हिम हुए। उनके यहां पुत्र हुआ, तो उसकी जन्म-कुंडली बनवाई गई। ज्योतिषियों ने कुंडली का विश्लेषण कर के कहा कि राजकुमार अपनी शादी के चौथे दिन सांप के काटने से मर जाएगा। इस पर राजा चिंतित रहने लगे। राजकुमार की उम्र 16 साल की हुई, तो उसकी शादी एक सुंदर, सुशील और समझदार राजकुमारी से कर दी गई। राजकुमारी मां लक्ष्मी की परम भक्त थीं। राजकुमारी को भी अपने पति पर आने वाली विपत्ति के विषय में पता चल गया।

राजकुमारी काफी दृढ इच्छाशक्ति वाली थीं। उसने चौथे दिन का इंतजार पूरी तैयारी के साथ किया। जिस रास्ते से सांप के आने की आशंका थी, वहां सोने-चांदी के सिक्के और हीरे-जवाहरात आदि बिछा दिए गए। पूरे घर को रोशनी से जगमगा दिया गया। कोई भी कोना खाली नहीं छोड़ा गया अर्थात सांप के कमरे में आने के लिए कोई रास्ता अंधेरा नहीं छोड़ा गया। इतना ही नहीं, राजकुमारी ने अपने पति को जगाए रखने के लिए उसे पहले कहानी सुनाई और फिर गीत गाने लगी।

इसी दौरान जब मृत्यु के देवता यमराज ने सांप का रूप धारण करके कमरे में प्रवेश करने की कोशिश की, तो रोशनी की वजह से उनकी आंखें चुंधिया गईं। इस कारण सांप दूसरा रास्ता खोजने लगा और रेंगते हुए उस जगह पहुंच गया, जहां सोने तथा चांदी के सिक्के रखे हुए थे। डसने का मौका न मिलता देख, विषधर भी वहीं कुंडली लगाकर बैठ गया और राजकुमारी के गाने सुनने लगा। इसी बीच सूर्य देव ने दस्तक दी, यानी सुबह हो गई। यम देवता वापस जा चुके थे। इस तरह राजकुमारी ने अपनी पति को मौत के पंजे में पहुंचने से पहले ही छुड़ा लिया। यह घटना जिस दिन घटी थी, वह धनतेरस का दिन था, इसलिए इस दिन को 'यमदीपदान' भी कहते हैं।इस दिन पूरी रात घर के बाहर दीप जलाकर रखते हैं ताकि मृत्यु के देवता यमराज को घर में प्रवेश करने से रोका जा सके।

विष्णु का धनवंतरि अवतार

धनतेरस से संबंधित लोगों के बीच एक और कथा भी प्रचलित हैं। जब सुर और असुर मिलकर सागर मंथन कर रहे थे, तो कई बहुमूल्य चीजों की प्राप्ति हुई। इनमें सबसे अहम था अमृत। यह अमृत कलश धनवंतरि के हाथों में था। धनवंतरि को यूं तो देवताओं का वैद्य कहते हैं, पर उनमें भगवान विष्णु का अंश भी मौजूद था। धनतेरस के दिन धनवंतरि की उत्पत्ति होने के कारण हम धनतेरस मनाते हैं।

श्री धनवंतरि अष्टोत्तरशत नामावली

१. ॐ अमृतवपुषे नमः।
२. ॐ धर्मध्वजाय नमः।
३. ॐ धरावल्लभाय नमः।
४. ॐ धीराय नमः।
५. ॐ धिषणवंद्याय नमः।
६. ॐ धार्मिकाय नमः।
७. ॐ धर्मनियामकाय नमः।
८. ॐ धर्मरुपाय नमः।
९. ॐ धीरोदात्त गुणोज्ज्वलाय नमः।
१०. ॐ धर्म विदे नमः।
११. ॐ धराधर धारिणे नमः।
१२. ॐ धात्रे नमः।
१३. ॐ धातृ गर्व भिदे नमः।
१४. ॐ पुण्यपुरुषाय नमः।
१५. ॐ धाराधर रुपाय नमः।
१६. ॐ धार्मिक प्रियाय नमः।
१७. ॐ धार्मिक वन्धाय नमः।
१८. ॐ धार्मिक जन ध्याताय नमः।
१९. ॐ धनदादि समर्चिताय नमः।
२०. ॐ धन्वीने नमः।
२१. ॐ धर्मनारायणाय नमः।
२२. ॐ आदित्यरुपाय नमः।
२३. ॐ अमोघाय नमः।
२४. ॐ धीषण पूज्याय नमः।
२५. ॐ धीषणाग्रज सेव्याय नमः।
२६. ॐ धीषण वन्धाय नमः।
२७. ॐ धीषणा दायकाय नमः।
२८. ॐ धार्मिक शिखामणये नमः।
२९. ॐ धी प्रदाय नमः।
३०. ॐ धी रुपाय नमः।
३१. ॐ ध्यान गम्याय नमः।
३२. ॐ ध्यान धात्रे नमः।
३३. ॐ ध्यातृ ध्येय पदाम्बुजाय नमः।
३४. ॐ धुप दीपादि पूजा प्रियाय नमः।
३५. ॐ धूमादि मार्गदर्शकाय नमः।
३६. ॐ तेजोकृत अग्निरूपाय नमः।
३७. ॐ प्रभंजन वायुरुपाय नमः।
३८. ॐ सौम्याय चन्द्रमसे नमः।
३९. ॐ बृहस्पति प्रसूता औषध द्रव्य पतये नमः।
४०. ॐ अमृतांशुदभवाय नमः।
४१. ॐ धर्म मार्गे विघ्न कृत् सूदनाय नमः।
४२. ॐ धनुर्वातादि रोगघ्नाय नमः।
४३. ॐ धारणा मार्गदर्शकाय नमः।
४४. ॐ ध्यातृ पाप हराय नमः।
४५. ॐ वरदाय धन धान्य प्रदाय नमः।
४६. ॐ धेनु रक्षा धुरिणाय नमः।
४७. ॐ धरणी रक्षण धुरिणाय नमः।
४८. ॐ ओजस्तेजो द्युतिधराय नमः।
४९. ॐ मोहिनिरूपाय नमः।
५०. ॐ समुद्रमंथनोद्भवाय नमः।
५१. ॐ धर्म धुरन्धराय नमः।
५२. ॐ तुष्टाय पुष्टाय नमः।
५३. ॐ वेद्याय वैद्याय नमः।
५४. ॐ सोमपो अमृतपः सोमाय नमः।
५५. ॐ पुरुष पुरुषोत्तमाय नमः।
५६. ॐ वाचस्पतये नमः।
५७. ॐ भेषजे भिषजे नमः।
५८. ॐ महा कृतवे नमः।
५९. ॐ महा यज्ञाय नमः।
६०. ॐ हविषे महा हविषे नमः।
६१. ॐ लोक बन्धवे माधवाय नमः।
६२. ॐ धनगुप्त वरदाय भक्त वत्सलाय नमः।
६३. ॐ इंद्र कर्मणे नमः।
६४. ॐ पावनाय नमः।
६५. ॐ अमृताशाय नमः।
६६. ॐ अमृत वपुषे नमः।
६७. ॐ सर्वतो सुखाय नमः।
६८. ॐ न्यग्रोधौदुम्बराय नमः।
६९. ॐ अश्वत्थाय नमः।
७०. ॐ अणवे नमः।
७१. ॐ बृहते नमः।
७२. ॐ धनुर्धराय नमः।
७३. ॐ धनुर्वेदाय नमः।
७४. ॐ प्रियकृते प्रीति वर्धनाय नमः।
७५. ॐ ज्योतिषे नमः।
७६. ॐ सुखदाय नमः।
७७. ॐ स्वस्तिने स्वस्ति कृते नमः।
७८. ॐ कुण्डलिने नमः।
७९. ॐ चक्रिणे विक्रमिणे नमः।
८०. ॐ शब्द सहाय नमः।
८१. ॐ दुःस्वप्न नाशनाय नमः।
८२. ॐ आधार निलयाय नमः।
८३. ॐ प्राणाय प्राणदाय नमः।
८४. ॐ प्राण निलयाय नमः।
८५. ॐ प्राण धृते नमः।
८६. ॐ प्राण जीवनाय नमः।
८७. ॐ तत्वाय तत्व विदे नमः।
८८. ॐ जन्ममृत्यु जरागाय नमः।
८९. ॐ यज्ञाय महेज्याय नमः।
९०. ॐ क्रतवे यज्ञ वाहनाय नमः।
९१. ॐ यज्ञ भृते नमः।
९२. ॐ यज्ञाय यज्ञांगाय नमः।
९३. ॐ इज्याय यज्ञिने नमः।
९४. ॐ यज्ञ भुजे नमः।
९५. ॐ यज्ञ साधनाय नमः।
९६. ॐ यज्ञान्न कृते नमः।
९७. ॐ यज्ञ गुह्याय नमः।
९८. ॐ साम गानाय नमः।
९९. ॐ पाप नाशनाय नमः।
१००. ॐ भरद्वाज प्रियाय नमः।
१०१. ॐ महोत्साहाय नमः।
१०२. ॐ वर्धमानाय नमः।
१०३. ॐ काशिराज धन्वन्तरये नमः।
१०४. ॐ दिवोदास धन्वन्तरये नमः।
१०५. ॐ श्री धारामृत हस्ताय नमः।
१०६. ॐ धृतामृत कलश कराय नमः।
१०७. ॐ लक्ष्मी सहोदराय नमः।
१०८. ॐ आधी व्याधि विनाशिने नमः।

सुवर्ण के आभूषण धारण करने के विभिन्न लाभ

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

भारतीय विद्वानों का मत हैं की सुवर्ण के आभूषण को शरीर के विभिन्न अंगों पर धारण करने से अलग-अलग लाभों की प्राप्ति होती है। आयुर्वेद विशेज्ञ के मतानुसार सुवर्ण भष्म के प्रयोग से शरीर को अनेक प्रकार के लाभ होते हैं। सुवर्ण एक दुर्लभ धातु है। एवं सुवर्ण की भस्म औषधिय गुणों से युक्त अति दुर्लभ है।

सुवर्ण के आभूषण का शुभ प्रभाव तभी होता हैं जव यह हमारे शरीर को स्पर्श कर रहे हो।

आज के आधुनिक युग में अधिकतर लोग सुवर्ण के आभूषण का प्रयोग स्त्री और पुरुष केवल फ़ैशन, समाज में अपनी संपन्नता एवं प्रतिष्ठा को दर्शाने के लिये करते है। लेकिन पुरातन काल में जब लोग सुवर्ण के लाभ से अवगत थे तब वे सुवर्ण के आभूषण शरीर को स्पर्श करे इसी प्रकार से धारण करते थे।

सुवर्ण जब हमारे शरीर के अंगों के संपर्क में आता है तब वह अपने विशेष प्रकार के लाभकारी गुणों को सक्रिय करता है। जानकारों की माने तो शरीर के कुछ विशेष अंगों से जब सुवर्ण का निरंतर स्पर्श होते रहता है, तब शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि करने वाले गुण विशेष रुप से सक्रिय हो जाते है।

चीन के लोगों पुरातक काल से ही सौंदर्य निखार एवं मानसिक शक्ति के विकास के लिये सुवर्ण के आभूषण का इस्तेमाल करते रहे है।

पुरातन काल के इतिहास का अध्ययन करने से हमें यह ज्ञात होता है कि उस समय विभिन्न संस्कृति एवं सभ्यताओं में राजा-महाराजा, समृद्ध परिवारों के लोग सुवर्ण से निर्मित बर्तनों का इस्तेमाल भोजन, जल, औषधीय आदि के पात्र के रुप में किया करते थे। नियमित सुवर्ण के बर्तनों का प्रयोग होने से वह सतत शरीर के संपर्क में आता रहता हैं एवं सुवर्ण के पात्र में भोजन, जल आदि रखने से उसमें स्वास्थ्य लाभ देने वाले औषधीय गुणों की वृद्धि होती है।

- ❖ सुवर्ण वायुमंडल से ऊर्जा और ऊष्मा को अपनी और खींचता है, इसलिए इसे सुवर्ण को धारण करने से शरीर में गरमी एवं ऊर्जा दोनों की वृद्धि होती है।
- ❖ जिन्हें अधिक क्रोध आता हो, जो लोग अधिक बातूनी, अशांत एवं अस्थिर स्वभाव के हो उन्हें सुवर्ण के आभूषण धारण करने से बचना चाहिए या अल्प समय के लिए धारण करना चाहिए।
- ❖ वाचाल और व्यग्र (अधैर्य) हैं उनको सोना धारण नहीं करना चाहिए।
- ❖ पारंपरिक सुवर्ण के आभूषण अत्यधिक लाभकारी माने जाते है। क्योकि यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राप्त होते है, यह जितना पुराना हो उतना अच्छा होता है।
- ❖ गोलाकार सुवर्ण के आभूषण विशेष शुभ फलदायक माने जाते है।
- ❖ हिन्दू संस्कृति में यह पुरातन मान्यता रही है कि सुवर्ण के आभूषण धारण करने से दीर्घायु प्राप्त होती है एवं नकारात्मक ऊर्जा से रक्षण होता है।
- ❖ मान्यता है कि दाएं हाथ में सुवर्ण की अंगूठी धारण करने से आयु में वृद्धि होती है।
- ❖ विभिन्न शोध एवं अनुसंधानों से प्रमाणित हो गया है कि सुवर्ण में सकारात्मक ऊर्जा विद्यमान होती है। अतः इसे धारण करने से सकारात्मक ऊर्जा एवं विचारों की वृद्धि होती है।
- ❖ जानकारों का मत हैं कि यदि किसी को अनियमित दिल की धड़कन की शिकायत हो, तो उचित चिकित्सा के उपरांत यदि सुवर्ण के आभूषण धारण करने से स्वास्थ्य में शीघ्र सुधार होता है।
- ❖ ज्योतिष के जानकारों का मत हैं सुवर्ण के आभूषण मेष, कर्क, सिंह और धनु लग्न के जातको के लिए धारण करना विशेष लाभप्रद होता है। वृश्चिक और मीन लग्न जातको के लिए सुवर्ण धारण करना मध्यम रहता है। तुला और मकर लग्न के जातको के लिए सुवर्ण अल्प समय के लिए धारण करना

शास्त्रोक्त विधान से दीपावली पूजन

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हमारे धर्मशास्त्रो में कार्तिक मास में दीप दान का विशेष महत्व बताया गया है। दीपावली में दीपदान का विशेष महत्व बताया हैं।

श्रीपुष्करपुराण के अनुसार:

तुलायाम् तिलतैलेन सायंकाले समागते।
आकाशदीपम् यो दद्यान्मासमेकम् हरिम् प्रति।
महतीम् श्रियमाप्नोति रूपसौभाग्यसम्पदम्।।

अर्थात: जो व्यक्ति कार्तिक मास में संध्या समय भगवान श्री हरि (विष्णु) के नाम से तिल के तेल का दीप जलाता हैं, उसे अतुल लक्ष्मी, रूप, सौभाग्य और संपत्ति कि प्राप्ति होती हैं।

देवर्षि नारदजी के अनुसार दीपावली पर्व द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस्या और प्रतिपदा तक 5 दिन मनाना चाहिए। दीपावली पर्व प्रत्येक दिन अलग-अलग प्रकार कि पूजा का विधान हैं।

गोवत्स द्वादशी

कार्तिक मास कि द्वादशी को **गोवत्स द्वादशी** के दिन दूध देने वाली गाय को उसके बछ़ड़े सहित स्नान कराकर वस्त्र ओढ़ा कर गले में पुष्पमाला पहनाना, उसके सींग मँढ़ाना, चंदन का तिलक करना तथा ताँबे के पात्र में सुगन्ध, अक्षत, पुष्प, तिल और जल का मिश्रण कर निम्न मंत्र से गौ के चरणों का प्रक्षालन करना चाहिए।

क्षीरोदार्णवसम्भूते सुरासुरनमस्कृते।
सर्वदेवमये मातर्गृहाणार्घ्यं नमो नमः।।

अर्थात: समुद्र-मंथन के समय क्षीर सागर से उत्पन्न देवताओं तथा दानवों द्वारा नमस्कार कि गई सर्व देवस्वरूपिणी माता। आपको बार-बार नमस्कार हैं। आप मेरे द्वारा दिये हुए इस अर्घ्य को स्वीकार करो।

इस दिन पूजन के बाद गाय को उड़द के बड़े खिला कर प्रार्थना करने का विधान हैं।

सुरभि त्वं जगन्मातर्देवी विष्णुपदे स्थिता।
सर्वदेवमये ग्रासं मया दत्तमिमं ग्रस।।
ततः सर्वमये देवि सर्वदेवैरलङ्कृते।
मातर्ममाभिलाषितं सफलं कुरु नन्दिनी।।

अर्थात: हे जगदम्बे, हे स्वर्ग वासिनी देवी, हे सर्व देवमयी, मेरे द्वारा अर्पित इस अन्न को ग्रहण करो। हे समस्त देवताओं द्वारा अलंकृत माता नंदिनी मेरा मनोरथ पूर्ण करो।

इसके बाद रात्र के समय इष्ट, ब्राह्मण, गौ, घर के वृद्धजनों कि आरती उतारने का विधान हैं।

त्रयोदशी (धनतेरस)

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को धनतेरस के रुप में मनाया जाता हैं। शास्त्रो में उल्लेख मिलता हैं कि भगवान धन्वंतरी ने समुद्र-मंथन के दौरान प्रकट होकर दुःखी जनों के रोगनिवारणार्थ आयुर्वेद का प्राकट्य किया था। धनतेरस के दिन संध्या के समय घर और आंगन में हाथ में जलता हुआ दीप लेकर निचे दिये मंत्र से भगवान यमराज कि प्रसन्नता हेतु इस मंत्र के साथ दीपदान करने का विधान हैं।

मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालेन श्यामया सह।
त्रयोदश्यां दीपदानात् सूर्यजः प्रीयतां मम।।

अर्थात: त्रयोदशी के दिन दीपदान से पाश और दंडधारी मृत्यु तथा काल के अधिपति देव भगवान यम, देवी श्यामासहित मुझ पर प्रसन्न हों।

नरक चतुर्दशी

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को नरक चतुर्दशी के रुप में मनाया जाता हैं। इस दिन चतुर्मुखी दीप का दान करने का विधान हैं। मान्यता हैं, दीप दान से नरक भय से मुक्ति मिलती हैं! नरक चतुर्दशी कि रात को एक चार मुख (चार बत्ती) वाला दीप जलाकर निचे दिये मंत्र से दीपदान करने का विधान हैं।

दत्तो दीपश्चतुर्दश्यां नरकप्रीतये मया।
चतुर्वर्तिसमायुक्तः सर्वपापापनुत्तये।।

आज चतुर्दशी के दिन नरक के अभिमानी देवता कि प्रसन्नता के लिए एवं समस्त पापों के विनाश के लिए मैं चार मुख वाला चौमुखा दीप अर्पित करता हूँ।

दीपावली

कार्तिक अमावस्या को दीपावली के रुप में मनाया जाता हैं। इस दिन प्रातः उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर जप-तप करने से अन्य दिनों की अपेक्षा कई गुना अधिक लाभ प्राप्त होता हैं। दीपावली के दिन पहले से ही स्वच्छ किये गृह को सुसज्जित कर भगवान नारायण के साथ मां लक्ष्मी कि मूर्ति या चित्र कि स्थापना कर उनका विधिवत पूजन करने का विधान हैं।

प्रतिपदा

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को अन्नकूट दिवस के रुप में मनाया जाता हैं। इस दिन गाय को सजाकर, उनकी पूजा करके निचे दिये मंत्र उच्चारण करने का विधान हैं।

लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता।
घृतं वहति यज्ञार्थे मम पापं व्यपोहतु।।

अर्थात: धेनुरूप में स्थित जो लोकपालों कि साक्षात लक्ष्मी हैं तथा जो यज्ञ के लिए घी देती हैं, वह गाय माता मेरे पापों का नाश करे।

विभिन्न देवी के गायत्री मंत्र

दुर्गा गायत्री मन्त्र दुर्गा

ॐ गिरिजाये विद्महे शिवप्रियाय धीमहि ।
तन्नो दुर्गा: प्रचोदयात् ॥

ॐ त्वरिता देव्यै च विद्महे महानित्यायै
धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

महिष मर्द्दिनी गायत्री मन्त्र

ॐ महिषमर्द्दिये च दुर्गायै च धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

मातंगी गायत्री मन्त्र

ॐ मातंगये मतंग्यै च उच्छिष्ट चाण्डाल्यै
च धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

बागला मुखी गायत्री मन्त्र

ॐ बागला मुख्यं च विद्महे स्तंभिन्यै
च धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

धूमावती गायत्री मन्त्र

ॐ धूमावत्यै च विद्महे संहारिन्यै च धीमहि ।
तन्नो धूमा प्रचोदयात् ॥

छिन्नमस्ता गायत्री मन्त्र

ॐ वैरोचन्यै च विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

भैरवी गायत्री मन्त्र

ॐ त्रिपुरायै च विद्महे भैरव्यै च धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

भुवनेश्वरी गायत्री मन्त्र

ॐ नारायन्यै च विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

त्रिपुर सुंदरी गायत्री मन्त्र

ॐ त्रिपुरा देव्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै
धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

तारा गायत्री मन्त्र

ॐ तारायै च विद्महे महोग्रायै च धीमहि ।
सौस्तन्न: क्लिन्नै प्रचोदयात् ॥

काली गायत्री मन्त्र

ॐ कालिकायै च विद्महे श्मशान वासिन्यै धीमहि ।
तन्नो अगोरा प्रचोदयात् ॥

अन्नपूर्णा गायत्र मन्त्र

ॐ भगवत्यै च विद्महे माहेश्वर्यै च धीमहि । तन्नो
अन्नपूर्णा प्रचोदयात् ॥

गौरी गायत्री मन्त्र

ॐ सुभगार्यै च विद्महे काम मालायै धीमहि । तन्नो गौरी प्रचोदयात् ॥

दीपावली को क्यों जलाते हैं दीप जाने धार्मिक महत्व

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय



प्रकाश, तेज ऊर्जा के कुदरति स्त्रोत हैं। ऊर्जा के बिना मानव जीवन का कोई अस्तित्व नहीं हैं। समग्र ब्रह्मांड में प्रकाश ऊर्जा का प्रमुख स्त्रोत एक मात्र सूर्य हैं, उस के अलावा कोई और प्रमुख स्त्रोत का अस्तित्व नहीं हैं। यही कारण हैं कि आज सूर्य के तेज से ही हमारा जीवन सुचारु रुप से प्रकाशमान हैं। वायु मंडल में व्याप्त वायुकण (धूल) और बादल इत्यादि सभी में अपनी चुम्बकीय शक्ति होती हैं जिसके कारण सब एक दूसरे की ओर आकर्षित होते रहते हैं।

इसी आकर्षित होने के कारण कण एक दूसरे से पास आते और दूर होते रहते हैं, जिसके बल के कारण हि ऊर्जा उत्पन्न होती हैं। इस्से उत्पन्न होने वाली उर्जा को हि प्रकाश कहा जाता हैं।

प्रकाश का हमारे जीवन में बहुत महत्व हैं, इस महत्व से हर व्यक्ति भली भाति वाकिफ हैं। हमारी भारतिय संस्कृति के धार्मिक कार्यक्रम में भी अग्नि का विशेष महत्व हैं। एवं अग्नि प्रकाश का प्रतिक हैं जो यज्ञ, हवन, विवाह, संस्कार जेसे अन्य धार्मिक कर्मकांडो में बिना अग्नि के बिना संपन्न होना असंभव सा प्रतित होता हैं। इसी कारण भारतिय सभ्यताओं में अग्नि को देव कहा गया हैं।

अग्नि को देवता मनकर उसका पूजन किया जाता हैं। क्योकि एसा माना जाता हैं, कि यदि अग्नि देव क्रोधित होजाये तो बड़े-बड़े महलों व ऊंचे-ऊंचे भवनों को धूलमें उडादे और राख बनादे।

इस लिये प्रकाश का पूजन कर उन्हें शांत रखने का प्रयास किया जाता हैं।

हमारे प्रमुख धर्म ग्रंथो में एक ऋग्वेद का सर्व प्रथम मंत्र ही प्रकाश से शुरू होता है।

मंत्र:

प्रकाशमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥

भावार्थ:- सर्वप्रथम आराधन किए जाने वाले, यज्ञ को प्रकाशित करने वाले, ऋतुओं के अनुसार यज्ञ सम्पादित करने वाले, देवताओं का आह्वान करने वाले तथा धन प्रदान करने वालों में सर्वश्रेष्ठ अग्नि देवता की मैं स्तुति करता हूं।

अनादिकाल से मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु अंधकार रुपी अज्ञानता रही हैं। इस लिये पुरातन कालसे हि अंधकार को दूर करने वाला प्रकाश मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र रहा है।

क्योकि प्रकाश हमें देखने की शक्ति देता हैं। वायुमंडल में वस्तु कि सही पहचान करने के लिये प्रकाश आवश्यक है।

उपनिषद में इसी लिये अंधकार से ज्योति की ओर जाने की कामना की गई है।

असतो मा सद्गमय
तमसो मां ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतं गमय

शास्त्रो में अग्नि के तीन रूपों वर्णन किया गया हैं।

पृथ्वी पर अग्नि, अन्तरिक्ष में विद्युत और आकाश में सूर्य। प्रकाश के उद्दगम के विषय में कहा

गया है कि काल के संघर्ष-मंथन से उसका जन्म हुआ। सूर्य कि अग्नि अंधकार को मिटाता है, असुरी शक्ति को डराता, प्रकाश का आह्वान करता, चिर युवा और प्राचीन पुरोहित है। ऋग्वेद के अनुसार महार्षि भृगु ऋषि ने अग्नि की खोज की।

अग्नि के लिये ऋग्वेद में कहा गया हैं।

अग्निमीळे पुरोहितं (ऋग्वेद)

ऋग्वेद

इंद्र ज्योतिः अमृतं मर्तेषु
सूर्यांश संभवो दीपः

अर्थात: सूर्य के अंश से दीप की उत्पत्ति हुई।

दीप जीवन की पवित्रता, भक्ति, अर्चना और आशीर्वाद स्वरुप माना जाता हैं।

सूर्य के अंश से उत्पन्न पृथ्वी की अग्नि को जिस पात्र में स्थापित किया गया उसे आज दीपक के रूप में हमारे घरों में पूजा जाता है ।

शुभम करोति कलयाणम् आरोग्यम् धन सम्पदा
शत्रुबुध्दि विनाशाय दीपज्योति नमस्तुते ।।

अर्थात: हमे शुभ, सुन्दर और कल्याणकारी, आरोग्य और संपदा को देने वाले हे दीपक कि ज्योति, हमारे शत्रों कि बुद्धि के विनाश के लिए हम तुम्हें नमस्कार करते हैं।

पूरातन काल में दीप का पात्र स्फटिक, पाषाण या सीप का होता था। कालान्तर में मिट्टी को गढने और पकाने के आविष्कार के साथ दीप मिट्टी का बनने लगा। प्राचीन काल से धनिकों द्वारा बड़े कलात्मक दियों का प्रयोग किया जाता था, जो पत्थर, धातु, कीमती रत्नों, सोने और चांदी के होते थे। ये छोटे बड़े सभी आकारों के थे।

समय के साथ साथ दीप स्तंभ भी प्रचलन में आए।

रामायण में उल्लेख मिलता हैं कि जब हनुमान लंका पहुँचे तो उन्हें सुनहरे दीपों को देख कर भ्रम हुआ कि कहीं वे स्वर्ग में तो नहीं आ गए। उन्हें वहां पीले और जलते हुए स्वर्णदीप दिखाई दिए।

भारतीय शास्त्रो मे उल्लेख मिलता है, कि अग्नि का संबंध मनुष्य के जन्म से लेकर मरण तक होता हैं। यही कारण हैं हमारी संस्कृति में विभिन्न व्रत-त्योहार इत्यादि में दीप क महत्व हैं। दीपावली भी हमारे प्रमुख त्यौहारो में से एक है, जिस में उर्जा के प्रतिक के रुप में दीपक जलाने कि परंपरा हैं।

हमारे शास्त्रों में दीपज्योति कि महिमा का



विस्तृत वर्णन किया गया हैं। शास्त्रों में दीपज्योति को पापनाशक, शत्रुओं कि वृद्धि रोकने वाली, आयु एवं आरोग्य प्रदान करने वाली हैं।

दीपो ज्योतिः परम् ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु में पापम् साध्यदीप नमोऽस्तु ते।।
शुभम् करोतु कल्याणम् आरोग्यम् सुखसम्पदम्।
शत्रुबुद्धिविनाशम् च दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।

- मान्यता हैं कि यदि घर में दीपक की लौ पूर्व दिशा की ओर हो, तो आयु कि वृद्धि करती हैं।
- दीपक की लौ पश्चिम दिशा की ओर हो, तो दुःख की वृद्धि करती हैं।
- दीपक की लौ उत्तर दिशा की ओर हो, तो स्वास्थ्य और प्रसन्नता कि वृद्धि करती हैं।

* दीपक की लौ दक्षिण दिशा की ओर हो, तो हानि करती हैं।

यदि घर में आप दीपक जलायें तो उसे आपके घरके उत्तर अथवा पूर्व कोने में होना चाहिए। दीपज्योति के प्रभाव से पाप-ताप का हरण होता है, शत्रुबुद्धि का शमन होता है और पुण्यमय, सुखमय जीवन की वृद्धि होती है।

पुरूषोत्तम महात्त्म्य में दीपक कि ज्योति के लिये कहा गया हैं।

रूक्षैर्लक्ष्मी विनाशःस्यात श्वैतेरन्नक्षयो भवेत् अति रक्तेषु युध्दानि मृत्युःकृष्ण शिखीषु च।।

अर्थातः कोरी शुष्क (रूखी) ज्योति लक्ष्मी का नाश, श्वेतज्योति अन्नक्षय, अति लाल ज्योति युद्ध और काली ज्योति मृत्यु की द्योतक होती हैं।

॥श्री सूक्त॥

ॐ हिरण्य-वर्णां हरिणीं, सुवर्ण-रजत-स्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं, जातवेदो म आवह॥

तां म आवह जात-वेदो, लक्ष्मीमनप-गामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं, गामश्वं पुरूषानहम्॥

अश्वपूर्वां रथ-मध्यां, हस्ति-नाद-प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

कांसोऽस्मि तां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीं। पद्मे स्थितां पद्म-वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव-जुष्टामुदाराम्। तां पद्म-नेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥ आदित्य-वर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽक्ष बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

उपैतु मां दैव-सखः, कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्, कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे॥

क्षुत्-पिपासाऽमला ज्येष्ठा, अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च, सर्वान् निर्णुद मे गृहात्॥

गन्ध-द्वारां दुराधर्षां, नित्य-पुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम्॥

मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य, मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

कर्दमेन प्रजा-भूता, मयि सम्भ्रम-कर्दम। श्रियं वासय मे कुले, मातरं पद्म-मालिनीम्॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि, चिक्लीत वस मे गृहे। निच-देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं, सुवर्णां हेम-मालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो ममावह॥

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं, पिंगलां पद्म-मालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो ममावह॥

तां म आवह जात-वेदो लक्ष्मीमनप-गामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरूषानहम्॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा, जुहुयादाज्यमन्वहम्। श्रियः पंच-दशर्चं च, श्री-कामः सततं जपेत्॥

लक्ष्मी-गणेश के पूजन से धन, सुख और सौभाग्य की प्राप्ति होती हैं

संकलन गुरुत्व कार्यालय

भारतीय धार्मिक एवं संस्कृतिक मान्यता के अनुसार लक्ष्मीजी के साथ श्री विष्णु कि पूजा होनी चाहिए। किन्तुं दीपावली पूजन में मां लक्ष्मी के साथ गणेशजी कि पूजा क्यों कि जाती हैं।

धन कि देवी लक्ष्मी हैं जो धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्रदान करती हैं। लेकिन बिना बुद्धि के धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य व्यर्थ हैं। इसके पीछे मुख्य कारण हैं की भगवान श्री गणेश समस्त विघ्नों को टालने वाले हैं, दया एवं कृपा के महासागर हैं, एवं तीनो लोक के कल्याण हेतु भगवान गणपति सब प्रकार से योग्य हैं। समस्त विघ्न बाधाओं को दूर करने वाले गणेश विनायक हैं। अतः बुद्धि कि प्राप्ति के लिये बुद्धि और विवेक के अधिपति देवता गणेश का पूजन करने का विधान हैं। गणेशजी समस्त सिद्धियों को देने वाले देवता माना गया है। क्योकि समस्त सिद्धियाँ भगवान गणेश में वास करती हैं। इस लिये लक्ष्मीजी के साथ में श्री गणेशजी कि आराधना आवश्यक हैं।



ब्रह्मवैवर्तपुराण में उल्लेख हैं

भगवान् विष्णु ने स्वयं गणेश जी को वरदान दिया कि

सर्वाग्रे तव पूजा च मया दत्ता सुरोत्तम।

सर्वपूज्यश्च योगीन्द्रो भव वत्सेत्युवाच तम्।।

(गणपतिखं. 13। 2)

भावार्थ: 'सुरश्रेष्ठ! मैंने सबसे पहले तुम्हारी पूजा कि है, अतः वत्स! तुम सर्वपूज्य तथा योगीन्द्र हो जाओ।'

ब्रह्मवैवर्त पुराण में ही एक अन्य प्रसंगान्तर्गत माता पार्वती ने गणेश महिमा का बखान करते हुए परशुराम से कहा –

त्वद्विधं लक्षकोटिं च हन्तुं शक्तो गणेश्वरः।

जितेन्द्रियाणां प्रवरो नहि हन्ति च मक्षिकाम्।।

तेजसा कृष्णतुल्योऽयं कृष्णांश्च गणेश्वरः।

देवाश्चान्ये कृष्णकलाः पूजास्य पुरतस्ततः।।

(ब्रह्मवैवर्तपु., गणपतिख., 44। 26-27)

भावार्थ: जितेन्द्रिय पुरूषों में श्रेष्ठ गणेश तुममें जैसे लाखों-करोड़ों जन्तुओं को मार डालने की शक्ति है; परन्तु तुमने मक्खी पर भी हाथ नहीं उठाया। श्रीकृष्ण के अंश से उत्पन्न हुआ वह गणेश तेज में श्रीकृष्ण के ही समान है। अन्य देवता श्रीकृष्ण की कलाएँ हैं। इसीसे इसकी अग्रपूजा होती है।

लिंगपुराण के अनुसार (105। 15-27)

शिव ने अपने पुत्र को आशीर्वाद दिया कि जो तुम्हारी पूजा किये बिना पूजा पाठ, अनुष्ठान इत्यादि शुभ कर्मों का अनुष्ठान करेगा, उसका मंगल भी अमंगल में परिणत हो जायेगा। जो लोग फल की कामना से ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र अथवा अन्य देवताओं की भी पूजा करेंगे, किन्तु तुम्हारी पूजा नहीं करेंगे, उन्हें तुम विघ्नों द्वारा बाधा पहुँचाओगे।

इस सभी कारण से मां लक्ष्मी के साथ में गणेशजी का पूजन करने का विधान हैं। लक्ष्मी प्राप्ति के बाद में उसे स्थिर करने हेतु बुद्धि कि आवश्यकता होती हैं। लक्ष्मी के साथ गणेश के पूजन से संबंध में अनेकों कथाएं प्रचलित हैं। कुछ लोकप्रिय कथाएं यहा प्रस्तुत हैं।

शास्त्रोक्त कथा:

विष्णु धाम में भगवान विष्णु एवं माता लक्ष्मी विराजमान होकर आपस में वार्तालाप कर रहे थे, बात-बात में अहं के कारण लक्ष्मी जी बोल उठे कि मैं सभी लोक में सब से अधिक पूजनीय एवं सबसे श्रेष्ठ हुं। लक्ष्मी जी को इस प्रकार अपनी अहं से स्वयं कि प्रशंसा करते देख भगवान विष्णु जी को अच्छा नहीं लगा। उनका अहं दूर करने के लिए उन्होंने कहा तुम सर्व संपन होते हुए भी आज तक माँ का सुख प्राप्त नहीं कर पाई। इस बात को सुन कर लक्ष्मीजी को बहुत दुःखी होगई और वो अपनी पीड़ा सुनांने के लिये माता पार्वती के पास गयीं और उनसे विनती कि वो अपने पुत्र कार्तिकेय और गणेशजी में से किसे एक पुत्र को उनहें दत्तक पुत्र के रूप में प्रदान कर दें। लक्ष्मीजी कि पीडा देख कर पार्वतीजी ने गणेश जी को लक्ष्मीजी को दत्तक पुत्र के रूप में देने का स्वीकार कर लिया। पार्वतीजी से गणेश जी को पुत्र के रूप पाकर लक्ष्मीजी नें हर्षित होते हुवे कहां मैं अपनी सभी सिद्धियां, सुख अपने पुत्र गणेश जी को प्रदान करती हूँ। इस के साथ साथ में मेरी पुत्री के समान प्रिय रिध्धि और सिध्धि जो के ब्रह्मा जी कि पुत्रियाँ हैं, उनसे गणेशजी का विवाह करने का वचन देती हूँ। यदि सम्पूर्ण त्रिलोकों में जो व्यक्ति, श्री गणेश जी कि पूजा नहीं करेगा वरन उनकी निंदा करेगा मैं उनसे कोसों दूर रहूँगी। जब भी मेरी पूजा होगी उसके साथ हिं गणेश कि भी पूजा अवश्य होगी।

अन्य कथा:

प्राचिन काल में एक संन्यासी ने देवी लक्ष्मी को कड़ी तपस्या द्वारा प्रसन्न कर के समस्त सुख सुविधा से जीवन व्यतीत करने का वरदान मांगा। लक्ष्मी तथास्तु कह कर अंतर्ध्यान हो गयीं। वरदान प्राप्ति के बाद संन्यासी वहां के राजदरबार में जाकर राजा के पास पहुंच कर एक झटके में राजमुकुट को नीचे गिरा दिया। संन्यासी का यह कार्य देख कर राजा का चेहरा गुस्से से लाल हो उठा। उसी क्षण राजा ने देखा कि राजमुकुट से एक बिच्छू बाहर निकल रहा हैं। यह देख राजा के मन में संन्यासी के प्रति श्रद्धा भाव जाग गया, राजाने संन्यासी को अपना मंत्री बनने के लिए आग्रह किया। संन्यासी तो यही चाहते थे। संन्यासी ने तुरंत राजा का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। संन्यासी के परामर्श से राज कार्य सुचारु रुप से चलने लगा।

एक दिन संन्यासी ने राजदरबार में उपस्थित सबको बाहर निकल जाने को कहा। संन्यासी पर विश्वास रखते हुए राजा एवं अन्य सब दरबारी वहां से निकल कर एक मैदान में पहुंच गये और तब राजमहल कि दीवारें ढह गयीं। यह द्रश्य देख कर राजा कि आस्था संन्यासी पर ऐसी जमी, कि समस्त राजकार्य उस संन्यासी के आदेश पर होने लगा। समय के साथ संन्यासी को स्वयं पर घमंड होने लगा। राजमहल के भीतर भगवान गणेश कि एक मूर्ति स्थापित थी। घमंड में चूर संन्यासी ने सेवकों को गणेश मूर्ति वहां से हटाने का आदेश दिया, क्योंकि उसके विचार में वह मूर्ति राजपरिसर कि शोभा बिगाड़ रही थी।

अगले दिन संन्यासी ने राजा से कहा कि वह फौरन अपनी पोशाक उतार दें, क्योंकि उसमें नाग है। राजा को संन्यासी पर अगाध विश्वास था। इसलिए, दरबारियों कि परवाह न करते हुए, उन्होनें अपनी पोशाक उतार दी, परंतु उसमें से कोई नाग नहीं निकला। यह देख कर राजा को संन्यासी पर बहुत गुस्सा आया और उसे कैद में रखने का आदेश दे दिया।

कैदियों कि भांति कुछ दिन गुजारने पर संन्यासी का घमंड उतर गया। संन्यासीने पुनः देवी लक्ष्मी कि आराधना शुरू कर दी। लक्ष्मी ने स्वप्न में उसे दर्शन देते हुए बताया, कि तुम्हारी एसी दुर्दशा गणेश जी का अपमान करने कि वजह से हुई हैं। गणेश बुद्धि के देवता हैं, अतः उनको नाराज करने से तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी हैं। अब संन्यासी ने पश्चाताप करते हुए गणेश भगवान से क्षमा मांगी। अगले दिन राजा ने स्वयं वहां पहुंच कर उसे मुक्त कर दिया और पुनः मंत्री पद पर बहाल कर दिया। संन्यासी ने गणेश कि मूर्ति को पूर्व स्थान पर स्थापित करवा दिया तथा उनके साथ-साथ लक्ष्मी कि पूजा शुरू कि, ताकि धन एवं बुद्धि दोनों साथ-साथ रहें। माना जाता हैं, तभी से दीवाली पर देवी लक्ष्मी के साथ गणेश जी का पूजन करने कि प्रथा आरंभ हुई।

दीपावली के दिन कैसे करें बहीखाता तुला पूजन?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू धर्म में पंचमहा पर्व दीपावली पर व्यवसाय कार्य से जुडे लोग गणेश पूजन, लक्ष्मी पूजन, कुबेर पूजन, आदि पूजनो के साथ-साथ अपने व्यवसाय से जुडे हिसाब-किताब रखने हेतु हर वर्ष दीपावली पर बही-खाता, तुला (तराजू), लेखनी (कलम) आदिका पूजन भी करते हैं।

सर्वप्रथम व्यवसायीक स्थान के मुख्यद्वार के दोनों ओर की दिवार पर सिन्दूर से शुभ-लाभ और ॐ और स्वस्तिक के चिह्न अंकित करें। पश्चयात इन शुभ चिह्नों का रोली, पुष्प आदि से पूजन करें। पूजन के समय ॐ देहलीविनायकाय नमः। मंत्र जा उच्चारण करें।



अब क्रमश दवात अर्थात (Inkstand), बहीखाता, तुला (तराजू) आदि का पूजन करना चाहिए।

दवात का पूजन: दवात को महाकाली का रूप माना जाता हैं। सर्वप्रथम नई स्याहीयुक्त दवात को शुद्ध जल के छीटें देकर पवित्र कर ले, उसके बाद उसके मुख पर मौली बाँध दें। दवात को चौकी पर थोड़े से पुष्प और अक्षत डालकर स्थापित कर दें। दवात का रोली, पुष्प आदि से महाकाली के मन्त्र **ॐ श्रीमहालक्ष्मै नमः।** का उच्चारण करते हुए पूजन करें। पूजन के पश्चयात इस प्रकार प्रार्थना करे ।

कालिके त्वं जगन्मातर्मसिरूपेण वर्तसे।
उत्पन्ना त्वं च लोकानां व्यवहारप्रसिद्धये॥

लेखनी पूजनः

दीपावली के दिन नयी लेखनी या पेन को शुद्ध जल से धोकर तथा उस पर मौली बाँधकर लक्ष्मीपूजन की चौकी पर कुछ अक्षत एवं पुष्प डालकर स्थापित कर दें। तदुपरान्त रोली, पुष्प आदि से **ॐ लेखनीस्थायै देव्यै नमः।** का उच्चारण करते हुए पूजन करें। मन्त्र बोलते हुए पूजन करें । पूजन के पश्चयात निम्नलिखित मन्त्र से हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

शास्त्राणां व्यवहाराणां विद्यानामाप्नुयाद्यतः।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि मम हस्ते स्थिरा भव॥

बहीखाता पूजनः

दीपावली के दिन व्यवसाय से जुडे लोग नए बहीखातों का शुभारम्भ करते हैं। पूजन हेतु नए बहीखाते लेकर उन्हें शुद्ध जल के छींटे देकर पवित्र कर लें। बहीखातों को लाल वस्त्र बिछाकर तथा उस पर अक्षत एवं पुष्प डालकर स्थापित करें। बहीखाते के प्रथम पृष्ठ पर सर्वप्रथम उपर लाल कलम या पेन से **श्री गणेशाय नमः।** लिखे पश्चयात स्वस्तिक का चिह्न चंदन अथवा रोली से बनाएँ। पश्चयात अपने इष्ट देवी-देवता का नाम लिख सकते हैं। यदि बही खातो पर **सप्त श्री** लिखा जाए तो भी आने वाले वर्ष भर के लिये आर्थिक द्रष्टि से लाभदायक रहता हैं। (सप्त श्री लिखने की विधि गुरुत्व ज्योतिष मासिक पत्रिका में पृष्ठ संख्या पर दी गई हैं।

पश्चयात बहीखाते का रोली, पुष्प आदि से विधिवत पूजन करना चाहिए। पूजन के समय **ॐ श्रीसरस्वत्यै नमः** मन्त्र का उच्चारण करें।

तुला का पूजनः

सर्वप्रथम तराजू को शुद्ध कर लेना चाहिए। तदुपरान्त उस पर रोली से स्वस्तिक का चिह्न बनाएँ। उस पर मौली बाँध दें तथा **ॐ तुलाधिष्ठातृदेवतायै नमः।** उच्चारण करते हुए रोली, पुष्प आदि से तराजू का पूजन करें।

दीपावली पूजन का महत्व और संपूर्ण शास्त्रोक्त लक्ष्मी पूजन

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

दीपोत्सव अर्थात दीपावली पर्व को पुरातन काल से ही भारतवर्ष में ज्योतिपर्व के रुप में मनाया जाता हैं। बड़े-बड़े महानगरों से लेकर छोटे से छोटे गावों में भी धनी से लेकर गरीब से गरीब व्यक्ति की चौखट भी इस पावन पर्व के अवसर पर दीपक की पंक्तियों के जगमगा उठती हैं। दीपावली के दिन अमावस्या होने के कारण इस दिन सकल लोक में चारों ओर अंधकार फैला होता हैं, लेकिन मनुष्य को अंधकार पसंद नहीं हैं, इस लिए वहँ उससे मुकाबला करने के उद्देश्य से अपने घर-दुकान आदि स्थानों पर दीपों की पंक्तियों में सजाकर अंधेरे को दूर भगाने का सार्थक प्रयास करता हैं।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार पुरातन काल में दीपावली पर्व को "लोकोत्सव" के रुप में मनाया जाता था। लेकिन आज दीपावली पर्व की मुख्यतः दो प्रमुख विशेषता देखने को मिलती हैं। एक हैं, दीपों की जगमगाहट से अंधकारको दूर करना और दूसरी है, वैभव एवं सुख-समृद्धि की देवी माँ महालक्ष्मी के पूजन का आयोजन।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार दीपावली के दिन घर-दुकान आदि स्थानों के अलावा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर भी दीपकों की पंक्तियाँ रखने का विधान हैं।

एसी मान्यता हैं की श्राद्ध पक्ष से लेकर कार्तिक मास की अमावस्या तक पितरों को पुनः अपने लोक में लोटना होता हैं। परिवार के लोग पितरों का आह्वान करते हैं, उनका पूजन कर दीपों से उनका पुनः वापस जाने वाला अंधियारा मार्ग प्रकाशित करके उन्हें अगले वर्ष तक के लिए विदाई देते हैं।

दीपावली के संबंध में भविष्यपुराण में उल्लेख हैं की

वस्त्र-पुष्पैः शोभितव्या क्रय-विक्रय-भूमयः।

अर्थात्: आज के दिन धनपति कुबेर का भी पूजन होता हैं। हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार कुबेर धनपति हैं।

एसा मानाजाता हैं की आज के दिन ही देवी लक्ष्मी का जन्म हुवा था।

शास्त्रों में देवी महालक्ष्मी कि उत्पत्ति से संबंधित विभिन्न मत हैं

विभिन्न धर्म शास्त्रो में लक्ष्मी कि उत्पत्ति के विषय में अनेक कथाएं उल्लेखित हैं। उन प्राचीन कथाओं में समुद्र मंथन के दौरान मां महालक्ष्मी कि उत्पत्ति मानी जाती हैं। विभिन्न ग्रंथो में लक्ष्मी एवं समुद्र मंथन कि कथाओं में अंतर देखने को मिलता हैं। परंतु मूलतः सब कथाओं में अंतर होने के उपरांत भी अधिकतर समान हैं।

प्रजापत्य कल्प के अनुसार:

भगवान ब्रह्मा ने रुद्र रूप को ही स्वयंभु मनु और स्त्री रूप में सतरूपा को प्रकट किया और उसके बाद प्रियव्रत उत्तानपाद, प्रसूति और आकूति नाम कि संतानों को जन्म दिया। फिर आकूति का विवाह रुचि से और प्रसूति का विवाह दक्ष से किया गया। दक्ष ने प्रसूति से 24 कन्याओं को जन्म दिया। इसके नाम श्रद्धा, लक्ष्मी, पुष्टि, धुति, तुष्टि, मेधा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वपु, शान्ति, ऋद्धि, और कीर्ति इत्यादी हैं।

विष्णु पुराण के अनुसार:

एक बार घूमते हुए दुर्वासा ने अपरूपा विद्याधारी के पास एक बहुत सुन्दर माला देखी। वह सुगन्धित माला थी। ऋषि ने उस माला को अपने जटाओं पर धारण करने के लिए मांगा और प्राप्त कर लिया। दुर्वासा ने सोचा कि यह माला प्रेम के कारण, उसे प्राप्त कर वे कामातुर हो उठे हैं, वे अपने काम के आवेग को रोकने के लिए इधर-उधर घूमते-घूमते स्वर्ग लोक पहुंचे। वहां उन्होंने अपने सिर से माला हटाकर इन्द्र को दे दी। इन्द्र ने उस माला को ऐरावत के गले में डाल दिया और ऐरावत से वह माला धरती पर गिर गई और पैरों से कुचल गई। दुर्वासा ने जब यह देखा कि उसकी माला की यह दुर्गति हुई तो वह क्रोधित हुए और उन्होंने इन्द्र को श्रीहीन होने का शाप दिया। जब इन्द्र ने यह सुना तो

भयभीत होकर ऋषि के पास आये पर उनका शाप लौट नहीं सकता था। इसी शाप के कारण असुरों ने इन्द्र और देवताओं को स्वर्ग से बाहर निकाल दिया। देवता ब्रह्मा जी की शरण में गये और उनसे अपने कष्ट के विषय में कहा।

ब्रह्मा जी देवताओं को लेकर विष्णु के पास गये और उनसे सारी बात कही तब विष्णु ने देवताओं को दानव से सुलह करके समुद्र मंथन करने की सलाह दी और स्वयं भी सहायता का आश्वासन दिया। उन्होंने बताया कि समुद्र मंथन से उन्हें लक्ष्मी और अमृत पुनः प्राप्त होगा। अमृत पीकर वे अजर और अमर हो जाएंगे। देवताओं ने भगवान विष्णु की बात सुनकर समुद्र मंथन का आयोजन किया। उन्होंने अनेक औषधियां एकत्रित की और समुद्र में डाली। फिर मंथन किया गया।

मंथन के लिये जाते हुए समुद्र के चारों ओर बड़े जोर की आवाज उठ रही थी। इस बार के मंथन से देवकार्यों की सिद्धि के लिये साक्षात् सुरभि कामधेनु प्रकट हुईं। उन्हें काले, श्वेत, पीले, हरे तथा लाल रंग की सैकड़ों गौएँ घेरे हुए थीं। उस समय ऋषियों ने बड़े हर्ष में भरकर देवताओं और दैत्यों से कामधेनु के लिये याचन की और कहा आप सब लोग मिलकर भिन्न-भिन्न गोत्रवाले ब्राह्मणों को कामधेनु सहित इन सम्पूर्ण गौओं का दान अवश्य करें। ऋषियों के याचना करने पर देवताओं और दैत्यों ने भगवान् शंकर की प्रसन्नता के लिये वे सब गौएँ दान कर दीं तथा यज्ञ कर्मों में भली-भाँति मन को लगाने वाले उन परम मंगलमय महात्मा ऋषियों ने उन गौओं का दान स्वीकार किया। तत्पश्चात सब लोग बड़े जोश में आकर क्षीरसागर को मथने लगे। तब समुद्र से कल्पवृक्ष, पारिजात, आम का वृक्ष और सन्तान- ये चार दिव्य वृक्ष प्रकट हुए।

उन सबको एकत्र रखकर देवताओं ने पुन: बड़े वेग से समुद्र मंथन आरम्भ किया। इस बार के मंथन से रत्नों में सबसे उत्तम रत्न कौस्तुभ प्रकट हुआ, जो सूर्यमण्डल के समान परम कान्तिमान था। वह अपने प्रकाश से तीनों लोकों को प्रकाशित कर रहा था। देवताओं ने चिंतामणि को आगे रखकर कौस्तुभ का दर्शन किया और उसे भगवान विष्णु की सेवा में भेंट कर दिया। तदनन्तर, चिन्तामणि को मध्य में रखकर देवताओं और दैत्यों ने पुन: समुद्र को मथना आरम्भ किया। वे सभी बल में बढ़े-चढ़े थे और बार-बार गर्जना कर रहे थे। अब की बार उसे मथे जाते हुए समुद्र से उच्चै:श्रवा नामक अश्व प्रकट हुआ। वह समस्त अश्वजाति में एक अद्भुत रत्न था। उसके बाद गज जाति में रत्न भूत ऐरावत प्रकट हुआ। उसके साथ श्वेतवर्ण के चौसठ हाथी और थे। ऐरावत के चार दाँत बाहर निकले हुए थे और मस्तक से मद की धारा बह रही थी। इन सबको भी मध्य में स्थापित करके वे सब पुन: समुद्र मथने लगे। उस समय उस समुद्र से मदिरा, भाँग, काकड़ासिंगी, लहसुन, गाजर, अत्यधिक उन्मादकारक धतूर तथा पुष्कर आदि बहुत-सी वस्तुएँ प्रकट हुईं। इन सबको भी समुद्र के किनारे एक स्थान पर रख दिया गया। तत्पश्चात वे श्रेष्ठ देवता और दानव पुन: पहले की ही भाँति समुद्र-मंथन करने लगे। अब की बार समुद्र से सम्पूर्ण दशों दिशाओं में दिव्य प्रकाश व्याप्त हो गया उस दिव्य प्रकाश से देवी महालक्ष्मी प्रकट हुईं। इसलिए लक्ष्मी को समुद्र की पुत्री के रूप में जाना जाता है।

महालक्ष्मी ने देवता, दानव, मानव सम्पूर्ण प्राणियों की ओर दृष्टिपात किया। माता महालक्ष्मी की कृपा-दृष्टि पाकर सम्पूर्ण देवता उसी समय पुनः श्रीसम्पन्न हो गये। वे तत्काल राज्याधिकारी के शुभ लक्षणों से सम्पन्न दिखायी देने लगे।

लक्ष्मी की उत्पत्ति

सृष्टि रचना के विषय में ज्ञान प्राप्त करते हुवे भीष्म ने पुलस्त्य ऋषि से प्रश्न किया ऋषि श्रेष्ठ, लक्ष्मी की उत्पत्ति के विषय में आप मुझे विस्तार से बताइए। क्योंकि इस विषय में कथा अनेक हैं। यह सुनकर पुलस्त्य ऋषि बोले कि महर्षि भृगु कि पत्नी ख्याति के गर्भ से एक त्रिलोकसुन्दरी कन्या उत्पन्न हुई। वह समस्त शुभ लक्षणों से सुशोभित थी। इसलिए उसका नाम लक्ष्मी रखा गया।

पौराणिक कथा और मान्यताओं के अनुसार लक्ष्मी, चन्द्रमा आदि सभी रत्न की उत्पत्ति समुद्र मंथन के दौरान हुई थी, लेकिन समुद्र-मंथन की निश्चित तिथि का वर्णन धर्मशास्त्रों में नहीं हैं। इस लिये एसी मान्यता

हैं की भगवान श्रीराम ने आज ही के दिन राज्यारोहण उत्सव मनाया था और तब से समग्र अयोध्या नगरी दीपों के प्रकाश से जगमगा उठी। (भविष्य पुराण)

दीपावली के दिन घर के सभी सदस्यको प्रातः जल्दी उठकर प्रफुल्लित मन से घर, दुकान आदि व्यवसायीक स्थानों की साफ-सफाई करके उसे शुद्ध जलसे धो लेना चाहिए। व्यवसायीक स्थान पर नये वस्त्र, गादी आदि से पुराने कवर आदि हटाकर नये लगादे (यदि नये लेने का सामर्थ्य न हो तो उसे आगे से धो कर स्वच्छ कर सुखाले), व्यवसाये से संबंधित नये बही-खाता आदि को स्थापित करना चाहिये। विद्वानो के मतानुसार कैश बॉक्स, बही-खाता, तुला, लेखनी, आदि का कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर पूजन करना चाहिए उस पर हल्दी का घोल बनाकर छींटे लगाने चाहिये। शास्त्रोक्त विधान से लक्ष्मी पूजन केवल स्थिर लग्न में की संपन्न करना चाहिए। दीपावली के दिन में प्रायः सांय काल में पूजन हेतु स्थिर लग्न में वृषभ लग्न एवं रात्री काल में सिंह लग्न होता हैं। इस लिए उक्त लग्नों में ही माँ लक्ष्मी का पूजन सर्व श्रेष्ठ माना जाता हैं।

दीपावली के दिन प्रातः स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर एक मिट्टी के पात्र में सिंदूर को घी के साथ मिलाकर उसका लेप बनाले, फिर उससे अपने पूजा स्थान, घर के मुख्य द्वार या व्यवसायीक स्थान पर ॐ, श्रीं, श्री, स्वस्तिक, शुभ-लाभ, रिद्धि-सिद्धि आदि अपनी श्रद्धा एवं विश्वास से मांगलिक चिन्ह या शब्दों को अंकित करें। कुछ विद्वानो का मत हैं की सिंदूर से यदि लक्ष्मीजी का बीज मंत्र अंकित करना अति लाभप्रद होता हैं। क्योकी, प्रायः घरों एवं व्यवसायीक स्थानों पर ॐ, श्री, स्वस्तिक, शुभ-लाभ एवं रिद्धि-सिद्धि लिखा हुवा सभी ने देखा ही होगा! लक्ष्मी पूजन के समय घर के सभी सदस्यों को साथ मिलकर पूर्ण श्रद्धा से देवी महालक्ष्मी का पूजन करना चाहिए।

देवी महालक्ष्मी की पूजा चाहे आप स्वयं कररहे हो या किसी विद्वान पंडित से करवा रहे हो, पूजा पूर्ण विधि-विधान से करें। जल्दी-जल्दी पूजा खत्म करने का विधान शास्त्रोक्त मत से भी वर्जित हैं। क्योकी केवल वर्ष में एक बार ही सही लेकिन पूर्ण विधि-विधान से ही देवी लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए।

यदि आपने पहले से कोई लक्ष्मी यंत्र जैसे ★ श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र) ★ श्री यंत्र (मंत्र रहित) ★ श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित) ★ श्री यंत्र (बीसा यंत्र) ★ श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र ★ श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय) ★ श्री लक्षमी कुबेर धनाकर्षण यंत्र ★ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र ★ महालक्ष्मयै बीज यंत्र ★ महालक्ष्मी बीसा यंत्र ★ लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र ★ लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र ★ लक्ष्मी बीसा यंत्र ★ लक्ष्मी गणेश यंत्र ★ कनक धारा यंत्र ★ वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र) ★ श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र) ★ अंकात्मक बीसा यंत्र ★ ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र ★ धनदा यंत्र हो एवं यदि आपके पास कोई जैन यंत्र हों जैसे ★ श्री पद्मावती यंत्र ★ श्री पद्मावती बीसा यंत्र ★ श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र ★ पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र ★ श्री यंत्र ★ श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र ★ श्री लक्ष्मीकर यंत्र ★ लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र हो तो आप उस यंत्र को स्थापित कर उसका धूप-दीप-नैवेद्य आदि से पूजन कर सकते हैं। यदि आपके पास कोई भी लक्ष्मी यंत्र उपल्बध नहीं हो, तो आप **गुरुत्व कार्यालय** द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप वर्तमान समय में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित यंत्र प्राप्त करने में असमर्थ हो तो, आप **सप्तश्री यंत्र** का निर्माण करलें, और जब आपका सामर्थ्य हो जाये तब आप अपनी आवश्यक्ता के अनुसार लक्ष्मी यंत्र प्राप्त कर सकते हैं।

विशेष नोट:

- यदि आपके पास पहले से अभिमंत्रित या प्राण-प्रतिष्ठित यंत्र उपलब्ध हो तो उसकी केवल धूप-दीप से ही पूजा करें, उस यंत्र की पुनः प्राण-प्रतिष्ठा या उसे अभिमंत्रित करवाने की आवश्यक्ता नहीं होती।
- गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपल्बध करवाये गये सभी यंत्र पूर्णतः शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त होते

हैं, हमारे यहां से उपलब्ध करवाये गये यंत्र पूर्णतः अखंडित एवं शुद्ध धातु में निर्मित होते हैं।

- लक्ष्मी पूजन के समय प्राण-प्रतिष्ठित यंत्रों को माँ लक्ष्मी की प्रतिमा या चित्र के समीप स्थापित कर उसका पूजन किया जा सकता हैं। लेकिन यंत्र की अलगसे पूजा या प्राण-प्रतिष्ठा, मंत्र जप इत्यादि नहीं करना चाहिये।

सभी पाठको के मार्गदर्शन हेतु श्री लक्ष्मी जी का संपूर्ण पूजन विधान दिया जा रहा हैं।

लक्ष्मी पूजा:

पूजन सामग्री:
रोली, मौली, लौंग, पान, सुपारी, धूप, कर्पूर, अगरबत्ती, अक्षत (साबुत चावल), गुड़, धनिया, ऋतुफल, जौ, गेहूँ, दूब, पुष्प, पुष्पमाला, चन्दन, सिन्दूर, दीपक, रूई, प्रसाद, नारियल, सर्वोषधि, पंचरत्न, यज्ञोपवीत, पंचामृत, शुद्ध जल, खील, मजीठ, सफेद वस्त्र, लाल वस्त्र, फुलेल, लक्ष्मी जीव एवं गणेश जी का चित्र या पाना, चौकी (बाजौट), कलश, घी, कमलपुष्प, इलायची, माचिस, दक्षिणा हेतु नकदी, चाँदी के सिक्के, बहीखाता, कलम तथा दवात इत्यादि आवश्यक सामग्रीयां।

पवित्र करण:-

देवी पूजन हेतु पूजन हेतु पूर्व या उत्तर दिशा श्रेष्ठ होती हैं। इस लिए उत्तर या पूर्व देशा की और मुख करके सबसे पहले हाथ में जल लेकर आचमन, पवित्रीधारण, मार्जन व प्राणायाम करके पूजन सामग्री एवं स्वयं के ऊपर इस मंत्र का उच्चारण करते हुवे जल छिड़कें।

ॐ अपवित्रः पवित्रों वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

अर्थात्: मनुष्य अपवित्र हो या पवित्र यानी वह चाहे किसी भी दशा में हो, जो कमल जैसे आंखो वाले भगवान श्री विष्णु का स्मरण करता हैं वह बाहर और भीतर सभी ओर से शुद्ध हो जाता हैं।

आसन शुद्धि और स्वस्ति-पाठ कर करते हुवे हाथ में जल-अक्षत आदि लेकर पूजन का संकल्प करें।

संकल्प:-

ॐ विष्णुः मासोत्तमें मासे कार्तिकमासे कृष्णपक्षे पुण्यायाममावास्यायां तिथौ वासरे............(वार का नाम ले), (अपने गोत्र का उच्चारण करें) गोत्रोत्पन्नः (अपने नाम का उच्चारण के साथ में अहं लगाये) जोशीअहं (जैसे शर्माअहं, वर्माअहं, गुप्ताअहं इत्यादि) श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्ति कामनाया ज्ञाताज्ञात कायिकवाचिक मानसिक सकल पापनिवृत्ति पूर्वकं स्थिरलक्ष्मीप्राप्तये श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं महालक्ष्मीपूजनं कुबेरादीनां च पूजनं करिष्ये। तदङ्त्वेन गौरीगणपत्यादिपूजनं च करिष्ये।

अर्थात्: हे भगवान् विष्णु आज कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष की पुण्य अमावस्या अमुख वार (पूजन के दिन के वार का नाम लें) को मैं... (अपना नाम) मेरे पिता (अपने पिता का नाम लें) जिनका मैं पुत्र हूं अपने पुण्यों के कारण जो ज्ञात-अज्ञात लाभ को प्राप्त करने के लिए, स्थिर लक्ष्मी प्राप्त करने के लिये मैं यह लक्ष्मी पूजन कर रहा हूँ ।

उक्त संकल्प को पढ़कर जल, अक्षत आदि को गणेशजी के समीप छोड़ दे। फिर गणेशजी का पूजन करें।

गणेश पूजन से पहले नयी प्रतिमा को विधिवत प्राण-प्रतिष्ठा करें।

प्रतिष्ठा:-

प्रतिष्ठा हेतु बायें हाथ में अक्षत लेकर इस मंत्र का उचारण करते हुए दाहिने हाथ से उन अक्षतों को गणेशजी की प्रतिमा पर चढ़ाते जाये..

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ समिमं दधातु।

विश्वे देवास इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ।।
ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

उक्त विधिसे प्रतिष्ठा कर श्रीगणेशजी का षोडशोपचार पूजन करें।

तत्पश्चयात षोडसमातृका (सोलह देवियों का) नवग्रह व कलश पूजन करें। तत्पश्चयात मुख्य पूजन के रुप में देवी भगवती माँ महालक्ष्मी का पूजन करें।

षोड़शोपचार गणेश पूजन

पवित्र करण:-

सबसे पहले पूजन सामग्री व गणेश प्रतिमा या चित्रका पवित्र करण करें

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतो पि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

इस मंत्र से शरीर और पूजन सामग्री पर जल छीटें इसे अंदर बाहर और बहार दोनों शुद्ध हो जाता है

आचमन:-

ॐ केशवाय नमः ॐ नारायण नमः
ॐ मध्वाये नमः
हस्तो प्रक्षल्य हर्शिकेशय नमः

आसान सुद्धि:-

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्व विद्गणुनाधृताः।
त्व च धारय मा देवि पवित्र कुरू च आसनम्॥

रक्षा मंत्र:-

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशा।
सर्वेषामवरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे।
अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विनकर्तारस्ते नष्टन्तु शिवाज्ञया।'

इस मंत्र से दशों दिशाओं मैं पिला सरसों छिटके जिसेस समस्त भूत प्रेत बाधाओं का निवारण होता है

स्वस्ती वाचन:-

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्ता रक्षो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पर्तिदधात॥

इस के बाद श्री गणेश जी के मंगल पाठ करना चाहिए जो की इस प्रकार है

गणेश जी का मंगल पाठ:-

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्रनाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वाद्वशैतानि नामानि यः पठेच्छेणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्रस्तस्य न जायते॥

एकाग्रचिन होकर गणेश का ध्यान करना चाहिए

श्री गणेश का ध्यान करें :-

गजाननं भूतगणादि सेवितम् कपित्थ जम्बूफल चारुभक्षणम्। उमासुतम् शोक विनाश कारकम् नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्॥ ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः गणेशं ध्यायामि मंत्र का उच्चारण करें।

आह्वानं:-

इस मंत्र से श्री गणेश का आहवान करे या मन ही मन में श्री गणेश जी को पधारने के लिये विनति करें। हाथमें अक्षत लेकर आहवान करें।

आगच्छ भगवन्देव स्थाने चात्र स्थिरो भव
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्वं सन्निधौ भव।।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः

गणेशं ध्यायामि मंत्र का उच्चारण करके अक्षते डालदें.....

इस मंत्र से श्री गणेश की मूर्ति या प्रतिमा पर हल्दी या कुमकुम से रंगे चालव डालें। यदि प्रतिमा के प्रहले से प्राण-प्रतिष्ठा हो गई हैं तो आवश्यक्ता नहीं हैं तब केवल सुपारी पर ही चालव डालें।

स्मरण:-

हाथमें पुष्प लेकर श्री गणेशजी का स्मरण करें।
नमस्तस्मै गणेशाय सर्व विघ्न विनाशिने॥
कार्यारंभेषु सर्वेषु पूजितो यः सुरैरपि।
सुमुखश्चैक दंतश्च कपिलो गजकर्णकः॥
लंबोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।
धुम्रकेतुर् गणाध्यक्षो भालचंद्रो गजानन॥
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छ्रणु यादऽपि॥
विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लांबर धरं देवं शशिवर्ण चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशांतये॥
जपेद् गणपति स्तोत्रं षड्भिर्मासे फलं लभेत्।
संवंत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः॥
वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि सम प्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा॥
अभिप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥
विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लंबोदराय सकलाय
जगत्धिताय। नागाननाय श्रुतियज्ञ विभुषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः गणेशं स्मरामि मंत्र का उच्चारण करके पुष्प अर्पित करें

षोडशोपचार गणपतीपूजन:-

अस्यै प्राणः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवतमचीर्य मामहेति च कश्चन॥

आसनं:-

आसन समर्पित करें। यदि पहले से वस्त्र बिछाया हुवा हैं तो उस स्थान पर हल्दी या कुमकुम से रंगे अक्षत डालकर पुष्प अर्पित करें।

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व सौख्य करं शुभम्।

आसनं च मयादत्तं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः आसनं समर्पयामि॥

यदि श्लोक पढने में कठिनाई हो तो आसन समर्पामि श्री गं गणेशाय नमः का उच्चारण करते हुवे गणेश जी के चरण धोये।

पाद्यं:-

उष्णोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध संयुतम्।

पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः पाद्यं समर्पयामि॥

अर्घ्यं:-

आचमनीमें जल, फूल, फल, चंदन, अक्षत, दक्षिणा इत्यादि हाथ में रख कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें...

अर्घ्य गृहाण देवेश गंध पुष्पक्षतैः सह।

करुणा कुरु में देव गृहाणाध्यैः नमोस्तुते॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि मंत्र का उच्चारण करके अर्ध्य की सामग्रीया अर्पित करदें।

आचमन:-

सर्व तीर्थ समायुक्तं सुगंधि निर्मल जलम्।

आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वरं॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः आचमनं समर्पयामि॥

स्नानं:-

गंगा च यमुना रेवा तुंगभद्रा सरस्वति।

कावेरी सहिता नद्यः सद्यः स्नार्थमर्पिता॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः स्नानं समर्पयामि मंत्र का उच्चारण करते हुवे स्नान कराये।

पंचामृत स्नान:-

तत पश्चयात पंचामृत से क्रमशः दूध, दही, घी, शहद, शक्कर से स्नान करा कर शुद्धजल या गंगाजल से उक्त मंत्र से पुनः स्वच्छ करले। तत पश्चयात शुद्ध वस्त्र से पोछ कर प्रतिष्ठित करें।

दूध स्नान:-

कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवन परम्।

पावनं यज्ञ हेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

इस के स्थान पर पयः स्नानम् समर्पयामि गं गणेशाय नमः का उच्चारण करे तथा पयः के स्थान पर दूध कहें, दहीं कहें, धृतम् कहें, मधु कहें, शर्करा कहें के स्नान कराये।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।

दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।

घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

तरु पुष्प समुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु ।

तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

इक्षुसारसमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।

मलापहारिकां दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पयो दधि धृत चैव मधु च शर्करायुतम्।

पंचामृत मयानीतं सनानार्थ प्रतिघृहयताम॥

वस्त्रं:-

पंचामृत स्नान के बाद स्वच्छ कर के वस्त्र पहनाये या समर्पित करें।

सर्व भूषादिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे ।

मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृहीताम् ॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः वस्त्रोपवस्त्रे समर्पयामि॥

यज्ञोपवीत:-

ततपश्चयात निम्न मंत्र से यज्ञोपवीत पहनाये

नवमिस्तंतुभियुक्त त्रिगुणं देवतामयं।

सपबीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरम्॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः यज्ञोपवितं समर्पयामि॥

चंदन:-

ततपश्चयात लाल चंदन चढाये।

श्रीखण्ड चन्दन दिव्यं केशरादि सुमनीहरम्।

विलेपनं सुश्रष्ठ चन्दनं प्रतिगृहयतम्॥ ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः कुंकुमं समर्पयामि॥

कुंकुम:-

ततपश्चयात कुंकुम अवीर-गुलाल चढाये।

कुंकुम कामना दिव्यं कामना काम संभवम्।

कुंकुंम नार्चितो देव गृहाण परमेश्वरम्॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः कुंकुमं समर्पयामि॥

सिंदूर:-

ततपश्चयात सिंदूर चढाये।

सिंदूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिंदूरं प्रतिगृहयताम।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः सिंदूरं समर्पयामि॥

अक्षत:-

ततपश्चयात हल्दी या कुंकुंम से रंगे अक्षत चढाये।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः अक्षतान् समर्पयामि॥

पुष्प:-

ततपश्चयात पुष्प माला आदि चढाये।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मया नीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः पुष्पाणि समर्पयामि॥

दूर्वा:-

ततपश्चयात दूर्वा चढाये।

दुर्वा करान्सह रितान मृतन्मंगल प्रदान।
आनी तांस्तव पूजार्थ गृहाण परमेश्वर॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः दूर्वांकुरान समर्पयामि॥

आभूषण:-

ततपश्चयात आभूषण चढाये।

अलंकारान्महादिव्यान्नानारतन विनिर्मितान।
गृहाण देव-देवेश प्रसीद परमेश्वर॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः आभूषण समर्पयामि॥

इत्र:-

ततपश्चयात इत्र अर्थात् सुगंधित तेल चढाये।

चम्पकाशो वकुलं मालती मोगरादिभिः।
वासितं स्निग्ध तासेलु तैलं चारु प्रगृहयातम्॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः तैलम् समर्पयामि॥

धूप:-

ततपश्चयात धूप आदि जलाये।

वनस्पति रसोद्भूतो गंधाढ्यो गंध उत्तमः।
आध्नय सर्व देवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः धूपं समर्पयामि॥

दीप:-

ततपश्चयात दीप आदि जलाये।

आज्येन वर्तिना युक्तं वह्निना च प्रयोजितम् मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापह॥।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः दीपं दर्शयामि॥

नैवेद्य:-

ततपश्चयात नैवेद्य अर्पित करें।

शर्करा खंडखाद्यानि दधिक्षीर घृतानि च।
आहारं भक्ष्यं भोज्यं च गृहाण गणनायक।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि॥

ततपश्चयात नैवेद्य पर जल छिडके।

गं गणपतये नमः

ततपश्चयात इस मंत्र का उच्चारण करते हुवे पांच बार भोजन कराये.....

ॐ प्राणाय नमः। ॐ अपानाय नमः। ॐ व्यानाय नमः।
ॐ उदानाय नमः। ॐ समानाय नमः।

ततपश्चयात इस मंत्र का उच्चारण करते हुवे जल अर्पित करें।

मध्ये पानीयं समर्पयामि।

फिर से उक्त मंत्र का पांच बार उच्चारण करते हुवे पांच बार भोजन कराये....

ततपश्चयात इस मंत्र का उच्चारण करते हुवे तीन बार जल अर्पित करें....

ॐ गणेशाय नमः उत्तर पोषणं समर्पयामि।
ॐ गणेशाय नमः हस्त प्रक्षालनं समर्पयामि।
ॐ गणेशाय नमः मुख प्रक्षालनं समर्पयामि।

हाथ से भोजन की गंध दूर करने हेतु चंदनयुक्त पानी अर्पित करें।

ॐ गणेशाय नमः करोद्वर्तनार्थे गंधं समर्पयामि.

मुख शुद्धि हेतु पान-सुपारी इलायची और लवंग अर्पित करें।

एलालवेंग संयुक्तं पुगीफलं समन्वितम्,
तांबुलं च मया दत्तं गृहाण गणनायक.
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः मुखवासं समर्पयामि।

दक्षिणा:-

ततपश्चयात दक्षिणा अर्पित करें।

हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।
अनंत पूण्य फलदमतः शांतिं प्रयच्छ मे॥।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः दक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा:-

ततपश्चयात प्रदक्षिणा करें।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः प्रदक्षिणां करोमि।

आरती:-

नीराजन-आरती प्रगट कर उसमें चंदन-पुष्प लगाये कपुर प्रज्वलित करें।

चंद्रादित्यौ च धरणि विद्युदग्नि त्वमेव च।
त्वमेव सर्व ज्योतिषि आर्तीक्यं प्रतिगृह्यताम्॥
कर्पुर पूरेण मनोहरेण सुवर्ण पात्रान्तर संस्थितेन।
प्रदिसभासा सहगतेन नीराजनं ते परित करोमि।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः नीराजनं समर्पयामि।

॥श्री गणेश आरति॥

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा.
माता जाकी पारवती पिता महादेवा॥ जय गणेश.....
एकदन्त दयावन्त चारभुजाधारी
माथे पर तिलक सोहे मूसे की सवारी॥ जय गणेश.....
पान चढ़े फल चढ़े और चढ़े मेवा
लड्डुअन का भोग लगे सन्त करें सेवा॥ जय गणेश.....
अंधे को आँख देत कोढ़िन को काया
बाँझन को पुत्र देत निर्धन को माया॥ जय गणेश.....
'सूर' श्याम शरण आए सफल कीजे सेवा
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा॥ जय गणेश.....

आरती के चारो और जल घुमाये फिर गणेशजी को आरती दिखाये खुद आरती लेकर हाथ धोले।

फिर दोनो हाथकी अंजलिमें पुष्प लेकर पुष्पांजलि दें।

नाना सुगंधी पुष्पाणि ऋतुकालोद्भवानि च।
पुष्पांजलि प्रदानेन प्रसीद गणनायक।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः पुष्पांजलि समर्पयामि।

प्रार्थना:

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लंबोदराय सकलाय जगद्धिताय। नागाननाय श्रुतियज्ञ विभुषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते। भक्तार्तिनाशन पराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय। विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्ति प्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते।

नमस्कार:

लंबोदर नमस्तुभ्यं सतत मोदक प्रिय।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः नमस्कारान् समर्पयामि।

विशेष अर्ध्य:

आचमनी में जल, चावल, फूल, फल, चंदन दक्षिणा आदि अर्ध्य में ले

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक।
भक्तनाम भयंकर्ता त्राता भवभवार्णवात्॥
फलेन फलितं तोयं फलेन फलितं धनम्।
फलास्यर्घ्यं प्रदानेन पूर्णा सन्तु मनोरथाः॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

क्षमापन:

आह्वानं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व गणनायक॥

पूर्व

उत्तर (left) / दक्षिण (right)

आत्मनः कुलदेवता 16	लोकमातरः 12	देवसेना 8	मेधा 4
तुष्टिः 15	मातरः 11	जया 7	शची 3
पुष्टिः 14	स्वाहा 10	विजया 6	पद्मा 2
धृतिः 13	स्वधा 9	सावित्री 5	गणेश-गौरी 1

पश्चिम

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः क्षमापनं समर्पयामि॥
अनया पूज्या सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशः प्रियताम्॥

षोडशमातृका पूजन

षोडशमातृकाओं की स्थापना हेतु फर्श पर सोलह कोष्टकों का चौकोर मंडल बनाये।

पश्चिम दिशा से पूर्व दिशा की ओर क्रमशः मातृकाओं की स्थापना करें। प्रत्येक कोष्ठक में रक्त अक्षत, जौ या गेहूँ रखें। पहले कोष्ठक में गौरी का आह्वान करे। लेकिन गौरी के आह्वान से पहले भगवान गणेश का आह्वान करें। गणेश का आह्वान पुष्प और अक्षत से करें। अन्य कोष्ठकों में मंत्र उच्चारित करते हुए आह्वान करें।

मातृकाओं का आह्वान एवं स्थापना मंत्र :-

इस मंत्रों में षोडशमातृकाओं का आह्वान करें..

ॐ गणपतये नमः। गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि ॥

ॐ गौर्यै नमः। गौरीमावाहयामि, स्थापयामि ॥१॥

ॐ पद्मायै नमः। ॐ पद्मावाहयामि, स्थापयामि ॥२॥

ॐ शच्यै नमः। शचीमावाहयामि, स्थापयामि॥३॥

ॐ मेधायै नमः। मेधामावाहयामि, स्थापयामि ॥४॥

ॐ सावित्र्यै नमः। सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि ॥५॥

ॐ विजयायै नमः। विजयामावाहयाम, स्थापयामि ॥६॥

ॐ जयायै नमः। जयामावाहयामि, स्थापयामि ॥७॥

ॐ देवसेनायै नमः। देवसेनामावाहयामि, स्थापयामि ॥८॥

ॐ स्वधायै नमः। स्वधामावाहयामि, स्थापयामि ॥९॥

ॐ स्वाहायै नमः। स्वाहामावाहयामि, स्थापयामि ॥१०॥

ॐ मातृभ्योनमः। मातृः आवाहयामि, स्थापयामि ॥११॥

ॐ लोकमातृभ्यो नमः। लोकमातृः आवाहयामि, स्थापयामि॥१२॥

ॐ धृत्यै नमः। धृतिमावाहयामि, स्थापयामि ॥१३॥

ॐ पुष्ट्यै नमः। पुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि ॥१४॥

ॐ तुष्ट्यै नमः। तुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि॥१५॥

ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः। आत्मनः कुलदेतामावाहयामि, स्थापयामि ॥१६॥

इस मंत्र द्वारा षोडशमातृकाओं का आह्वान, स्थापना करें -

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनी
त्वरिष्टंयज्ञठसमिमंदधातु॥ विश्वेदेवास इह
मादयन्तामोऽम्प्रतिष्ठ॥

अक्षत छोड़ते हुए मातृका-मंडल की प्रतिष्ठा करें ।

"ॐ गणेशसहितगौर्यादिषोडशमातृकाभ्यो नमः"

इस मंत्र से पंचोपचार पूजन करें । नैवेद्य में गुड तथा घी का नेवैद्य लगाये ।

प्रार्थना :-

ॐ गणेश सहितगौर्यादि षोडशमातृकाभ्यो नमः।

अनया पूजया गणेशसहित गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम्, न मम ।

इस मंत्र के साथ अक्षत अर्पित करने के बाद नमस्कार करें और फिर इस मंत्र का उच्चारण करें-

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया ।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता ।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडशः ॥

मातृकापूजन के पश्चयात नवग्रह पूजन करें।

नवग्रह पूजन

नवग्रह-पूजन के लिए नवग्रह बीसा यन्त्र अथवा नवग्रह मंडल की स्थापना लाल वस्त्र पर अक्षत के ऊपर करें । पहले ग्रहों का आह्वान करके उनकी स्थापना की जाती है। बाएँ हाथ में अक्षत लेकर इस मंत्र का उच्चारण करते हुए दाएँ हाथ से अक्षत अर्पित करते हुए ग्रहों का आह्वान करें ।

प्रार्थना एवं स्थापना मंत्र :

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहुकेतवः सर्वेग्रहाः शांतिकरा भवन्तु ॥
सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीम् सन्मंगलम् मंगलः।
सद्बुद्धिम् च बुधो गुरुश्च गुरुताम् शुक्र सुखम् शं शनिः ।
राहुर्बाहुबलं करोतु सततम् केतुः कुलस्योन्नतिम्
नित्यम् प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनकूला ग्रहाः ॥

आह्वान :

इस मंत्र से नवग्रहों का आह्वान करके उनका पूजन करें :

अस्मिन नवग्रहमंडले आवाहिताः सूर्यादिनवग्रहा देवाः
सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ।

प्रतिष्ठा :-

हाथ में अक्षत लेकर इस मंत्र से का उच्चारण कर उसे नवग्रह मंडल में प्रतिष्ठा के लिए अर्पित करें।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं ततनोत्वरिष्टं
यज्ञं समिमं दधातु।
विश्वे देवास इह मादयन्तामोऽम्प्रतिष्ठ ॥

पूजनः-

तत्पश्चात इस मंत्र के साथ नवग्रहों का पंचोपचार पूजन करें -

"गंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यादिनी समर्पयामी" कहकर गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य अर्पित करें ।

प्रार्थना :-

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥१॥
दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोः मुकुट भूषणम्॥२॥
धरणी गर्भ संभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्ति हस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्॥३॥
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥४॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चन संनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥५॥
हिम कुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्व शास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥६॥
नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥७॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम्।
सिंहिका गर्भ संभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥८॥
पलाश पुष्प संकाशं तारका ग्रह मस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥९॥
इति व्यास मुखोद् गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्न शान्तिः भविष्यति॥१०॥
नर नारी नृपाणां च भवेद् दुःस्वप्न नाशनम्।
ऐश्वर्यं अतुलं तेषाम् आरोग्यं पुष्टि वर्धनम्॥११॥
गृह नक्षत्रजाः पीडा स्तस्कराग्नि समुद्भवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रू ते न संशयः॥१२॥
॥ इति श्रीव्यास विरचितं नवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

कलश पूजन(वरुण पूजन)

कलश स्थापित करने हेतु लकड़ी की चौकी पर अष्टदल कमल बनाकर उस पर धान्य(गेहूँ) बिछा दें। कलश (कलश हेतु मिट्टी अथवा तांबे का लोटा लें) पर रोली से स्वास्तिक का चिन्ह बनाकर लोटे पर तीन धागे वाली मौली (नाड़ाछड़ी, कलावा, पंचरंगी धागा) लपेटें व धान्य पर कलश रखकर जल से भर दें एवं उसमें चंदन, दूब, पाँच पत्ते (बरगद, गूलर, पीपल, आम, पाकड़ अथवा पान के पत्ते), कुशा एवं गौशाला आदि की मिट्टी, सुपारी, पंचरत्न (यथाशक्ति) व द्रव्य छोड़ दें। नारियल पर लाल कपड़ा लपेटकर, चावल से भरे एक पूर्ण पात्र को कलश पर स्थापित कर उस पर नारियल रख दें। हाथ जोड़कर कलश में वरुण देवता का आह्वान करें :-

स्थापना :-

कलश में जल भरकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें :-

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य।
ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदन्मसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद॥

आह्वान :-

ततपश्चयात सुपारी और पंच रत्न आदि जल कलश में डाल दें। इसके बाद कलश पर चावल का पात्र रखकर लाल वस्त्र से लपेटा नारियल रखना दे। अब वरुण देवता का स्मरण करते हुए आह्वान करें-

ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरुण इहागच्छ, इहतिष्ठ, स्थापयामि पूजयामि च।

ध्यान व प्रार्थना :-

ततपश्चयात कलश पर सब देवताओं का ध्यान करें एवं चंदन, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य अर्पित कर पूजन करें। इस मंत्र का उच्चारण करें:-

कलशस्य मुखे विष्णुः कंठे रुद्रः समाश्रितः । मूले त्वस्य स्थतो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥कुक्षौ तु सागराः सर्वे, सप्तद्वीपा वसुंधराः । अर्जुनी गोमती चैव चंद्रभागा सरस्वती ॥
कावेरी कृष्णवेणी च गंगा चैव महानदी । ताप्ती गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ॥नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः ।
पृथिव्यां यान तीर्थानि कलशस्तानि तानि वैः ॥सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थयानि जलदा नदाः । आयान्तु मम कामस्य दुरितक्षयकारकाः ॥ॐ अपां पतये वरुणाय नमः । ॐ वरुणाद्यावाहित देवताभ्यो नमः।

समर्पण :-

"कृतेन अनेन पूजनेन कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम।"

लक्ष्मी पूजन

पूजन से पूर्व नयी लक्ष्मी प्रतिमा तथा द्रव्यलक्ष्मी की

प्राणप्रतिष्ठा करें:-

प्रतिष्ठा हेतु बायें हाथ में अक्षत लेकर इस मंत्र का उचारण करते हुए दाहिने हाथ से उन अक्षतों को लक्ष्मीजी की प्रतिमा पर चढ़ाते जाये..

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं
तनोत्वरिष्टं यज्ञ समिमं दधातु।
विश्वे देवास इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ।।
ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

इत्यादि शास्त्रोक्त मंत्रों का उचारण कर प्राण-प्रतिष्ठा करें।

ध्यान:-

तत्पश्चयात हाथ में पुष्य लेकर इस मंत्र का उच्चारण करते हुवे लक्ष्मी देवी का ध्यान करें..

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी,
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता ॥
ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयी लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ध्यानार्थं पुष्पाणि समर्पयामि ।

(ध्यान के लिए हाथ में लिये हुवे पुष्प देवी को अर्पित करें।)

आह्वान:-

तत्पश्चयात हाथ में पुष्य लेकर इस मंत्र का उच्चारण करते हुवे लक्ष्मी देवी का आह्वान करें..

सर्वलोकस्य जननीं सर्वसौख्यप्रदायिनीम् ।सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीमावाहयामि, आवाहनार्थं पुष्पाणि समर्पयामि ।

(आह्वान के लिए हाथ में लिये हुवे पुष्प देवी को अर्पित करें।)

आसन :-

तत्पश्चयात हाथ में कमल पुष्य या अन्य लेकर इस मंत्र का उच्चारण करें..

तप्तकांचनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम् ।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। आसनं समर्पयामि ।

(आसन के लिए हाथ में लिये हुवे पुष्प देवी को अर्पित करें।)

पाद्य :-

तत्पश्चयात चन्दन पुष्पादि युक्त जल लेकर इस मंत्र का उच्चारण करें..

गंगादितीर्थसम्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतम् ।
पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोऽस्तुते ॥
ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।

(पाद्य हेतु हाथ में लिये हुवे चन्दन पुष्पदियुक्त जल अर्पित करें।)

अर्घ्य :-

तत्पश्चयात अष्टगन्धमिश्रित जल लेकर इस मंत्र का उच्चारण करें..

अष्टगन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरितम् ।
अर्घ्यं गृहाण मद्दतं महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनीमीं शरणं प्रपद्येऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि ।

(अष्टगंध मिश्रित जल को देवी के हाथों पर समर्पित करें।)

आचमन :-

तत्पश्चयात आचमन के लिए जल लेकर इस मंत्र का उच्चारण करें..

सर्वलोकस्य या शक्तिब्रह्मविष्ण्वादिभिः स्तुता ।
ददाम्याचमनम् तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम् ॥
ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु माया अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

(आचमन के लिए लिये हुवे जल को चढ़ाये।)

स्नान:-

तत्पश्चयात स्नान के लिए जल लेकर इस मंत्रका उच्चारण करें..

मन्दाकिन्याः समानीतैर्हेमाम्भोरुहवासितैः। स्नानं कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः। स्नानं समर्पयामि।

(स्नानीय जल अर्पित करें।)

स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

स्नानके बाद 'ॐ महालक्ष्म्यै नमः' बोलकर आचमन हेतु जल दें।

दुग्ध स्नान :

कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय औषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः, पयः स्नानं समर्पयामि ।
पयः स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।
(गाय के कच्चे दूध से स्नान कराये, पुनः शुद्ध जल से स्नान कराये।)

दधिस्नान :-

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् । दध्यानीतं मया देवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूषि तारिषत् । ॐ महालक्ष्म्यै नमः। दधिस्नानं समर्पयामि। दधिस्नानानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।
(दही से स्नान करायें, फिर शुद्ध जल से स्नान करायें।)

घृत स्नान :-

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् । घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ घृतं घृतपावनः पिबत वसां वसापावनः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः। घृतस्नानं समर्पयामि । घृतस्नानानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
(घृत [घी] स्नान करायें, फिर शुद्ध जल से स्नान करायें।)

मधु स्नान :-

तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु । तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवँ घूं रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नों वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवंतु नः ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः। मधुस्नानं समर्पयामि। मधुस्नानन्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।
(शहद स्नान करायें, फिर शुद्ध जल से स्नान करायें।)

शर्करा स्नान :-

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका ।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ अपा घूं रसमुद्वयसँ सूर्ये सन्त घूं समाहितम् ।
अपा घूं रसस्य यो रसस्तं वो
गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय
त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । शर्करास्नानं समर्पयामि, शर्करा स्नानान्ते पुनः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।
(शक्कर से स्नान करायें, फिर शुद्ध जल से स्नान करायें।)

पंचामृत स्नान :-

दूध, दही, घी, शकर एवं शहद मिलाकर पंचामृत बनाएँ व निम्न मंत्र से स्नान कराएँ।

पयो दधि घृतं चैव मधुशर्करयान्वितम् ।
पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। पंचामृतस्नानं समर्पयामि, पंचामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।
(पंचामृत स्नान करायें, फिर शुद्ध जल से स्नान करायें।)

गन्धोदक स्नान :-

मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरुसम्भवम् ।
चन्दनं देवदेवेशि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि ।
(गंध (चंदन) युक्त जल से स्नान कराएँ।)

विशेष:-

गन्धोदक स्नान के पश्चयात श्रीसूक्त, पुरुष सूक्त अथवा सहस्रनाम आदि से पुष्पार्चन या जल अभिषेक करके फिर शुद्धोदक स्नान कराये यदि पुष्पार्चन या जल अभिषेक नहीं करना हो तो सीधे शुद्धोदक स्नान कराये।)

अभिषेक हेतु शुद्ध जल या दुग्ध से श्रीसूक्त के पाठ के समय अखण्ड जलधारा से स्नान अर्थात अभिषक कराये। अखण्ड जलधारा हेतु धातु की प्रतिमा या द्रव्यलक्ष्मी श्रेष्ठ रहती हैं। अखण्ड जलधारा अभिषेक अलग पात्र में करना चाहिए।

* मिट्टी की प्रतिमा हो तो अखण्ड जलधारा से प्रतिमा क्षतिग्रस्त हो सकती हैं। श्री सूक्त इस अंक में उपलब्ध कराया गया हैं।

शुद्धोदक स्नान :

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् ।
तदिदं कल्पितं तुभ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।
(शुद्धोदक स्नान के लिए गंगाजल अथवा शुद्ध जल से देवी को स्नान कराये। तदनंतर प्रतिमा का अंग-प्रोक्षण(पोंछना) करके उसे यथास्थान आसान पर स्थापित करें।)

आचमन :-

तत्पश्चात 'ॐ महालक्ष्म्यै नमः' कहकर आचमनी से जल अर्पित करें।

वस्त्र :-

दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं त्वतिमनोहरम् ।
दीयमानं मया देवि गृहाण जगदम्बिके ॥
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। वस्त्रं समर्पयामि,
आचमनीयं जलं च समर्पयामि ।
(वस्त्र अर्पित करें, आचमनीय जल अर्पित करें।)

उपवस्त्र :-

कंचुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम् ।
गृहाण त्वं मया दत्तं मंगले जगदीश्वरि ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। उपवस्त्रं समर्पयामि,
आचमनीयं जलं च समर्पयामि ।
(कंचुकी,अँगिया आदि उपवस्त्र चढ़ाएँ,आचमन के लिए जल दें।)

मधुपर्क :-

कांस्य कांस्येन पिहितो दधिमध्वाज्यसंयुतः । मधुपर्को मयानीतः पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः। मधुपर्कं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि ।
(कांस्य पत्र में स्थित मधुपर्क (अर्थात सोने चांदी के सिक्के इत्यादि) अर्पित करें)

यज्ञोपवीत :-

श्रीगणेश, श्रीनारायण आदि देवता को स्थापित किया हो तो यज्ञोपवित चढ़ाए, अन्यथा सीधे आभूषण से पूजन करें
ॐ तस्मादअकूवा अजायंत ये के चोभयादतः । गावोह यज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥ ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतर्येत्सहजं पुरस्तात् ॥ आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेजः । ॐ महालक्ष्म्यै नमः, ॐ श्रीगणेशाय नमः, ॐ भगवते वासुदेवाय नमः । यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।
(श्रीगणेश, श्रीनारायण आदि देवता कोयज्ञोपवित चढ़ाये, आचमन के लिए जल दें।)

आभूषण :-

रत्नकंकणवैदूर्यमुक्ताहारादिकानि च ।
सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व भोः ॥
ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठाम्-अलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। नानाविधानि कुंडलकटकादीनि आभूषणानि समर्पयामि । (आभूषण समर्पित करें।)

गन्ध :-

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठे चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षानित्य पुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। गन्धं समर्पयामि ।
(अनामिका अंगुली से केसर मिश्रित चन्दन अर्पित करें।)

रक्त चन्दन :-

रक्तचन्दनसम्मिश्रं पारिजातसमुद्भवम् ।
मया दत्तं महालक्ष्मि चन्दनं प्रतिगृह्यताम ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। रक्तचन्दनं समर्पयामि ।
(अनामिका अंगुली से रक्त चंदन चढ़ाएँ।)

सिन्दूर :-

सिन्दूरं रक्तवर्णं च सिन्दूरतिलकप्रिये ।
भक्त्या दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वात प्रमियः पतयन्ति यह्वाः ।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। सिन्दूरं समर्पयामि ।
(देवी लक्ष्मी को सिन्दूर चढ़ाएँ।)

कुंकुम :-

कुंकुमं कामदं दिव्यं कुंकुमं कामरूपिणम् ।
अखण्डकामसौभाग्यं कुंकुमं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः, कुंकुमं समर्पयामि ।
(कुंकुम अर्पित करें।)

पुष्पसार :-

तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च ।
मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। सुगन्धिततैलं पुष्पसारं च समर्पयामि ।
(पुष्पसार में सुगन्धित तेल व इत्र अर्पित करें।)

अक्षत :-

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठे कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। अक्षतान् समर्पयामि ।
(कुंकुम से रंगे हुए अक्षत अर्पित करें।)

पुष्प एवं पुष्पमाला :-

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयानीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि ।

(उक्त मंत्र का उच्चारण कर देवी लक्ष्मी जी को पुष्पों से व पुष्प मालाओं से अलंकृत करें। लक्ष्मीजी का पूजन कमल के पुष्प से श्रेष्ठ माना जाता हैं।)

दूर्वा :-

विष्ण्वादिसर्वदेवानां प्रियां सर्वसुशोभनाम् ।
क्षीरसागर सम्भूते दूर्वां स्वीकुरू सर्वदा ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। दूर्वांकुरान् समर्पयामि ।

(दूर्वांकुर (अर्थात् दूब के अंकुर) अर्पित करें।)

अंग पूजा :-

तदनंतर महालक्ष्मीजी के विभिन्न अंगों का कुंकुम एवं अक्षत मिश्रित पुष्पों से देवी का एक-एक नाम लेते हुवे अंगपूजन करें

ॐ चपलायै नमः, पादौ पूजयामि। (पैरों पर पुष्प अर्पित करें)

ॐ चंचलायै नमः, जानुनी पूजयामि। (जानु प्रदेश पर पुष्प अर्पित करें)

ॐ कमलायै नमः,कटिं पूजयामि। (कमर पर पुष्प अर्पित करें)

ॐ कात्यायन्यै नमः,नाभिं पूजयामि। (नाभि पर पुष्प अर्पित करें)

ॐ जगन्मात्रे नमः, जठरं पूजयामि। (जठर पर पुष्प अर्पित करें)

ॐ विश्ववल्लभायै नमः, वक्षःस्थलम् पूजयामि । (वक्षस्थल पर पुष्प अर्पित करें)

ॐ कमलवासिन्यै नमः,हस्तौ पूजयामि। (हाथ पर पुष्प अर्पित करें)

ॐ पद्माननायै नमः, मुखं पूजयामि। (मुख पर पुष्प अर्पित करें)

ॐ कमलपत्राक्ष्यै नमः, नेत्रत्रयं पूजयामि।(तीनों नेत्र पर पुष्प अर्पित करें)

ॐ श्रियै नमः, शिरः पूजयामि । (सिर पर पुष्प अर्पित करें)

ॐ महालक्ष्म्यै नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि । (देवी के समस्त अंग के पूजन हेतु पुष्प अर्पित करें)

अष्टसिद्धिपूजन :-

इसके पश्चात दक्षिणावर्त अर्थात् घड़ी की दिशा में आठों दिशाओं में वर्णित आठों सिद्धियों का पूजन कुंकुम एवं अक्षत से देवी महालक्ष्मी का पूजन करें -

1 ॐ अणिम्ने नमः (पूर्व दिशा में), 2 ॐ महिम्ने नमः (आग्नेय कोण में), 3 ॐ गरिम्णे नमः (दक्षिण दिशा में), 4 ॐ लघिम्ने नमः (नैऋत्य कोण में), 5 ॐ प्राप्त्यै नमः (पश्चिम दिशा में), 6 ॐ प्रकाम्यै नमः (वायव्य कोण में), 7 ॐ ईशितायै नमः (उत्तर दिशा में), 8 ॐ वशितायै नमः(ईशान कोण में)।

अष्टलक्ष्मी पूजन :-

इसके पश्चात दक्षिणावर्त अर्थात् घड़ी की दिशा में आठों दिशाओं में वर्णित आठों अष्ट लक्ष्मियों का पूजन करें।

(1) ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः (2) ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः (3) ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः (4) ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः (5) ॐ कामलक्ष्म्यै नमः (6) ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः (7) ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः (8) ॐ योगलक्ष्म्यै नमः

धूप :-

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम।
श्रियं वासय में कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। धूपमाघ्रापयामि ।

(दोनों हाथों से लक्ष्मीजीको धूप आघ्रापित करें।)

दीप :-

कार्पासवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम् ।
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि ॥
ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। दीपं दर्शयामि ।

(लक्ष्मीजीको दीपक दिखाकर हाथ धो लें।)

नैवेद्य (साल की धानी सहित पंचमिष्ठान्न व सूखे मेवे) :

नैवेद्यं गृह्यतांदेवि भक्ष्यभोज्यसमन्वितम् ।
षड्रसैरन्वितं दिव्यं लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ॥
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। नैवेद्यं निवेदयामि,
मध्ये पानीयम्, उत्तरापोऽशनार्थम् हस्तप्रक्षालनार्थं
मुखप्रक्षालनार्थं च जलं समर्पयामि ।

(लक्ष्मीजी को नैवेद्य निवेदित कर पानीय जल एवं हस्तप्रक्षालन के लिए जल अर्पित करें।)

करोद्वर्तन :-

ॐ महालक्ष्म्यै नमः यह कहकर करोद्वर्तन के लिए हाथों में चन्दन उपलेपित करें।

आचमन :-

शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम् ।

आचम्यतां जलं ह्येतत् प्रसीद परमेश्वरि ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। आचमनीयं जलं समर्पयामि ।
(आचमन के लिए जल दें।)

ऋतुफल :-

फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। अखण्डऋतुफलं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि ।
(ऋतुफल अर्पित करें तथा आचमन के लिए जल दें।)

ताम्बूल एवं पूगीफल :-

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि ।
(लवंग, इलायची व पूगीफल(सुपारी) रखकर ताम्बूल(पान) अर्पित करें।)

दक्षिणा :-

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥
ॐ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। दक्षिणां समर्पयामि ।
(अपनी श्रद्धा अनुसार लक्ष्मीजी को दक्षिणा चढ़ाये।)

नीराजन (आरती) :-

चक्षुर्दं सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम् ।
आर्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। नीराजनं समर्पयामि ।
(आरती करें तथा जल छोड़ें व हाथ धोले।)

प्रदक्षिणा :-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणांपदे पदे ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि ।
(प्रदक्षिणा करें।)

प्रार्थना :-

हाथ जोड़कर प्राथना करें:

सुरसुरेंद्रादिकिरीटमौक्तिकैर्युक्तम सदा यत्तव पादपंकजम् ।
परावरं पातु वरं सुमंगलम् नमामि भक्त्याखिलकामसिद्धये ॥
भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनी ।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मि ! नमोऽस्तु ते ॥
नमस्ते सर्वदेवानां वरदासी हरिप्रिये ।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात् त्वदर्चनात् ॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि ।
(देवी को प्रार्थना करते हुए नमस्कार करें।)

समर्पण :-

पूजन के अंतमें "कृतेनानेन पूजनेन भगवती महालक्ष्मी देवी प्रीयताम् न मम।" इस मंत्र का उच्चारण करते हुवे समस्त पूजन कर्म देवी महालक्ष्मी को समर्पित करते हुवे हाथ में जल लेकर छोड़ दें।

इस दीपावली पर स्वयं सिद्ध करें लक्ष्मी मंत्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

दीपावली का महत्व और लक्ष्मी पूजन विधि

संकलन गुरुत्व कार्यालय



प्राचिन काल से हि भारतीय संस्कृति में अनेक पर्व-त्यौहार मनाए जाते हैं। इन त्यौहारों में कार्तिक मास कि अमावस्या को दीपावली का विशेष महत्व हैं। क्योकि दीपावली खुशियों का त्यौहार हैं। दीपावली के दिन भगवान गणेश व लक्ष्मी के पूजन का विशेष महत्व हैं। इस दिन गणेश जी कि पूजा से ऋद्धि-सिद्धि कि प्राप्ति होती हैं एवं लक्ष्मी जी के पूजन से धन, वैभव, सुख, संपत्ति कि प्राप्ति होती हैं।

दीपावली के दिन किये जाने वाले मंत्र-यंत्र-तंत्र का प्रयोग अत्यधिक प्रभावी माना जाता हैं। दीपावली अर्थातः दीपकों कि माला।

दीपावली के दिन प्रत्येक व्यवसाय-नौकरी से जुडे व्यक्ति अपने व्यवायीक स्थान एवं घर पर मां लक्ष्मी का विधिवत पूजन कर धन कि देवी लक्ष्मी से सुख-समृद्धि कि कामना करते हैं।

पूजन सामग्री :

महालक्ष्मी पूजन में केसर, कूमकूम, चावल, पान, सुपारी, फल, फूल, दूध, बताशे, सिंदूर, मेवे, शहद, मिठाइयां, दही, गंगाजल, धूप, अगरबत्तियां, दीपक, रुई, कलावा(मौली), नारियल और तांबे का कलश।

पूजन विधि :

भूमि को गंगाजल इत्यादी से शुद्ध करके नवग्रह यंत्र बनाएं। यंत्र के साथ ही तांबे के कलश में गंगाजल, दूध, दही, शहद, सुपारी, लौंग आदि डालकर कलश को लाल कपड़े से ढककर एक जटा युक्त नारियल मौली से बांधकर रख दें। नवग्रह यंत्र के पास चांदी का सिक्का और लक्ष्मी गणेश कि प्रतिमा स्थापित कर पंचामृत से स्नान कराकर स्वच्छ लाल कपड़े से पोछ कर लक्ष्मी गणेश को चंदन, अक्षत अर्पित करके फल-फूल आदि अर्पित करें और प्रतिमा के दाहिनी ओर शुद्ध घी का एक दीपक एवं बाई और तेल (मिठेतेल) का एक दीपक जलाएं।

पवित्र आसन पर बैठकर स्वस्ति वाचन करें। गणेश जी का स्मरण कर अपने दाहिने हाथ में गंध, अक्षत, पुष्प, दूर्वा, द्रव्य आदि लेकर गणेश, महालक्ष्मी, कुबेर आदि देवी-देवताओं के विधिवत पूजन का संकल्प करें।

सर्वप्रथम गणेश और लक्ष्मी का पूजन करें। उसके पश्चयात षोडशमातृका पूजन व नवग्रह पूजन कर अन्य देवी-देवताओं का पूजन करें।

दीपक पूजन :

दीपक जीवन से अज्ञान रुपी अंधकार को दूर कर जीवन में ज्ञान के प्रकाश का प्रतीक हैं। दीपक को इश्वर का तेजस्वी रूप मान कर इसकी पूजा करनी चाहिए। पूजा करते समय अंतःकरण में पूर्ण श्रद्धा एवं शुद्ध भावना रखनी चाहिए। दीपावली के दिन पारिवारिक परंपराओं के अनुसार तिल के तेल के सात, ग्यारह, इक्कीस अथवा इनसे अधिक दीपक प्रज्वलित करके एक थाली में रखकर कर पूजन करने का विधान हैं।

उपरोक्त पूजन के पश्चयात घर कि महिलाएं अपने हाथ से सोने-चांदी के आभूषण इत्यादि सुहाग कि संपूर्ण सामग्रीयां लेकर मां लक्ष्मी को अर्पित करदें। अगले दिन स्नान इत्यादि के पश्चयात विधि-विधान से पूजन के बाद आभूषण एवं सुहाग कि सामग्री को मां लक्ष्मी का प्रसाद समजकर स्वयं प्रयोग करें। एसा करने से मां लक्ष्मी कि कृपा सदा बनी रहती है।

जीवन में सफलता एवं आर्थिक स्थिति में उन्नति के लिए सिंह लग्न अथवा स्थिर लग्न का चुनाव कर श्रीसूक्त, कनकधारा स्तोत्र का पाठ करें।

दीपावली पूजन के समय गणेश एवं लक्ष्मी के साथ विष्णु जी का पूजन अवश्य करें जिस्से घरमें स्थिर लक्ष्मी का निवास हो सके। लक्ष्मी जी के दाहिनी ओर विष्णु जी और बाईं ओर गणेश जी कि स्थापना करनी चाहिए।

स्थिर लक्ष्मी कि कामना हेतु दक्षिणावर्ती शंख, मोती शंख, गोमती चक्र इत्यादि को शास्त्रों में लक्ष्मी के सहोदर भाई माना गया हैं। इन दुर्लभ वस्तुओं कि स्थापना करने से लक्ष्मी जी प्रसन्न होती हैं।

लक्ष्मी प्राप्ति के 151 सरल उपाय

संकलन गुरुत्व कार्यालय

आज के भौतिक युग में हर व्यक्ति की चाह होती हैं की उसे अधिक से अधिक धन-संपत्ति एवं ऐश्वर्य प्राप्त हो। हर व्यक्ति अपनी धन-संपत्ति को दिन दोगुनी रात चौगुनी रफ्तार से बढ़ाना चाहते हैं, इसलिए व्यक्ति लक्ष्मी प्राप्ति हेतु विभिन्न मंत्र, यंत्र एवं तंत्र के प्रयोगो को अपना कर लक्ष्मी कारक विभिन्न सामग्रीयों को अपने घर, दुकान, ऑफिस आदि व्यवसायीक स्थान पर स्थापित कर उसका पूजन-अर्चन करते हैं। जिन लोगों ने लक्ष्मी प्राप्ति के लिए अपने घर में सुख समृद्धि कारक विभिन्न दुर्लभ सामग्रीयां जैसे श्रीयंत्र, दक्षिणावर्ति शंख इत्यादि सामग्री को अपने घर में पहले से स्थापित कर उसका नियमित पूजन-अर्चन कर रहे हो, उन्हें अधिक लाभ की प्राप्ति हेतु लक्ष्मी प्राप्ति के अन्य सरल उपायों को भी अपने जीवन में अवश्य आजमाना चाहिए अथवा जिन लोगों ने इन लक्ष्मी कारक दुर्लभ वस्तुओं को अभी तक अपने घर में को स्थापित नहीं किया हैं या वह लोग इस सामग्रीयों को स्थापित करने में असमर्थ हैं, उन लोगों को लक्ष्मी प्राप्ति हेतु यहां दिये गये अनुभूत उपायो को अपनाकर जीवन में निश्चित रुप से सुख-समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए एवं इन उपायों से लाभ की प्राप्ति होने पर विभिन्न दुर्लभ वस्तुओं को प्राप्त कर अपने घर में अवश्य स्थापित कर उसना नियमित पूजन-अर्चन करना चाहिए।

दीपावली के शुभ मुहूर्त में धन प्राप्ति के विशेष उपायों को प्रारंभ कर निश्चित रुप से अपने जीवन में धन-वैभव, सुख-समृद्धि का आगमन किया जा सकता हैं।

पाठको के मार्गरशन हेतु लक्ष्मी प्राप्ति के सरल उपायों को 3 भागों में दिया गया हैं, जो क्रमश: दीपवली पर करें धन प्राप्ति हेतु विशेष उपाय, दैनिक जीवन में अपनाये लक्ष्मी प्राप्ति के सरल उपाय और दरिद्रता निवारण हेतु विशेष उपाय हैं।

दीपावली पर किये जाने वाले उपायों को आवश्यक्ता अनुसार अन्य शुभ मुहूर्त एवं अवसरों पर किया जा सकता हैं। विद्वानों का अनुभव हैं की इन दीपावली पर्व पर किये जाने वाले धन प्राप्ति के उपायों को दीपावली पर करने से विशेष लाभ की प्राप्ति होती हैं।

दीपवली पर करें धन प्राप्ति हेतु विशेष उपाय

दीपवली पर करें धन प्राप्ति हेतु विशेष उपाय में दिये गयें सभी उपायों विशेष रुप से अक्षय तृतीया, धनत्रयोदशी,

दीपावली आदि विशेष मुहूर्त करना चाहिए।

1. दीपावली पूजन के बाद शंख ध्वनि से दरिद्रता दूर होकर लक्ष्मी का निवास होता हैं।
2. दीपावली पूजन में अभिमंत्रित हकीक का पूजन कर उसे धारण करने से धारण कर्ता की आर्थिक स्थिती में सुधार होने लगता हैं।
3. दीपावली पूजन में अभिमंत्रित हकीक का पूजन कर उसे उसे अपने गल्ले (कैश बॉक्स), तिजोरी मनी पर्स में रखने से धन संचय होने लगता हैं एवं धन की वृद्धि होती हैं।
4. धन-संपत्ति की प्राप्ति हेतु अपने व्यवसायीक स्थान या घर की पूजा स्थान में गणेश लक्ष्मी यंत्र अवश्य स्थापित करें।
5. धनतेरस के दिन पीसे चावल का घोल व हल्दी, केसर को मिलाकर उसके घोल से घर में मुख्य द्वार पर ॐ लिखने से नियमित धन का आगमन होता हैं। इस प्रयोग को पुनः अगले वर्ष धनतेरस के दिन इस प्रयोग को पुनः दोहराये।
6. अपार धन-संपत्ति की कामना रखने वाले व्यक्ति को श्रीयंत्र, गणेश लक्ष्मी यंत्र, कनकधारा यंत्र और कुबेर यंत्र का पूजन अवश्य करना चाहिए। विद्वानों का अनुभव हैं की इन यंत्र को पूजन करने वाला मनुष्य को कभी धन का अभाव नहीं होता।
7. दीपावली पूजन में मां लक्ष्मी को पूजा में 11 अभिमंत्रित पीली कौड़ियां अर्पण करें, दूसरे दिन कौड़ियों को लाल कपड़े में बांधकर अपने गल्ले या तिजोरी में रखने से धन की वृद्धि होने लगती है।
8. दीपावली के दिन प्रातः किसी भी लक्ष्मी मंदिर या लक्ष्मी नारायण मंदिर में मां लक्ष्मी को लाल रंग की चुनरी या वस्त्र चढ़ाने से आर्थिक स्थिती प्रबल हो जाती हैं एवं धन की कमी नहीं रहती।
9. दीपावली के दिन पूजन में लक्ष्मी मंत्र का जप कमल गट्टे से करे एवं मां लक्ष्मी को कमल का फूल चढ़ाने से मांलक्ष्मी की विशेष कृपा होती हैं।
10. दीपावली के दिन मां लक्ष्मी को सफेद मिष्ठान का भोग लगाकर उसे गरीबों को बांटने से पुराने कर्ज से

Dear Reader…

You have reached a Limit that is available for Free viewing !

Now it's unavailable to Unauthorised or Unregistered User.
We hope Enjoyed the preview?

Now time to Get A GK Premium Membership For Full Access ..
>> See details for this Membership in the our Store.

(GK Premium Membership available for any 1 Edition or All Edition.)

मंत्र सिद्ध काली हल्दी के विभिन्न लाभ

संकलन गुरुत्व कार्यालय

विद्वानों का कथन हैं की ईश्वर की कृपा प्राप्ति हेतु एवं वांछित कार्य में सिद्धि की प्राप्ति एवं मनोकामना पूर्ति हेतु मंत्र, यंत्र और तंत्र के अनेक उपायो का वर्णन हिन्दू धर्मग्रंथों में मिलता हैं।



आज के भौतिक युग में हर कार्य अर्थ (धन) के उपर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुपसे निर्भर होता हैं इस लिये प्रत्येक व्यक्ति कि यही इच्छा होती हैं कि उसके पास भी इतना धन हो कि वह अपने जीवन में समस्त भौतिक सुखो को भोग ने में समर्थ हों। हर व्यक्ति की चाह होती हैं की उसकी धन-संपत्ति दिन दोगुनी रात चौगुनी बढती रहें !

हिन्दू धर्म में धन और ऐश्वर्य की देवी मां महालक्ष्मी हैं जो धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्रदान करती हैं। इस लिए माँ महालक्ष्मी की प्रसन्नता एवं कृपा से धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति के सरल उपाय तंत्र शास्त्र में बताये गये हैं।

भारतीय परंपरा में हल्दी का विशेष महत्व बताया गया हैं, हल्दी का उपयोग प्रायः सभी व्यक्ति के जीवन में भोजन के अलावा अधिक्तर आध्यात्मिक व औषधि के रुप में भी होता हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में हल्दी के प्रयोगो से धन प्राप्ति संभव हैं!

हिन्दू संस्कृति में हल्दी को अत्यंत शुभ एवं गुणकारी माना जाता हैं इस लिए हल्दी का प्रयोग भोजन व औषधि के अलावा मांगलित कार्य, देवी-देवताओं के पूजन-अर्चन इत्यादि में विशेष रुप से प्रयोग किया जाता हैं। अधिकतर लोगों ने हल्दी केवल पीले रंग की ही देखी होगी। क्योकि पीली हल्दी का प्रयोग हर घरों में मसालों के रुप में प्रयोग होता ही हैं, इस लिए पीली हल्दी बाजारों में आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।

लेकिन हल्दी काले रंग की भी प्राप्त होती हैं। काली हल्दी को तंत्र शास्त्रों में अधिक दुर्लभ और देवीय गुणों से युक्त माना गया हैं। काली हल्दी औषधिय गुणों से भरपूर होती हैं, इसलिए इस का प्रयोग तंत्र प्रयोगो के अलावा औषधि के निर्माण इत्यादि में भी विशेष रुप से किया जाता हैं।



तंत्र विद्या के जानकार मानते हैं की धन प्राप्ति हेतु काली हल्दी एक अद्भुत चमत्कारी प्रभावों से युक्त होती हैं, उनका मानना हैं की काली हल्दी के विधि-विधान से पूजन से व्यक्ति असीम धन-संपत्ति एवं ऐश्वर्य प्राप्त करने में समर्थ हो सकता हैं।

हल्दी को हरिद्रा भी कहा जाता है। तंत्र विद्या के जानकारों का तो यहां तक मानना हैं की असली काली हल्दी

प्राप्त होना सौभाग्य की बात हैं। जिस घर में काली हल्दी का पूजन होता हो वह घर में निवास कर्ता सौभाग्यशाली होते हैं।

ऐसी धार्मिक मान्यता हैं की अक्षय तृतीया, धनत्रयोदशी, दीपावली, ग्रहण, गुरु पुष्यामृत योग, त्रिपुष्कर योग, द्विपुष्कर योग, कार्य सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग आदि किसी शुभ मुहूर्त में काली हल्दी को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर उसका नियमित पूजन करने से काली हल्दी का चमत्कारी प्रभाव आश्चर्यजन रुप से अति शीघ्र प्राप्त होता हैं।

धन प्राप्ति प्रयोग

- ❖ काली हल्दी को अपने पूजन स्थान में लक्ष्मी नारायण की प्रतिमा या चित्र के पास स्थापित कर उसका विधिवत पूजन करें।
- ❖ विद्वानों का अनुभव हैं की काली हल्दी को घर में स्थापित कर पूजन करने से घर में निरंतर सुख-शांति की वृद्धि होने लगती है।
- ❖ तंत्र शास्त्र के जानकारों का कथन हैं की काली हल्दी के नियमित पूजन से व्यक्ति को कभी पैसा की कमी नहीं होती।
- ❖ काली हल्दी की गांठ को चांदी, स्टील या प्लास्टिक की डिब्बी में रख कर प्रति-दिन देवी-देवता के साथ धूप-दीप से पूजन करें।
- ❖ काली हल्दी की गांठ को सोने या चांदी के सिक्के के साथ लाल वस्त्र में बांधकर पोटली बना कर उसे अन्य देव प्रतिमाओं के साथ पूजा करने से विशेष लाभ की प्राप्ति होती है। (सोने या चांदी के सिक्के न हो तो रुपये-पैसे के नये सिक्के के साथ रखा जा सकता हैं)
- ❖ काली हल्दी की पोटली को को अपने गल्ले (कैश बॉक्स), तिजोरी आदि में भी रख सकते हैं। विद्वानों का अनुभव हैं की काली हल्दी के पूजन से धन से संबंधित समस्याएं दूर होती है, रोजगार में वृद्धि होती हैं।
- ❖ काली हल्दी के प्रभाव से नकारात्मक उर्जा को दूर किया जा सकता है।
- ❖ किसी शुभ मुहूर्त में काली हल्दी को सिंदूर में रखकर धूप-दीप से पूजन कर लाल कपड़े में एक सिक्के के साथ बांधर तिजोरी या गल्ले में रखने से धन की वृद्धि होने लगती है।

प्रबल धन प्राप्ति प्रयोग

प्रबल धन की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को मंत्र सिद्ध 11 गोमती चक्र, 11 पीली कौडिय़ां और काली हल्दी के 11 टुकड़ों को दीपावली या धनत्रयोदशी आदि शुभ अवसर पर पूजन के समय मां लक्ष्मी की प्रतिमा या चित्र के साथ स्थापित कर विधिवत पूजन करने से शीघ्र विशेष लाभ की प्राप्ति होती हैं। पूजन के पश्चयात गोमती चक्र, कौडि और हल्दी के टुकड़ों को पीले कपड़े में बांध कर पोटली बना कर अपनी तिजोरी या गल्ले में रखलें। नियमित यथा संभव लक्ष्मी मंत्र का जप करते रहें। इस विधि से पूजन करने से धन संबंधित रुकावट शीघ्र दूर होने लगती हैं और परिवार में निरंतर धन, सुख, समृद्धि में वृद्धि होती हैं।

यदि व्यवसाय में निरन्तर लाभ के स्थान पर घाटा हो रहा हो तो भी यह प्रयोग अत्यंत लाभप्रद होता हैं।

कार्य सिद्धि प्रयोग

- ❖ काली हल्दी के टुकड़े पर मौली लगाकर गूगल और लोबान के धूप से शोधन करके अपने पूजा स्थान में रखदें, किसी महत्वपूर्ण कार्य पर जाते समय उसे हमेंशा अपनी जेब के उपरी हिस्से में या बैग में रखें, इस प्रयोग से कार्य बिना किसी बाधा विध्न के पूर्ण होने की संभावनाएं प्रबल हो जाती हैं।
- ❖ किसी नये कार्य या महत्वपूर्ण कार्य के लिए जाते समय काली हल्दी को चंदन की तरह घीस कर उसका तिलक लगाकर जाने से कार्य में सफलता प्राप्त होने की संभावना प्रबल हो जाती हैं। विद्वानों का अनुभव हैं की नौकरी व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए यह प्रयोग अत्यंत लाभप्रद सिद्ध होता हैं।

तांत्रिक प्रभाव निवारण प्रयोग

यदि किसी व्यक्ति पर टोने-टोटके आदि तांत्रिक प्रभाव हो तो उसे काली हल्दी के छोड़े टुकड़े को छेद करके

धागा में पिरोकर या किसी ताविज में भर कर धारण करवाया जाये तो शीघ्र ही अशुभ प्रभावों से मुक्ति मिल सकती हैं। कुछ विद्वानों का अनुभव हैं की काली हल्दी को नवग्रह मंत्र से अभिमंत्रित कर धारण करने से ग्रह जनित पीड़ाएं दूर होती हैं।

आकर्षण प्रयोग

विद्वानों का मत हैं की काली हल्दी को तंत्र शास्त्र में वशीकरण में अत्यंत लाभ प्रद जड़ी बूटी माना जाता है। तंत्र विद्या के जानकारों का मानना हैं की काली हल्दी में अद्भुत आकर्षण शक्ति होने के कारण वशीकरण आदि में भी काली हल्दी का प्रयोग विशेष लाभप्रद होता हैं।

प्रतिदिन काली हल्दी का तिलक लगाने से सभी प्रकार के इच्छित मनुष्यों का आकर्षण हो सकता हैं। काली हल्दी का तिलक एक अत्यंत सरल तंत्रोक्त प्रयोग है।

विशेष नोट: आकर्षण या वशीकरण हेतु काली हल्दी का प्रयोग करने से पूर्व काली हल्दी को किसी योग्य जानकार विद्वान से वशीकरण मंत्र से अभिमंत्रित एवं मंत्र सिद्ध अवश्य करवालें।

* आकर्षण प्रयोग केवल शुभ उद्देश्य हेतु लाभप्रद होता हैं, अनैतिक कार्य या उद्देश्य हेतु किया गया आकर्षण प्रयोग निश्चित रुप से अत्याधिक हानी कारक सिद्ध होता हैं।

स्वास्थ्य वर्धक प्रयोग

यदि कोई व्यक्ति हमेंशा बिमार या अस्वस्थ रहता हो, तो किसी भी गुरूवार से यह प्रयोग प्रारंभ कर के तीन गुरुवार तक प्रयोग करें। गेहूं के आटे के दो पेड़े बनाकर उसमें थोडी गीली चीने की दाल, थोड़ा गुड़ और थोड़ी सी पिसी हुइ काली हल्दी को दबाकर रोगी व्यक्ति के उपर से सात बार घड़ी की दिशा (दक्षिणावर्त/Clockwise) में उतार कर गाय को खिला दें। यह उपाय लगातार तीन गुरूवार करने से विशेष लाभ दिखने लगता हैं।

नजर रक्षा प्रयोग

❖ यदि किसी को नजर लग गयी है, तो काले कपड़े में काली हल्दी को बांधकर सात बार नज़र लगे व्यक्ति या बच्चे के ऊपर से घड़ी की दिशा (दक्षिणावर्त/Clockwise) में उतार कर बहते हुये जल में प्रवाहित कर दें या किसी विरान जगह में फैक दें।

❖ यदि किसी के कार्य या व्यवसायीक स्थान पर बार-बार किसी की नज़र लग गई हो तो काली हल्दी को काले कपड़े में बांधकर दोनों हाथों से पूरे कार्य स्थल के भितर सात बार घूमाकर बहते हुये जल में प्रवाहित कर दें या किसी विरान जगह में फैक दें।

❖ नज़र रक्षा के लिए काली हल्दी पर मौली लपेट कर पीले कपड़े में बांधकर अपने व्यवसायीक स्थान के मुख्य द्वार पर लटका दें। इस प्रयोग से नज़र से रक्षा होगी एवं धन की वृद्धि भी होती रहेगी।

ग्रह शांति प्रयोग

यदि किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली में गुरू और शनि दोनो पीड़ित हो, तो ग्रह शांति हेतु किसी शुक्लपक्ष के प्रथम गुरूवार से नियमित रूप से काली हल्दी को चंदन की तरह घीस कर तिलक लगाने से यह प्रयोग दोनों पीड़ित ग्रह शुभ फल प्रदान करते हैं।

धन संचय हेतु प्रयोग

कुछ लोगों की आमदनी उत्तम होने के उपरांत भी धन संचय नहीं कर पाते। उन्हें किसी भी शुक्लपक्ष के प्रथम शुक्रवार को एक चांदी की डिब्बी में काली हल्दी, नागकेशर व लाल रंग का सिन्दूर को साथ में मिलाकर मां लक्ष्मी की प्रतिमा या चित्र के चरणों से स्पर्श करवा कर धन रखने के स्थान पर रख दें। इस प्रयोग के प्रभाव से धन संचय होने लगता हैं।

*चांदी की डिब्बी उपलब्ध न हो तो स्टील या प्लास्टिक की डिब्बी का प्रयोग करें। डिब्बी को स्थापित करने हेतु शुक्लपक्ष के प्रथम शुक्रवार के अलावा अक्षय तृतीया, धनत्रयोदशी, दीपावली का मुहूर्त भी शुभ होता हैं।)

मशीनों को खराबी से बचाने हेतु प्रयोग

यदि व्यवसाय या उद्योग में मशीनों में बार-बार खराबी होती रहती हों, तो कालीहल्दी को चंदन की तरह केशर व गंगा जल मिलाकर घीस कर शुक्लपक्ष के प्रथम

बुधवार को मशीन पर स्वास्तिक बना दें। इस प्रयोग से से मशीन बार-बार खराब नहीं होती।

मां लक्ष्मी की कृपा प्राप्ति हेतु प्रयोग

दीपावली के दिन काली हल्दी और एक चांदी का सिक्का पीले वस्त्रों में लपेट कर उसे धन रखने के स्थान पर रख दें। इस प्रयोग को अगली दिपावली पर पुनः इसी प्रकार करें इस प्रयोग से वर्ष भर मां लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है।

असली नकली की परख

यह काली हल्दी का रंग जब यह हरी होती हैं तब अंदर से हल्के नीले रंग की होती हैं वह सुख ने पर अंदर से गहरे कत्थई या काले रंग की हो जाती हैं। लेकिन असली काली हल्दी पूर्णतः काजल के समान काली नहीं होती, बाजारों में एकदम काजल के समान काली हल्दी मिल जाती हैं, जिसे काले रंग की स्याही या रंग आदि से रंग में डूबा कर तैयार किया जाता हैं। इस प्रकार की हल्दी को प्रायः तेल में भिगो कर कुमकुम सिंदूर आदि से लेप कर बेचा जाता हैं जिससे उसकी नकली होने की बात साधरण व्यक्ति को आसानी से नहीं चलती। लेकिन इस में कपूर से मिलती झुलती सुगन्ध नहीं होती।

असली काली हल्दी की सुगन्ध कपूर से मिलती-झुलती होती हैं यही असली काली हल्दी की पहचान हैं। असली काली हल्दी अंदर से ही गहरे रंग की या काले रंग की होती हैं उपर से नहीं उसका उपर का हिस्सा अदरख के उपरी हिस्से के समान कत्थई रंग से मिलता झुलता होता हैं।

तंत्र विद्या के जानकारों का मत हैं की किसी भी तंत्र प्रयोग को करने पर उससे प्राप्त होने वाले फल केवल प्रयोग कर्ता के आत्मविश्वास और श्रद्धा पर ही निर्भर करते हैं। तंत्र प्रयोग में किसी भी प्रकार की शंका अथवा संदेह होने पर तंत्र के प्रयोग नहीं करने चाहिए। शंका व संदेह भाव से किये गये प्रयोगों का फल नगण्य या प्राप्त नहीं होता हैं।

पाठको के मार्गदर्शन हेतु उपर काली हल्दी के असली व नकलीं चित्र उपर दिये गये हैं।

कुबेर आरती

ॐ जै यक्ष कुबेर हरे , स्वामी जै यक्ष जै यक्ष कुबेर हरे।
शरण पड़े भगतों के, भण्डार कुबेर भरे।
॥ॐ जै यक्ष कुबेर हरे...॥
शिव भक्तों में भक्त कुबेर बड़े, स्वामी भक्त कुबेर बड़े।
दैत्य दानव मानव से, कई-कई युद्ध लड़े ॥
॥ ॐ जै यक्ष कुबेर हरे...॥
स्वर्ण सिंहासन बैठे, सिर पर छत्र फिरे,
स्वामी सिर पर छत्र फिरे। योगिनी मंगल गावैं,
सब जय जय कार करैं॥
॥ॐ जै यक्ष कुबेर हरे...॥
गदा त्रिशूल हाथ में, शस्त्र बहुत धरे,
स्वामी शस्त्र बहुत धरे। दुख भय संकट मोचन,
धनुष टंकार करें॥
॥ॐ जै यक्ष कुबेर हरे...॥
भांति भांति के व्यंजन बहुत बने,
स्वामी व्यंजन बहुत बने।
मोहन भोग लगावैं, साथ में उड़द चने॥
॥ॐ जै यक्ष कुबेर हरे...॥
बल बुद्धि विद्या दाता, हम तेरी शरण पड़े,
स्वामी हम तेरी शरण पड़े अपने भक्त जनों के , सारे काम संवारे॥
॥ॐ जै यक्ष कुबेर हरे...॥
मुकुट मणी की शोभा, मोतियन हार गले,
स्वामी मोतियन हार गले। अगर कपूर की बाती, घी की जोत जले॥
॥ॐ जै यक्ष कुबेर हरे...॥
यक्ष कुबेर जी की आरती , जो कोई नर गावे,
स्वामी जो कोई नर गावे । कहत प्रेमपाल स्वामी,
मनवांछित फल पावे।

॥ इति श्री कुबेर आरती ॥

धन प्राप्ति का अचूक उपाय स्फटिक श्रीयंत्र का पूजन

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

आज के भौतिक युग में अर्थ (धन) जीवन कि मुख्य आवश्यक्ताओं में से एक है। धनाढ्य व्यक्तिओं की जीवनशैली को देखकर प्रभावित होते हुवे साधारण व्यकि की भी कामना होती हैं, कि उसके पास भी इतना धन हो कि वह अपने जीवन में समस्त भौतिक सुखो को भोग ने में समर्थ हों। एसी स्थिमें मेहनत, परिश्रम से कमाई करके धन अर्जित करने के बजाय कुछ लोग अल्प समय में ज्यादा कमाने कि मानसिकता के कारण कभी-कभी गलत तरीकें अपनाते हैं।



जिसके फल स्वरुप एसे लोग धन का वास्तविक सुख भोगने से वंचित रह जाते हैं और रोग, तनाव, मानसिक अशांति जेसी अन्य समस्याओं से ग्रस्त हो जाते हैं।

जहां गलत तरीकें से कमाये हुवे धन के कारण समाज एसे लोगो को हीन भाव से देखते हैं। जबकि मेहनत, परिश्रम से कामाये हुवे धन से स्वयं का आत्मविश्वास बढता हैं एवं समाज में प्रतिष्ठा और मान सम्मान भी सरलता से प्राप्त हो जाता हैं।

जो व्यक्ति धार्मिक विचार धाराओं से जुडे हो वह इश्वर में विश्वार रखते हुवे स्वयं कि मेहनत, परिश्रम के बल पर कमाये हुवे धन को हि सच्चा सुख मानते हैं। धर्म में आस्था एवं विश्वास रखने वाले व्यक्ति के लिये मेहनत, परिश्रम करने के उपरांत अपनी आर्थिक स्थिमें उन्नति एवं लक्ष्मी को स्थिर करने हेतु, श्री यंत्र के पूजन का उपाय अपनाकर जीवन में किसी भी सुख से वंचित नहीं रह सकते, उन्हें अपने जीवन में कभी धन का अभाव नहीं रहता। उनके समस्त कार्य सुचारु रुप से चलते हैं। लक्ष्मी कृपा प्राप्ति के लिए श्रीयंत्र का सरल पूजन विधान जिसे अपना कर साधारण व्यक्ति विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस में जरा भी संशय नहीं हैं।

श्रीयंत्र का पूजन रंक से राजा बनाने वाला एवं व्यक्ति कि दरिद्रता को दूर करने वाला हैं।

- अपने पूजा स्थान में प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र को पूजन के लिये स्थापित करें। (प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र किसी भी योग्य विद्वान ब्राह्मण या योग्य जानकार से सिद्ध करवाले)
- श्री यंत्र को प्रत्येक शुक्रवार को दुध, दही, शहद, घी और शक्कर (गुड) अर्थात पंचामृत बनाकर स्नान कराये।
- स्नान के पश्चयात उसे लाल कपडे से पोछ दें।
- श्री यंत्र को किसी चांदी या तांबे कि प्लेट में स्थापीत करें।
- श्री यंत्र के नीचे 5 रुपये या 10 रुपये का नोट रखदें। (5,10 रुपये का सिक्का नहीं)
- श्री यंत्र स्थापित करने वाली प्लेट में श्रीयंत्र पर स्फटिक कि माला को चारों ओर घुमाते हुवे स्थापित करें।
- श्री यंत्र के उपर मौली का टुकडा 3-5 बार घुमाते हुवे अर्पित करें।
- श्री यंत्र के उपर सुखा अष्ट गंध छिडकें।
- यदि संभव हो तो लाल पुष्प अर्पित करें। (कमल, मंदार(जासूद) या गुलाब हो तो उत्तम)
- धूप-दीप इत्यादी से विधिवत पूजन करें।

- उपरोक्त विधन प्रति शुक्रवार करें एवं अन्य दिन केवल धूप-दीप करें।
- किसी एक लक्ष्मी मंत्र का एक माला मंत्र जप करें। श्रीसूक्त, अष्ट लक्ष्मी स्तोत्र इत्यादी का पाठ करें यदि पाठ करने में आप असमर्थ होतो बाजार में श्रीसूक्त, अष्ट लक्ष्मी इत्यादी स्तोत्र कि केसेट सीडी मिलती हैं उसका श्रवण करें।
- पूजा में जाने-अनजाने हुई गलती के लिए लक्ष्मीजी का स्मरण करते हुवे क्षमा मांगकर सुख, सौभाग्य और समृद्धि कि कामना करें।
- प्रति शुक्रवार उपरोक्त पूजन करने से जीवन में किसी भी प्रकार का आर्थिक संकट नहीं आता।
- यदी आर्थिक संकट से परेशान हैं तो श्री यंत्र के पूजन से समस्त प्रकार के आर्थिक संकट धीरे-धीरे दूर हो जाते हैं।

नोट: श्री यंत्र के के नीचे रखा हुवा नोट प्रति एक-दो मास में एक बार किसी देवी मंदीर में भेट कर दें। (लाभ प्राप्त होने पर बदले)

- प्रथन बार रखा हुवा नोट श्री यंत्र के पूजन से लाभ होने के बाद ही बदले। लाभ प्राप्त होना शुरु होने तक नोट को रखे रहें।
- लाभ प्राप्त होना शुरु होने के पश्चयात प्रति माह में एक बारे प्रतिपदा(एकम) को पुराना नोट बदल कर नये नोट रखें।
- जेसे-जेसे लाभ प्राप्त होने लगे आप के अनुकूल कार्य हो ने लगे तो नोट कि रकम बढाते रहें। अधिक लाभ प्राप्त होता हैं।

उदाहरण: यदि पहले 5 रुपये का नोट रखा हैं तो उस्से लाभ होने के पश्चयात नोट बदलते हुवे 10 रुपये का नोट रखे। 10 रुपये का नोट रखने से लाभ होने के पश्चयात नोट बदलते हुवे 20 रुपये का नोट रखे। इसी प्रकार नोट को बदते रहें इस्से अधिक लाभ प्राप्त होता हैं।

अधिक लाभ प्राप्ति हेतु सामान्य नियम:

पूजन के दिन ब्रह्मचर्य का पालन करें। पूजन के दिन सुगंधित तेल, परफ्यूम, इत्र का प्रयोग करने से बचे। बिना प्याज–लहसून का शाकाहारी भोजन ग्रहण करें। शुक्रवार सफेद मिष्ठान भोजन में ग्रहण करें।

सप्त श्री का चमत्कारी प्रयोग

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

दीपावली के दिन बही-खाते के पूजन के समय बही-खाते में उपरोक्त क्रममें लाल रंग की कलम य पेन से **श्री** लिखे। पहले एक बार **श्री** लिखे, फिर दो बार **श्री श्री** लिखे, फिर तीन बार **श्री श्री श्री,** इस प्रकार क्रम को बढाते जाए आखीर में सात बार **श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री** लिखे, सप्तश्री के नीचे अपने ईष्ट का नाम लिखे या **ॐ श्रीं लक्ष्मी दैव्ये नमः लिखे।** फिर धुप-दीप, पुष्प आदि से उसका पूजन करें।

उक्त प्रयोग करने से आनेवाला नया वर्ष व्यवसाय में आर्थिक द्रष्टि से सुख, समृद्धि लेकर आयेगा और अत्याधिक लाभदायक रहेगा।

जिन लोगो के पास लक्ष्मी (धन) स्थिर नहीं रहता। लक्ष्मी आने से पूर्व जाने को तत्पर होती हैं। उन्हें अपनी जेब में या मनीपर्स में एक स्फेद कागज पर उपरोक्त तरीके से **श्री** लिख कर रखना चाहिए। सप्त श्री लिखने से लक्ष्मी लम्बे समय तक स्थिर रहने के योग बनते हैं वह नये स्रोत से धन लाभ के भी प्रबल योग बनते हैं। (अष्टगंध की स्याही बनाकर अनार की कलम से लिखना अति उत्तम रहता हैं।)

श्री
श्री श्री
श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
ॐ श्रीं लक्ष्मी दैव्ये नमः

- उक्त तरीके से सप्त श्री को अपनी अलमारी, गल्ला (कैश बोक्श) या धन रखने के स्थान पर कुमकुम या अष्टगंध से अपने दाहीने हाथ की अनामिका उंगली से लिखने पर भी यह अत्याधिक लाभप्रद रहता हैं।
- उक्त तरीके से सप्त श्री को चांदि या सोने के पत्तर पर यंत्र स्वरुप भी बनाया सकता हैं। तांबे चांदी के पत्तर में बनाते समय ध्यान रखे की पत्तर की सतह पर श्री उपर की ओर उभरी हुई हो, नीचे की ओर खुदी हुई न हों।

श्रीयंत्र की महिमा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दु धर्म में श्रीयंत्र सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्राचीन यंत्र है, श्रीयंत्र की आराध्या देवी स्वयं श्रीविद्या अर्थात त्रिपुर सुन्दरी देवी हैं, श्रीयंत्र को देवीके ही रूप में मान्यता दिगई है।

श्रीयंत्र को अत्याधिक शक्तिशाली व ललितादेवी का पूजन चक्र माना जाता है, श्रीयंत्र को त्रैलोक्य मोहन अर्थात तीनों लोकों का मोहन करने वाला यन्त्र भी कहां जाता है।

श्रीयंत्र में सर्व रक्षाकारी, सर्वकष्टनाशक, सर्वव्याधि-निवारक विशेष गुण होने के कारण श्रीयंत्र को सर्व सिद्धिप्रद एवं सर्व सौभाग्य दायक माना जाता है।

श्रीयंत्र को सरल शब्दों में लक्ष्मी यंत्र कहा जाता हैं, क्योकि श्रीयंत्र को धन के आगमन हेतु सर्वश्रेष्ठ यंत्र माना गया हैं।

विद्वानों का कथन हैं की श्रीयंत्र अलौकिक शक्तियों व चमत्कारी शक्तियों से परिपूर्ण गुप्त शक्तियों का प्रमुख केन्द्र बिन्दु है।

श्रीयंत्र को सभी देवी-देवताओं के यंत्रों में सर्वश्रेष्ठ यंत्र कहा गया है। यहीं कारण हैं, कि श्रीयंत्र को यंत्रराज, यंत्र शिरोमणि भी कहा जाता है।

श्रीयंत्र से जुड़ी पौराणिक कथा

धर्मग्रंथों में श्री यंत्र के संदर्भ में एक प्रचलित कथा का वर्णन मिलता है।

कथाके अनुसार एक बार आदिगुरु शंकराचार्यजी ने कैलाश पर भगवान शिवजी को कठिन तपस्या द्वारा प्रसन्न कर लिया। भगवान भोलेनाथ ने प्रसन्न होकर शंकराचार्यजी से वर मांगने के लिए कहा। आदिगुरु शंकराचार्यजी ने शिवजी से विश्व कल्याण का उपाय पूछा। पूछे गये प्रश्न पर भगवान भोलेनाथ ने स्वयं शंकराचार्य को साक्षात लक्ष्मी स्वरूप श्री यंत्र की विस्तृत महिमा बताई और कहा यह श्री यंत्र मनुष्यों का सभी प्रकार से कल्याण करेगा।

श्री यंत्र परम ब्रह्म स्वरूपी आदि देवी भगवती महात्रिपुर सुदंरी की उपासना का सर्वश्रेष्ठ यंत्र है क्योंकि श्री चक्र ही देवीका निवास स्थल है। श्री यंत्र में देवी स्वयं विराजमान होती हैं इसीलिए श्री यंत्र विश्व का कल्याण करने वाला है।

आज के आधुनिक युग में मनुष्य विभिन्न प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त है, एसी स्थिति में यदि मनुष्य पूर्ण श्रद्धाभाव और विश्वास से श्रीयंत्र की स्थापना करें तो यह यंत्र उसके लिए चमत्कारी सिद्ध हो सकता है।

मंत्र सिद्ध एवं प्राण-प्रतिष्ठित श्री यंत्र को कोई भी मनुष्य चाहे वह धनवान हो या निर्धन वहँ अपने घर, दुकान, ऑफिस इत्यादि व्यवसायीक स्थानों पर स्थापित कर सकता हैं। विद्वानो का अनुभव हैं की श्रीयंत्र का प्रतिदिन पूजन करने से देवी लक्ष्मी प्रसन्न होती है और मनुष्य का सभी प्रकार से मंगल करती हैं। मां महालक्ष्मी की कृपा से मनुष्य दिन प्रतिदिन सुख-समृद्धि एवं ऐश्वर्य को प्राप्त कर आनंदमय जीवन व्यतीत करता हैं।

पौराणिक धर्मग्रंथों में वर्णित हैं की श्री यंत्र आदिकालीन विद्या का द्योतक हैं, भारतवर्ष में प्राचीनकाल में भी वास्तुकला अत्यन्त समृद्व थी। और आज के आधुनिक युग में प्रायः हर मनुष्य वास्तु के माध्यम से भी प्रकार के सुख प्राप्त करना चाहता है। उनके लिए श्रीयंत्र की स्थापना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

क्योकि जानकारों का मानना हैं की श्री यंत्र में ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति और विकास का रहस्य छिपा हैं।

विद्वानो के मतानुशार श्रीयंत्र में श्री शब्द की व्याख्या इस प्रकार से की गई हैं **"श्रयत या सा श्री"** अर्थात जो श्रवण की जाये, वह श्री हैं। नित्य परब्रह्म से आश्रयण प्राप्त करती हो, वह श्री हैं।

श्रीयंत्र का अन्य अर्थ हैं श्री का यंत्र। यंत्र शब्द "यम" धातु का घोतक हैं। (यम धातु से बना हैं)

यन्त्र शब्द गृह शब्द को प्रकट करता हैं। जिस प्रकार गृह में सब वस्तुओं का नियंत्रण होता हैं उसी प्रकार श्रीयंत्र को प्राप्त करने या नियंत्रित करने के लिए श्रीयंत्र सर्वश्रेष्ठ माध्य हैं।

प्रायः सभी लोगोने अपने दैनिक जीवन में अनेक बार देखा होगा की किसी श्रेष्ठ एवं पूज्य मनुष्यों के नाम के आगे लोग "श्री" शब्द का प्रयोग करते हैं। मनुष्य की श्रेष्ठता के अनुक्रम के अनुशार उनकी नामके आगे 3, 4, 5, 8 बार तक "श्री" शब्द प्रयोग का शास्त्रों में उल्लेख मिला हैं। प्रधान पीठाधिश्वर/पीठाधिपति अथवा किसी संप्रदाय विशेष के प्रधानाचार्यो के नाम के आगे या पीछे 1008 बार तक "श्री" का प्रयोग किया जाता हैं। क्योकि "श्री" शब्द का सरल अर्थ "लक्ष्मी" होता हैं।

लेकिन विभिन्न धर्मग्रंथों में "श्री" शब्द का अर्थ महात्रिपुरसुन्दरी होने का उल्लेख मिलता हैं। **कुछ धर्मशास्त्रों एवं ग्रंथों में वर्णित हैं की "श्री महालक्ष्मी" ने महात्रिपुरसुन्दरी की चिरकाल आराधना करके उसने अनेक वरदान प्राप्त किये हैं। लक्ष्मीजी को प्राप्त इन्हीं वरदानों से एक वरदान "श्री" शब्द से ख्याति प्राप्त करने का भी प्राप्त हुवा। तभी से श्री शब्द का अर्थ लक्ष्मी समझा जाने लगा!

** धर्मशास्त्रों एवं ग्रंथों का संदर्भ हरितयनसंहिता, ब्रह्माण्डपुराणोत्तरखण्ड इत्यादि।

श्रीचक्र से संबंधित मत शंकराचार्या कृत आनन्द सौदर्य लहरी में वर्णित हैं

चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिव्युवतिभिः पञ्चभिरपि.
प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः ।
त्रश्रयश्चत्वारिंशदसुदलकलात्रिवलय-.
त्रिरेखाभिः सार्धं तव कोणाः परिणताः ।

श्रीयंत्र का विषय अत्यन्त गहन हैं, लेकिन यहाँ हम पाठकों के मार्गदर्शन हेतु इसका संक्षिप्त विवरण देने का प्रयास कर रहे हैं।

विभिन्न तांत्रिक ग्रंथों में श्री यंत्र के विषय में जितना वर्णन मिलता हैं उतना और किसी विषय पर नहीं मिलता!

श्रीयंत्र में स्थित नौ चक्रों का वर्णन रुद्रयामल तंत्र में वर्णित हैं

बिन्दुत्रिकोणवसुकोणदशारयुग्म
मन्वस्न्नागदलसंयुतषोडशारम्।
वृत्तत्रयं च धरणीसदनत्रयं च
श्रीचक्रमे त दुदितं परदेवतायाः॥

अर्थात: श्रीयंत्र के नौ चक्र क्रम में १. बिन्दु, २. त्रिकोण, ३. आठ त्रिकोणों का समूह, ४. दस त्रिकोणों का समूह, ५. दस त्रिकोणों का समूह, ६. चौदह त्रिकोणों का समूह, ७. आठ दलों वाला कमल, ८. सोलह दलों वाला कमल, ९. भूपुर ।

इन चक्रों को भिन्न-भिन्न रंगों से दर्शाने का विधान हैं, कमल के भितर दर्शाये गय क्रमशः २,३,४,५,६ के कुल मिलाकर जो ४३ त्रिकोण (इन ४३ त्रिकोण की सहायता से अन्य त्रिकोण कुल मिलाकर १०८ बनते हैं।) दर्शाये गये हैं उसके विषय में आनन्द सौदर्य लहरी का उल्लेख उपर दर्शाया गया हैं।

इन चक्रों में यदि त्रिकोण उर्ध्वमुखी हो तो वह चक्र शिवप्रधान कहलाता हैं एवं यदि बीच का त्रिकोण अधोमुखी या स्वाभिमुखि हो तो वह शक्ति प्रधान यंत्र कहा जाता हैं। श्रीयंत्र से संबंधित विषय अत्यंत व्यापक हैं यही कारण हैं की श्रीयंत्र का पूजन दक्षिण-मार्ग एवं बाम-मार्ग दोनों विधि या प्रयोग से किया जाता हैं, जिसका विस्तृत वर्णन त्रिपुरतापिनी उपनिषद एवं त्रिपुरा उपनिषद में समान रुप से वर्णित हैं।

श्रीयंत्र में नौ चक्रों के नाम एवं उसके भिन्न-भिन्न रंगों क्रम क्रमशः इस प्रकार है..

(१) सर्वानन्दमय (केन्द्रस्थ रक्त बिन्दु)
(२) सर्व सिद्धिप्रद (पीले रंग का त्रिकोण)
(३) सर्वरक्षाकार (हरें रंग के आठ त्रिकोणों का समूह)
(४) सर्व रोग हर (काले रंग के दस त्रिकोणों का समूह)
(५) सर्वार्थ साधक (लाल रंग के दस त्रिकोणों का समूह)
(६) सर्व सौभाग्यदायक(नीले रंग के चौदह त्रिकोणों का समूह)
(७) सर्व संक्षोभक्ष(गुलाबी रंग के आठ दलों वाला कमल)

(८) सर्वाशापरिपूरक(पीले रंग के सोलह दलों वाला कमल)
(९) त्रैलोक्य मोहन(हरे रंग का बाहरी स्थल अर्थात भूपुर)

श्री यन्त्र के नौ चक्रों का विस्तृत वर्णन

सर्वानन्दमय चक्र:

सर्वानन्दमय चक्र की अधिष्ठात्री देवी ललिता अथवा त्रिपुरसुन्दरी हैं, जो अपने आवरण में देवताओं के भेद से कहीं पर षोडश देवीयों में मुख्य मानी गयी हैं और कहीं पर अष्ट मातृकाओं में सर्वश्रेष्ठ मानी गयी हैं, कहीं पर अष्ट वशिनी देवताओं की अधिनायिका मानी गयी हैं। यह भेद प्रस्तार अलग-अलग भेद से हुए हैं और यथा क्रम से इन तीनों प्रस्तारों के नाम मेरु, कैलास तथा भूः प्रस्तार हैं। यही श्रीयंत्र की उपासना के प्रमुख प्रकार माने जाते हैं।

सर्व सिद्धिप्रद चक्र:

सर्व सिद्धिप्रद चक्र जो एक त्रिकोण हैं, इस त्रिकोण के तीनों कोण को कामरुप, पूर्णागिरि तथा जालन्धर पीठ कहां गया हैं। इनके मध्य में औड्याणपीठ हैं, प्रथम तीनों पीठों की अधिष्ठात्री देवी कामेश्वरी, ब्रजेश्वरी तथा भगमालिनी हैं जो प्रकृति, महत् तथा अभिमान हैं।

सर्वरक्षाकार चक्र:

सर्वरक्षाकार चक्र जो आठ त्रिकोणों का समूह हैं, इस त्रिकोणों की अधिष्ठात्री देवीयाँ वासिनी, कामेश्वरी, मोहिनी, विमला, आरुणा, जयिनी, सर्वेश्वरी थथा कौलिनी हैं जो क्रमशः शीतः, उष्ण, सुख, दुःख, इच्छा, सत्त्व, रज तथा तम की स्वामिनी हैं। इस चक्र का साधक गुणों पर अधिकार करने और द्वन्द्व करने में समर्थ होता हैं।

सर्व रोग हर चक्र:

सर्व रोग हर चक्र जो दस त्रिकोणों का समूह हैं, इस त्रिकोणों की अधिष्ठात्री देवीयाँ सर्वज्ञा, सर्वशक्तिप्रदा, सर्वेश्वर्यप्रदा, सर्वज्ञानमयी, सर्वव्याधिनाशिनी, सर्वाधारा, सर्वपापहरा, सर्वानन्दमयी, सर्वरक्षा तथा सर्वेप्सितफलप्रदा हैं, जो क्रमशः रेचक, पाचक, शोषक, दाहक, प्लावक, क्षारक, उद्धारक, क्षोभक, जम्भक तथा मोहक वह्निकलाओं की स्वामिनी हैं।

सर्वार्थ साधक चक्र:

सर्वार्थ साधक चक्र जो दस त्रिकोणों का समूह हैं, इस त्रिकोणों की अधिष्ठात्री देवीयाँ दस प्राणों की स्वामिनी हैं, जो क्रमशः सर्वसिद्धिप्रदा, सर्वसम्पत्प्रदा, सर्वप्रियंकरी, सर्वमंगलकारिणी, सर्वकामप्रदा, सर्वदुःख विमोचनी, सर्वमृत्युप्रशमनी, सर्व विघ्ननिवारिणी, सर्वांगसुन्दरी तथा सर्व सौभाग्यदायिनी हैं।

सर्व सौभाग्यदायक चक्र:

सर्व सौभाग्यदायक चक्र जो चौदह त्रिकोणों का समूह हैं, इस त्रिकोणों की अधिष्ठात्री देवीयाँ सर्वसंक्षोभिणी, सर्वविद्राविणी, सर्वाकर्षिणी, सर्वाह्लादिनी, सर्वसम्मोहिनी, सर्वस्तम्भिनी, सर्वअम्भिनी, सर्ववशंकरी, सर्वराजनी, सर्वोन्मादिनी, सर्वार्थसाधनी, सर्वसम्पत्तिपूरणी, सर्वमन्त्रमयी, सर्वद्वन्द्वक्षयंकरी हैं। यह देवीयां मुख्य नाड़ियों की स्वामीनी हैं, जो क्रमशः अलम्बुसा, कुहु, विश्वोदरी, वारणा, हस्तिजिह्वा, यशोवती, पयस्विनी गान्धारी, पूषा, संखिनी, सरस्वती, इड़ा, पिंगला तथा सुषुम्णा हैं।

सर्व संक्षोभक्ष चक्र:

सर्व संक्षोभक्ष चक्र जो आठ दलों वाला कमल हैं, इस अष्टदल की अधिष्ठात्री देवीयाँ अनंकुसुमा, अनंगमेखला, अनंगमदना, अनंगमदनातुरा, अनंगरेखा, अनंगवेगिनी, अनंगमदनांकुशा तथा अनंगमालिनी हैं, जो क्रमशः वचन, आदान, गमन, विसर्ग, आनन्द हीन, उपादान तथा उपेक्षा बुद्धि की स्वामिनी हैं।

सर्वाशापरिपूरक चक्र:

सर्वाशापरिपूरक चक्र जो सोलह दलों वाला कमल हैं, इस अष्टदल की अधिष्ठात्री देवीयाँ कामाकर्षिणी, बुद्धध्याकर्षिणी, शब्दाकर्षिणी, स्पर्शाकर्षिणी, रुपाकर्षिणी, रसाकर्षिणी, गन्धाकर्षिणी, चित्ताकर्षिणी, धैर्याकर्षिणी, स्मृत्याकर्षिणी, नामाकर्षिणी, बीजाकर्षिणी, आत्माकर्षिणी, अमृताकर्षिणी तथा शरीराकर्षिणी हैं, जो क्रमशः मन, बुद्धि, अहंकार, शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गन्ध, चित्त, धैर्य स्मृति, नाम, वार्धक्य, सूक्ष्म शरीर, जीवन तथा स्थूल शरीर की स्वामिनी हैं।

त्रैलोक्य मोहन चक्र:

त्रैलोक्य मोहन चक्र जो बाहरी स्थल हैं, जिसके चार विभाग हैं (क) षोडशदल कमल के बाहरी चारों वृत्तों के परे गड़ाग सदृश स्थल। (ख) इस स्थल से लगी हुई पतली बाहरी रेखा (ग) दूसरी बाहरी रेखा और (घ) सबसे बाहर बाली रखा। इन चारों विभागों में क्रमशः दस मुद्राशक्तियाँ, दस दिकपाल, आठ मातृकाएँ तथा दश सिद्धियाँ स्तित हैं।

दस मुद्राशक्तियों के नाम क्रमशः सर्वसंक्षोभिणी, सर्वविद्राविणी, सर्वाकर्षिणी, सर्वावेशकरिणी, सर्वोन्मादिनी, महांकुशा, खेचरी, बीजमुद्रा, महायोनि तथा त्रिखण्डिका हैं, जिसका आधार दस आधारों से हैं, इन आधारों का विस्तृत वर्णन यहां करना संभाव नहीं हैं। लेकिन इतना अवश्य है की इन आधारों के रुप में ही श्रीयंत्र तथा षट्चक्रों का तादात्मय सिद्ध होता हैं।

दस दिकपाल के नाम क्रमश: इंद्र, अग्नि, यम, नऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईश्व, अनंत और ब्रह्मा।

आठ मातृकाओं के नाम क्रमशः ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐन्द्री, चामुण्डा तथा महालक्ष्मी हैं। इन मातृकाओं का पूजन का लक्ष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, पाप तथा पुण्य पर विजय प्राप्त करने हेतु किया जाता हैं।

श्रीयंत्र का निर्माण और पूजन

जानकारों का कथन हैं की श्रीयंत्र के निर्माण हेतु सर्वोत्तम दिन पौष मास की संक्रांति के दिन रविवार हो तो अति उत्तम संयोग माना जाता हैं। लेकिन एसे योग अत्यंत दुर्लभ होते हैं, इस लिए यदि एसा योग नहीं बन रहा हो तो किसी भी मास की संक्रांति के दिन रविवार हो तो भी शुभकारी माना जाता हैं अथवा किसी भी मास की शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन रविवार हो, या धनतेरस, दीपावली, नवरात्री, रविपुष्य योग, गुरुपुष्य योग इत्यादि होने पर भी यंत्र का निर्माण किया जा सकता हैं। यदि उक्त सभी मुहूर्त का संयोग न हो तो किसी भी शुभ मुहूर्त में यंत्र का निर्माण शुद्धधातु में करवालें।

उत्तम तो यहीं होगा कि श्रीयंत्र को किसी जानकार व्यक्ति के द्वारा ताम्रपत्र, रजत या सुवर्ण पर उत्कीर्ण करवालें।

पूजन

- यंत्र प्राप्त हो जाये तो ब्रह्ममुहूर्त में स्नानादि से निवृत्त हो कर, शांत चित्त से पूर्वाभिमुख हो कर बैठा जाये।
- श्रीयंत्र का धूप-दीप, गंध पुष्प आदि अर्पित कर उसका षोडषोपचार पूजन करे या विद्वान कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा करवाकर उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करवा लें। अपने पूजन स्थान पर लाल वस्त्र बिछाकर, उस पर केसर या हल्दी रंगे हुवे अक्षत से अष्टदल बनाकर उस के उपर यंत्र स्थापित करना चाहिए। यंत्र का पूजन अथवा प्राण-प्रतिष्ठा पूर्ण हो जाने पर अगले दिन श्री यंत्र को शुभ मुहूर्त में अपने घर, दुकान, ऑफिस इत्यादि व्यवसायीक स्थानों पर या तिजोरी, कैशबोक्स इत्यादि धन रखने वाले स्थानों पर पीला वस्त्र बिछाकर स्थापित करें।
- प्रतिदिन श्रीयंत्र का पंचोपचार पूजन और श्रीसूक्त का नियमित पाठ करने से यह अत्याधिक फलदायी सिद्ध होता हैं।
- यदि प्रतिदिन पंचोपचार पूजन या श्रीसूक्त का पाठ संभव न हो तो पूर्ण श्रद्धा भाव से केवल धूप-दिप से पूजन एवं दर्शन कर लक्ष्मी मंत्र का जाप करना भी लाभप्रद होता हैं।
- लक्ष्मी मंत्र के उच्चारण के लिए स्फटिक या कमलगट्टे की माला श्रेष्ठ मानी जाती हैं। (कमल गट्टा देवी लक्ष्मी को अत्यंत प्रिय हैं, देवी लक्ष्मी का निवास कमल के पुष्पों पर होता हैं।)

श्रीयंत्र ध्यान मंत्र

दिव्या परां सुधवलारुण चक्रायातां
मूलादिबिन्दु परिपूर्ण कलात्मकायाम्।
स्थित्यात्मिका शरघनुः सुणिपासहस्ता।
श्रीचक्रतां परिणिता सततंनमामि ।

श्रीयंत्र प्रार्थना मंत्र

ध्यान के पश्चयात श्रीयंत्र की प्राथना करें।
धनं धान्यं धरां हर्म्य कीर्तिर्मायुर्यशः श्रियम्।
तुरगान् दन्तिनः पुत्रान् महालक्ष्मी प्रयच्छ में॥

विभिन्न धर्मग्रंथों एवं शास्त्रों के अनुशार मंत्र सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित, पूर्ण चैतन्ययुक्त श्रीयंत्र के सामने लक्ष्मी बीज मंत्र की माला जप करना अत्याधिक लाभप्रद सिद्ध होता हैं।

लक्ष्मी बीज मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्मै नमः।

श्रीयंत्र के सम्मुख भोग लगाकर उसे स्वयं और परिजनों को भी प्रसाद के रुपमें बांट दें।

श्रीयंत्र से जुडी रोचक बाते।

श्रीयंत्र का विलक्ष्ण प्रभाव हमारे विद्वान ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व ही ज्ञात कर लिया था!

आदिगुरु शंकराचार्याजी ने श्रीयंत्र के गूढ रहस्यों को ज्ञात कर लिया था। शंकराचार्याजी श्रीयंत्र अद्‌भुत प्रभावों से परिचित थे इस लिए उनकी श्रीयंत्र पर गहरी आस्था एवं विश्वास के कारण ही श्री यंत्र को उन्हो ने अपने सभी मठों में प्रतिष्ठा एवं दैनिक पूजन करने का सुझाव दिया था, यही कारण हैं की आज उनके प्रत्येक मठ में श्रीयंत्र का विधिवत पूजन-अर्चन किया जाता हैं। विद्वानों का मानना हैं की दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध तिरुपति बालाजी के मंदिर की नींव में श्रीयंत्र स्थापित हैं। इतनाही नहीं वहां मुख्य विग्रह के पीठ में श्रीयंत्र उत्कीर्ण हैं। जिसका नियमित विधि-विधान से पूजन किया जाता हैं!

आबू के प्रसिद्ध दिलवाड़ा (देलवाड़ा) के मंदिर के खम्भों पर श्रीयंत्र अंकित हैं।

पौराणिक लोक मान्यताओं के अनुशार सोमनाथ कें विश्व प्रसिद्ध महादेव मंदिर के भूगर्भ में सुवर्ण शिला पर श्रीयंत्र का उत्कीर्ण किया गया था। जिसका पूजन गुप्त रुप से विद्वान ब्राह्मणों द्वारा किया जाता था। इसी कारण से पुरातन काल से वहां अतुल सम्पत्ति की नित्य वर्षा होती थी। यही कारण हैं की वहां अनमोल अरबों-खरबो के हीरे-जवाहरात बहुमूल्य रत्न इत्यादि उसके स्थम्भों पर ही जड़ित थे। जिसकी ख्याति सुन कर मोहम्मद गजनबी ने इसे लूट लिया और सोने की लालच में श्रीयंत्र को टूकड़ों में काटकर अपने साथ ले गया तब से मंदिर श्रीयंत्र से विहिन माना जाता हैं।

गुजरात के सूरत शहर में मेरुलक्ष्मी मंदिर या श्रीयंत्र मंदिर स्थित हैं इस मंदिर का निर्माण पूर्ण रुप से श्रीयंत्र के आकार में भव्य एवं विशाल रुप में किया गया हैं। संपूर्ण मंदिर को श्रीयंत्र की आकृति के अनुरुप निर्मित किया गया हैं, मंदिर के मध्य में श्रीयंत्र स्थापित हैं।

एक प्रचलित कथा के अनुशार किसी राज्य में भानुप्रताम नाम का अति धर्मभीरु आध्यात्मिक विचारों वाले राजा का राज था। वह बद्रीनाथ का उपासक था। उसके पार श्रीयंत्र था, कहां जाता हैं की श्रीयंत्र की सिद्धिअ राजा के पास थी। राजा इसी श्रीयंत्र के माध्यम से देवभाष्य जानता था। श्रीयंत्र के कारण ही उसे आकाशवाणी हुई कि वह अपना राजपाड त्यागकर अपनी कन्या का ब्याह मालवा के राजा कनकपाल से करके हिमालय के प्रसिद्ध बद्रीधाम में आकर देव-दर्शन का लाभ प्राप्त करें। राजा कनकपाल ने अपने गुरु के निर्देश पर श्रीयंत्र को नौटी नामक स्थान के चौराहे में विधिवत पूजन कर भूमिगत स्थापित किया, जो स्थान कालांतर में नन्दा देवी श्रीपीठ के रुप में प्रसिद्ध हुवा।

भारत के साथ-साथ श्रीयंत्र के प्रभावों की जानकारी अन्य देशों में निवास करने वाले भारतीय एवं वहां के स्थानिय लोगो को भी अवश्य रहती होगी! क्योकि भारतवासी जहां भी गये वहां श्रीयंत्र को अपने साथ लेकर गये और निरंतर उसके प्रभावों का विस्तार करते रहें।

नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर के मुख्य द्वार पर श्रीयंत्र निर्मित हैं।

- जिस श्रीयंत्र में सभी चक्र एवं बीज मंत्र अंकित हो वह संपूर्ण श्रीयंत्र कहां जाता हैं और जो यंत्र केवल

चक्रों से बना हो बीज, शक्ति मंत्रों इत्यादि से रहित हो वह श्रीचक्र यंत्र कहां जाता हैं।

- आज कल श्रीयंत्र की अपेक्षा श्रीचक्र यंत्र ही अधिक देखने में आते हैं। लेकिन कुछ जानकारों का मानना हैं की बीजाक्षर की शक्ति ही मंत्र यंत्र की आत्मा एवं प्राण माने जाते हैं।
- यामल ग्रंथ में वर्णित हैं की श्री यंत्र के दर्शन मात्र से ही विशेष लाभ की प्राप्ति हो जाती हैं।
- यथा-सार्ध त्रिकोटितोर्थेषु स्नात्वा यत्फलमश्नुते लभते तत्फलम् भक्ता, कृत्वा श्री चक्रदर्शनम्।
- विद्वानो ने अपने अनुभवों में पाया हैं कि श्री यंत्र अत्यंत प्रभावशाली यंत्र हैं, कि दैनिक श्रद्धापूर्वन श्रीयंत्र के दर्शनमात्र से शीघ्र ही मनुष्य की मनोकामनाए पूर्ण होने लगती हैं।

त्रिपुरतापिनी उपनिषद में उल्लेख हैं:

श्री चक्रं यो धेति स सर्द वेति। स सकलांल्लोकानाकर्षयति। सर्व स्तम्भयति नीलीयुक्तं चक्रं शत्रुन्मरियति। गतिं स्तम्भयति। लाक्षायुक्तं कृत्वा सकललोकं वशीकरोति। नवलक्षजपं कृत्वा रुद्रत्वं प्राप्नोति। मृनिकया वेष्टित कृत्वा विजयी भवति। वर्तुले हुत्वा श्रियमतुलां प्राप्नोति। चतुरस्त्रे हुत्वा वृष्टिर्भवति। त्रिकोणे हुत्वा शत्रून्मारयति। गति स्तम्भयतिः पुश्ज्पाणि हुत्वा विजयी भवति। महारसर्हुर्वा परमानन्दनिर्भरो भवति।

अर्थात: जो श्री यंत्र के रहस्य को जानता हैं वह सकल ब्रह्माण्ड के भूत, भविष्य, वर्तमान को जानता हैं। वह सकल ब्रह्माण्ड को आकर्षित करता हैं, सर्व लोकों को स्तम्भित करता हैं, नीले थोथे से इस चक्र का प्रयोग करने पर शत्रुओं को मारता हैं, गतिमान पदार्थों को रोकने में समर्थ बनता हैं। लाक्षारस के साथ इसका प्रयोग करने से मनुष्य सकल लोकों के प्राणियों का वशीकरण करने में सफल होता हैं। श्रीयंत्र के बीज मंत्र का नवलाख जप करने से मनुष्य रुद्रत्व (शिवत्व अर्थात शिव के समान शाप देने, संहार करने का सामर्थ्य) को प्राप्त करता हैं। मिट्टी से वेष्टित (अर्थात भुजा में धारण करना) करने पर विजयश्री को प्राप्त करता हैं। भग(योनि) की आकृति वाले कुंडाकार यज्ञस्थल पर आहुति देने पर मनुष्य सब प्रकार की स्त्रियों को वशीभूत कर लेता हैं। वर्तला आकृति वाले कुण्ड पर आहुति देने पर मनुष्य अतुल्य राजलक्ष्मी को प्राप्त करता हैं। चतुष्कोण आकृति वाले कुण्ड पर आहुति देने पर मनुष्य वर्षा को उत्पन्न करता हैं। त्रिकोण आकृति वाले कुण्ड पर आहुति देने पर मनुष्य शत्रुओं को मारता हैं। गति को स्तम्भित करता हैं। पुष्पों की आहुति देने पर विमल यश एवं विजय को प्राप्त करता हैं। महारस (अर्थात बिल्व फल) की हवि देकर परमानंदत्व को प्राप्त हो जाता हैं।

श्रीविद्या का महत्व:

श्रीविद्या सात्विक उपासनाओं में सर्वोपरि एवं सर्व श्रेष्ठ साधना हैं। जिस प्रकार विभिन्न देवी-देवताओं की आराधना से धन, धान्य, पशु संपदा आदि लौकिक सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। लेकिन श्रीविद्या की आराधना से धन, धान्य इत्यादि भौतिक सुख साधन तो प्राप्त होते ही हैं उसके साथ-साथ आत्म ज्ञान व परमतत्त्व की प्राप्ति भी होती हैं।

इस विषय में शास्त्रों में उल्लेख हैं।

यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षो,
यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः
श्रीसुन्दरीसेवतत्पराणां,
भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव।

अर्थात: जहाँ भोग है वहाँ मोक्ष नहीं, जहाँ पर मोक्ष हैं वहाँ भोग नहीं हो सकता। लेकिन श्री महालक्ष्मी की सेवा से भोग व मोक्ष दोनों ही सहज में प्राप्त हो जाते हैं।

यदि कारण हैं की हजारों वर्षो से श्री महालक्ष्मी की उपासना का प्रबल माध्यम श्री यन्त्र ही रहा हैं। त्रिपुरोपनिषद में कादि-हादि विद्याओं के नाम से श्रीविद्या का स्पष्ट उल्लेख मिलता हैं। श्रीशंकराचार्य कृत सौन्दर्य लहरी एवं प्रपंचसार आदि ग्रंथ श्री यंत्र के शुद्ध एवं सात्त्विकता के सर्वोत्तम प्रमाण हैं।

कुछ जानकार विद्वानों का कथन हैं की श्रीविद्या गुरुगम्य हैं। इस लिए गुरुकृपा के बिना प्राण-प्रतिष्ठित या अभिमंत्रित श्री यंत्र उत्तम फल नहीं देते। श्रीआदि गुरु शंकराचार्य जी को श्रीविद्या की दीक्षा योगेन्द्र श्री गोविन्दपादाचार्य से प्राप्त हुई थी। योगेन्द्र श्री गोविन्दपादाचार्य जी को श्रीविद्या की दीक्षा श्री गौड़पादाचार्य के गुरु भगवान दत्तात्रेय ने स्वयं दी थी। इस प्रकार श्रीविद्या के अत्यंत प्राचीन गुर-शिष्य परंपरायें सर्वत्र प्रसिद्ध हैं।

सुन्दरीतापनीय में उल्लेख हैं की जिस प्रकार घट, कलश और कुंभ तीनों शब्द का एक ही अर्थ हैं उसी प्रकार यंत्र, देवता और गुरु यह तीनों शब्द का एक ही हैं।

कुछ विद्वानो का मत हैं की भोजपत्र पर निर्मित श्रीयंत्र विशेष प्रभावी होती हैं। क्योकि शास्त्रों में वर्णित हैं की *"यः भूर्जदपैर्यजाति स सर्वान्लभते"*

श्रीयंत्र के तीन प्रमुख प्रकार हैं।

1. मेरुपृष्ठ, 2. कूर्मपृष्ठ, 3. भूपुष्ठ।

कुछ विद्वजनों का कथन हैं की श्रीयंत्र को प्राण-प्रतिष्ठित करने का अधिकारी केवल वही मनुष्य को होता हैं जिसने श्रीविद्या की योग्य गुरु से दिक्षा लि हो। योग्य गुरु से दिक्षा प्राप्त किय बिना बड़े से बड़े विद्वान ब्राह्मण को भी चाहे वह चारों वेद का ज्ञाता हो या पूजा-पाठ में प्रखंड विद्वान हो उसे भी श्री यंत्र को अभिमंत्रित या प्राण-प्रतिष्ठित करने का अधिकार नहीं हैं। यही कारण हैं की अज्ञानता वश किये गये इस प्रकारके पूजनों के कारण आज बड़े से बड़े विद्वान ब्राह्मण के पास ज्ञान तो खुब होता हैं लेकिन मां लक्ष्मी की विशेष कृपा उसके पर नहीं होती!

- विद्वानों का कथन हैं की धार्मिक मान्यता के अनुशार भोजपत्र की अपेक्षा तांबे पर निर्मित श्रीयंत्र का फल सौ गुना होता हैं।
- तांबे पर निर्मित श्रीयंत्र की अपेक्षा चांदी पर निर्मित श्रीयंत्र का फल लाख गुना होता हैं।
- चांदी पर निर्मित श्रीयंत्र की अपेक्षा सुवर्ण पर निर्मित श्रीयंत्र का फल करोड़ो गुना होता हैं।
- रत्नसागर ग्रंथ में रत्नों पर निर्मित भिन्न-भिन्न श्रीयंत्र के फलों का वर्णन मिलता हैं।
- जिसमें स्फटिक पर बने श्रीयंत्र को सर्वश्रेष्ठ बताया गया हैं।

विद्वानों का मत हैं:

- भोजपत्र पर निर्मित यंत्र 6 वर्ष तक प्रभावी रहता है।
- तांबे में निर्मित श्रीयंत्र 12 वर्ष तक प्रभावी रहता है।
- चांदी में निर्मित श्रीयंत्र 20 वर्ष तक प्रभावी रहता है।
- और सुवर्ण में निर्मित श्रीयंत्र आजीवन प्रभावी रहता है।

कुछ विद्वानो का मत हैं

- भोजपत्र पर निर्मित यंत्र 1 वर्ष तक प्रभावी रहता है।
- तांबे में निर्मित श्रीयंत्र 2 वर्ष तक प्रभावी रहता है।
- चांदी में निर्मित श्रीयंत्र 12 वर्ष तक प्रभावी रहता है। और सुवर्ण में निर्मित श्रीयंत्र आजीवन प्रभावी रहता है।

विशेष नोट: हमारे अनुभवों के अनुशार यन्त्र यदि शुद्ध धातु में निर्मित हो, तेजस्वी मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित हो तो वह आजीवन प्रभावी रहता है, चाहे वह सोने, चांदी या तांबे में ही निर्मित क्यों न हो। एक शुद्ध धातु में निर्मित एवं पूर्ण विधि विधान से मंत्रसिद्ध एवं प्राण-प्रतिष्ठित किया गया यंत्र जब तक व्यक्ति के पूजन स्थान में स्थापित रहता हैं तब तक वह प्रभावशाली रहते देखा गया हैं। इसमें जरा भी संदेह नहीं हैं। केवल कुछ विशेष यंत्र ऐसे होते हैं जो साधना विशेष या कार्य उद्देश्य की समाप्ति के पश्चयात जल में विसर्जित करने होते हैं। यंत्र यदि किसी कारण से खंडित हो जाये, उस पर अंकित रेखा, अंकन, बीज मंत्र आदि धूंधले हो जाये या सरलता से दिखाई नहीं देते हो तब, अथवा किसी कारण से यंत्र अशुद्ध हो जाये हाथ से गिर जाये तब उसे जल में विसर्जित करके दूसरा स्थापित करलेना चाहिए। यंत्र के अशुद्ध, खंडित होने या हाथों से गिरजाने पर उसके शुभ प्रभाव में कमी आने लगती हैं।

श्रीविद्या के अद्भुत चमत्कारों में से एक का वर्णन "शंकर दिग्विजय" में मिलता हैं जो इस प्रकार हैं।

जब आचार्य शंकर अपने गुरु के यहां रहते थे, तब गुरुगृह के नियम अनुशार आचार्य शंकर एक दिन किसी ब्राह्मण के द्वार पर भिक्षा के लिए गए। वह ब्राह्मण बहुत निर्धन था, भिक्षा में देने के लिए उसके घर में मुट्ठी भर चावल भी नहीं थे। निर्धन ब्राह्मण की पत्नी ने आचार्य शंकर को एक आंवला देकर रोते हुए अपनी अवस्था बतलाई। ब्राह्मण पत्नी की दुःखद करुण निर्धनता की व्यथा सुनकर आचार्य शंकर का हृदय द्रवित हो गया। आचार्य शंकर ने वहीं खड़े होकर, करुण विगलित चित्त से श्रीविद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ महालक्ष्मी की स्तुति प्रारम्भ की और आचार्य शंकर की वाणी से अनायास करुणापूर्वक कोमल कान्त वाक्यों से आकृष्ट हो कर माँ महालक्ष्मी आचार्य शंकर के सामने अपने त्रिभुवन मनोहर रुप में प्रकट हो गई और कोमल शब्दों में कहा, पुत्र "मैने तुम्हारा अभिप्राय जान लिया हैं, परन्तु इस निर्धन परिवार ने पूर्व जन्मों में ऐसा कोई भी सुकृत, पुण्य कार्य नहीं किया हैं जिससे मैं इन्हें धन दे सकूँ।"

माँ महालक्ष्मीजी के इन वचनों पर आचार्य शंकर ने बड़े ही विनीत शब्दों में माँ महालक्ष्मीजी से निवेदन किया की "पूर्व जन्म में इस ब्राह्मण ने ऐसा कोई कार्य सुकृत कार्य नहीं किया हैं जिसके फलस्वरुप उसे धन-सम्पत्ति दी जा सके इससे क्या हुआ। मेरे जैसे भिक्षुक को आंवले का दान देकर इसने तो महान् पुण्य राशि अर्जित कर लिया हैं, इस कारण यह परिवार अतुल धन सम्पत्ति का अधिकारी हो गया हैं, अतः यदि आप प्रसन्न हुई हों तो इस परिवार को दारिद्रय से मुकत कर दीजिये"

आचार्य शंकर के इस निवेदन का माँ महालक्ष्मी खण्डन न कर सकीं और प्रसन्न होकर देवी ने कहा "यही होगा आचार्य, मैं उन्हें प्रचुर सोने के आंवले दूंगी।" देवी के मुख से इतना सुनने पर आचार्य शंकर नें ब्राह्मण परिवार को शीघ्र धनवान होने का आशीर्वाद देकर गुरुगृह लौट गये। दूसरे दिन प्रातःकाल ब्राह्मण परिवार ने देखा, उनके घर में सर्वत्र सोने के आंवले बिखरे पड़े हैं। इस प्रकार आचार्य शंकर नें श्रीविद्या की उपासना से ब्राह्मण परिवार को धनवान बना दिया।

अधिकतर लोगों ने श्रीयंत्र को चित्रित ही देखा होगा, जिससे यंत्र के निर्माण की वास्तविक विधि समझना कठिन हैं। चित्रित यंत्रों में हमें केवल उसकी लम्बाई और चौड़ाई ही नज़र आती हैं, उचाई नहीं होती। लेकिन वास्तविक रुप से यंत्र की उंचाई भी होती हैं जो मुख्यरुप से धातु और पत्थरों से बने यंत्रों में दिखाई दिती हैं। इस तरह के यंत्र को पत्थर पर काटकर, स्फटिक, मरगच, प्रवाल, पद्मरागमणि, इन्द्रनीलमणि, नीलकान्तमणि इत्यादि रत्नों पर देखने को मिलते हैं। इसके अलावा शालिग्रामशिला, ताम्रपत्र, रजत पत्र ओर सुवर्ण में भी यंत्र बनाये जाते हैं। श्रीयंत्र के निर्माण में भू अथवा मेरु दोनों पद्धतियों का उपयोग होता हैं।

श्रीयंत्र की विशेषता एवं उपयोगिता

पौराणिक काल से ही हिन्दू संस्कृति में श्रीविद्या की उपासना अत्याधिक प्रचलित रही हैं। यही कारण हैं की हिन्दू संस्कृति में तब से लेकर आजतक बड़े-बड़े विद्वान आचार्य श्रीविद्या के उपासक रहे हैं।

श्रीयंत्र में स्थित नौ चक्रों के भिन्न-भिन्न प्रयोग से लाभः

(१) सर्वानन्दमय अर्थात् सब प्रकार का आनन्द देने वाला हैं।
(२) सर्व सिद्धिप्रद अर्थात् सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करने वाला हैं।
(३) सर्वरक्षाकार अर्थात् सभी से रक्षा करने वाला हैं।
(४) सर्व रोगहर अर्थात् सभी रोगों का हरण करने वाला हैं।
(५) सर्वार्थ साधक अर्थात् सभी कार्यों की सिद्धि करने वाला हैं।
(६) सर्व सौभाग्यदायक अर्थात् सभी सौभाग्य को प्रदान करने वाला हैं।
(७) सर्व संक्षोभक्ष अर्थात् संक्षोभण करने वाला हैं।
(८) सर्वाशापरिपूरक अर्थात् सभी आशाओं को पूरण करने वाला हैं।

(९) त्रैलोक्य मोहन अर्थात् तीनोलोक का मोहन करने वाला हैं।

यंत्र निर्माण विधान

- यदि श्री यंत्र का निर्माण भोजपत्र पर करना हो, तो तुलसी, अनार या मोरपंख की कलम से रक्त चंदन से यंत्र का निर्माण करना चाहिए। पीले रंग हेतु शुद्ध केसर का प्रयोग करना चाहिए।
- अष्टगंध, सिन्दूर या कुंकुम से भी यंत्र लिखे जा सकते हैं। इसके अलावा यंत्र को सुवर्ण, रजत, तांम्र, स्फटिक आदि मूल्यवान धातु या रत्नों पर उत्कीर्ण कराकर यंत्र का निर्माण किया जा सकता हैं।
- यन्त्र के निर्माण हेतु सर्व प्रथन त्रिकोण बनाकर उसके मध्य में बिन्दु फिर क्रमशः उपर दर्शाये गये आठ चक्रों को बनाना चाहिए।
- श्रीक्रम में शिवजी का कथन हैं कि जो मनुष्य सम रेखा न लिख कर, समान मुख न बनाकर श्रीयंत्र का निर्माण करता हैं, उसका सर्वस्व मैं हर लेता हूँ।
- विद्वानों का मत हैं की जिस स्थल पर जिस देवता का स्थान निर्दिष्ट किया गया हो, उस स्थान पर देवता का पूजन नहीं करने पर साधक के मांस और रक्त द्वारा उस देवता की पारणा होती हैं।
- श्री यंत्र के निर्माण के समय किसी पशु या भावावलम्बी जीव की दृष्टि नहीं पड़नी चाहिए, इस लिए सरर्क हो कर यंत्र का निर्माण करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति पशु के आगे श्री यंत्र को लिखता हैं, तो वह मन्द-बुद्धि, साधक अंगक्षय से होने वाले पाप का भागी होता हैं।
- भूत भैरव में उल्लेख हैं कि यदि श्री यंत्र को बनाते समय पद्म में केशर न बनाये। यदि कोई व्यकि निर्माण के समय पद्म के केशर के कल्पना करता हैं, तो भैरव गण योगिनियों की सहायता से उसका नाश कर देते हैं।
- श्री यंत्र को रात्रिकाल में नहीं लिखना चाहिए। रात्रि-काल में यंत्र का निर्माण करने से देवी तत्काल साधक को अभिशाप देती हैं।
- अपराजिता, कर, वीर और जवा पुष्प में देवी निवास करती हैं। इस लिए इन पुष्प से देवी का पूजन किया जा सकता हैं।
- स्वच्छन्द भैरव में उल्लेख हैं कि स्थण्डिल के उपर एक हाथ के बराबर यंत्र का निर्माण करना चाहिए। रत्नादि के यंत्र बनाने हो तो इच्छानुसार एक, दो, तीन अथवा चार तोले के रत्न लेकर यन्त्र बनवाया जा सकता हैं। इससे अधिक परिमाण के रत्न द्वारा यंत्र का निर्माण करने से साधक प्रायश्चित का भागी होता हैं।
- त्रिधातु का यंत्र बनाना हो तो, सुवर्ण, तांम्र और रजन इन त्रिनों धातुओं का प्रयोग किया जाता हैं। जिसमें दस भाग सोना (26.315 %), बारह भाग तांबा (31.580%), और सोलह भाग रजत (42.105%),को एकत्र करके यंत्र का निर्माण करना चाहिए। त्रिधातु से बने यंत्र का पूजन करने से साधक सौभाग्यशाली होता हैं और शीघ्र ही अष्ट सिद्धियां प्राप्त होती हैं।
- स्फटिक, मरगच, प्रवाल, पद्मरागमणि, इन्द्रनीलमणि, नीलकान्तमणि इत्यादि रत्नों से बने श्री यंत्र का पूजन करने से धन-सम्पत्ति, स्त्री-संतान, मान-सम्मान और यश की प्राप्ति होती हैं।
- ताम्र के यंत्र का पूजन करने से क्रांति प्राप्त होती हैं।
- सुवर्ण के यंत्र का पूजन करने से शत्रु नाश होता हैं।
- रजत के यंत्र का पूजन करने से साधक का कल्याण होता हैं।
- स्फटिक के यंत्र का पूजन करने से साधक को सभी अभिष्ट कार्यों में सफलता प्राप्त होती हैं।

यंत्र के विनष्ट होने पर उसका प्रायश्चित

- यदि यंत्र दग्ध स्फुटित या चोर के द्वारा अपहृत हो जाये, तो साध को एक दिन उपवास करके देवता के मंत्र का एक लाख जप एवं जप संख्या का दशांश हवन तथा हवन का दशांश तर्पण करना चाहिए। फिर भक्तिभाव से अपने गुरुदेव की आज्ञा से ब्राह्मण भोजन कराये। कुछ जानकार एक लाख जप को एक अयुत अर्थात दश सहस्त्र कहते हैं।

- यदि यंत्र के लुप्त-चिह्न, स्फुटित या खंडित होने पर उस यंत्र को गंगा आदि पवित्र नदियों के जल में, तीर्थ या सागर में विसर्जित करदेना चाहिए। शास्त्रों में उल्लेख हैं की यंत्र को विसर्जित न करके उसे पास रखने से साधक की मृत्यु या विविध दुःख होते हैं।

श्रीचक्र पादोदक का माहात्म्य:

ब्रह्माण्ड में स्थित जितने तीर्थ स्थल हैं उन सबके स्नान से सहस्त्र कोटि गुना अधिक फल श्रीचक्र पादोदक के सेवन से मिलता हैं। (गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, गोमती, पुष्कर, प्रयाग, हरिद्वार, वाराणसी, ऋषिकेश, सिन्धु, रेवा, सरस्वती आदि तीर्थ स्थल कहे जाते हैं।)

श्रीचक्र के दर्शन का फल:

एक प्राण-प्रतिष्ठित चैतन्ययुक्त किये गये "श्री यंत्र" के विषय में विद्वानों का कथन हैं कि, विधि-विधान से सौ यज्ञ करने से जो फल प्राप्त होता हैं वहीं फल श्रीचक्र का एक बार दर्शन करने से मिलता हैं। सोलह महादानों के करने से जो पुण्य फल प्राप्त होता हैं वहीं फल श्रीचक्र का एक बार दर्शन करने से मिलता हैं। साढ़े तीन कोटि(अर्थात साढ़े तीन करोड़) तीर्थों में स्नान करने से जो फल प्राप्त होता हैं, वहीं फल श्रीचक्र का एक बार दर्शन करने से मिलता हैं। यदि मनुष्य वास्तव में सुखी और सृमद्व होना चाहता है तो उसे श्रीयंत्र स्थापना अवश्य करनी चाहिये।

अभिमंत्रित श्रीयंत्र

आज बाजार में रत्नों के बने श्री यंत्र सरलता से प्राप्त हो जाते हैं लेकिन यह सब सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित या चैतन्ययुक्त नहीं होते। जब श्री यंत्र को पूर्ण शास्त्रोंक्त विधि-विधान से तेजस्वी मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित या प्राण-प्रतिष्ठित किया जाता हैं तभी वह पूर्ण रुप से प्रभावशाले एवं सुख-समृद्धि देने वाला होता है। यह आवश्यक नहीं कि श्री यंत्र दुर्लभ द्रव्यों या रत्नों का बना हो। यदि श्रीयंत्र शुद्ध धातु में निर्मित एवं अखंडित हैं और यंत्र शास्त्रोंक्त विधि-विधान से अभिमंत्रित या प्राण-प्रतिष्ठित हैं तो वह श्री यंत्र तांबे पर ही क्यो न बना हो वह निश्चित पूर्ण रुप से प्रभावशाली ही रहता हैं। जब तक यंत्र मंत्रों द्वारा सिद्ध नहीं होता तब तक वह श्री प्रदाता अर्थात धन-समृद्धि प्रदान करने वाला नहीं बनता!

विभिन्न द्रव्यों एवं धातुओं से निर्मित श्री यंत्र का फल।

स्फटिक श्रीयंत्र

स्फटिक रत्न पर उत्कीर्ण किया हुआ श्री यंत्र दुर्लभ माना जाता हैं और यह सभी द्रव्यों से अतिशीघ्र फल प्रदान करने वाला रत्न है। स्फटिक श्रीयंत्र मनुष्य की सभी भौतिक एवं आध्यात्मिक इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। यदि किसी साधक को सौभाग्य से स्फटिक श्री यंत्र प्राप्त हो जाए तो किसी विद्वान से उसको अभिमंत्रित करवाले। स्फटिक श्री यंत्र रंक को भी वह राजा बनाने में समर्थ हैं। स्फटिक श्री यंत्र का पूजन करने से मनुष्य को धन की कभी कमी नहीं रहती।

गुलाबी बिल्लौर (रोज़ क्वाट्र्ज)

रोज़ क्वाट्र्ज से बने श्री यंत्र के पूजन से देवी लक्ष्मी शीघ्र प्रसन्न होती हैं। रोज़ क्वाट्र्ज श्री यंत्र के पूजन से घर में निरंतर धन-सुख सौभाग्य की वृद्धि होती है। रोज़ क्वाट्र्ज श्री यंत्र को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर रोज़ क्वाट्र्ज की माला से लक्ष्मी मंत्र का जप करने से यह अत्यंत चमत्कारिक फल देनेवाला सिद्ध होता है। रोज़ क्वाट्र्ज से बने श्री यंत्र के पूजन से माँ लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और व्यक्ति को अक्षय धन-संपदा की प्राप्ति होती है। रोज़ क्वाट्र्ज श्री यंत्र के पूजन से आकस्मिक धन प्राप्ति के स्रोत बनते हैं। क्योकि, रोज़ क्वाट्र्ज आपमें से दुर्लभ रत्न होता हैं अतः रोज़ क्वाट्र्ज से बना श्री यंत्र भी अत्यंत दुर्लभ है।

पन्ना श्री यंत्र (मरगज / ग्रीन जेड)

मरगज श्रीयंत्र के पूजन से व्यक्ति को ऐश्वर्य और समृद्धि प्राप्त होती हैं। जिस प्रकार ज्योतिष मे बुध के शुभ प्राभावों मे वृद्धि हेतु पन्ना रत्न का प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार पन्ना श्री यंत्र (मरगज / ग्रीन जेड) श्री यंत्र के पूजन-अर्चन से बुध की शुभता में वृद्धि होती हैं। मरगज श्री यंत्र का पूर्ण विधि-विधान से पूजन-अर्चन

कर दरिद्र से दरिद्र व्यक्ति भी धनवान हो सकता हैं।मरगज श्री यंत्र को रोजगार प्राप्ति, व्यापार वृद्धि, धन प्राप्ति एवं कर्ज़ मुक्ति हेतु अत्यंत प्रभावशाली माना गया है। मरगज श्री यंत्र को भवन में स्थाप्ति करने से विभिन्न वास्तु दोष दूर होते है। मानसिक अशांति को कम करने में सहायता प्राप्त होती हैं, व्यक्ति द्वारा अवशोषित हरी विकिरण मानसिक शांती प्रदान करती हैं, व्यक्ति के शरीर के तंत्र को नियंत्रित करती हैं। मरगज रत्न जिगर, फेफड़े, जीभ, मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र इत्यादि रोग में सहायक होते हैं।

माणिक्य श्री यंत्र (रुबी)

माणिक्य से बना श्री यंत्र साहस, शक्ति, नाम-प्रसिद्धि और उत्तम स्वास्थ्य के लिए विशेष लाभकारी होता है।

जिस प्रकार ज्योतिष मे सूर्य के शुभ प्राभावों मे वृद्धि हेतु माणिक्य का प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार माणिक्य श्री यंत्र के पूजन-अर्चन से सूर्य की शुभता में वृद्धि होती हैं। माणिक्य श्री यंत्र विशेष कर राजनीतिज्ञ, उच्च अधिकारी, सरकारी विभाग से जुडे लोगों के लिए विशेष रुप से सुख-समृद्धि, नाम-यश प्रदान करता है। माणिक्य श्री यंत्र को घर-दुकान-ऑफिस में स्थापित कर सकते हैं।

पारद श्रीयंत्र

शास्त्रों में पारद धातु को भगवान शिव का वीर्य कहा गया है। शुद्ध पारद से निर्मित श्री यंत्र अति दुर्लभ तथा प्रभावशाली होते है। धन प्राप्ति हेतु उत्तम माना जाता हैं।

स्वर्ण श्रीयंत्र

स्वर्ण धातु में निर्मित श्रीयंत्र संपूर्ण सुख एवं ऐश्वर्य को प्रदान करने वाला हैं। एसे श्री यंत्र को हमेंशा तिजोरी में ऐसे रखना चाहिए कि परिवार के अलावा किसी अन्य व्यक्ति का स्पर्श न हो।

रजत श्रीयंत्र

चांदी में निर्मित श्रीयंत्र मुख्यतः व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में स्थापित करने से विशेष लाभ की प्राप्ति होती हैं।

ताम्र श्रीयंत्र

तांबे में निर्मित श्रीयंत्र विशेषः घर, दुकान, ओफिस इत्यादि व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थान पर विशेष रुप से किया जाता हैं। तांबे में निर्मित श्रीयंत्र का प्रतिदिन पूजन करने से आर्थिक स्थिती में सुधार होता हैं। कार्यस्थल पर ग्राहक की द्रष्टि में आये ऐसे स्थापित करने से कारोंबार में वृद्धि होती हैं। केवल शास्त्रोंमें वर्णित पदार्थों पर ही यंत्र का निर्माण करना श्रेष्ठ हैं, लकडी, कपड़े या पत्थर मूल्यहीन द्रव्य आदि पर श्री यंत्र का निर्माण नहीं करना चहिए।

***

कुबेर जी के छः नामों का चमत्कार

संकलन गुरुत्व कार्यालय

1. वैश्रवण
2. पक्वाश
3. पिंगल
4. विविध
5. वित्तेश
6. कुबेर

आदि गुरु शंकराचार्यजी के अनुसार उक्त छः नामों को; हाथों में स्वर्ण से भरे कलश, बड़ी तोंदवाले, स्वर्ण की आभा युक्त, विविध रत्नों-आभुषण से दीप्तिमान, नौ निधियों से प्रकाशित दुर्लभ रत्नों से निर्मित कमल आसन पर, वटवृक्ष के नीचे विराजमान धन के अधिपति कुबेरजी का ध्यान करते हुए जप-पूजन इत्यादि करना चाहिए।

कुबेर जी के उक्त 6 नामों का जप-हवन करने से विशेष लाभ की प्राप्ति होती हैं।

सुख-समृद्धि, लक्ष्मी प्राप्ति तथा ऋणमुक्ति के लिए घी व खीर का हवन करना चाहिए।

घी के साथ तिलों से हवन करने से ऋण मुक्ति होती है।

घी के साथ बिल्व से हवन करने से अक्षत धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

देवी महालक्ष्मी के 18 पुत्र वर्ग की महिमा

धर्म शास्त्रों के मतानुसार देवी महालक्ष्मी के 18 पुत्रवर्ग का उल्लेख वर्णित हैं। विद्वानो का अनुभव हैं की आर्थिक उन्नति एवं स्थिरता के लिए, देवी महालक्ष्मी के इन नामो का स्मरण एवं प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रुप से धन लाभ अवश्य होता हैं।

मंत्र जप का शुभारंभ धनतेरस, दीपावली, अक्षय तृतिया इत्यादि शुभ मुहूर्त या किसी भी शुक्रवार से करें। उस दिन प्रात:काल स्नान आदि से निवृत्त होकर देवी महालक्ष्मी की प्रतिमा या चित्र के सामने शुद्ध घी का दीप प्रज्वलित करके

मंत्र का जप प्रारंभ करें। इस दौराण देवी से अपनी आर्थिक स्थिती में सुधार के लिए कामना करें।

मां लक्ष्मी के 18 पुत्र के नाम क्रमश: इस प्रकार हैं।

1. ॐ देवसखाय नम:।
2. ॐ चिक्लीताय नम:।
3. ॐ आनन्दाय नम:।
4. ॐ कर्दमाय नम:।
5. ॐ श्रीप्रदाय नम:।
6. ॐ जातवेदाय नम:।
7. ॐ अनुरागाय नम:।
8. ॐ सम्वादाय नम:।
9. ॐ विजयाय नम:।
10. ॐ वल्लभाय नम:।
11. ॐ मदाय नम:।
12. ॐ हर्षाय नम:।
13. ॐ बलाय नम:।
14. ॐ तेजसे नम:।
15. ॐ दमकाय नम:।
16. ॐ सलिलाय नम:।
17. ॐ गुग्गुलाय नम:।
18. ॐ कुरूण्टकाय नम:।

***

स्थिर लक्ष्मी के लिए स्थापित करें दुर्लभ सामग्रीयां

संकलन गुरुत्व कार्यालय

सांसारिक एवं सामाजिक जीवन में किसी भी वस्तु के क्रय-विक्रय का मुख्य आधार सेतु धन ही माना गया है। एवं हिन्दू शास्त्रोक्त वर्ण हैं धन की देवी लक्ष्मी हैं, जिनके प्रसन्न होने से मनुष्य को सभी प्रकार से धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। मां लक्ष्मी को चंचल माना गया हैं। अर्थात लक्ष्मी जी किसी एक जगह टिकती नहीं है। किस प्रकार लक्ष्मी का आगमन आपके घर में होता रहे और जीवन से दुःख, दरिद्र, कष्टो से छुटकारा प्राप्त हो कर जीवान खुशियों से भर जाए उससे जुडे रहस्यो को भारतीय ऋषि मुनियों ने खोज निकाला हैं।

विद्वानो का कथन है की अक्षय तृतीया के दिन किया गया दान, हवन, पूजन अक्षय (संपूर्ण) अर्थात जिसका क्षय (नाश) नहीं होता हैं। हर व्यक्ति की यह इच्छा होती रहती है कि उसे जीवन पर्यन्त अक्षय लक्ष्मी की प्राप्ति होती रहे। इसलिए अक्षय तृतीया के दिन देवी लक्ष्मी एवं भगवान विष्णु का पूजन अर्चन विशेष लाभप्रदान करने वाल माना गया है। क्योकि लक्ष्मी जी के साथ विष्णु जी का पूजन घरमें स्थिर लक्ष्मी का निवास माना गया है।

आज के भौतिक युग में हर व्यक्ति की चाह होती हैं की उसे अधिक से अधिक धन-संपत्ति एवं ऐश्वर्य प्राप्त हो और वह अक्षत रुप से उसके पास रहे। आज हर व्यक्ति अपनी धन-संपत्ति को दिन दोगुनी रात चौगुनी रफ्तार से बढ़ाना चाहते हैं, इसलिए व्यक्ति लक्ष्मी प्राप्ति हेतु विभिन्न उपाय जैसे मंत्र, यंत्र, तंत्र एवं साधना आदि प्रयोगो को अपना कर लक्ष्मीजी को प्रसन्न कर सकते हैं।

जिन लोगों ने लक्ष्मी प्राप्ति एवं अपने घर में सुख समृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की प्रसन्ना हेतु दुर्लभ सामग्री को अपने घर में अवश्य स्थापित कर उसका नियमित पूजन-अर्चन करना चहिए। जिनके घर में दुर्लभ सामग्रीयां पहले से स्थापित हो उन्हें अधिक लाभ की प्राप्ति हेतु लक्ष्मी प्राप्ति के अन्य सरल उपायों को भी अपने जीवन में अवश्य आजमाना चाहिए। वह लोग जो इन दुर्लभ सामग्रीयों को स्थापित करने में असमर्थ हैं, उन लोगों को लक्ष्मी प्राप्ति के अनुभूत उपायो को अपनाकर अपने जीवन में निश्चित रुप से सुख-समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए एवं इन उपायों से लाभ की प्राप्ति होने पर विभिन्न दुर्लभ वस्तुओं को प्राप्त कर अपने घर में अवश्य स्थापित कर उसना नियमित पूजन-अर्चन करना चाहिए।

अक्षय तृतीया जैसे अबुझ मुहूर्त में धन प्राप्ति के विशेष उपायों को प्रारंभ कर निश्चित रुप से अपने जीवन में धन-वैभव, सुख-समृद्धि का आगमन किया जा सकता हैं।

यदि व्यक्ति स्वयं कोई उपाय प्रयोग या साधन इत्यादि द्वारा स्वयं किसी सामग्री को सिद्ध करने में असमर्थ हो को किसी योग्य गुरु या ब्राह्मण से भी करवा सकते है अथवा गुरुत्व कार्यालय द्वारा पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित सामग्रीया सुलभ मूल्य में प्राप्त कर बिना किसी विशेष पूजा अर्चना के लाभ प्राप्त सकते है।

विद्वानों का कथन हैं की अक्षय तृतीया के महत्व को जानते हुए वे भी यदि कोई इस अबुझ शुभ मुहूर्त के लाभ से वंचित रह जाए तो संभवः उस अभागे मनुष्य का दुर्भाग्य ही होगा की जो उसे इस शुभ मुहूर्त के लाभ से वंचित रख रहा होगा! इस अक्षय तृतीया के शुभ मुहूर्त को बिना किसी पूजन-अर्चन अथवा उपाय इत्यादि को किये बगैर छोड देना दुर्भाग्यपूर्ण है, धन-संपत्ति एवं संपन्नताकी कामना हेतु व्यक्ति को इस अवसर का लाभ अवश्य उठाना चाहिए।

पारद लक्ष्मी

मंत्र सिद्ध पारद लक्ष्मी का पूजन विशेष लाभप्रद माना गया है। शास्त्रों में वर्णित हैं की जिस स्थान पर पारद लक्ष्मी का विधि-वत पूजन होता हो वहाँ से निर्धनता कोषों दूर हो जाती है। देवी लक्ष्मी के आशिर्वाद से व्यक्ति को विभिन्न स्त्रोत से धनलाभ प्राप्त होते है।

विद्वानों का मत हैं की दुर्लभ पारद लक्ष्मी सी स्थापना मनुष्य की जीवन में सौभाग्य के आगमन माना जाता है।

जीवन में सभी प्रकार के सुख-सौभाग्य-ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये पारद लक्ष्मी का प्रभाव अद्भुत माना गया है।

पारद विष्णु

हिन्दू धर्मग्रंथों में देवी लक्ष्मी को चंचल माना गया हैं। चंचल अर्थात लक्ष्मी जी किसी एक जगह टिकती नहीं है। इसलिए लक्ष्मी जी के साथ भगवान विष्णु का पूजन अर्चन विशेष लाभप्रदान करने वाल माना गया है। क्योकि लक्ष्मी जी के साथ विष्णु जी का पूजन घरमें स्थिर लक्ष्मी का निवास माना गया है।

इसलिए पारद लक्ष्मी के साथ विष्णुजी का संयुक्त पूजन अत्याधिक लाभप्रद होता है।

पारद लक्ष्मी गणेश

धन कि देवी लक्ष्मी हैं जो धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्रदान करती हैं। लेकिन बिना बुद्धि के धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य व्यर्थ हैं। इसके पीछे मुख्य कारण हैं की भगवान श्री गणेश समस्त विघ्नों को टालने वाले हैं, दया एवं कृपा के महासागर हैं, एवं तीनो लोक के कल्याण हेतु भगवान गणपति सब प्रकार से योग्य हैं। समस्त विघ्न बाधाओं को दूर करने वाले गणेश विनायक हैं। अतः बुद्धि कि प्राप्ति के लिये बुद्धि और विवेक के अधिपति देवता गणेश का पूजन करने का विधान हैं।

गणेशजी समस्त सिद्धियों को देने वाले देवता माना गया है। क्योकि समस्त सिद्धियाँ भगवान गणेश में वास करती हैं। लक्ष्मी प्राप्ति के बाद में उसे स्थिर करने हेतु बुद्धि कि आवश्यकता होती हैं। इस लिये लक्ष्मीजी के साथ में श्री गणेशजी कि आराधना विशेष लाभप्रद होती हैं।

पारद माला

विद्वानों का मत हैं की पारद माला को धारण करने से व्यक्ति के त्रिदोष (अर्थात वात, पित्त एवं कफ) को नियंत्रण में किया जा सकता है।

- पारद माला को धारण करने से टोने-टोटके, तंत्र-मंत्र आदि नकारात्मक प्रभाव से रक्षण होता है।
- पारद माला को धारण करने से रक्त चाप के रोगी को लाभ मिलता है।
- पारद माला को धारण करने से विद्याथियों की विद्या, बौद्धिक क्षमता और स्मरण शक्ति की वृद्धि होती है।

नोट: कृप्या पारद माला का प्रयोग कुछ विशेष सावधानियों के साथ ही विशेज्ञ से परामर्श लेकर ही करे।

लक्ष्मी कारक कौड़ियां

पौराणिक काल से ही कौड़ियों को सौभाग्य कारक मानी जाती हैं। देश एवं विदेश की विभिन्न सभ्यताओं एवं प्रांतो में कौड़ियों के विभिन्न छोटे-बडे प्रयोग होते आये हैं। पूरातन काल में जन सिक्को का चलन नहीं था तब लोग कौड़ियों का नगद्दी के रुप में प्रयोग करते थे। लोग कौड़ियों का आदान-प्रदान करके चिज-चस्तु खरिदते और बेचते हैं।

धार्मिक मान्यता के अनुसार समुद्र से प्राप्त होने वाले सभी वस्तुये प्रायः लक्ष्मी प्राप्ति हेतु पूजन में प्रयुक्त होती हैं। कौड़ियां भी समुद्र से प्राप्त होती हैं और पीली कौड़ियां लक्ष्मी की अति प्रिय वस्तु होने से लक्ष्मी पूजन में इसका विशेष महत्व हैं।

- अक्षय तृतीया के दिन 11 पीली कौड़ियों पूजा स्थान में रखदें पूजन की समाप्ति पर उसे अपने तिजोरी में गहने इत्यादि के साथ में रखदें तो परिवार में गहने-जेवरात की वृद्धि होने लगती हैं। पुनः अगले

वर्ष या दीपावली पूजन के समय कौड़ियों को बदलदे।

- ❖ अक्षय तृतीया के दिन 11 पीली कौड़ियों को अपने घर या व्यवसायीक स्थान में तिजोरी में रखने से व्यापार और धन की वृद्धि होती हैं।

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है।

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारण करने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं। गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।

रक्त गुंजा

गुंजा एक दुर्लभ वनस्पति का बीज हैं। तंत्र शास्त्र में यह एक दुर्लभ एवं अत्यन्त प्रभावशाली वस्तु मानी जाती है। गुंजा प्रायः सफदे, लाल व कालें रगं के बीज स्वरुप में पायी जाती हैं। विभिन्न तंत्र क्रियाओं में गुंजा बीज के साथ-साथ गुंजा के जड़ का भी विशेष रुप से प्रयोग किया जाता हैं।

गुंजा बीजों का प्रयोग विभिन्न कार्य उद्देश्य की पूर्ति हेतु किया जाता हैं। लाल गुंजा का प्रयोग विशेष रुप से लक्ष्मी प्राप्ति के लिये किया जाता हैं। लाल गुंजा पर एक काले रंग का छोटा बिंदू होता हैं। एसा माना जाता हैं की रक्त गुंजा से घर में सुख-समृद्धि की वृद्धि तो होती ही हैं साथ ही साथ में मां महालक्ष्मी की कृपा भी घर पर बनी रहती हैं।

- ❖ अक्षय तृतीया के दिन रक्त गुंजा के इक्कीस या ग्यारह दानों को गंगा जल से पवित्र करके पूजा स्थान रखदेना चाहिए। पूजा के पश्चयात गुंजा के दानों को अपनी तिजोरी, कैशबोक्स, गल्ले में लाल कपड़े में बांधकर से दिनों दिन परिवार की आर्थिक समृद्धि बढ़ती हैं।
- ❖ मंत्र द्वारा सिद्ध रक्त गुंजा के इक्कीस या ग्यारह दानों को अपने व्यवसाय या ओफिस में रोकड़ रखने के साथ में रखने से धन की कभी कमी नहीं होती और कैश बोक्स कभी खाली नहीं रहता, लक्ष्मी जी का आशिर्वाद बना रहता हैं।
- ❖ यदि मंत्र सिद्ध कि हुई रक्त गुंजा की माला को कोई व्यक्ति गले में धारण कर्ता हैं तो वह सर्वजन

वशीकर के समान प्रभावशाली होती हैं। रक्त गुंजा की माला को केवल प्रयोग के समय या किसी महत्व पूर्ण कार्य या व्यक्ति से मिलते समय ही धारण करें, अनावश्य होने पर उसे उतार कर अपने पूजा सथान में रखदें।

- ❖ किसी महत्वपूर्ण कार्य उद्देश्य की पूर्ति हेतु मंत्र सिद्ध रक्त गुंजा के इक्कीस दानों को अपने साथ लेकर घर से बाहर निकले, कार्य उद्देश्य पूर्ण होने पर उसे बहते जल में प्रवाहित कर दें।

नाग केशर

नाग केसर अति पवित्र एवं उर्लभ वनस्पतियों में से एक मानी जाती हैं। इसे नागकेश्वर के नाम से भी जाना जाता हैं। धार्मिक मान्यताओं में नाग केशर का स्थान प्रमुख वस्तुओं अग्रस्त हैं। तंत्र गंथों में नाग केशर के विभिन्न प्रयोगों का वर्णन मिलता हैं। धनप्राप्ति एवं सुख-समृद्धि हेतु भी नाग केशर का उपयोग किया जाता हैं।

- ❖ चांदी (यदि उपल्बध नहों को अन्य धातु) की एक छोटी सी डिब्बी में नागकेशर को शहद के साथ मिलाकर ढ़क्कन लगाकर उसे बंद करदें। अक्षय तृतीया के दिन या दीपावली की रात्रि में उसे पूजन के बाद में तिजोरी में रखदे। अगली अक्षय तृतीया या दीवाली को उस डिब्बी को खोल कर नागकेशर और शहद को बदल दें। एकबार डिब्बी रखदेने के बाद उसे खोले नहीं उसे बंध ही रहने दे।
- ❖ धन-समृद्धि की प्राप्ति हेतु एक नविन पीले वस्त्र में नागकेशर, साबुत हल्दी, सुपारी, एक तांबे का सिक्का, एक पांच या दस का सिक्का, अक्षत को एक साथ कर के उसको कपड़े में बांध दें। फिस उसे धूप-दीप से पूजन करके अपनी तिजोरी में रखकर प्रतिदिन पूजन के समय उसे धूप दें तो धनलाभ होने लगेगा।
- ❖ अक्षय तृतीया, दीपावली की रात या अन्य किसी शुभ मुहूर्त में नागकेशर और पांच सिक्कों को लेकर उसे पूजा स्थान पर रखदे फिर पूजन की समाप्ति के बाद उसे एक पीले कपड़े में बांध कर अपने व्यवसायीक प्रतिष्ठान के गल्ले, तिजोरी आदि धन रखने वाले स्थान पर रख दें। इस प्रयोग से व्यक्ति को कभी धन की कमी नहीं रहेगी।
- ❖ धन प्राप्ति के लिए के लिए सोमवार युक्त पूर्णिमा के दिन शिवमंदिर में शिवलिंग का कच्चे, दूध, दही, शहद चीनी और घी अर्थात पंचामृत से अभिषेक करें। फिर शिवलिग का गंगाजल से अभिषेक करें। तत्पश्चयात पांच बिल्वपत्रों के साथ में पांच नागकेशर को शिवलिंग पर अर्पित करें। यह क्रिया प्रतिदिन अलगी पूर्णिमा तक नियमित रुप से करें। अंतिक दिन चढ़ाए गये नागकेशर एवं बिल्वपत्रों में से एक बिल्वपत्र एवं थोड़ा नागकेशर घर वापस ले आये उसे अपनी तिजोरी में रखदें। इस प्रयोग से अत्याधिक धनलाभ की प्राप्ति होती हैं।

गोमति चक्र

गोमति चक्र समुद्र से प्राप्त होने वाली दुर्लभ वस्तुओं में से एक हैं। क्योकि यह आसानी से प्राप्त नहीं होता यह एक सफेद रंगका गोलाकार दिखने में सीप से मिलता-जुलता प्रतित होता हैं। हालांकी कई गोमति चक्र पूर्णतः सफेद नहीं होती उसके उपर गेहुवें और काले रंग की पलती धारीया होती हैं, जब यह धारीया घीस या उसे पोलिस किया जाता हैं तब यह सफेद रंग का नजर आने लगता हैं। इस के उपर चक्र जैसे आकृतिया कुदरति और पर पाई जाती हैं इसलिए इसे गोमति चक्र कहते हैं।

धार्मिक मान्यता के अनुसार समुद्र से प्राप्त होने वाले सभी वस्तुये प्रायः लक्ष्मी प्राप्ति हेतु पूजन में प्रयुक्त होती हैं। गोमति चक्र भी समुद्र से प्राप्त होता हैं और लक्ष्मी की प्रिय वस्तु होने से लक्ष्मी पूजन में इसका विशेष महत्व हैं।

पुरातन काल से ही गोमति चक्र को लक्ष्मी प्राप्ति के अलागा अन्य तंत्र प्रयोगो एवं कामना पूर्ति हेतु भी इसका विशेष रुप से प्रयोग किया जाता हैं। क्योकि विद्वानों के मतानुसार सिद्ध गोमति चक्र से विभिन्न मनोकामनाएं सरलता से पूर्ण की जासकती हैं।

- अक्षय तृतीया या दीपावली की रात को पांच मंत्र सिद्ध गोमति चक्र को स्थापित करके उसका साक्षात लक्ष्मी रुप में पूजन करने से उसका विधिवत पूजन करने से व्यक्ति को जीवन में निरंतर धन की प्राप्ति होती रहती हैं।
- अक्षय तृतीया या दीपावली के दिन 11 गोमती चक्र और 11 पीली कोडियों दोनों को को एक पीले कपडे पर रख रखकर कर पूजन करें। फिर "ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं" मंत्र का पांच माला करके उसे कपड़े में बांधकर अपने तिजोरी में स्थापित करने से धन लाभ की प्राप्ति होती हैं।

लक्ष्मी कारक हकीक

हकीक एक प्रकार का उपरत्न हैं, जिसका उपयोग विभिन्न तंत्र प्रयोग एवं धनप्राप्ति हेतु विशेष रुप से किया जाता हैं। यह एक अत्यंत प्रभावशाली पत्थर माना जाता हैं।

हकीक के प्रभावों के विषय कुछ जानकार विद्वानो का अनुभव हैं की हकीक को यदि कोई व्यक्ति धारण नहीं करके केवल अपने साथ रखता हैं तो भी वह अपना चमत्कारी प्रभाव दिखा ही देता हैं।

- अक्षय तृतीया या दीपावली के दिन पूजान के समय 21 हकीक को स्थापीत करदे पूजन के पश्चयात उसे दीपावली के दिन ही जमीन में गाढ़देने से व्यक्ति को निरंतर धन लाभ होता रहता हैं।
- मनोकामना पूर्ति हेतु ग्यारह हकीक पत्थर को अपने पूजा स्थान पर रख कर अलगले दिन उसे मंदिर में चढाने से मनोकामना शीघ्र पूर्ण होती हैं।
- अक्षय तृतीया या दीपावली के दिन हकीक माला से लक्ष्मी मंत्र का एक माला जप करके। माला को धारण करने से देवी लक्ष्मी की हमेंशा कृपाद्रष्टि बनी रहती हैं। मंत्र: "ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी वासुदेवाय नमः।"
- लक्ष्मी जी के चित्र को 27 हकीक पत्थर के उपर स्थापित करने से व्यक्ति को निश्चित रुप से आर्थिक लाभ प्राप्त होता हैं।

लघु श्रीफल

लघु श्रीफल एक प्रकार का छोटे स्वरुप का नारियल होता हैं। जिसके ऊपर नारियल के समान ही जटाएं होती हैं जो करीब एक ईंच जितना बड़ा होता हैं। लघु श्रीफल को नारियल का लघुरुप माना जाता हैं। लघु श्रीफल का प्रयोग विशेष रुप से लक्ष्मी प्राप्ति हेतु किया जाता हैं।

क्योकि लघु श्रीफल मां महालक्ष्मी का यह प्रिय फल मानाजाता हैं और एसी मान्यता हैं की जिसके पास लघु श्रीफल होता हैं देवी लक्ष्मी निश्चित रुप से उस पर कृपा करती हैं। लघु श्रीफल के पूजन से मां लक्ष्मी खिंची चली आती हैं।

- जिस भी घर में लघु श्रीफल होता हैं वहां सुख-संपन्नता और वैभव का वास होता हैं।
- यदि लघु श्रीफल को व्यवसायीक स्थान पर रखने से व्यापार में दिन प्रति दिन उन्नति होती रहती हैं।
- विद्वानो का कथन हैं की यदि किसी व्यक्ति को सौभाग्य से 11 लघु श्रीफल प्राप्त हो जाये तो उसके जन्मों-जन्म की दरिद्रता का अंत हो जाता हैं और यदि किसी व्यक्ति के घर में 1 लघु श्रीफल का पूजन होता हों वहां से दुखः, दरिद्रता कोसो दूर रहती हैं। अतः अक्षय तृतीया या दीपावली के दिन इसे अपने पूजन में अवश्य स्थापित करे।

काली हल्दी

जिस प्रकार से हल्दी पीले रंगी को होती हैं। उसी प्रकार एक दुर्लभ जाती की काले रंगकी हल्दी भी पाई जाती हैं। काली हल्दी को कृष्ण हरिद्रा के नाम से जाना जाता हैं। काली हल्दी की सुगंध कपूर से मिलती-जुलती होती हैं। काली हल्दी को मुख्यतः तंत्र क्रियाओं एवं लक्ष्मी प्राप्ति हेतु एक दुर्लभ औषधि मानते हैं।

- जिस भवन में मंत्र सिद्ध काली हल्दी का पूजन करने से भवन में धन-सौभाग्य की स्वतः वृद्धि होने लगती हैं।
- अक्षय तृतीया, दीपावली के दिन या अन्य किसी शुभ मुहूर्त में काली हल्दी को धूप-दीप आदि से

पूजन कर के अपनी तिजोरी या धन रखने वाले स्थान पर रखने से धन का कभी अभाव नहीं रहता हैं।

दक्षिणावर्त शंख

सुख-समृद्धि, धन-संपत्ति, रिद्धि-सिद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए हमारे धर्म शास्त्रों मे दक्षिणावर्त शंख का अत्याधिक महत्व बताया गया हैं। दक्षिणावर्त शंख का मुख दायीं और से खुला होता हैं।

शास्त्रोक्त मान्यता हैं की जिस घर में विधि-विधान से दक्षिणावर्त शंख का पूजन होता हैं, उस घर में धन, सुख, समृद्धि, यश-किर्ति की वृद्धि होती हैं। उस घर में लक्ष्मी स्थित होती हैं। अक्षय तृतीया, दीपावली के दिन या अन्य किसी शुभ मुहूर्त में शंख का को धूप-दीप आदि से पूजन कर के अपनी तिजोरी या धन रखने वाले स्थान पर या पूजन स्थाम में रखने से धन का कभी अभाव नहीं रहता हैं।

धन वृद्धि डिब्बी

धन वृद्धि डिब्बी को अपनी अलमारी, कैश बोक्स, पूजा स्थान में रखने से धन वृद्धि होती हैं जिसमें काली हल्दी, लाल- पीला-सफेद लक्ष्मी कारक हकीक (अकीक), लक्ष्मी कारक स्फटिक रत्न, 3 पीली कौडी, 3 सफेद कौडी, गोमती चक्र, सफेद गुंजा, रक्त गुंजा, काली गुंजा, माया जाल, इत्यादी दुर्लभ वस्तुओं को शुभ महुर्त में तेजस्वी मंत्र द्वारा अभिमंत्रित किय जाता हैं।

धन प्राप्ति और सुख समृद्धि के लिये वास्तु सिद्धांत

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

आज के भौतिक युग में हर कार्य धन के उपर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुपसे निर्भर करता हैं इस लिये प्रत्येक व्यक्ति कि यही इच्छा होती हैं कि उसके पास अपार धन दौलत एवं जीवन उपयोगी सारी सुख सुविधाए उप्लब्ध हो जो एक समृद्ध व्यक्ति के पास में होती हैं, एवं उसकी समृद्धि एवं उन्नति दिन प्रतिदिन बढती जाए।



आप अपने घर में धन एवं बहुमूल्य आभूषण, जवाहरात इत्यादि कि सुरक्षा हेतु अलमारी या कैश बोक्स रखते हैं, जिस्से धन सुरक्षित रहे और उसमे बढ़त होती रहें। इसके लिये वास्तु से संबंधित धन संचय हेतु कुछ उपाय।

वास्तु के अनुसार धन एवं बहु मूल्य सामग्री को उत्तर दिशा में रखे। उत्तर दिशा में कुबेर का वास होता हैं। एवं कुबेर धन के देवता हैं एवं उत्तर दिशा पर उनका प्रभाव रहता हैं। इस लिये अपने व्यवसाय स्थान या घर में धन को सुरक्षित रखने हेतु उत्तर दिशा का चुनाव करें।

उत्तर - व्यवसाय स्थान या घर में अलमारी को उत्तर दिशा के कमरे में उसे दक्षिण दिशा की दीवार से सटाकर एसे रखे कि उसका मुख उत्तर कि तरफ रहे या आपका मुख अलमारी खोलते या बंध करते समय दक्षिण दिशा कि और रहें। उत्तर कि और खुलने वाली अलमारी एवं कैश बोक्स में रखे गये धन एवं आभूषण कि निरंतर वृद्धि होती रहती हैं।

पूर्व - पूर्व कि और खुलने वाली अलमारी एवं कैश बोक्स में धन रखने से उसमें बढ़ोतरी होती रहती है। लेकिन उत्तर को सर्व श्रेष्ठ मानागया हैं।

दक्षिण - दक्षिण कि और खुलने वाली अलमारी एवं कैश बोक्स में धन रखने से धन एवं आभूषण जो हैं उसमे में कमी आजाति हैं क्योकि एसी स्थिति मे अलमारी या कैश बोक्स होने से आमदनी से खर्चा अधिक होता हैं एवं संचय किये गये धन में भी कमी आजाती हैं। एवं व्यक्ति पर कर्ज चढ जाता हैं।

पश्चिम - पश्चिम कि और खुलने वाली अलमारी एवं कैश बोक्स में धन एवं आभूषण रखने से उस घर मे धन कडी मेहनत से कभी कभार प्राप्त होता हैं एवं टिक पाता हैं, अन्य था अन्य संबंधि या मित्र वर्ग से सहायता से प्राप्त होने वाला धन भी टिकता नहीं हैं।

लक्ष्मी प्राप्ति का अमोघ साधन दक्षिणावर्त शंख

संकलन गुरुत्व कार्यालय

सुख-समृद्धि, धन-संपत्ति, रिद्धि-सिद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए हमारे धर्म शास्त्रों मे दक्षिणावर्त शंख का अत्याधिक महत्व बताया गया हैं। दक्षिणावर्त शंख का मुख दायीं और से खुला होता हैं।

शास्त्रोक्त मान्यता हैं की जिस घर में विधि-विधान से दक्षिणावर्त शंख का पूजन होता हैं, उस घर में धन, सुख, समृद्धि, यश-किर्ति की वृद्धि होती हैं। उस घर में लक्ष्मी स्थित होती हैं।

असली नकली पहचान के लिए शंख को पांच दिन और पांच रात तक ठंडे पानी में रखे, यदि नकली शंख होगा तो टूट जायेगा। इस प्रकार असली नकली की परख करके शंख का पूजन में प्रयोग करें।

दहीं या देशी घी के समान रंग वाला शंख उत्तम होता हैं, धूमिल या धुएं जैसे रंग वाले शंख को शंखिणी (अर्थात स्त्री जाती का शंख) कहां जाता हैं।

- 2.5 तोला अर्थात त्रीस ग्राम से अधिक वजन का शंख पूजन हेतु उत्तम समझे और 2 तोला या उस्से कम वजन के शंख को साधारण समझे।
- शास्त्रों में शंख को विष्णु स्वरुप माना गया हैं, शंख में भगवान विष्णु का वास होता हैं। इस लिए जहां दक्षिणावर्त शंख होता हैं वहां भगवान विष्णु का वास होता हैं जहां भगवान विष्णु का वास होता हैं वहाँ माँ लक्ष्मी निवास करती हैं। जिससे जहाँ माँ लक्ष्मी निवास करती वहाँ रोग, दोष, दु:ख, दरिद्रता आदि घरमें रह नहीं सकतें।
- शंख को लक्ष्मि प्राप्ति का उत्तम साधन माना गया हैं।
- जिसके घर में दक्षिणावर्त शंख होता हैं उसके आयुष्य, कीर्ति तथा धन की वृद्धि होती हैं। जो शंख के जल को मस्तक पर छिड़कता हैं उसके घरमें लक्ष्मी स्थिर होती हैं।
- जिस स्थान पर शंखनाद होता हैं वहां लक्ष्मी का स्थिर निवास होता हैं।
- विद्वानों का मत हैं की जिस घर में दक्षिणावर्त शंख का पूजन होता हैं उस घर में सर्वदा मांगलिक कार्य संपन्न होते हैं, उस घर में मांगलिक कार्यों के दौरान किसी प्रकार का विघ्न-बाधाएं, विलंब या अशुभ नहीं होता हैं।
- शंख के पीछे के हिस्से को सोने से जड़वाना उत्तम होता हैं।
- दक्षिणावर्त शंख को पूजा स्थान में स्थापित कर के प्रतिदिन स्नानादि के पश्चयात स्वच्छ वस्त्र धारण कर प्रतिदिन पूजन करें।
- पूर्व दिशा में बहनेवाली नदी में स्नान कर नदी के जल को दक्षिणावर्त शंख में भर कर अपने मस्तक पर उस जल की धार गिराने से सभी प्रकार के पापों का नाश होता हैं।
- जिस स्त्री को संतान नहीं हो रही हो, संतान जीवित न रहती हो, मृत संतान का जन्म हो रहा हो ऐसी स्त्री को दक्षिणावर्त शंख का पूजन करके जिस गाय के बछडे जीवित हो ऐसी गाय का दूध शंख में भर लें। 108 बार मंत्र बोल कर शंख का दूध को प्रसाद के रुप में सेवन करें। यह प्रयोग दूध के बदले घी (थोड़ा गरम करले) का इस्तेमाल कर सकते हैं, इस प्रयोग से स्त्रीको संतान होने की संभावनाएं बढ सकती हैं।
- जो लोग नदी या तीर्थ तक नहीं जा सकते ऐसे लोग दक्षिणावर्त शंख में नदी या तीर्थ का जल के छींटे अपने मस्तक पर छिडकने, तथा अपने पितृओं का नाम लेकर शंख से तर्पण करने से उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं, तथा पितृओं का उद्धार होता हैं, उनको सद्द्गति प्राप्त होती हैं।

- विद्वानों का कथन हैं की दक्षिणावर्त शंख में जल भर कर उससे भगवान विष्णु का पूजन करने से उसके सात जन्म के पापों का नाश होता हैं।
- जो दक्षिणावर्त शंख के जल से स्नान करता हैं उसे सभी तीर्थों के स्नान का फल मिलता हैं।
- जिस स्थान पर दक्षिणावर्त शंख होता हैं वहां भूत-प्रेत आदि सभी प्रकार के उपद्रवों से रक्षा होती हैं।
- शास्त्रों में शंख को सूर्य चंद्रमां के समान दिव्य गुणों से युक्त बताया गया हैं।
- धार्मिक मान्यता हैं की तीनों लोक में जितने तीर्थ हैं वह सब भगवान विष्णु की आज्ञा से शंख में निवास करते हैं। शंख के दर्शन से पापों का नाश होता हैं।

शंख ध्वनि एवं शंख जल के विशेष लाभ:

आज तोप के गोले या बम के शोर का जो असर होता हैं वहीं असर प्राचीन काल में शंख ध्वनि से होता था। शंख ध्वनि से शत्रुओं की सेना का मनोबल टूट जाता हैं।

यदि जंगल में जहां शंख ध्वनि होती हैं वहां से शेर-बाध जैसे हिंसक पशु आने की हिम्मत नहीं करते। जहरी जीवजंतु भी वहां से दूर रहते हैं।

कुछ जानकारों का मानना हैं की रोग कारक शूक्ष्म जीवाणु या विषाणु हवा में होते हैं जिसे वायरस कहते हैं, जहां प्रतिदिन प्रातः एवं संध्या शंख ध्वनि होती हैं, वहां जीवाणु या विषाणु अर्थात वायरस का उपद्रव फैलता नहीं हैं।

- दक्षिणावर्ती शंख को धन के भंडार में रखने से धन की वृद्धि, अन्न-भंडार में रखने से अन्न की वृद्धि, वस्त्र के भंडार में रखने से वस्त्र की वृद्धि, अध्ययन व पूजन कक्ष में रखने से ज्ञान की वृद्धि, शयन कक्ष में रखने से सुख-शांति की वृद्धि होती हैं।
- दक्षिणावर्ती शंख में शुद्ध जल भरकर व्यक्ति, वस्तु, भूमि-भवन आदि पर छिड़कने से दुर्भाग्य, अभिशाप, अभिचार, ग्रहों की अशुभता इत्यादि समाप्त हो जाती हैं।
- विद्वानों कथन हैं की ब्रह्म हत्या, गो हत्या जैसे महापातकों से मुक्ति पाने के लिए दक्षिणावर्ती शंख के जल को संबंधित व्यक्ति पर छिड़कने से उसे पापों से मुक्ति मिलती हैं।
- दक्षिणावर्ती शंख का जल जादू-टोना, नज़र, कामण-टूमण जैसे अभिचार वाले कर्मों के दुष्प्रभावों को नष्ट करने में समर्थ हैं।

दक्षिणावर्त शंख के प्रकार:

शास्त्रों में दक्षिणावर्त शंख के दों भेद बताये हैं: दक्षिणावर्त पुरुष शंख और दक्षिणावर्त स्त्री शंख।

छोटे आकारों वाले कम वजन के दक्षिणावर्त शंख को स्त्री दक्षिणावर्त शंख कहां जाता हैं, धुंधले रंग वाले शंखों को भी स्त्री दक्षिणावर्त शंख माना जाता हैं।

वर्ण के अनुसार दक्षिणावर्त शंख चार प्रकार के बताये गये हैं।

1- ब्राह्मण दक्षिणावर्त शंख:

जो शंख हरे या सफेद रंग का हो, छूने पर उसकी सतह कोमल महसूस हो, शंख वजन में हल्का हो उस शंख को ब्राह्मण दक्षिणावर्त शंख कहां गया हैं।

2- क्षत्रिय दक्षिणावर्त शंख:

जो शंख हल्का रक्त वर्ण हो, शंख के अंश को अलग करने वाली कुछ रेखाएं बनी हो, शंख की ध्वनि कर्कश हो उस शंख को क्षत्रिय दक्षिणावर्त शंख कहां गया हैं।

3- वैश्य दक्षिणावर्त शंख:

जो शंख मोटा हो, शंख के हर अंश पर रेखा हो तथा वह पीले रंग की हो उस शंख को वैश्य दक्षिणावर्त शंख कहां गया हैं।

4- शुद्र दक्षिणावर्त शंख:

जो शंख कठोर हो, शंख का आकार टेड़ा मेड़ा हो, वजन में भारी हो, शंख की ध्वनि कर्कश, रंग थोडा काला हो उस शंख को शुद्र दक्षिणावर्त शंख कहां गया हैं।

दक्षिणावर्त शंख के मुख्य तीन गुण माने गये हैं।

1- आकार में गोलाकार हो, 2- शंख की सतह मुलायम हो तथा 3- निर्मल हो

यदि ऐसा शंख किसी कारण से टूट जाये तो टूटे हुवे भाग को सोने की वरख या सोने के पत्तर से उसे ढंक देना चाहिए।

दक्षिणावर्ति शंख की पूजन विधि:

प्रातः स्नान आदि से निवृत्त हो कर, स्वच्छ कपड़े पहन कर, प्रथम दूध से फिर शुद्ध जल से शंख को स्नान कराये। फिस स्वच्छ लाल वस्त्र से उसे पोछे। फिर शंख को सोने या चांदी के पत्र से मढ़ना चाहिए (अर्थात शंख की उपरी सतह को सोने या चांदी के पत्र का आवरण लगाकर ढ़क देना चाहिए), यदि सोने चांदी का पत्र लगाना संभव न हो तो सोने या चांदी की वरक (वरख, वर्क, वर्ख, पर्ण, पन्नी Foil आदि नामों से जाना जाता हैं) भी चढा सकते हैं। फिर शंख का अष्ट द्रव्यों से षोडशोपचार पूजन करें।

शंख का पूजन

संकल्प

हाथ में आचमनी में लज लेकर नीचे देये मंत्र से संकल्प करें (जहां अमुक के स्थान पर संबंधित वर्ष, मास आदि का उच्चारण करें।)

ॐ अत्राद्य अमुक वर्षे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुख वारसे शुभ नक्षत्र करण योग लग्ने मम सिद्धयर्थे हिरण्य गोदासा वाहना हि समृद्धि प्राप्त्यर्थे श्री दक्षिणावर्ती शंखस्य पूजनम् अहं करिष्ये।

अर्थात: आजके अमुक वर्ष, अमुक मास, अमुक पक्ष, अमुक तिथि, अमुक वार को मेरे कार्य की सिद्धि के लिए सुवर्ण, गाय, दास, वाहन आदि समृद्धि की प्राप्ति के लिए मैं श्री दक्षिणावर्ती शंख जा पूजन कर रहा हूं।

(उक्त मंत्र उचारण कर शंखका जल पात्रे में छोड़ दे)

पूजन मंत्र:

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधर करस्थाप्ययोनिधि जाताय श्रीदक्षिणावर्त शंखय ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीकराय पूज्याय नमः।

उक्त मत्र का उच्चारण करते हुवे शंख को अष्ट द्रव्य व सुगंधित इत्र चढ़ाएं। चांदी के बरतन में दूध में चीनी, केसर, बादाम, इलायची मिला कर नैवेद्य तैयार करें। संभव हो तो साथ में फल भी रखें।

कपूर से आरती करें।

ध्यान मंत्र:

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधर करस्थाप्य पयोनिधि जाताय लक्ष्मी सहोदराय चिन्तिमार्थ संपादकाय श्री श्रीदक्षिणावर्त शंखाय श्री कराय, पूज्याय क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ नमः सर्वाभरण भूषिताय प्रशस्यान्गोपान्गसंयुताय कल्पवृक्षाय स्थिताय कामधेनु चिन्तामणिनव निधिरूपाय चतुर्दश रत्न परिवृत्ताय अष्टादश महासिद्धि सहिताय श्रीलक्ष्मी देवता कृष्णदेव करतल ललिताय श्री शंखमहानिधये नमः।

ध्यान मंत्र आवाहन अर्थात् स्तुति मंत्र है। इसके अतिरिक्त बीज मंत्र अथवा पांच जन्य गायत्री शंख मंत्र का ग्यारह माला जप करना भी आवश्यक है।

जप मंत्र:

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिण शंखनिधये समुद्र प्रभवाय नमः।

बीज मंत्र:

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिणमुखाय शंखनिधये समुद्रप्रभवाय नमः।

शंख का शाबर मंत्र:

ॐ दक्षिणावर्ते शंखाय मम् गृह धनवर्षा कुरु कुरु नमः॥

शंख गायत्री मंत्र:

ॐ पान्चजन्याय विद्महे। पावमानाय धीमहि। तन्न शंखः प्रचोदयात्।

प्रतिदिन उक्त किसी एक मंत्र का शंख के सम्मुख बैठकर 1, 3, 5, 7, 11 मालाएं जप करना चाहिए। जप की समाप्ति पर जल को आकाश की ओर छिड़के।

ऋद्धि-सिद्धि तथा सुख-समृद्धि की प्राप्ति के लिए हेतु यह प्रयोग अत्यंत लाभ प्रद हैं।

दोष रहित दक्षिणावर्ती शंख का उपरोक्त विधि से पूजन करना अत्यंत लाभप्रद होता हैं।

शंख का पूजन दिन के प्रथम प्रहर में करने से राज्य पक्ष से सम्मान की प्राप्ति होती हैं।

शंख का पूजन दिन के द्वितीय प्रहर में करने से धन, संपत्ति व लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं एवं बुद्धि का विकास होता हैं।

शंख का पूजन दिन के तृतीय प्रहर में करने से समाज में यश, कीर्ति एवं बुद्धि की वृद्धि होती हैं।

शंख का पूजन दिन के चतुर्थ प्रहर में करने से संतान की प्राप्ति एवं वृद्धि होती हैं।

विशेष: दिन और रात्री के चार-चार प्रहर होते हैं, कुल आठ प्रहर का एक दिन होता हैं। अर्थात एक प्रहर तीन घंटे का होता है। सूर्योदय के समय से प्रथन प्रहर की गणना करनी चाहिए। सूर्योदय समय में 3 घंटे का समय जोड़ने पर दूसरा प्रहर प्रारंभ होगा ऐसे तीन-तीन घंटे जोडकर क्रमशः तीसरा और चौथा प्रहर जान सकते हैं।

***

श्री कनकधारा स्तोत्र

अंगहरे पुलकभूषण माश्रयन्ती भृगांगनैव मुकुलाभरणं तमालम। अंगीकृताखिल विभूतिरपांगलीला मांगल्यदास्तु मम मंगलदेवताया:॥1॥ मुग्ध्या मुहुर्विदधती वदनै मुरारैः प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि। माला दृशोर्मधुकर विमहोत्पले या सा मै श्रियं दिशतु सागर सम्भवाया:॥2॥ विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्षमानन्द हेतु रधिकं मधुविद्विषोपि। ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्धमिन्दोवरोदर सहोदरमिन्दिराय:॥3॥ आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दमानन्दकन्दम निमेषमनंगतन्त्रम्। आकेकर स्थित कनी निकपक्ष्म नेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजंगरायांगनाया:॥4॥ बाह्यन्तरे मधुजित: श्रितकौस्तुभै या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति। कामप्रदा भगवतो पि कटाक्षमाला कल्याण भावहतु मे कमलालयाया:॥5॥ कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे स्फुरति या तडिदंगनेव्। मातु: समस्त जगतां महनीय मूर्तिभद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनाया:॥6॥ प्राप्तं पदं प्रथमत: किल यत्प्रभावान्मांगल्य भाजि: मधुमायनि मन्मथेन। मध्यापतेत दिह मन्थर मीक्षणार्द्ध मन्दालसं च मकरालयकन्यकाया:॥7॥ दद्याद दयानुपवनो द्रविणाम्बुधाराम स्मिभकिंचन विहंग शिशौ विषण्ण। दुष्कर्मधर्ममपनीय चिराय दूरं नारायण प्रणयिनी नयनाम्बुवाह:॥8॥ इष्टा विशिष्टमतयो पि यथा ययार्द्रदृष्टया त्रिविष्टपपदं सुलभं लभंते। दृष्टि: प्रहूष्टकमलोदर दीप्ति रिष्टां पुष्टि कृषीष्ट मम पुष्कर विष्टराया:॥9॥ गीर्देवतैति गरुड़ध्वज भामिनीति शाकम्भरीति शशिशेखर वल्लभेति। सृष्टि स्थिति प्रलय केलिषु संस्थितायै तस्यै नमस्त्रि भुवनैक गुरोस्तरूण्यै ॥10॥ श्रुत्यै नमोस्तु शुभकर्मफल प्रसूत्यै रत्यै नमोस्तु रमणीय गुणार्णवायै। शक्तयै नमोस्तु शतपात्र निकेतानायै पुष्टयै नमोस्तु पुरूषोत्तम वल्लभायै ॥11॥ नमोस्तु नालीक निभाननायै नमोस्तु दुग्धौदधि जन्म भूत्यै । नमोस्तु सोमामृत सोदरायै नमोस्तु नारायण वल्लभायै ॥12॥ सम्पतकराणि सकलेन्द्रिय नन्दानि साम्राज्यदान विभवानि सरोरूहाक्षि। त्व द्वंदनानि दुरिता हरणाद्यतानि मामेव मातर निशं कलयन्तु नान्यम् ॥13॥ यत्कटाक्षसमुपासना विधि: सेवकस्य कलार्थ सम्पद:। संतनोति वचनांगमानसंसत्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥14॥ सरसिजनिलये सरोज हस्ते धवलमांशुकगन्धमाल्यशोभे। भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥15॥ दग्धिस्तिमि:कनकुंभमुखा व सृष्टिस्वर्वाहिनी विमलचारू जल प्लुतांगीम। प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष लोकाधिनाथ गृहिणी ममृताब्धिपुत्रीम् ॥16॥ कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं करुणापूरतरां गतैरपाड़ंगै:। अवलोकय माम किंचनानां प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयाया : ॥17॥ स्तुवन्ति ये स्तुतिभिर भूमिरन्वहं त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्। गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो भवन्ति ते बुधभाविताया: ॥18॥इति श्री कनकधारा स्तोत्रं सम्पूर्णम

यम द्वितीया का महत्व

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू धर्म में विभिन्न व्रत-पर्व मनाये जाते हैं, कार्तिक महीने की शुक्ल द्वितीया यम-द्वितीया कहलाती है। जिसे भैया-दूज के नाम से भी मनाया जता है।

इस पर्व का मुखय उद्देश्य भाई-बहन के पवित्र रिश्तों में प्रेम भाव की वृद्धि करने वाले दों प्रमुख त्यौहार मनाये जाते है, एक श्रावण मास की पूर्णिमा को रक्षा बन्धन मनाया जाता है, जिसमें भाई बहन की रक्षा करने की प्रतिज्ञा करता है। दूसरा भाई दूज का त्योहार होता है। जिसमें बहन अपने भाई की लम्बी आयु की प्रार्थना करती है। भाई दूज का त्योहार कार्तिक मास की द्वितीया को मनाया जाता है। इस दिन बहनें बेरी पूजन भी करती हैं और भाईयों के स्वस्थ तथा दीर्घायु होने की मंगल कामना करके उन्हें तिलक लगाती हैं।

इस दिन बहन भाइयों को तेल लगाती और फिर भाई पवित्र निदीयों में स्नान करते हैं जो नहीं कर सकते उन्हें बहन के घर स्नान करना चाहिए। इस दिन भाई को भोजन करवा कराने का विशेष महत्व है, फिर बहन चाहे सगी हो या धर्म की मानी हुई कोई भी हो सकती है।

एसी पौराणिक मान्यता हैं के इस दिन बहन अपने हाथ से यदि भाई को खाना खिलाएं, तो भाई की उम्र लम्बीं होती है और भाई के जीवन से कष्ट दूर हो जाते हैं। इस दिन बहनों को अपने भाईयों को चावल अवश्य खिलाना चाहिए।

यदि कोई बहन न हो तो गाय, नदी इयादि स्त्री शक्ति का स्मरण करके अथवा उसके निकट बैठकर भोजन कर करना भी शुभ माना गया है। इस दिन यमराज के पूजन, यमुना-स्नान का भी विशेष महत्व हैं। इस के लिए इसे दोपहर के बाद का समय लेना चाहिये।

बहन के घर भाई का भोजन और शास्त्रीय मत के अनुसार मृत्युदेवता यमराज की पूजा होती है। आज के दिन व्रती बहनों को प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर अक्षत आदि से निर्मित अष्टदल कमल पर गणेश इत्यादि देवताओं का स्थापन करके यम, यमुना, चित्रगुप्त व यमदू का पूजन में इस मंत्र से यमराज की प्रार्थना करना लाभदाय होती हैं।

धर्मराज नमस्तुभ्यं नमस्ते यमुनाग्रज।
पाहि मां किंकरैः सार्धं सूर्यपुत्र नमोस्तुते॥

इस मंत्र से, यमुना की पूजा

यमस्वसर्नमस्तेस्तु यमुने लोकपूजिते।
वरदा भव में नित्यं सूर्यपुत्रि नमोस्तुते॥

इस मंत्र से चित्रगुप्त की पूजा और प्रार्थना--

मसिभाजनसंयुक्तं ध्यायेतं च महाबलम्।
लेखनीपट्टिकाहस्तं चित्रगुप्तं नमाम्यहम्।।

इसके बाद शंख या तांबे के अर्घ्यपात्र में जल, पुष्प, अक्षत एवं गंधादि लेकर यमराज के इस मंत्र से अर्घ्य दे

एह्येहि मार्तण्डज पाशहस्त यमांतकालोकधरामरेश।
भ्रातृद्वितीयकृतदेवपूजां गृहाण चार्घ्यं भगवन्नमोस्तुते।।

तत्पश्चात् बहन भाई को अन्न-वस्त्र-आभूषण आदि देकर उसका शुभाशीष प्राप्त करें। इस व्रत से भाई की आयु वृद्धि और बहन को सुख सौभाग्य की प्राप्ति होती है। मान्यता हैं की बहन के शुभ आर्शीवाद युक्त हाथो से भोजन करना आयुवर्धक एवं आरोग्यकारक होता है।

पौराणिक कथा के अनुसार इस दिन यमराज अपनी बहन यमुना से मिलने जाते हैं, इस लिए इस दिन जो लोग भी अपनी बहनों से मिलते, उनका यथेष्ट सम्मान पूजन आदि करके उनसे आशीर्वाद में तिलक लगवाते हैं उन्हें मृत्यु भय नहीं रहता।

भैया दूज की कथा

सूर्य भगवान की पत्नी संज्ञा से उनकी दो संतानें, पुत्र यमराज तथा कन्या यमुना थी। संज्ञा पति सूर्य की तेजस्वी किरणों का ताप नहीं सह कर उत्तरी ध्रुव प्रदेश में छाया बनकर रहने लगी। उसी छाया से ताप्ती नदी तथा शनिश्चर का जन्म हुआ। उसी छाया से अश्विनी कुमार का भी जन्म माना जाता है, जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं।

दूसरी तरफ छाया का व्यवहार यम तथा यमुना के प्रति कम होने लगा। जिससे खिन्न होकर यम ने अपनी नई नगरी यमपुरी का निर्माण किया, यमपुरी में यम पापियों को दण्ड देने का काम करते भाई को अलग नगरी में देखकर यमुना जी गौ लोक चली गई।

अधिक समय व्यतीत हो, जाने पर एक दिन अचानक यम को अपनी बहन यमुना की याद आई, तो उन्होंने अपने दूतों को भेज कर यमुना की खोज करवाई, लेकिन यमुना नहीं मिली, फिर यम स्वयं गौ लोक गये, जहां विश्राम घाट नामक स्थान पर यम जी की यमुना जी से भेंट हुई।

यमुना भाई यम को देखते ही हर्ष-विभोर होगई भाईका यथोचित स्वागत-सत्कार कर उन्हें सप्रेम भोजन करवाया।

इससे प्रसन्न हो यम ने वर मांगने कहा-

यमुना ने कहा, भैया! मैं आपसे यह वरदान मांगनी चाहती हूं कि मेरे जल में स्नान करने वाले नर-नारी कभी यमपुरी न जायें।

मांगा हुवा वर कठिन था, क्योकीं इससे यमपुरी का अस्तित्व ही संकट में हो जायेगा, भाई को चिंतित देखकर यमुना बोली भाई-आप चिन्ता न करें, मुझे यह वरदान दें कि जो लोग आज के दिन बहन के यहां भोजन करके इस मथुरा नगर में स्थित विश्राम घाट पर स्नान करेंगे, वह यम लोक न जायेंगे।

इस वरको यमराज ने स्वीकार कर लिया। ओर कहा जो इस दिन अपनी बहन के घर भोजन कर यमुना के जल में स्नान करने वालों को स्वर्ग प्राप्त होगा। तभी से यह परंपरा चली आरहीं है।

लक्ष्मी कवच

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

निर्धन मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप उस्की निर्धनता है, निर्धन व्यक्ति हर समय कष्ट भोगता है। निर्धन व्यक्ति का जीवन उसके लिए अभिशाप बन जाता है। आजके युग में किसी भी कार्य को संपन्न करने के लिये सर्वोपरि आवश्यक धन ही होता है। विद्वानों का अनुभव हैं की इस तांत्रोक्त लक्ष्मी कवच के प्रभाव से लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं।

लक्ष्मी में चाग्रतः पातु कमला पातु पृष्ठतः।
नारायणी शीर्षदेशे सर्वांगे श्री स्वरूपिणी॥

भावार्थः देवी लक्ष्मीजी हमारे अग्रभाग की, कमलाजी हमारी पीठ की रक्षा करें। नारायणी हमारे मस्तष्क की और श्री स्वरूपिणी देवी हमारे संपूर्ण शरीर के अंगों की रक्षा करे।

रामपत्नी तु प्रत्यंगे रामेश्वरी सदाऽवतु । विशालाक्षी योगमाया कौमारी चक्रिणी तथा॥ जयदात्री धनदात्री पाशाक्षमालिनी शुभा।

हरिप्रिया हरिरामा जयंकरी महोदरी॥ कृष्णपरायणा देवी श्रीकृष्ण मनमोहिनी। जयंकरी महारौद्री सिद्धिदात्री शुभंकरी॥

सुखदा मोक्षदा देवी चित्रकूटनिवासिनी। भयं हरतु भक्तानां भवबन्ध विमुचतु॥

भावार्थः रामपत्नी और रामेश्वरी हमारे सब अंगों-उपांगों की रक्षा करें। वह कौमारी हैं, चक्रधारिणी हैं, जय देने वाली है और पाशाक्षमालिनी है। वह कल्याणी हैं, हरिप्रिया हैं, हरिरामा हैं, जयंकारी हैं, महादेवी हैं, कृष्णपरायणा हैं, श्रीकृष्ण का मन मोहन करने वाली हैं, महाभयंकर, सिद्धि देने वाली हैं, शुभंकरी, सुख तथा मोक्ष को देने वाली है और जिसके चित्रकूट निवासिनी इत्यादिक अनेक नाम हैं, वह अनपायिनी देवीलक्ष्मी हमारे भय दूर करके सदा रक्षा करें।

कवचं तन्महापुण्यं यः पठेद्भक्तिसंयुतः ।
त्रिसन्ध्यंमेकसन्ध्यं वा मुच्यते सर्वसंकटात् ॥

भावार्थः जो प्राणी भक्ति से युक्त होकर नित्य तीन या केवल एक बार ही इस पवित्र लक्ष्मी कवच का पाठ करता है, वह सभी संकटों से मुक्त हो जाता है।

कवचस्यास्य पठनं धनपुत्रविवर्द्धनम् ।।
भीतिर्विनाशनं चैव त्रिषु लोकेषु कीर्तितम् ।।

भावार्थः इस कवच का पाठ करने से पुत्र,धन इत्यादि की वृद्धि होती है, भय दूर हो जाता है। इसका माहात्म्य तीनों लोकों में विख्यात है।

भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनाकुंकुमेन तु ।
धारणाद्गलदेशे च सर्वसिद्धिर्भविष्यति॥

भावार्थः भोजपत्र पर रोचन और कुंकुम से इसको लिखकर गले में धारण करने से सभी प्रकार की कामनाएं सिद्ध होती है।

अपुत्रो लभते पुत्र धनार्थी लभते धनम् ।
मोक्षार्थी मोक्षमाप्नोति कवचस्यास्य प्रसादतः ॥

भावार्थः कवच के प्रभाव से पुत्र, धन,मोक्ष की प्राप्ति होती है।

गर्भिणी लभते पुत्रं वंध्या च गर्भिणी भवेत् ।
धारयेद्यति कण्ठे च अथवा वामबाहुके॥

भावार्थः यदि स्त्रियां गले या बाईं भुजा में इस कवच को नियम से धारण करें तो गर्भवती स्त्री को उत्तम संतान होता है और बांझ स्त्री गर्भवती होती है।

यः पठेन्नियतो भक्त्या स एव विष्णुवभूद्वेत् ।
मृत्युव्याधिभ्यं तस्य नासित किन्चिन्महीतले ॥

भावार्थः जो प्राणी नियमित व भक्तिसहित इस कवच का पाठ करता है, वह विष्णु समान हो जाता है। संसार में उसे मृत्यु अथवा व्याधि का भय नहीं रहता।

पठेद्वा पाठयेद्वापि श्रृणुयाच्छ्रावयेदपि।

सर्वपाप विमुक्तस्तु लभते परमां गतिम् ॥

भावार्थः जो प्राणी इस कवच का पाठ करता या दूसरे को पाठ करने को प्रेरित करता है, स्वयं सुनता या दूसरे को सुनाता है, वह मोक्ष को प्राप्त करता है।

संकटे विपदे घोरे तथा च गहने वने।

राजद्वारे च नौकायां तथा च रणमध्यतः ।

पठनात द्वारणादस्य जयमाप्नोति निश्चितम्॥

भावार्थः संकट, विपदा, घने जंगल, राजद्वार, नौका मार्ग, रण आदि स्थानों में इस कवच का पाठ करने से या धारण करने से निश्चित ही जय की प्राप्ति होती है।

अपुत्रा च तथा वन्ध्या त्रिपक्षं श्रृणुयाद्यदि।

सुपुत्रं लभते सा तु दीर्घायुष्यं यशस्विनम् ॥

भावार्थः यदि बांझ स्त्री पैंतालीस दिन तक इस कवच को श्रवण करे तो दीर्घायु, महायशवान संतान लाभ प्राप्त कर सकती है, इसमें संदेह नहीं है।

श्रृणुयाद्यः शुद्धबुद्धया द्वौ मासौ विप्रवक्त्रतः ।

सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वबन्धाद्विमुच्यते ॥

भावार्थः जो विशुद्ध मन से दो महीने तक ब्राह्मण के मुख से इस कवच को सुनता है, उसकी सम्पूर्ण कामना सिद्ध होती है और संसार बंधनों से छूट जाता है।

मृतवत्सा जीववत्सा त्रिमासं श्रवणं यदि ।

रोगी रोगाद्विमुच्येत पठनान्मासमध्यतः ॥

भावार्थः जिस स्त्री के पुत्र उत्पन्न होकर जीवित नहीं रहते, वह तीन महीने तक इस कवच को श्रद्धापूर्वक सुने तो उसके पुत्र जीने लगते हैं। रोगी भी पाठ करने से एक मास में ही रोगमुक्त हो जाता है।

लिखित्वा भूर्जपत्रे च अथवा ताड़पत्रके।

स्थापयेन्नियतं गेहे नाग्निचौरभयं क्वचित् ॥

भावार्थः जो प्राणी भोजपत्र अथवा ताड़पत्र पर इस कवच को लिखकर घर में स्थापित करता है, उसे अग्नि या चोर आदि का भय नहीं होता।

श्रृणुयाद्धरयेद्वापि पठेद्वा पाठयेदपि।

यः पुमान्सततं तस्मिन्प्रसन्नाः सर्व देवताः॥

भावार्थः जो प्राणी प्रतिदिन इस कवच को सुनता है, पाठ करता है, दूसरे को अध्ययन हेतु प्रेरित करता है और जो इसको धारण करता है, उस पर देवगण सदा प्रसन्न रहते हैं।

बहुना किमिहोक्तेन सर्वजीवेश्वरेश्वरी,

आद्या शक्तिः सदालक्ष्मीभक्तानुग्रहकारिणी ।

धारके पाठके चैव निश्चला निवसेद् ध्रुवम् ॥

भावार्थः अधिक क्या कहें, जो प्राणी इस कवच का पाठ करता है या इसे धारण करता है, उस पर लक्ष्मीजी की सदैव कृपा बनी रहती है। ।

महा लक्ष्मी कि उत्पत्ति कैसे हुई?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

महा लक्ष्मी कि उत्पत्ति

धर्म शास्त्रो के मत अनुशार लक्ष्मी कि उत्पत्ति के विषय में अनेक कथाएं प्रचलित हैं। उन प्राचीन कथाओं में समुद्र मंथन के दौरान मां महालक्ष्मी कि उत्पत्ति मानी जाती हैं। विभिन्न ग्रंथो में लक्ष्मी समुद्र मंथन कि कथाओं में अंतर देखने को मिलता हैं। परंतु मूलतः सब कथाओं में अंतर होने के उपरांत भी अधिकतर समान हैं।

प्रजापत्य कल्प के अनुशार:

भगवान ब्रह्मा ने रुद्र रूप को ही स्वयंभु मनु और स्त्री रूप में सतरूपा को प्रकट किया और उसके बाद प्रियव्रत उत्तानपाद, प्रसूति और आकूति नाम कि संतानों को जन्म दिया। फिर आकूति का विवाह रुचि से और प्रसूति का विवाह दक्ष से किया गया। दक्ष ने प्रसूति से 24 कन्याओं को जन्म दिया। इसके नाम श्रद्धा, लक्ष्मी, पुष्टि, धुति, तुष्टि, मेधा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वपु, शान्ति, ऋद्धि, और कीर्ति इत्यादी हैं।



विष्णु पुराण के अनुशार:

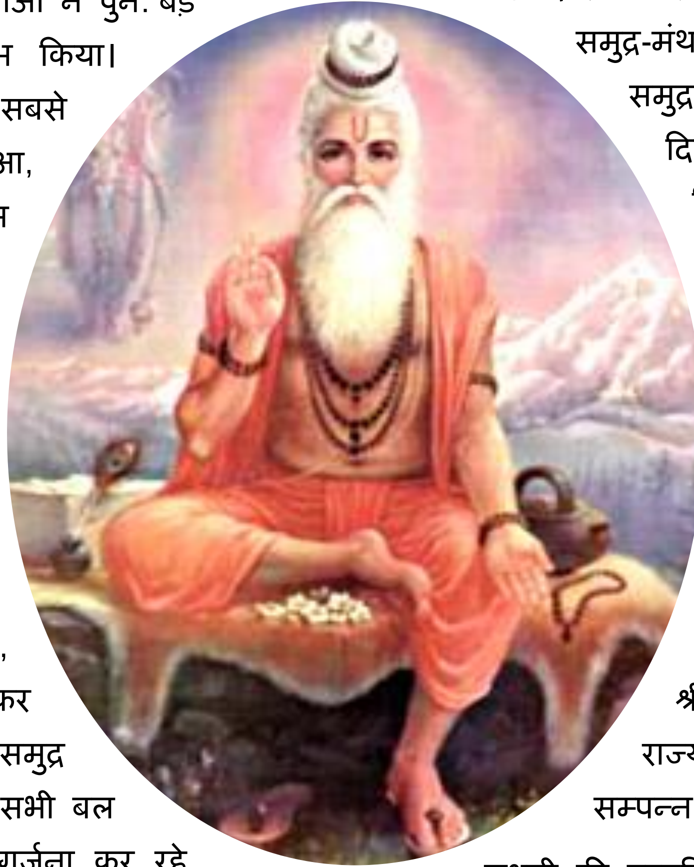
एक बार घूमते हुए दुर्वासा ने अपरूपा विद्याधरी के पास एक बहुत सुन्दर माला देखी। वह गन्धित माला थी। ऋषि ने उस माला को अपने जटाओं पर धारण करने के लिए मांगा और प्राप्त कर लिया। दुर्वासा ने सोचा कि यह माला प्रेम के कारण प्राप्त कर वे कामातुर हो उठे। अपने काम के आवेग को रोकने के लिए इधर-उधर घूमते-घूमते स्वर्ग लोक पहुंचे। वहां उन्होंने अपने सिर से माला हटाकर इन्द्र को दे दी। इन्द्र ने उस माला को ऐरावत के गले में डाल दिया और ऐरावत से वह माला धरती पर गिर गई और पैरों से कुचली गई। दुर्वासा ने जब यह देखा कि उसकी माला की यह दुर्गति हुई तो वह क्रोधित हुए और उन्होंने इन्द्र को श्रीहीन होने का शाप दिया। जब इन्द्र ने यह सुना तो भयभीत होकर ऋषि के पास आये पर उनका शाप लौट नहीं सकता था। इसी शाप के कारण असुरों ने इन्द्र और देवताओं को स्वर्ग से बाहर निकाल दिया। देवता ब्रह्मा जी की शरण में गये और उनसे अपने कष्ट के विषय में कहा।

ब्रह्मा जी देवताओं को लेकर विष्णु के पास गये और उनसे सारी बात कही तब विष्णु ने देवताओं को दानव से सुलह करके समुद्र मंथन करने की सलाह दी और स्वयं भी सहायता का आश्वासन दिया। उन्होंने बताया कि समुद्र मंथन से उन्हें लक्ष्मी और अमृत पुनः प्राप्त होगा। अमृत पीकर वे अजर और अमर हो जाएंगे। देवताओं ने भगवान विष्णु की बात सुनकर समुद्र मंथन का आयोजन किया। उन्होंने अनेक औषधियां एकत्रित की और समुद्र में डाली। फिर मंथन किया गया।

मंथन के लिये जाते हुए समुद्र के चारों ओर बड़े जोर की आवाज उठ रही थी। इस बार के मंथन से देवकार्यों की सिद्धि के लिये साक्षात् सुरभि कामधेनु प्रकट हुईं। उन्हें काले, श्वेत, पीले, हरे तथा लाल रंग की सैकड़ों गौएँ घेरे हुए थीं। उस समय ऋषियों ने बड़े हर्ष में भरकर देवताओं और दैत्यों से कामधेनु के लिये याचन की और कहा आप सब लोग मिलकर भिन्न-भिन्न गोत्रवाले ब्राह्मणों को कामधेनु सहित इन सम्पूर्ण गौओं का दान अवश्य करें। ऋषियों के याचना करने पर देवताओं और दैत्यों ने भगवान् शंकर की प्रसन्नता के लिये वे सब गौएँ दान कर दीं तथा यज्ञ कर्मों में भली-भाँति मन को लगाने वाले उन परम मंगलमय महात्मा ऋषियों ने उन

गौओं का दान स्वीकार किया। तत्पश्चात सब लोग बड़े जोश में आकर क्षीरसागर को मथने लगे। तब समुद्र से कल्पवृक्ष, पारिजात, आम का वृक्ष और सन्तान- ये चार दिव्य वृक्ष प्रकट हुए।

उन सबको एकत्र रखकर देवताओं ने पुन: बड़े वेग से समुद्र मंथन आरम्भ किया। इस बार के मंथन से रत्नों में सबसे उत्तम रत्न कौस्तुभ प्रकट हुआ, जो सूर्यमण्डल के समान परम कान्तिमान था। वह अपने प्रकाश से तीनों लोकों को प्रकाशित कर रहा था। देवताओं ने चिंतामणि को आगे रखकर कौस्तुभ का दर्शन किया और उसे भगवान विष्णु की सेवा में भेंट कर दिया। तदनन्तर, चिन्तामणि को मध्य में रखकर देवताओं और दैत्यों ने पुन: समुद्र को मथना आरम्भ किया। वे सभी बल में बढ़े-चढ़े थे और बार-बार गर्जना कर रहे थे। अब की बार उसे मथे जाते हुए समुद्र से उच्चैःश्रवा नामक अश्व प्रकट हुआ। वह समस्त अश्वजाति में एक अद्भुत रत्न था। उसके बाद गज जाति में रत्न भूत ऐरावत प्रकट हुआ। उसके साथ श्वेतवर्ण के चौसठ हाथी और थे। ऐरावत के चार दाँत बाहर निकले हुए थे और मस्तक से मद की धारा बह रही थी। इन सबको भी मध्य में स्थापित करके वे सब पुन: समुद्र मथने लगे।



उस समय उस समुद्र से मदिरा, भाँग, काकड़ासिंगी, लहसुन, गाजर, अत्यधिक उन्मादकारक धतूर तथा पुष्कर आदि बहुत-सी वस्तुएँ प्रकट हुईं। इन सबको भी समुद्र के किनारे एक स्थान पर रख दिया गया। तत्पश्चात वे श्रेष्ठ देवता और दानव पुन: पहले की ही भाँति समुद्र-मंथन करने लगे। अब की बार समुद्र से सम्पूर्ण दशों दिशाओं में दिव्य प्रकाश व्याप्त हो गया उस दिव्य प्रकाश से देवी महालक्ष्मी प्रकट हुईं। इसलिए लक्ष्मी को समुद्र की पुत्री के रूप में जाना जाता है।

महालक्ष्मी ने देवता, दानव, मानव सम्पूर्ण प्राणियों की ओर दृष्टिपात किया। माता महालक्ष्मी की कृपा-दृष्टि पाकर सम्पूर्ण देवता उसी समय पुनः श्रीसम्पन्न हो गये। वे तत्काल राज्याधिकारी के शुभ लक्षणों से सम्पन्न दिखायी देने लगे।

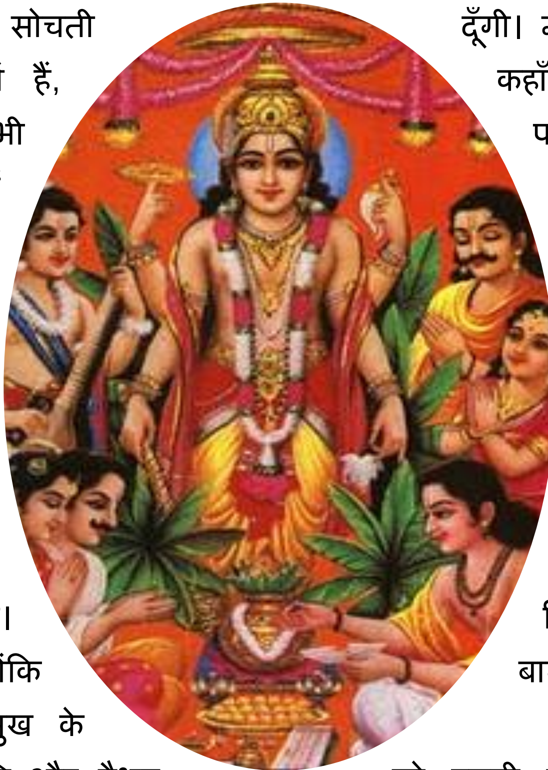
लक्ष्मी की उत्पत्ति सृष्टि रचना के विषय में ज्ञान प्राप्त करते हुवे भीष्म ने पुलस्त्य ऋषि से प्रश्न किया ऋषि श्रेष्ठ, लक्ष्मी की उत्पत्ति के विषय में आप मुझे विस्तार से बताइए। क्योंकि इस विषय में कथा अनेक हैं। यह सुनकर पुलस्त्य ऋषि बोले कि महर्षि भृगु कि पत्नी ख्याति के गर्भ से एक त्रिलोकसुन्दरी कन्या उत्पन्न हुई। वह समस्त शुभ लक्षणों से सुशोभित थी। इसलिए उसका नाम लक्ष्मी रखा गया।

मां लक्ष्मी के चमत्कार कि महिमा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

पौराणिक काल कि बात हैं, एक दिन लक्ष्मी जी से उनकी बड़ी बहन ज्येष्ठा ने कहा, लक्ष्मी बहुत दिनों से एक बात मेरे मस्तिष्क में उठ रही हैं। मैं सोच रही हूँ कि तुमसे पूछूं या नहीं। लक्ष्मीजी ने कहा ऐसी क्या बात हैं बहन? मन में जो कुछ भी प्रश्न हैं, आप निःसंकोच पूछो। वैसे भी बुद्धिमानी उसी में हैं कि किसी भी बात को मन में न रखकर उसका समाधान कर लेना।

ज्येष्ठा ने कहा मैं अक्सर यही सोचती रहती हूँ कि हम दोनों सगी बहनें हैं, सुंदरता में हम दोनों बराबर हैं, फिर भी लोग तुम्हारा आदर करते हैं और मैं जहाँ भी जाती हूँ, वहाँ के माहोल में उदासी छा जाती हैं। बार-बार मुझे लोगों कि घृणा और क्रोध का शिकार होना पड़ता हैं। ऐसा क्यों?



लक्ष्मी जी ने हँसते हुवे कहा, सगी बहन या समान सुंदरता होने से ही आदर नहीं मिलता। आदर पाने के लिये हमें स्वयं भी कुछ करना चाहिए। लोग मेरा आदर इसलिए करते हैं क्योंकि मैं उनके घर में प्रवेश करते ही सुख के साधन जुटा देती हूँ। इस लिये सम्पत्ति और वैभव से आनंदित होकर लोग मेरा उपकार मानते हैं, मेरी पूजा करते हैं। और तुम जिसके यहाँ भी जाती हो, उसको ग़रीबी, रोग और कष्ट प्राप्त होता हैं। इसी लिये लोग तुमसे घृणा करते हैं। कोई आदर नहीं करता। आदर पाने के लिये दूसरों को सुख पहुँचाओ। ज्येष्ठा को लक्ष्मी जी कि यह बात चुभ गई। ज्येष्ठा को लगा कि लक्ष्मी को अपनी महिमा का अभिमान हो गया हैं।

ज्येष्ठाने क्रोध से तिलमिलाते हुवे कर कहा, लक्ष्मी तुम मुझसे छोटी हो अवस्था में भी और प्रभाव हर बात तुम मुझसे छोटी हो। तुमहें मुझे उपदेश देने कि आवश्यकता नहीं हैं। यदि तुम्हें अपने वैभव का अहंकार हैं तो मेरे पास भी अपना एक प्रभाव हैं। मैं जब अपनी पर आ जाऊँ तो तुम्हारे करोड़पति भक्त को भी पल भर में भिखारी बना सकती हूँ। ज्येष्ठा कि बात पर लक्ष्मी जी को हँसी आ गई और कहने लगीं, बहन तुम बड़ी हो, इसलिए कुछ भी कह लो। लेकिन जहाँ तक प्रभाव कि बात है, मैं तुमसे कम नहीं हूँ। जिसको तुम भिखारी बनाओगी, उसे मैं दूसरे दिन भिखारी से फिर राजा बना दूँगी। मेरी महिमा का अभी तुम्हें पता ही कहाँ हैं। और तुम्हें भी मेरी महिमा का पता ही नहीं है। जिसकी तुम सहायता करोगी, उसे मैं दाने–दाने के लिए भी मोहताज कर दूँगी। देखो बहन दाने-दाने के लिए तो तुम उसे मोहताज कर सकती हो जिससे मैं रूठ जाऊँ। जिसके सिर पर मेरा हाथ न हो, उसका तुम कुछ भी बिगाड़ सकती हो। परंतु जिस पर मेरी कृपा द्रष्टि हैं, जिसे मेंरा वरदान प्राप्त हैं उसका कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता।

अगर तुम अपना प्रभाव दिखाने को इतनी ही उतावली हो रही हो तो कल अपना प्रभाव दिखाकर देख लेना। बोलो, कहाँ चलें? दूर क्यों जाएँ, पास ही अनुराधापुर गांव हैं। उसमें एक ब्राह्मण रहता हैं **दीनानाथ**। वह रोज मंदिर में पूजा करने जाता हैं और मेरा परम भक्त हैं। उसी पर हमें अपनी–अपनी महिमा दिखानी हैं। लक्ष्मी जी कि इस बात पर ज्येष्ठा को ताव आ गया। उन्होंने हाथ झटककर कहा, ठीक है, ठीक हैं। देख लेना, कल तुम्हारा सिर कैसें झुक जाएगा। कहकर वह चली गई।

लक्ष्मी जी वहीं खड़ी बहन ज्येष्ठा के क्रोध ओर अहंकार पर मुस्कराती रहीं। दूसरे दिन दोनों बहनें अनुराधापुर के विष्णु मंदिर में वेश बदल कर पहुँचीं।

साधारण स्त्रियों कि तरह वे दोनों मंदिर के द्वार पर बैठ गईं। स्थानिय लोगों ने दोनों को देखा अवश्य, किंतु किसी ने उनकी ओर कोई ख़ास ध्यान नहीं दिया। ध्यान देने वाली कोई ख़ास बात भी नहीं थी। वह मंदिर था और वहाँ हर रोज दीन दु:खी आते-जाते रहते थे।

थोड़ी देर बाद वहाँ **दीनानाथ** पंडित आया। दोनों बहनों कि नजरें उस पर जम गईं। पूजा करके जब **दीनानाथ** लौटने लगा तो ज्येष्ठा ने कहा, लक्ष्मी वह तुम्हारा भक्त आ रहा हैं। बन पड़े तो उसकी कोई सहायता करो। हाँ, करती हूँ। कहकर लक्ष्मी जी ने एक पोला बांस दीनानाथ के रास्ते में रख दिया जिसमें सोने कि मोहरें भरी हुई थीं। ज्येष्ठा ने बांस को छूकर कहा, अब तुम मेरा प्रभाव भी देख लो। पूजा करके लौट रहे दीनानाथ ने रास्ते में पड़ा हुआ वह बांस का टुकड़ा उठा लिया। उसने विचार किया कि वह किसी काम आ जाएगा। घर में सौ ज़रूरतें होती हैं।

अभी वह पंडित कुछ ही आगे बढ़ा था कि उसे रास्ते में एक लड़का मिला। लड़के ने पहले **दीनानाथ** पंडित से राम-राम कि, फिर बड़ी ही नम्रता से बोला, पंडित जी मुझे अपनी चारपाई के लिए बिल्कुल ऐसा ही बांस चाहिए। दादा जी ने यह कहकर भेजा हैं कि जाओ, बाज़ार से ले आओ। ऐसा बांस पंडित जी कहाँ मिलेगा? दीनानाथ ने कहा, मैंने इसे मोल देकर नहीं लिया। रास्ते में पड़ा था; सो उठा लाया। लो, तुम्हें ज़रूरत है तो तुम ही रख लो। वैसे बाज़ार में एक रुपये से कम का नहीं हैं। लड़के ने चवन्नी देते हुए कहा, मगर मेरे पास तो यह चवन्नी ही हैं, पंडित जी। अभी तो आप इसे ही रखिए, बाकी बारह आने शाम को दे जाऊँगा। पंडित जी खुश थे कि बिना किसी महेनत के एक रुपया कमा लिया। **दीनानाथ** पंडित ने चवन्नी लेकर बांस लड़के को दे दिया और वह चवन्नी अपनी डोलची में रख दी।

मंदिर के पास खड़ी दोनों बहनें यह सारी लीला देख रही थीं। ज्येष्ठा ने कहा, लक्ष्मी देखा तुमने? तुम्हारी इतनी सारी सोने कि मोहरें मात्र एक चवन्नी में बिक गईं। और आगे देखती जाओं यह चवन्नी भी तुम्हारे भक्त के पास नहीं रूकेगी। चलो, उसके पीछे चलते हैं और देखते हैं कि क्या होता हैं। दोनों बहने दीनानाथ के पीछे-पीछे चलने लगीं। एक तालाब के पास दीनानाथ ने डोलची रख दी और कमल के फूल तोड़ने लगा। उसी बीच एक चरवाहे का लड़का आया और डोलची में रखी हुई चवन्नी लेकर भाग गया। दीनानाथ पंडित को पता ही नहीं चला। फूल तोड़कर वह अपने घर जाने लगा। इतने में वही लड़का आता हुआ दिखाई दिया जिसने चवन्नी देकर उससे बांस ले लिया था। करीब आकर वह बोला, पंडित जी यह बांस तो बहुत वज़नी हैं। दादाजी ने कहा हैं कि कोई हल्का बांस चाहिए। इसकी चारपाई ठीक न होगी। यह लीजिए, आप अपना बांस वापस ले लीजिए। कहकर उसने बांस पंडित जी के हवाले कर दिया।

दीनानाथ ने बांस ले लिया। चवन्नी वापस करने के लिये डोलची में हाथ डाला तो देखा चवन्नी तो डोलची में हैं नहीं। तब उसने कहा, बेटा, चवन्नी तो कहीं गिर गई। तुम मेरे साथ घर चलो, वहाँ से तुम्हें दूसरी दे दूँगा। इस समय मेरे पास एक भी पैसा नहीं हैं। पंडित जी तब आप जाइए। मैं शाम को आकर घर से ले लूँगा। यह कहकर लड़का अपनी राह लौट गया। बांस फिर से पंडित जी के ही पास आ गया और लक्ष्मी जी हौले से मुस्कराईं। उनको इस प्रकार मुस्कराते देखकर ज्येष्ठा मन ही मन में जल उठीं। वह बोलीं, 'अभी तो खेल शुरू ही हुआ हैं।

देखती चलो मैं इसे कैसे नाच नचाती हूँ। दीनानाथ पंडित बेचारा इन सब बातों से बेख़बर अपनी ही धुन में आगे बढ़ा चला जा रहा था। आगे चलकर गाँव का एक अहीर मिला। उसने दीनानाथ पंडित को चवन्नी वापस करते हुए बताया, पंडित जी मेरा लड़का आपकी डोलची से यह चवन्नी उठा लाया था। वह बड़ा ही शैतान हैं। मैं आपकी वही चवन्नी लौटाने आया हूँ। हो सके तो उस शैतान को माफ कर दीजिएगा। दीनानाथ पंडित ने आशीर्वाद देकर चवन्नी ले ली और प्रसन्न मन से उस लड़के को पुकारने लगा जो शाम को घर आकर चवन्नी लेने कि बात कहकर लौटा जा रहा था। आवाज़ सुनकर लड़का लौट आया। अपनी चवन्नी वापस पाकर वह भी प्रसन्न हो गया। दीनानाथ पंडित

निश्चिंत मन से घर कि ओर बढ़ने लगा। उसके एक हाथ में पूजा कि डोलची थी और दूसरे में वही लम्बा बांस।

राह चलते दीनानाथ पंडित सोच रहा था, यह बांस तो काफ़ी वज़नी हैं। वज़नी हैं तो मजबूत भी होगा, क्योंकि ठोस हैं। इसे दरवाजे के छप्पर में लगा दूँगा। ज्येष्ठा को उसके विचार पर क्रोध आ गया। लक्ष्मी जी के प्रभाव से दीनानाथ पंडित को लाभ होता देख वह मन ही मन बुरी तरह जली जा रहीं थीं। जब उन्होंने देखा कि पंडित का घर क़रीब आ गया है तो कोई उपाय न पाकर उन्होंने दीनानाथ को मारने डालने का विचार किया। उन्होंने कहा, लक्ष्मी धन-सम्पत्ति तो मैं छीन ही लेती हूँ, अब तुम्हारे भक्त के प्राण भी ले लूँगी। देखो, वह किस तरह तड़प-तड़प कर मरता हैं।

इतना कहकर ज्येष्ठा तुरंत साँप बनकर दीनानाथ कि ओर दौड़ पड़ीं। लक्ष्मी जी को तनिक भी घबराहट नहीं हुई। वह उसी तरह खड़ी मुस्कराती रहीं। साँप देख कर सहसा दीनानाथ पंडित चौंक पड़ा। साँप फन उठाए उसकी ओर झपट रहा था। प्राण तो सभी को प्रिय होते हैं। उपाय रहते कोई अपने को संकट में नहीं पड़ने देता। दीनानाथ ने पगडंडी वाला रास्ता छोड़ दिया और एक ओर को भागने लगा। लेकिन साँप बनी ज्येष्ठा उसे भला कहाँ छोड़ने वाली थीं। वह तो उस ग़रीब के प्राणों कि प्यासी हो चुकी थीं। वह भी दीनानाथ के आगे-पीछे, दाएं-बाएं बराबर दौड़ती ही रहीं। दीनानाथ घबरा गया। उसने हाथ जोड़कर कहा, नाग देवता मैंने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा। शांति से अपनी राह लौट जाओ। आखिर क्यों मुझ ग़रीब के पीछे पड़े हो? व्यर्थ में किसी ब्राह्मण को सताना अच्छी बात नहीं है।

लेकिन वह नाग तो ज्येष्ठा का रूप था, जो दीनानाथ पंडित को किसी भी तरह डसना चाहता था। प्रार्थना पर कुछ भी ध्यान न देकर वह साँप एक बारगी फुफकारता हुआ झपट पड़ा। जब दीनानाथ ने देख लिया कि बिना संघर्ष किए अब जान नहीं बचेगी तो उसने प्राण-रक्षा के लिए भरपूर जोर लगाकर वही बांस साँप के ऊपर दे मारा। धरती से टकराते ही बांस के दो टुकड़े हो गए और उसके भीतर भरी हुईं सोने कि मोहरें खन-खनाकर बिखर गईं, जैसे लक्ष्मी हँस रही हो।

दीनानाथ पंडित के मुँह से हैरतपूर्ण चीख-सी निकली, अरे थोड़ी देर के लिए वह ठगा-सा खड़ा आँखें फाड़े, उन मोहरों कि ओर देखता रहा। एक पल के लिए तो वह साँप को भूल ही गया था। कुछ पल बाद जैसे उसे झटका-सा लगा। साँप का ध्यान आते ही उसने उसकी ओर गरदन घुमायी, तो देखा कि बांस कि चोट से साँप कि कमर टूट गयी हैं और वह लहूलुहान अवस्था में झाड़ी कि ओर भागा जा रहा हैं।

दूसरे क्षण वह मोहरों पर लोट गया और कहने लगा, **तेरी जय हो लक्ष्मी माता!** जीवन-भर का दारिद्रय आज दूर हो गया। तेरी महिमा कौन जान सकता हैं। चलो, अब घर में बैठकर तुम्हारी पूजा-आरती करूँगा। और फिर जल्दी-जल्दी उसने सारी मोहरें अंगोछे में बाँध दीं और लम्बे-लम्बे कदमों से घर कि ओर चल दिया।

पीछे एक पेड़ कि छाया में खड़ी लक्ष्मी अपनी बहन ज्येष्ठा से मुस्कराकर पूछ रहीं थीं, कहो बहन सच बताना, बड़प्पन कि थाह मिली कि अभी नहीं? बड़प्पन किसी को कुछ देने में ही है, उससे छीनने में नहीं।

ज्येष्ठा ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप उदास खड़ी रहीं। लक्ष्मी जी ने उनका हाथ पकड़कर कहा, फिर भी, हम दोनों बहनें हैं। जहाँ रहेंगीं, साथ ही रहेंगीं। आओ, अब चलें।

धन के देवता कुबेर के जन्म कि कथा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

पूर्व जन्म में कुबेर गुणनिधि नामक वेदज्ञ ब्राह्मण थे। गुणनिधि को शास्त्रों का पूर्ण न था और गुणनिधि प्रतिदिन देव वंदन, पितृ पूजा, अतिथि सेवा नियमित रुपसे करते थे। गुणनिधि सभी प्राणियों के प्रति दया, सेवा एवं मैत्री का भाव रखते थे। गुणनिधि बड़े धर्मात्मा थे, परंतु कुसंगति में पड़कर धीरे-धीरे मति भ्रम के कारण गुणनिधि के सारें अच्छे गुण अवगुणों में परिवर्तित गयें। गुणनिधि के इस अवगुणों से उनके पिता अज्ञात थे परंतु उनकी माता इस सभी कार्यो से भली प्रकार से परिचित थी परंतु उन्होने पुत्र मोहके कारण यह बात अपने पति को नहीं बताई। जिसके फल स्वरुप गुणनिधि ने अपनी सारी पैतृक संपति का नाश करदिया।

एक दिन किसी प्रकार गुणनिधि के पिता को उनके दुष्कर्मो का पता चला और उन्होंने गुणनिधि कि माता से अपनी संपति व गुणनिधि के बारे में जानकारी चाही। गुणनिधि पिता के क्रोध एवं भय से घर छोड़कर भाग कर वन में चले गए। वन में इधर-उधर भटकने के बाद गुणनिधि ने संध्या समय एक शिव मंदिर देखा। उस दिन शिवरात्री थी इसलिये शिव मंदिर में शिव भक्त शिवरात्रि का पूजन और प्रसाद के साथ शिव पूजा का विधि-विधान कर रहे थे।

घर से भागने एवं वन में भटकने के कारण गुणनिधि पूरे दिन भूख-प्यास से परेशान था, इस कारण प्रसाद आदि खाद्य वस्तुओं को देखने पर गुणनिधि कि भूख और ज्यादा बढ़ गई। गुणनिधि वहीं पास में छुपकर पूजन देखते रहे एवं सोच रहे थे कि इन लोगों को नींद आने पर प्रसाद चुराकर अपनी भूख शांत करलूंगा। रात्रि काल में शिव भक्तों के सो जाने के पश्चयात गुणनिधि ने एक कपड़े कि बती जलाकर फल-पकवानों को लेकर भाग ही रहेथे कि उनका पैर एक सोए हुए पुजारी के पैर से टकरा गया और वह पुजारी चोर-चोर चिल्लाने लगे। चोर-चोर कि आवाज सुनकर अन्य पास में सोयें हुवे सभी सेवक जाग गए एवं गुणनिधि पर बाण छोड़ा, जिससे उसी समय गुणनिधि के प्राण निकल गए।

यमदूत जब गुणनिधि को लेकर जाने लगे तो भगवान शंकर कि आज्ञा से उनके गणों ने वहां पहुंचकर गुणनिधि यमदूतों से छीन कर गुणनिधि को शिवलोक में ले आये। भगवान शंकर ने गुणनिधि के उसदिन भूखे रहने को व्रत-उपवास, रात्रि जागरण, पूजा-दर्शन तथा प्रकाश के निमित जलाए गए वस्त्र कि बती को आरती मानकर उस पर प्रसन्न हो गए और उसे अपना शिवत्व प्रदान किया। पुन: जन्म धारण कर गुणनिधि कुबेर के नाम से प्रसिद्ध हुए।

शास्त्र पुराणों में कुबेर के पिता विश्रवा एवं पितामह प्रजापति पुलस्त्य होने का उल्लेख मिलता हैं। कुबेर कि माता भारद्वाज ऋषि कि कन्या इड़विड़ा हैं, कुबेर कि सौतेली माता का नाम केशिनी हैं। रावण, कुंभकरण और विभीषण कुबेर के सौतेले भाई हैं। कुबेर कि पत्नी का नाम भद्रा हैं। कुबेर के दो पुत्र नाल कुबेर और मणीग्रीव। कैलाश पर स्थित अलकापुरी राज्य में निवास करते हैं।

कुबेर कि सभा में सर्वोच्च रत्न ज़डित सिंहासन पर महाराज कुबेर विराजते हैं। रंभा, उर्वशी, मेनका, मिश्र केशी आदि अप्सराएं किन्नर, यज्ञ और गंधर्वगण तथा ब्रह्मर्षि देवर्षि तथा ऋषिगण उनकी सभा में विराजते हैं।

कुबेर कि सेवा में यक्ष एवं राक्षस हर समय

उपस्थित रहते हैं। कुबेर ने नर्मदा के कावेरी तट पर सौ वर्षो तक घोर तपस्या कि जिससे प्रसन्न होकर शिवजी ने कुबेर को यक्षों का अधिश्वर बना दिया

कुबेर ने जिस स्थान पर तपस्या कि उस स्थान का नाम कुबेर तीर्थ पड़ा, जहां कुबेर को अनेक वरदान प्राप्त हुवे। रूद्र के साथ मित्रता, धन का स्वामित्व, दिक्पालत्व एवं नल कुबेर नामक पुत्र आदि वर प्राप्त होते ही धन एवं नव निधियों का स्वामीत्व कुबेर को प्राप्त हुवां। उस स्थान पर आकर मरूद्गणों ने कुबेर का अभिषेक किया, पुष्पक विमान भेट देकर कुबेर को यक्षों का राजा बना दिया। उस स्थान पर राज्यश्री के रूप में साक्षात महालक्ष्मी नित्य वास करती हैं। राजाधिराज धनाध्यक्ष कुबेर अपनी सभा में बैठकर अपने वैभव(धन) एवं निधियों का दान करते हैं।

इसलिए कुबेर कि पूजा-अर्चना से उनकी प्रसन्नता प्राप्त कर मनुष्य वैभव(धन) प्राप्त कर लेता हैं। धन त्रयोदशी एवं दीपावली पर कुबेर विशेष पूजा-अर्चना कि जाती हैं जो शीघ्र फल प्रादान करने वाली मानी जाती हैं।

***

दीपावली से जुडी लक्ष्मी कथा

भारतीय संस्कृति में दीपावली के त्योहार कि बड़ी लोक प्रिय कथा प्रचलित हैं।

कथा: एक बार कार्तिक मास की अमावस को लक्ष्मीजी पृथ्वी भ्रमण पर निकलीं। अमावस कि काली छाया के कारण पृथ्वी के चारों ओर अंधकार व्याप्त था। जिस कारण देवी लक्ष्मी रास्ता भूल गईं। लक्ष्मी जी नी निश्चय किया कि रात्रि का प्रहर वे मृत्युलोक में व्यतीत कर लेंगी और सूर्योदय के पश्चात पुनः बैकुंठधाम लौट जाएँगी, परंतु लक्ष्मी जी ने पाया कि पृथ्वी पर सभी लोग अपने-अपने घरों में द्वार बंद कर सो रहे हैं।

तभी अंधकार से भरे पृथ्वी लोक में उन्हें एक द्वार खुला दिखा जिसमें एक दीपक कि ज्योति टिमटिमा रही थी। लक्ष्मी जी उस प्रकाश कि ओर पहुंच कर वहाँ उन्होंने एक वृद्ध महिला को चरखा चलाते देखा। वृद्ध महिला से रात्रि विश्राम की अनुमति माँग कर लक्ष्मी जी बुढ़िया की कुटिया में रुकीं।

वृद्ध महिला ने लक्ष्मी जी को विश्राम के लिये बिस्तर प्रदान कर पुन: अपने कार्य में व्यस्त हो गई। चरखा चलाते-चलाते वृद्धा की आँख लग गई। दूसरे दिन उठने पर वृद्ध महिला ने पाया कि अतिथि महिला वहां से जा चुकी हैं लेकिन कुटिया के स्थान पर विशालमहल खड़ा था। जिसमें चारों ओर धन-धान्य, रत्न-जेवरात इत्यादि बिखरे हुए थे।

एसी मान्यता हैं कि तभी से कार्तिक अमावस (दीपावली)कि रात को दीप जलाने की प्रथा चली आरही हैं। दीपावली के रात्री काल में लोग द्वार खोलकर लक्ष्मीदेवी के आगमन कि प्रतीक्षा करने कि परंपरा चली आरही हैं।

क्योकी लोगो का तत्पर्य यह हैं कि माँ लक्ष्मी देवी जिस प्रकार उस वृद्धा पर प्रसन्न हुई उसी प्रकार सब पर प्रसन्न हों।

कथा सार: दीपावली कि रात मात्र दीप जलाने और द्वार खुले रखने से लक्ष्मी जी घर में निवास नहीं करती! लक्ष्मी जी विश्राम करती हैं। क्योंकि देवी लक्ष्मी तो चंचल हैं। वह एक स्थान पर अस्थिर नहीं रहती। अपना आशिष देकर चलीजाती हैं। जिसके फल स्वरुप आने वाले वर्ष भव में मां लक्ष्मी के भक्त को किसी प्रकार के दु:ख, दरिद्रता एवं आर्थिक संकट का सामना नहीं करना पडता।

***

जब केशव नें प्रश्न किया देवी लक्ष्मी आप कहाँ निवास करती हैं ?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

भगवान केशव (श्रीविष्णु) ने सुमेरु पर्वत पर सुखावस्था में देवी लक्ष्मी से प्रश्न किया हे देवि ! किस उपाय से आप मनुष्यों के निकट स्थिर होकर निवास करती हैं।

देवी लक्ष्मी ने उत्तर देते हुए कहा हे केशव ! जहाँ पर श्वेत कबूतर निवास करते हैं एवं जहाँ पर गृहिणी रूपवती एवं कलह शून्य हो कर रहती है, वहीं पर मैं निवास करती हूँ।

देवी लक्ष्मी ने आगे कहा हे केशव ! जहाँ पर सुवर्ण वर्ण के समान दिखने वाले विशिष्ट धान्य, चांदी वर्ण के समान दिखने वाले विशिष्ट चावल एवं छिलका निकाल लिया गया अन्न विद्यमान रहता है, मैं वहीं पर निवास करती हूँ।

हे केशव ! जो पुरुष सही पात्र को अन्नादि का दान करते हैं, प्रिय वचन बोलते हैं, विद्वानों की सेवा करते हैं, अल्प प्रलापी हैं, कार्य को देर करने वाला नहीं हैं, मैं वैसे व्यक्ति के निकट सर्वदा निवास करती हूँ।

जो धार्मिक, जितेन्द्रिय तथा विद्यावश दयालु हैं, दूसरे को क्लेश नहीं देते हैं, गर्व रहित हैं, अपने प्रदेश के लोगों के प्रति अनुराग रखते हैं, उस व्यक्ति के निकट मैं सर्वदा निवास करती हूँ।

जो मनुष्य स्नान में अधिक समय तथा भोजन में अल्प समय व्यय करते हैं, पुष्प को प्राप्त कर उसको सूँघते नहीं है, एवं जो वस्त्रहीन स्त्री का दर्शन नहीं करते हैं, वह व्यक्ति सर्वदा मेरे प्रिय हैं।

त्याग, सत्य एवं शौच यह तीन महान् सद् गुण हैं । जो श्रद्धालु व्यक्ति इन तीन गुणों को प्राप्त होते हैं, वह मेरे प्रिय हैं।

समस्त प्रकार से गुणी के लक्षणों में त्याग अर्थात् दान ही श्रेष्ठ है। फिर, वह त्याग अर्थात् दान आदि योग्य काल को देखकर, देश देखकर, योग्य पात्र को देखकर दिया जाता है तो वह दान प्रशस्त बन जाता है।

मैं आँवले के वृक्ष में, गाय के गोबर में, शङ्ख में, पद्म में एवं शुभ्र वस्त्र में सर्वदा अवस्थान करती हूँ।

मैं श्वेतपद्म, नीलपद्म एवं शङ्ख में, चन्द्र में, महादेव में, नारायण में, पृथिवी में एवं जहाँ नित्य उत्सव होता है ऐसे मन्दिर में निवास करती हूँ।

जो स्त्री शास्त्रोक्त उपदेश के अनुसार गुरु में भक्ति युक्त है, कभी पति की बात की अवहेलना नहीं करती,

प्रतिदिन पति के भोजन कर लेने के बाद ही स्वंय भोजन करती है, उसके शरीर में मैं सर्वदा निवास करती हूँ।

जो स्त्री सन्तुष्ट, धैर्ययुक्त, प्रियवादिनी, सौभाग्य सम्पन्न, उत्तम स्वभाव युक्त, लावण्यमयी, प्रियदर्शिनी एवं पतिव्रता है मैं उन समस्त स्त्रियों में निवास करती हूँ।

जो स्त्री श्यामवर्णा है, जिसकी आँखें मृग की आँखों के समान है, जिसके शरीर का मध्यभाग पतला है, जो उत्तम भू सम्पन्न है, जिसके केश रमणीय हैं, चलते समय जिसकी चाल उत्तम हो, जिसका चरित्र उत्तम हो, गहरी नाभि युक्त, एवं दन्त समान पङ्कति में हो, मैं उस स्त्री के शरीर में नित्य वास करती हूँ।

लक्ष्मी के लिए वर्जनीय स्थल

जो स्त्री पापकर्म करने वाली हो, दुष्ट स्वभावा, पति को अपने अधीन रखकर तिरस्कार कर क्रोध करने के लिए तैयार हो, खराब चरित्र युक्त उस प्रेतमुख के समान सदृशी हो उस स्त्री का मैं परित्याग करती हूँ ।

जो वासी एवं सड़ा हुआ फूल व्यवहार करती हों, अनेक लोगों के साथ शयन करती हों, छिन्न आसनवाली एवं खराब सच्चरित्र स्त्री का मैं दूर से ही परित्याग करना चाहिए।

चिता के अंगार, अस्थि, वह्नि (जलती हुई लकड़ी), भस्म, ब्राह्मण, गाय, कापास के बीज, तुष(अनाज या धान आदि के ऊपर का छिलका), गुरु एवं अपने पैर को (अपने दूसरे) पैर के द्वारा स्पर्श नहीं करना चाहिए।

नख या केश युक्त जल, पर्वकाल एवं सन्ध्याकाल में मैथुन क्रिया, नग्न होकर शयन करना, अकेले मिष्टान्न भोजन का त्याग करना चाहिए।

मस्तक पर पुष्प रखना, पैरों को धोकर शुद्ध करना, उत्तम गुणों वाली (सुडौल अंगोंवाली) स्त्री के साथ मैथुन, अल्प भोजन, वस्त्र धारण कर शयन करना एवं पर्वकाल से भिन्न समय में मैथुन यह छः सद् गुण से दीर्घकाल से नष्ट हुई श्री (लक्ष्मी) को व्यक्ति पुनः प्राप्त कर लेता हैं।

झाड़ू से उड़नेवाली धूल, झाड़ू की हवा, निर्गुंडी का तथा रात्रिकाल में बेल, शाक, कयेद्वेल (कपित्थ /कैथ का पेड़ और उसका फल) एवं दही का सेवन त्याग करना चाहिए।

अपने शरीर में एवं आसन में वाद्य की तरह से बजाना, अपने मस्तक में एवं पैर को वाद्य की तरह से बजाना, मस्तक से उच्छिष्ट (झूठा भोजनादि) का स्पर्श करना एवं स्नान के बाद तैल आदि को त्याग करना चाहिए।

अँधेरे घर में सोना, दिन के समय रात्रि के वस्त्र को धारण करना, मलिन वस्त्र को धारण करना, खराब वेशभूषा को धारण करना एवं शुष्क (सूखा) भोजन आदि का त्याग करना चाहिए।

दूसरे को द्वारा अपने वक्ष स्थल पर मर्दन (अर्थात् मालिश) करवाना, स्वयं अपने गलेमें से माला को उतारना, ढेले को घिसते रहना तथा आलस्य एवं अवसाद आदि का त्याग करना चाहिए।

शुक्रवार को तैल, अमावस्या में इत्र आदि, अपने वाम हस्त (बायां हाथ) के द्वारा अपने मस्तक का स्पर्श नहीं करना चाहिए।

लक्ष्मी के प्रिय के लिए वर्जनीय

पुरुष को अशुभ अवस्था में नक्षत्र, चन्द्र एवं सूर्य के दर्शन न करें। पुरुष परस्त्री के गुप्त अंग का दर्शन न करें। अस्तगामी (डूबते) सूर्य का दर्शन नहीं करना चाहिए।

दूसरे व्यक्ति के धन एवं स्त्री की अभिलाषा न

करें। दूसरे की प्रतिकूल आचरण या व्यवहार न करें। सूर्योदय के पूर्व ही निद्रा का त्याग करें।

जो मेरी आकांक्षा करता है, वह नख, कण्टक (कांटा), खून, मृत्तिका, अंगार एवं जल के द्वारा पृथिवी पर व्यर्थ का अंकन न करें ।

स्वयं माला गूंथकर स्वंय उस माला को धारण करना, स्वयं चन्दन घिसकर अपने अंगों में लेप करना, नाई के घर जाकर क्षौर कर्म (हजामत) करना ये कार्य इन्द्र के श्री का भी नाश कर लेते हैं।

ज्योतिषी तथा ब्राह्मण की निन्दा, पैरों को नचाना, स्त्रीयों के लिए प्रतिकूल आचरण करना एवं भोजन करने के बाद दन्त धावन (दांतों की सफाई) नहीं करनी चाहिए।

मिथ्या वाक्य कहना, मांस का रस पीना एवं नग्न स्त्री का दर्शन करना इन कार्यों को करने से इन्द्र की श्री भी चली जाती है।

जो व्यक्ति मन्त्र जप से हीन हो, परस्त्री का सेवक हो, आचार शून्य हो, अयोग्य व्यक्ति का सेवक हो, संकुचित आचरणकारी, पर निन्दा करने वाला हो, एसे निष्ठुर तथा दाम्भिक व्यक्ति का लक्ष्मी सदैव परित्याग करती है।

भींगे पैर सोना, दिन के समय रात्रि काल के वस्त्र का परिधान, उपरी अंगों के वस्त्र को नीचे के अंगों में धारण कना, सूखे पैर भोजन करना, अशुचि (खराब स्वाद) भोजन करना, गन्दा, दुर्गन्धयुक्त एवं दु:खजनक वस्त्र को धारण करना, अपने शरीर को अलंकार रहित एवं पुष्पादि रहित नहीं रखना चाहिए।

कर्ण, मुख, नाक, करतल, पाद, पृष्ठ एवं नेत्र पर चन्दनादि का अनुलेपन नहीं करना चाहिए।

नेत्र पर गन्धादि का अनुलेपन करने पर श्रेय नष्ट हो जाता है; मुख में गन्धादि का अनुलेपन करने पर धनक्षय हो जाता है; कण्ठ में गन्धादि का

अनुलेपन करने पर दारिद्रता आती है; पैर एवं पृष्ठ पर गन्धादि के अनुलेपन से आयु-क्षय होती है; हस्त एवं नासिका रन्ध्र में गन्धादि के अनुलेपन से बुद्धि का नाश हो जाता है। इसलिए अनुलेपन के लिए इन समस्त अंगो का वर्जन करना चाहिए।

गन्ध, पुष्प, जल, रत्न, महासागर एवं वस्त्र प्रथम प्राप्त होने पर, उसका कदापि परित्याग नहीं करना चाहिए।

बकरी के खुर (पैर) से स्पर्श धूल, गदहे के खुर (पैर) से स्पर्श धूल, झाड़ू की धुल, स्त्रियों के पादों से स्पर्श धूल ये सभी इन्द्र के श्री का भी हरण कर लेते हैं।

मैला वस्त्र परिधान करने वाले, जो दन्तों को साफ नहीं करता है, बहुभोजन करने वाले, कटु वाक्य बोलने वाले, सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय शयन करने वाले चक्रपाणि भगवान् का भी लक्ष्मी परित्याग कर देती हैं।

सर्वदा तृणछेदन (घास काटाई) करना, नाखून से जमीन पर लिखना, पैरों को को अपरिच्छन्न रखना, दाँतों को अच्छी प्रकार से न साफकरना या थोड़ा-थोड़ा साफ करना, वस्त्र को गन्दा रखना, बालों में तेल न लगाना, प्रातःकाल एवं सांयकाल सोना, नग्न होकर शयन करना, अधिक भोजन करना, उच्च हास्य करना, अपने अंग में एवं बैठने के पीढ़े पर बजाना ये सभी कार्य कुबेर के तथा विष्णु की लक्ष्मी का हरण कर लेते हैं।

देवी लक्ष्मी ने कहा हे केशव ! मैंने जो कुछ बताया है इनका, जो व्यक्ति सर्वदा पालन करता है, मैं जिस प्रकार आप में अचल रहती हूँ, उसी प्रकार उस व्यक्ति पर प्रसन्न होकर उसमें भी अचल रहती हूँ।

जब रुक्मणी जी ने प्रश्न किया किसे प्राप्त होती हैं लक्ष्मीजी ?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

भगवान श्रीकृष्ण के साथ उपस्थित रुक्मणी जी ने लक्ष्मी जी से पूछाः हैं भगवान नारायण की प्रियतमे ! आप इस जगत में किन प्राणियों पर कृपा करके उनके यहाँ रहती हो? किस स्थान निवास करती हो और किन-किनका पदार्थो का सेवन करती हो? उन सबके विषय में आप मुझे विस्तार से बताओ।

रुक्मणी जी के इस प्रकार पूछने पर लक्ष्मी जी ने प्रसन्न होकर भगवान श्री कृष्ण के सामने ही मीठी वाणी में लक्ष्मीजी बोलीं- देवि ! मैं प्रतिदिन ऐसे पुरुष में निवास करती हूँ, जो सौभाग्यशाली, निर्भीक, कार्यकुशल, कर्मपरायण, क्रोधरहित, भगवत्परायण, कृतज्ञ, जितेन्द्रिय तथा बढ़े हुए सत्त्वगुण से युक्त हों।

जो पुरुष अकर्मण्य, नास्तिक, वर्णसंकर, कृतघ्न, दुराचारी, क्रूर, चोर तथा गुरुजनों के दोष देखनेवाला हो, उसके भीतर मैं निवास नहीं करती हूँ। जिनमें तेज, बल और सत्त्व की मात्रा बहुत अल्प हो, जो हर बात में खिन्न हो उठते हों, जो मन में दूसरा भाव रखते हैं और ऊपर कुछ और ही दिखाते हैं, ऐसे मनुष्यों में मैं निवास नहीं करती हूँ। जिसका अंतःकरण मूढता से आच्छान्न है, ऐसे मनुष्यों में मैं भलीभाँति निवास नहीं करती हूँ।

जो स्वभावतः स्वधर्मपरायण, धर्मज्ञ, बड़े-बूढ़ों कि सेवा में तत्पर, जितेन्द्रिय, मन को वश में रखने वाले, क्षमाशील और सामर्थ्यशाली हैं, ऐसे पुरुषों में मैं निवास करती हूँ। जो स्त्रियाँ स्वभावतः सत्यवादिनी तथा सरलता से संयुक्त हैं, जो देवताओं और द्विजों की पूजा करने वालीं, उनमें भी मैं निवास करती हूँ।

जो अपने समय को कभी व्यर्थ नहीं जाने देते, सदा दान और शौचाचार में तत्पर रहते हैं, जिन्हें ब्रह्मचर्य, तपस्या, ज्ञान, गौ और द्विज परम प्रिय हैं, ऐसे पुरुषों में मैं निवास करती हूँ। जो स्त्रियाँ, देवताओं तथा ब्राह्मणों कि सेवा में तत्पर, घर के बर्तन-भाँडों को शुद्ध तथा स्वच्छ रखने वाली और गौओं कि सेवा तथा धान्य के संग्रह में तत्पर होती हैं, उनमें भी मैं सदा निवास करती हूँ।

जो घर के बर्तनों को सुव्यवस्थित रूप से न रखकर इधर-उधर बिखेरे रहती हैं, सोच-समझकर काम

नहीं करती हैं, सदा अपने पति के प्रतिकूल ही बोलती हैं, दूसरों के घरों में घूमने फिरने में आसक्त रहती हैं और लज्जा को सर्वथा छोड़ बैठती हैं, उनको मैं त्याग देती हूँ।

जो स्त्री निर्दयतापूर्वक पापाचार में तत्पर रहने वाली, अपवित्र, चटोर, धैर्यहीन, कलहप्रिय, नींद में बेसुध होकर सदा खाट पर पड़ी रहने वाली होती हैं, ऐसी नारी से मैं सदा दूर ही रहती हूँ।

जो स्त्रियाँ सत्यवादिनी और अपनी सौम्य वेश-भूषा के कारण देखने में प्रिय होती हैं, जो सौभाग्यशालिनी, सदगुणवती, पतिव्रता और कल्याणमय आचार-विचार वाली होती हैं तथा जो सदा वस्त्राभूषणों से सुसज्जित रहती हैं, ऐसी स्त्रियों में सदा निवास करती हूँ।

जहाँ हँसों की मधुर ध्वनि गूँजती रहती है, पक्षी के कलरव जिनकी शोभा बढ़ाते हैं, जो अपने तटों पर फैले हुए वृक्षों कि श्रेणियों से शोभायमान हैं, जिनके किनारे तपस्वी, सिद्ध और ब्राह्मण निवास करते हैं, जिनमें बहुत जल भरा रहता है तथा सिंह और हाथी जिनके जल में अवगाहन करते रहते हैं, ऐसी नदियों में भी मैं सदा निवास करती रहती हूँ।

सत्पुरुषों में मेरा नित्य निवास है। जिस घर में लोग अग्नि में आहुति देते हैं, गौ, ब्राह्मण तथा देवताओं की पूजा करते हैं और समय-समय पर जहाँ फूलों से देवताओं को उपहार समर्पित किये जाते हैं, उस घर में मैं नित्य निवास करती हूँ। सदा वेदों के स्वाध्याय में तत्पर रहने वाले ब्राह्मणों, स्वधर्मपरायण क्षत्रियों, कृषि-कर्म में लगे हुए वैश्यों तथा नित्य सेवापरायण शूद्रों के यहाँ भी मैं सदा निवास करती हूँ।

मैं मूर्तिमति तथा अनन्यचित्त होकर तो भगवान नारायण में ही संपूर्ण भाव से निवास करती हूँ, क्योंकि उनमें महान धर्म समाहित है। उनका ब्राह्मणों के प्रति प्रेम है और उनमें स्वयं सर्वप्रिय होने का गुण भी है।

देवी ! मैं नारायण के अलावा अन्यत्र शरीर से नहीं निवास करती हूँ। मैं यहाँ ऐसा नहीं कह सकती कि सर्वत्र इसी रूप में रहती हूँ। जिस पुरुष में भावना द्वारा निवास करती हूँ, वह, धर्म, यश और धन से संपन्न होकर सदा बढ़ता रहता है। (महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय:11)

लक्ष्मी प्राप्ति हेतु विभिन्न मंत्र सिद्ध कवच

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

राज राजेश्वरी कवच
Raj Rajeshwari Kawach

श्री राज राजेश्वरी कवच को धारण करने से व्यक्ति की सुख समृद्धि, धन, ऐश्वर्य, मान-सम्मान, सौभाग्य आदि को प्राप्त करने की कामनाएं शीघ्र पूर्ण होने लगती हैं। राज राजेश्वरी कवच राजकार्य अर्थात सरकार से जुड़े कार्यों में विशेष सफलता प्रदान करने वाल हैं। राज राजेश्वरी कवच के प्रभाव से धारण कर्ता के सकल प्रकार के राज कार्य सरलता से पूर्ण हो सकते हैं। सरकारी विभाग एवं सामाजिक कार्य करने वालों को राज राजेश्वरी कवच के प्रभाव से विशेष लाभ की प्राप्ति होती हैं।

मूल्य मात्र: 12900

सुवर्ण लक्ष्मी कवच
Suvarn Lakshmi Kawach



सुवर्ण लक्ष्मी कवच को धारण करने से धन-संपत्ति, रत्न-आभूषण आदि की वृद्धि होती हैं। सुवर्ण लक्ष्मी कवच को धारण करने से धारणकर्ता को सुवर्ण से संबंधित कार्यों में विशेष लाभ की प्राप्ति होती हैं। विभिन्न स्त्रोत से आर्थिक लाभ मिलने के योग बनते हैं। सुवर्ण लक्ष्मी कवच के प्रभाव से धारणकर्ता की सुवर्ण से संबंधित सभी अभिलाषाएं शीघ्र ही पूर्ण होने की प्रबल संभावनाएं बनती हैं।

मूल्य मात्र: 5500

स्वर्णाकर्षण भैरव कवच
Swarnakarshan Bhairav Kawach

हिन्दू धर्म में भैरव जी को भगवान शिव के द्वादश स्वरूप के रुप में पूजा जाता हैं। भैरवजी को मुख्य रुप से तीन स्वरुप बटुक भैरव, महाकाल भैरव और स्वर्णाकर्षण भैरव के रुप में जाना जाता हैं। विद्वानों ने स्वर्णाकर्षण-भैरव को धन-धान्य और सम्पत्ति के देवता माना हैं। धर्मग्रंथों में उल्लेख मिलता हैं की जिस मनुष्य की आर्थिक स्थिती दिन-प्रतिदिन खराब होती जा रही हो, उस पर कर्ज का बोझ बढ़ता जा रहा हो, समस्या के समाधान हेतु व्यक्ति को कोई रास्ता न दिखाई दे रहा हो, व्यक्ति को सभी प्रकार के पूजा पाठ, मंत्र, यंत्र, तंत्र, यज्ञ, हवन, साधना आदि से कोई विशेष लाभ की प्राप्ति न हो रही हो, तब स्वर्णाकर्षण भैरव जी का मंत्र, यंत्र, साधना इत्यादि का आश्रय लेना चाहिए। जो व्यक्ति स्वर्णाकर्षण भैरव की साधना, मंत्र जप आदि को करने में असमर्थ हो वह लोग स्वर्णाकर्षण भैरव कवच को धारण कर विशेषा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। स्वर्णाकर्षण भैरव कवच को धन प्राप्ति के लिए अचूक और अत्यंत प्रभावशाली माना जाता हैं।

स्वर्णाकर्षण भैरव कवच को धारण करने से यह मनुष्य की सभी प्रकार की आर्थिक समस्याओं को समाप्त करने में समर्थ हैं। जिसमें जरा भी संदेह नहीं हैं। इस कलयुग में जिस प्रकार मृत्यु भय के निवारण हेतु महामृत्युंजय कवच अमोघ हैं उसी प्रकार आर्थिक समस्याओं के समाधान हेतु स्वर्णाकर्षण भैरव कवच अमोघ माना गया हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार ऐसा माना जाता हैं की भैरवजी की पूजा-उपासना श्रीगणेश, विष्णु, चंद्रमा, कुबेर आदि देवताओं ने भी कि थी, भैरव उपासना के प्रभाव से भगवान विष्णु लक्ष्मीपति बने थे, विभिन्न अप्सराओं को सौभाग्य मिलने का उल्लेख धर्मग्रंथो में मिलता हैं। यहि कारण हैं की स्वर्णाकर्षण भैरव कवच आर्थिक समस्याओं के समाधान हेतु अत्यंत लाभप्रद हैं। इस कवच को धारण करने से सभी प्रकार से आर्थिक लाभ की प्राप्ति होने लगती हैं।

मूल्य मात्र: 5500

विष्णु बीसा कवच

Vishnu Visha Kawach



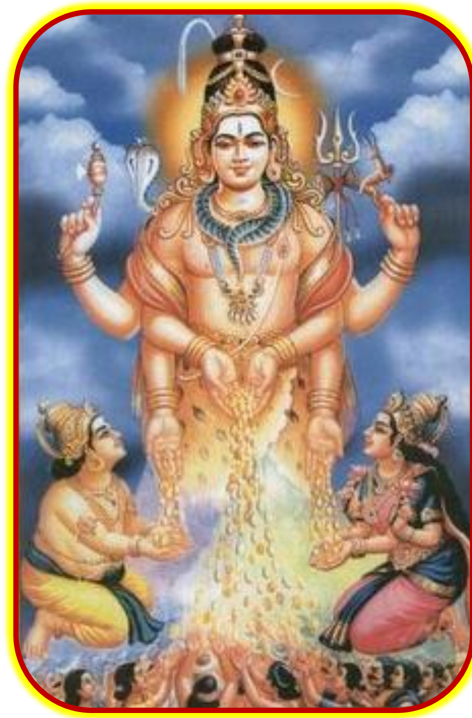
विष्णु बीसा कवच को धन, यश, सफलता और उन्नति की प्राप्ति हेतु उत्तम माना जाता हैं। विष्णु बीसा कवच को भगवान श्री विष्णु को प्रसन्न करने और उनका आशिर्वाद प्राप्त करने के लिए धारण किया जाता हैं। हिन्दू धर्मग्रंथों में वर्णित हैं की जहाँ भगवान विष्णु निवास करते हैं, उस स्थान पर माँ महालक्ष्मी का भी निवास होता हैं। जिस भक्त पर भगवान विष्णु प्रसन्न होते, कृपा करते हैं, उस भक्त पर देवी महालक्ष्मी भी स्वतः प्रसन्न होती हैं और अपनी कृपा व आशीर्वाद देती हैं। विष्णु बीसा कवच को धारण करने से व्यक्ति को कार्यों में सिद्धि व सफलता की प्राप्ति, स्वास्थ्य और सांसारिक सुखों में वृद्धि होती हैं। विद्वानों का अनुभव रहा हैं की श्री विष्णु बीसा कवच को धारण करने से शीघ्र ही धारणकर्ता के घर-परिवार में सुख-समृद्धि-ऐश्वर्य में वृद्धि होने लगती हैं। विष्णु बीसा कवच को धारण करने से व्यक्ति में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता हैं। विष्णु बीसा कवच के प्रभाव से उसके रुके हुवे कार्य संपन्न होने लगते हैं। कार्यक्षेत्र में सुधार होने लगता हैं। शत्रु, रोग आदि नाना प्रकार के भयों का निवारण हो जाता हैं और जीवन परम सुखी हो जाता हैं।

मूल्य मात्र: 2800

कुबेर बीसा कवच

Kuber Visha Kawach

आज हर व्यक्ति की इच्छा होती हैं की उसके पास अपार धन-संपत्ति हो। उसके पास दुनिया का हर ऐशो-आराम मौजुद हो, उसे कभी किसी चीज की कमी न हो। आजके इस भौतिक युग में देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर जी का श्री कुबेर बीसा कवच मनुष्य की समस्त भौतिक कामनाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। कुबेर बीसा कवच के प्रभाव से धारण कर्ता पर यक्षराज कुबेर प्रसन्न हो कर उसे अतुल सम्पत्ति का वरदान देते हैं। कुबेर बीसा कवच के प्रभाव से धारण कर्ता के लिए अक्षय धन कोष की प्राप्ति एवं आय वृद्धि के नये-नये स्त्रोत बनने लगते हैं। ऐसा शास्त्रोक्त वचन हैं की स्वर्ण लाभ, रत्न लाभ, पैतृक सम्पत्ती एवं गड़े हुए धन से लाभ प्राप्ति कि कामना करने वाले व्यक्ति के लिये कुबेर बीसा कवच धारण करना अत्यन्त लाभ दायक हो सकता हैं। कुबेर बीसा कवच को धारण करने से व्यक्ति को एकाधिक स्त्रोत्र से धन का प्राप्त होकर उसका धन संचय होने लगता हैं। धन-संपत्ति एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु कुबेर बीसा कवच सर्वश्रेष्ठ माध्यम हैं।



मूल्य मात्र: 2800

आकस्मिक धन प्राप्ति कवच

Akashmik Dhan Prapti Kawach

आकस्मिक धन प्राप्ति कवच अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस कवच को धारण करने से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम

से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति कवच को धारण करने से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति कवच से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

मूल्य मात्र: 1450

अष्ट लक्ष्मी कवच

Asht Lakshmi Kawach

अष्ट लक्ष्मी कवच को धारण करने से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)-धैरीय लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)- विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का स्वतः अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

मूल्य मात्र: 1450

त्रैलोक्य मंगल लक्ष्मी स्तोत्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नमः कल्याणदे देवि, नमोऽस्तु हरि वल्लभे।
नमो भक्त प्रिये देवि, लक्ष्मी देवि नमोऽस्तु ते ॥१॥
नमो माया गृहिताङ्गी नमोऽस्तु हरि वल्लभे।
सर्वेश्वरि नमस्तुभ्यं, लक्ष्मी देवि नमोऽस्तु ते ॥२॥
महा-माये विष्णुधर्म पत्नी रूपे हरिप्रिये।
वाञ्छा दात्रि सुरेशानि लक्ष्मी देवि नमोऽस्तु ते ॥३॥

उद्यद् भानु सहस्त्राभे, नयन त्रय भूषिते।
रत्नाधारे सुरेशानि, लक्ष्मी देवि नमोऽस्तु ते ॥४॥
विचित्र वसने देवि, भव दुःख विनाशिनी।
कुच भारनते देवि, लक्ष्मी देवि नमोऽस्तु ते॥५॥
साधकाभीष्टदे देवि अन्नदान रतेऽनघे।
विष्ण्वानन्द प्रदे मातर्लक्ष्मी देवि नमोऽस्तु ते ॥६॥
षट्कोण पद्म मध्यस्थे, षडङ्ग युवती मये।
ब्रह्माण्यादि स्वरूपे च, लक्ष्मी देवि नमोऽस्तु ते॥७॥

देवि त्वं चन्द्र-वदने, सर्व साम्राज्य दायिनी।
सर्वानन्द करे देवि, लक्ष्मी देवि नमोऽस्तु ते ॥८॥
॥अथ फलश्रुति॥
पूजाकाले पठेद् यस्तु, स्तोत्रमेतत् समाहितः।
तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्जायते नात्र संशयः ॥१॥
प्रातःकाले पठेद् यस्तु, मंत्रपूजा पुरस्सरम्।
तस्य चान्न समृद्धिः स्याद्, वर्द्धमानो दिने दिने ॥२॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं, न प्रकाश्यं कदाचन।
प्रकाशात् कार्यहानिः
स्यात् तस्माद् यत्नेन गोपयेत् ॥३॥
त्रैलोक्य मङ्गलं नाम, स्तोत्रमेतत् प्रकीर्तितम्।
ब्रह्मविद्या स्वरूपं च, महैश्वर्य्य प्रदायकम् ॥४॥

जो व्यक्ति नियमित रुप से पूजन में इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसके यहाँ लक्ष्मीजी सदा वास करती है। इस स्तोत्र का पाठ पूर्णतः गुप्त रूप से करना चाहिए। देवी लक्ष्मी के मन्त्र का जप कर, लक्ष्मी जी को आठ बार पुष्पाजलि देकर उपरोक्त स्तोत्र का पाठ करना विशेष लाभदायी होता हैं। त्रैलोक्य मङ्गल लक्ष्मी स्तोत्र का 108 बार पाठ करने स्तोत्र का एक पुरश्चरण (से अनुष्ठान) पूर्ण होता हैं। इस प्रकार कई पुरश्चरण अर्थात अनुष्ठान करने से वैभव लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं।

जो व्यक्ति इस स्तोत्र को भोज पत्र पर लिख कर सोने के ताबीज में भरकर कण्ठ में उआ दाहिनी भुजा में धारण करता हैं, उसे सभी प्रकार के ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जो स्त्री बाँई भुजा में इस ताबीज को धारण करती हैं उसे उत्तम संतान की प्राप्ति होती है।

जो व्यक्ति एक महिने तक प्रतिदिन सुबह में हविष्यान्न भोजन ग्रहण कर रात के समय भक्ति-भाव पूर्वक उक्त स्तोत्र का पाठ करता हैं, वह सभी प्रकार की सिद्धियों को प्राप्त कर लेता हैं।
(हविष्यान्न भोजन अर्थात: व्रत,यज्ञ आदि के दिन या उससे पहले दिन किया जानेवाला कुछ विशिष्ट सात्विक भोजन)

देवराज इन्द्र ने जब किया लक्ष्मीजी को पुनः प्रसन्न

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

पौराणिक कथा के अनुसार दुर्वासा ऋषि के शाप के कारण एक बार देवराज इन्द्र लक्ष्मी से विहीन हो गए थे, धन-वैभव एवं ऐश्वर्य रहित होने पर इन्द्र चिंतित हुए। इन्द्र देव अपने चिंता के निवारण के लिए भगवान् विष्णु के पास गए।

भगवान् विष्णु ने इन्द्रदेव की बात सुन कर उन्हें देवी लक्ष्मी जी के क्षीर सागर से उत्पन्न होने की और देवताओं को दैत्यों के साथ मिलकर समुद्र मन्थन करके लक्ष्मी जी को प्राप्त करने का उपाय सुझाया। '
भगवान् विष्णु के उपदेशानुसार देवताओं को दैत्यों नें समुद्र मन्थन किया। इसी समुद्र मन्थन से लक्ष्मी जी प्रगट हुईं।

इन्द्र ने लक्ष्मी जी को प्रसन्न करने के लिए उनकी पूजा करने विचार किया और ब्रह्मा जी द्वारा बताई गई मन्त्र एवं विधि के अनुसार देवी महालक्ष्मी की पूजा की।

मन्त्र

सहस्त्र-दल-पद्मस्य, कर्णिका-वासिनीं पराम्।
शरत् पार्वण कोटीन्दु प्रभा जुष्ट करां वराम्॥
स्व-तेजसां प्रज्वलन्तीं, सुख-दृश्यां मनोहराम्।
प्रतप्त कांच्चन निभां, शोभा मूर्ति मती सतीम्॥

भावार्थः सहस्र कमल दल पर निवास करनेवाली शरत् कालीन कोटि चन्द्रमा के समान कान्तिवाली, अपने तेज से ज्वल्यमान, तपाए हुए स्वर्ण के समान कान्तिवाली, शोभामूर्ति देवी लक्ष्मीमहा का ध्यान करता हूँ।

इन्द्र ने इस प्रकार उक्त ध्यान कर षोडशोपचारों से देवी लक्ष्मी जी की पूजा की और
द्वादशाक्षर मन्त्र

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं कमल-वासिनी स्वाहा

उक्त का श्रद्धापूर्वक नियमित जप करके इन्द्र ने अपने खोये हुए धन-वैभव एवं ऐश्वर्य को पुनः प्राप्त कर लिया था। विद्वानों का कथन है, इन्द्र द्वारा किए गए उपरोक्त ध्यान एवं मन्त्र का जो व्यक्ति नियमित जप करता हैं उसे नि:संदेह सभी प्रकार के सुख-ऐश्वर्य एवं सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

जब एक राजा ने कुबेर पर आक्रमण कर धन वर्षा कराई !

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

पौराणिक कथा के अनुसार अयोध्या के प्रसिद्ध राजा महाराज रघु राजा दिलीप के पुत्र थे । एसी मान्यता है कि राजा दिलीप को नंदिनी गाय की सेवा के प्रसाद से पुत्र रूप में प्राप्त हुए थे राजा रघु । रघु बचपन से ही अत्यन्त प्रतिभावशाली थे। रघु के बाल्यकाल में ही उनके पिता ने अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा छोड़ दिया था। इन्द्र ने उस घोड़े को पकड़ लिया, परंतु इन्द्र को रघु के हाथों पराजित होना पड़ा था।

रघु बड़े प्रतापी राजा थे, उन्होंने अपने राज्य का चारों दिशाओं में विस्तार किया। एक बार रघु ने अपने गुरु वसिष्ठ की आज्ञा से विश्वजित यज्ञ का आयोजन किया और उस यज्ञ में अपनी संपूर्ण संपत्ति दान कर दी।

एक तरफ विश्वामित्र के शिष्य कौत्स ने 'गुरु-दक्षिणा' देने के लिये बालहठ किया। महर्षि के बार-बार मना करने पर भी शिष्य जब न माना तो उन्होंने कुछ क्रोध में आकर आदेश दिया-वत्स! मैंने तुम्हें १८ प्रकार की विद्याओं से दीक्षित किया है। यद्यपि विद्यादान की कोई कीमत नहीं होती तथापि यदि एक प्रकार की विद्या की कीमत एक करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ मानी जाएँ, तो १८ कोटि स्वर्ण-मुद्राएँ तुम गुरु-दक्षिणा' में दोगें, तभी तेरी गुरु दक्षिणा स्वीकार होगी।" (नोट: कुछ विद्वानों ने चतुर्दश विद्या अर्थात १४ प्रकार की विद्याओं का उल्लेख किया हैं, जिस्से गुरु-दक्षिणा' में १४ कोटि स्वर्ण-मुद्रा मांगने का उल्लेख हैं।)

शिष्य ने विनम्रता पूर्वक गुरुदेव की आज्ञा को शिरोधार्य कर उनसे छ: माह की अवधि माँगी । इसके बाद कौत्स ने अपने नगर के राजा के पास जाकर गुरु-दक्षिणा हेतु धन की मांग की। इस पर नगर के राजा ने नतमस्तक होकर कहा हे द्विज श्रेष्ठ! मेरे राजकोष में इतना धन नहीं है। मैं आपके साथ चलकर प्रदेश के महाराजा के पास आपकी कामना पूर्ति हेतु यथेष्ट धन के प्रबन्ध हेतु प्रार्थना करूंगा। तब दोनों प्रदेश महाराजा के पास गये। इस पर प्रदेश के महाराजा ने अपनी असमर्थता प्रकट की। फिर दोनो राजा और शिष्य तीनो एक साथ महाराजा रघु के पास जाकर गुरु-दक्षिणा की पूर्ति हेतु धन का निवेदन किया।

लेकिन महाराजा रघु ने राजसूय यज्ञ में अपना सर्वस्व दान कर दिया था और निर्विकार जीवन व्यतित कर रहे थे। महाराजा रघु ने ब्राह्मण की कामना पूर्ति हेतु धन की अधिष्ठात्री देवी माँ महालक्ष्मी को प्रसन्न कर कौत्स जी की कामना पूर्ति हेतु आवश्यक धन देने की याचना की। देवी महालक्ष्मी ने राजा पर प्रसन्न होते हुए कहां राजन्, मैं नियमों से बँधी हूँ तथा बिना कर्म या भाग्य के किसी कृपा नहीं करती। फिर कहां राजन् तुम्हारे जैसे वीर क्षत्रिय राजा को इस छोटे से कार्य हेतु याचना करना शोभा नहीं देता। तुम अपने क्षत्रिय धर्म का पालन करो।' इतना कहकर माता लक्ष्मी अन्तर्ध्यान हो गई। महाराजा रघु ने बहुत सोच-विचार कर

धनाधिपति कुबेर पर आक्रमण करके कुबेरजी को ने तत्काल स्वर्ण मुद्राओं की वर्षा करने के लिए बाध्य किया। स्वर्ण मुद्राओं की वर्षा से कौत्सजी ने अपनी गुरु-दक्षिणा देकर गुरु को प्रसन्न किया।

विशेष: विद्वानों का मत हैं की उसी समय से से यह यह बात प्रसिद्ध हो गई है कि जहाँ धन प्राप्ति हेतु सभी प्रकार के प्रयास निष्फल हो जाए तो, कुबेर की उपासना कर उन्हें प्रसन्न कर धन प्राप्ति की कामना शीघ्र फलदाई होती है। एसा माना जाता हैं की रावण ने कुबेरजी को को उपासना से वश में कर रखा था जिस कारण रावण सुवर्ण की लंका और धन-सम्पत्ति का स्वामी हो गया था।

कुबेर चालीसा

॥ दोहा ॥

जैसे अटल हिमालय और
जैसे अडिग सुमेर ।
ऐसे ही स्वर्ग द्वार पै,
अविचल खड़े कुबेर ॥
विघ्न हरण मंगल करण,
सुनो शरणागत की टेर ।
भक्त हेतु वितरण करो,
धन माया के ढ़ेर ॥

॥ चौपाई ॥

जै जै जै श्री कुबेर भण्डारी ।
धन माया के तुम अधिकारी ॥
तप तेज पुंज निर्भय भय हारी ।
पवन वेग सम सम तनु बलधारी ॥
स्वर्ग द्वार की करें पहरे दारी ।
सेवक इंद्र देव के आज्ञाकारी ॥
यक्ष यक्षणी की है सेना भारी।
सेनापति बने युद्ध में धनुधारी ॥
महा योद्धा बन शस्त्र धारैं ।
युद्ध करैं शत्रु को मारैं ॥
सदा विजयी कभी ना हारैं ।
भगत जनों के संकट टारैं ॥
प्रपितामह हैं स्वयं विधाता।
पुलिस्ता वंश के जन्म विख्याता ॥
विश्रवा पिता इडविडा जी माता ।
विभीषण भगत आपके भ्राता ॥
शिव चरणों में जब ध्यान लगाया ।
घोर तपस्या करी तन को सुखाया ॥
शिव वरदान मिले देवत्य पाया ।
अमृत पान करी अमर हुई काया ॥
धर्म ध्वजा सदा लिए हाथ में ।
देवी देवता सब फिरैं साथ में ।
पीताम्बर वस्त्र पहने गात में ॥
बल शक्ति पूरी यक्ष जात में ॥
स्वर्ण सिंहासन आप विराजैं ।
त्रिशूल गदा हाथ में साजैं ॥
शंख मृदंग नगारे बाजैं ।
गंधर्व राग मधुर स्वर गाजैं ॥
चौंसठ योगनी मंगल गावैं ।
ऋद्धि सिद्धि नित भोग लगावैं ॥
दास दासनी सिर छत्र फिरावैं ।
यक्ष यक्षणी मिल चंवर ढूलावैं ॥
ऋषियों में जैसे परशुराम बली हैं ।
देवन्ह में जैसे हनुमान बली हैं ॥
पुरुषोंमें जैसे भीम बली हैं ।
यक्षों में ऐसे ही कुबेर बली हैं ॥
भगतों में जैसे प्रहलाद बड़े हैं ।
पक्षियों में जैसे गरुड़ बड़े हैं ॥
नागों में जैसे शेष बड़े हैं ।
वैसे ही भगत कुबेर बड़े हैं ॥
कांधे धनुष हाथ में भाला ।
गले फूलों की पहनी माला ॥
स्वर्ण मुकुट अरु देह विशाला ।
दूर दूर तक होए उजाला ॥
कुबेर देव को जो मन में धारे ।
सदा विजय हो कभी न हारे ।
बिगड़े काम बन जाएं सारे ।
अन्न धन के रहें भरे भण्डारे ॥
कुबेर गरीब को आप उभारैं ।
कुबेर कर्ज को शीघ्र उतारैं ॥
कुबेर भगत के संकट टारैं ।
कुबेर शत्रु को क्षण में मारैं ॥
शीघ्र धनी जो होना चाहे ।
क्युं नहीं यक्ष कुबेर मनाएं ॥
यह पाठ जो पढ़े पढ़ाएं ।
दिन दुगना व्यापार बढ़ाएं ॥
भूत प्रेत को कुबेर भगावैं ।
अड़े काम को कुबेर बनावैं ॥
रोग शोक को कुबेर नशावैं ।
कलंक कोढ़ को कुबेर हटावैं ॥
कुबेर चढ़े को और चढ़ादे ।
कुबेर गिरे को पुन: उठा दे ॥
कुबेर भाग्य को तुरंत जगा दे ।
कुबेर भूले को राह बता दे ॥
प्यासे की प्यास कुबेर बुझा दे ।
भूखे की भूख कुबेर मिटा दे ॥
रोगी का रोग कुबेर घटा दे ।
दुखिया का दुख कुबेर छुटा दे ॥
बांझ की गोद कुबेर भरा दे ।
कारोबार को कुबेर बढ़ा दे ॥
कारागार से कुबेर छुड़ा दे ।
चोर ठगों से कुबेर बचा दे ॥
कोर्ट केस में कुबेर जितावै ।
जो कुबेर को मन में ध्यावै ॥
चुनाव में जीत कुबेर करावैं ।
मंत्री पद पर कुबेर बिठावैं ॥
पाठ करे जो नित मन लाई ।
उसकी कला हो सदा सवाई ॥
जिसपे प्रसन्न कुबेर की माई ।
उसका जीवन चले सुखदाई ॥
जो कुबेर का पाठ करावै ।
उसका बेड़ा पार लगावै ॥
उजड़े घर को पुन: बसावै ।
शत्रु को भी मित्र बनावै ॥
सहस्त्र पुस्तक जो दान कराई ।
सब सुख भोद पदार्थ पाई ।
प्राण त्याग कर स्वर्ग में जाई ।
मानस परिवार कुबेर कीर्ति गाई ॥

॥ दोहा ॥

शिव भक्तों में अग्रणी, श्री यक्षराज कुबेर । हृदय में ज्ञान प्रकाश भर, कर दो दूर अंधेर ॥ कर दो दूर अंधेर अब, जरा करो ना देर । शरण पड़ा हूं आपकी, दया की दृष्टि फेर ।

॥ इति श्री कुबेर चालीसा ॥

श्री कुबेर अष्टोत्तर शतनामावलि

ॐ कुबेराय नमः।
ॐ धनदाय नमः।
ॐ श्रीमाते नमः।
ॐ यक्षेशाय नमः।
ॐ गुह्यकेश्वराय नमः।
ॐ निधीशाय नमः।
ॐ शङ्करसखाय नमः।
ॐ महालक्ष्मीनिवासभुवये नमः।
ॐ महापद्मनिधीशाय नमः।
ॐ पूर्णाय नमः।
ॐ पद्मनिधीश्वराय नमः।
ॐ शङ्ख्यनिधिनाथाय नमः।
ॐ मकराख्यनिधिप्रियाय नमः।
ॐ सुखसम्पतिनिधीशाय नमः।
ॐ मुकुन्दनिधिनायकाय नमः।
ॐ कुन्दाक्यनिधिनाथाय नमः।
ॐ नीलनित्याधिपाय नमः।
ॐ महते नमः।
ॐ वरन्नित्याधिपाय नमः।
ॐ पूज्याय नमः।
ॐ लक्ष्मिसाम्राज्यदायकाय नमः।
ॐ इलपिलापतये नमः।
ॐ कोशाधीशाय नमः।
ॐ कुलोचिताय नमः।
ॐ अश्वारूढाय नमः।
ॐ विश्ववन्द्याय नमः।
ॐ विशेषज्ञानाय नमः।
ॐ विशारदाय नमः।
ॐ नलकूबरनाथाय नमः।
ॐ मणिग्रीवपित्रे नमः।
ॐ गूढमन्त्राय नमः।
ॐ वैश्रवणाय नमः।
ॐ चित्रलेखामनःप्रियाय नमः।
ॐ एकपिनाकाय नमः।
ॐ अलकाधीशाय नमः।
ॐ पौलस्त्याय नमः।
ॐ नरवाहनाय नमः।

ॐ कैलासशैलनिलयाय नमः।
ॐ राज्यदाय नमः।
ॐ रावणाग्रजाय नमः।
ॐ चित्रचैत्ररथाय नमः।
ॐ उद्यानविहाराय नमः।
ॐ विहरसुकुथूहलाय नमः।
ॐ महोत्सहाय नमः।
ॐ महाप्राज्ञाय नमः।
ॐ सदापुष्पक वाहनाय नमः।
ॐ सार्वभौमाय नमः।
ॐ अङ्गनाथाय नमः।
ॐ सोमाय नमः।
ॐ सौम्यादिकेश्वराय नमः।
ॐ पुण्यात्मने नमः।
ॐ पुरूहुतश्रियै नमः।
ॐ सर्वपुण्यजनेश्वराय नमः।
ॐ नित्यकीर्तये नमः।
ॐ निधिवेत्रे नमः।
ॐ लंकाप्राक्तन नायकाय नमः।
ॐ यक्षिनीवृताय नमः।
ॐ यक्षाय नमः।
ॐ परमशान्तात्मने नमः।
ॐ यक्षराजे नमः।
ॐ यक्षिणि हृदयाय नमः।
ॐ किन्नरेश्वराय नमः।
ॐ किंपुरुशनाथाय नमः।
ॐ नाथाय नमः।
ॐ खट्कायुधाय नमः।
ॐ वशिने नमः।
ॐ ईशानदक्ष पार्स्वस्थाय नमः।
ॐ वायुवाय समास्रयाय नमः।
ॐ धर्ममार्गैस्निरताय नमः।
ॐ धर्मसम्मुख संस्थिताय नमः।
ॐ नित्येश्वराय नमः।
ॐ धनाधयक्षाय नमः।
ॐ अष्टलक्ष्म्याश्रितलयाय नमः।
ॐ मनुष्य धर्मण्यै नमः।

ॐ सकृताय नमः।
ॐ कोष लक्ष्मी समाश्रिताय नमः।
ॐ धनलक्ष्मी नित्यवासाय नमः।
ॐ धान्यलक्ष्मीनिवास भुवये नमः।
ॐ अश्तलक्ष्मी सदवासाय नमः।
ॐ गजलक्ष्मी स्थिरालयाय नमः।
ॐ राज्यलक्ष्मीजन्मगेहाय नमः।
ॐ धैर्यलक्ष्मी-कृपाश्रयाय नमः।
ॐ अखण्डैश्वर्य संयुक्ताय नमः।
ॐ नित्यानन्दाय नमः।
ॐ सुखाश्रयाय नमः।
ॐ नित्यतृप्ताय नमः।
ॐ निधित्तै नमः।
ॐ निराशाय नमः।
ॐ निरुपद्रवाय नमः।
ॐ नित्यकामाय नमः।
ॐ निराकाङ्क्षाय नमः।
ॐ निरूपाधिकवासभुवये नमः।
ॐ शान्ताय नमः।
ॐ सर्वगुणोपेताय नमः।
ॐ सर्वज्ञाय नमः।
ॐ सर्वसम्मताय नमः।
ॐ सर्वाणिकरुणापात्राय नमः।
ॐ सदानन्दक्रिपालयाय नमः।
ॐ गन्धर्वकुलसंसेव्याय नमः।
ॐ सौगन्धिककुसुमप्रियाय नमः।
ॐ स्वर्णनगरीवासाय नमः।
ॐ निधिपीठ समस्थायै नमः।
ॐ महामेरुत्तरस्थायै नमः।
ॐ महर्षिगणसंस्तुताय नमः।
ॐ तुष्टाय नमः।
ॐ शूर्पणकज्येष्ठाय नमः।
ॐ शिवपूजारताय नमः।
ॐ अनघाय नमः।
ॐ राजयोगसमायुक्ताय नमः।
ॐ राजसेखरपूज्याय नमः।
ॐ राजराजाय नमः।

चमत्कारी लक्ष्मी यंत्र से दूर होगी आर्थिक समस्याएं

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। श्री यंत्र की महिमा से सायद ही कोई व्यक्ति अज्ञात होगा क्योकि "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। श्री यंत्र धनप्राप्ति हेतु न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है।

"श्री यंत्र" मे समाई अद्वितीय एवं अदृश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है।

"श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। स्फटिक का श्री यंत्र सर्वश्रेष्ठ माना जाता हैं।

लक्ष्मीकुबेर धन आकर्षण यंत्र

श्रीयंत्र को समस्त प्रकार के श्रीयंत्रों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है और कुबेर यंत्र को देवताओं में धन के देवता कुबेर जी का सबसे प्रभावशाली यंत्र माना जाता हैं इस यंत्र के पूजन से अक्षय धन कोष की प्राप्ति होती हैं और मनुष्य के लिए नवीन आय के स्रोत बनते हैं। प्रतिदिन लक्ष्मीकुबेर धन आकर्षण यंत्र का पूजन एवं दर्शन करने से व्यक्ति को जीवन में धन और ऐश्वर्य की कभी भी कमी नहीं होती है। विद्वानों ने अपने अनुभवों में पाया हैं की जो मनुष्य अपने गृहस्थ जीवन में धन, वैभव, ऐश्वर्य, सुख-समृद्धि, व्यापार में सफलता, विदेश लाभ, राजनीति में सफलता, नौकरी में पदौन्न्ति आदि की कामना रखता हैं तो उसके लिए श्री लक्ष्मीकुबेर धन आकर्षण यंत्र सर्वश्रेष यंत्र हैं। मनुष्य को लक्ष्मीकुबेर धन आकर्षण यंत्र के पूजन से जीवन के सभी क्षेत्र में सुख-समृद्धि एवं सौभाग्य की प्राप्त होने लगती है।

यदि किसी व्यक्ति को व्यापार में यदि व्यापार में पूर्ण परिश्रम एवं लगने से कार्य करने पर भी अधिक लाभ की प्राप्ति नहीं हो रही हो, व्यापार मंदा चल रहा हो या बार-बार लाभ के स्थान पर हानि हो रही हो तो उसे लक्ष्मीकुबेर धन आकर्षण यंत्र को अवश्य अपने व्यवसायीक स्थान पर स्थापित करना चाहिए। जिससे व्यापार में बार-बार होने वाले घाटे या नुकसान से शीघ्र ही लाभ प्राप्त होने के योग बनने लगते हैं। ।

गणेश लक्ष्मी यंत्र

प्राण-प्रतिष्ठित गणेश लक्ष्मी यंत्र को अपने घर-दुकान-ओफिस-फैक्टरी में पूजन स्थान, गल्ला या अलमारी में स्थापित करने व्यापार में विशेष लाभ प्राप्त होता हैं। यंत्र के प्रभाव से भाग्य में उन्नति, मान-प्रतिष्ठा एवं व्यापर में वृद्धि होती हैं एवं आर्थिक स्थिमें सुधार होता हैं। गणेश लक्ष्मी यंत्र को स्थापित करने से भगवान गणेश और देवी लक्ष्मी का संयुक्त आशीर्वाद प्राप्त होता हैं। श्री गणेश लक्ष्मी यंत्र के नियमित पूजन एवं दर्शन से व्यक्ति के सकल विघ्नों एवं दुःख दरिद्रताका नाश होता हैं।

जिस प्रकार भगवान गणेश के नाम स्मरण और दर्शन मात्र से व्यक्ति के सकल विघ्नों, संकट, आदि बाधाओं का स्वतः ही नाश होता हैं, उसी प्रकार देवी

लक्ष्मी के स्मरण और दर्शन मात्र से व्यक्ति का दुर्भाग्य सौभाग्य में बदल जाता हैं उसके समस्त दुखः दरिद्रता का स्वतः ही नाश होता हैं। गणेश लक्ष्मी यंत्र के पूजन से परिवार में सुख-शांति एवं समृद्धि का आगमन होने लगता हैं यहि कारण हैं गणेश लक्ष्मी यंत्र की महिमा अपरंपार हैं।

कनकधारा यंत्र

आज के भौतिक युग में हर व्यक्ति अतिशीघ्र समृद्ध बनना चाहता हैं। कनकधारा यंत्र कि पूजा अर्चना करने से व्यक्ति के जन्मों जन्म के ऋण और दरिद्रता से शीघ्र मुक्ति मिलती हैं। यंत्र के प्रभाव से व्यापार में उन्नति होती हैं, बेरोजगार को रोजगार प्राप्ति होती हैं। कनकधारा यंत्र अत्यंत दुर्लभ यंत्रो में से एक यंत्र हैं जिसे मां लक्ष्मी कि प्राप्ति हेतु अचूक प्रभावा शाली माना गया हैं। कनकधारा यंत्र को विद्वानो ने स्वयंसिद्ध तथा सभी प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करने में समर्थ माना हैं।

कुबेर यंत्र

आज के दौर में हर व्यक्ति की चाहता कि उसके पास अपार धन-संपत्ति हो। उसके पार दुनिया का हर ऐशो-आराम मौजुद हो, उसे कभी किसी चीज की कमी न हो। एसे लोगो के लिये कुबेर यंत्र एक प्रकार से चमत्कारी यंत्र है कुबेर यंत्र। कुबेर यंत्र के पूजन से स्वर्ण लाभ, रत्न लाभ, पैतृक सम्पत्ती एवं गड़े हुए धन से लाभ प्राप्ति कि कामना करने वाले व्यक्ति के लिये कुबेर यंत्र अत्यन्त सफलता दायक होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। कुबेर यंत्र के पूजन से एकाधिक स्त्रोत्र से धन का प्राप्त होकर धन संचय होता हैं। कुबेर यंत्र धन अधिपति धनेश कुबेर का यंत्र है, इस लिये कुबेर यंत्र के प्रभाव से यक्षराज कुबेर प्रसन्न होकर अतुल सम्पत्ति का वरदान देते हैं।

धर्म शास्त्रों में वर्णित हैं लंकाधिपति रावण ने भगवान महादेव से कुबेर यंत्र प्राप्त कर उसका विधि-विधान से पूजन किया था, यही कारण हैं की रावण नें देवाधिराज कुबेर को प्रशन्न कर लिया था जिसके कारण ही उसका राज्य पूर्ण रुप से समृद्ध और वैभवशाली था। कुबेर यंत्र के प्रताप से ही रावणने पूरी लंका सोने की बनाई थी। इस लिए धन-संपत्तिकी कामना करने वाले मनुष्य को कुबेर यंत्र का पूजन अवश्य करना चाहिए।

लक्ष्मी प्राप्ति हेतु उरोक्त यंत्र के अलावा अन्य यंत्र भी विशेष प्रभावशाली होते हैं। जिस यंत्रों का यहां समावेश नहीं किया गया हैं अतः उसकी महत्वता का कम होना या वह कम प्रभावी हैं एसा बिल्कुल नहीं हैं, केवल यहां समय के अभाव में एवं पाठको के शीघ्र मार्गदर्शन हेतु केवल अनुभूत यंत्रों का समावेश किया गया हैं।

पारद लक्ष्मी साधना

संकलन गुरुत्व कार्यालय

आवश्यक समग्री: पारद लक्ष्मी प्रतिमा, अक्षत, धूप, शुद्ध घी का दीपक, हल्दी, रोली, कुमकुम, अष्टगंध, पारद माला या स्फटिक माला या कमल गट्टे की, पीले वस्त्र धारण हेतु, लकड़ी की चौकी, पीला वस्त्र लकड़ी चौकी पर बिछाने हेतु, गंगाजल या स्वच्छ जल, ताम्र की प्लेट या चांदी की प्लेट, लाल एवं पीले पुष्प,

प्रारंभ दिन: अक्षय तृतीया, धनत्रयोदशी या कोई भी शुभ दिन या शुक्रवार,

समय: अबूझ मुहूर्त या शुभ मुहूर्त आसन: ऊनी

प्रयोग अवधि: 1 दिन

जप माला: पारद माला या स्फटिक माला या कमल गट्टे की (108+1 दाने की)

जप संख्या: स्थापना के दिन 11 माला पश्चयात 1 माला प्रतिदिन

शुभ दिशा: उत्तर / पूर्व / ईशान

मंत्र:

ॐ ऐं ऐं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं पारदेश्वरी सिद्धि ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ऐं ऐं ॐ।

यदि व्यक्ति स्वयं पारद लक्ष्मी को शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्धा पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित करने में असमर्थ हो को किसी योग्य गुरु या ब्राह्मण से भी मंत्र सिद्धा पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित करवा सकते है अथवा गुरुत्व कार्यालय द्वारा पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित पारद लक्ष्मी प्राप्त कर बिना मंत्र सिद्ध किये सरलता से केवल धूप-दीप अक्षत, कुमकुम द्वारा पूजन एवं मंत्र जाप कर लाभ प्राप्त सकते है।

अक्षय तृतीया के दिन प्रातःकाल नित्य कर्म एवं स्नानादि से निवृत्त होकर पीले वस्त्र धारण कर। लकड़ी की चौकी पर पीला वस्त्र बिछा कर उसके उपर अक्षत में हल्दी मिलाकर उसमे थोडा गंगाजल या स्वच्छ जल मीला कर चावल को हल्दी से रंग कर स्वस्तिक बनाए उस स्वस्तिक पर ताम्र की प्लेट या चांदी की प्लेट रखकर उसमे देवी लक्ष्मी का स्मरण करते हुए पुष्प बिछादे फिर उस पुष्प पर देवी पारद लक्ष्मी प्रतिमा को स्थापित करे। षोडशोपचार या पंचोपचार से पूजन करें। (षोडशोपचार या पंचोपचार कि विस्तृत जानकारी इसी अंक में पुष्ठ संख्या पर प्राप्त कर सकते है।)

फिर पारद लक्ष्मी मंत्र की 11 माला जप करे। जप के दौरान पारद लक्ष्मी पर अक्षत तथा पुष्प अर्पित करे। समग्र साधना के दौरान अंतःकरण से देवी लक्ष्मी से निवेदन करे कि उनकी कृपा दृष्टि आपके परिवार पर स्थायी रुप से बनी रहे। नोटः स्थापना के समय धारण करने हेतु केवल नये वस्त्र का प्रयोग करे।

लक्ष्मी प्रद कुबेर साधना

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय



हिन्दू धर्म में धन कि देवी लक्ष्मी एवं धन के देवता कुबेर माने जाते हैं। इस लिये कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी (धनतेरस) एवं दीपावली पर मां लक्ष्मी के साथ धनके देवता एवं नव निधिओं के स्वामी कुबेर कि पूजा-अर्चना कि जाती हैं। लक्ष्मी एवं कुबेर कि पूजा से व्यक्ति कि समस्त भौतिक मनोकामनाएं पूर्ण होकर धन-पुत्र इत्यादि कि प्राप्ति होती हैं। क्योकि आज के भौतिकता वादी युग में मानव जीवन का संचालन सुचारु रुप से चल सके इस लिये अर्थ(धन) सबसे महत्व पूर्ण साधन हैं। अर्थ(धन) के बिना मनुष्य जीवन दुःख, दरिद्रता, रोग, अभावों से पीडित होता हैं। अर्थ(धन) से युक्त मनुष्य जीवन में समस्त सुख-सुविधाएं भोगता हैं।

मां महालक्ष्मी के साथ कुबेर का पूजन करने का विशेष महत्व हमारे शास्त्रों मे वर्णित हैं।

कुबेर दशो दिशाओं के दिक्पालों में से एक उत्तर दिशा के अधिपति देवता हैं। कुबेर मनुष्य कि सभी भौतिक कामनाओं को पूर्ण कर धन वैभव प्रदान करने में समर्थ देव हैं। इसलिए कुबेर कि पूजा-अर्चना से उनकी प्रसन्नता प्राप्त कर मनुष्य सभी प्रकार के वैभव(धन) प्राप्त कर लेता हैं। धन त्रयोदशी एवं दीपावली पर कुबेर कि विशेष पूजा-अर्चना कि जाती हैं जो शीघ्र फल प्रदान करने वाली मानी जाती हैं। जो मनुष्य धन प्राप्ति कि कामना करते हैं, उनके लिये प्राण-प्रतिष्ठित कुबेर यंत्र श्रेष्ठ हैं। व्यापार-धन-वैभव में वृद्धि, सुख शांति कि प्राप्ति हेतु कुबेर यंत्र श्रेष्ठ हैं।



धनतेरस, दीपावली के दिन अपने पूजा स्थान में कुबेर यंत्र स्थापित करें।

अखंडित कुबेर यंत्र स्वर्ण, रजत, ताम्र पत्र निर्मित हो, तो अति उत्तम यदि उपलब्ध न हो, तो भोजपत्र, कागज पर निर्मित कर पूजन सकते हैं।

यंत्र स्थापना विधि:

प्रात:काल स्नानादि से निवृत होकर उत्तर-पूर्व कि और मुख करके स्वच्छ आसन पर बैठें। अपने सामने पूजन सामग्री एवं माला व अखंडित कुबेर यंत्र को एक लकडी कि चोकी (बाजोट) पर रख दें। सर्व प्रथम आचमन प्राणायाम करके संकल्पपूर्वक गणेशाधि देवताओं का ध्यान करके उनका पूजन करें, फिर किसी ताम्र पात्र में कुबेर यंत्र को रखकर कुबेर का ध्यान करें।

ध्यान मंत्र

मनुजवाह्य विमानवरस्थितं गुरूडरत्नानिभं निधिनाकम्। शिव संख युकुतादिवि भूषित वरगदे दध गतं भजतान्दलम्।।

ध्यान के पश्चयात नीचे दिये मंत्र में से किसी एक मंत्र का 1,3,5,7,11,21 माला यथाशक्ति माला जप करें।

कुबेर मंत्र-

अष्टाक्षर मंत्र- *ॐ वैश्रवणाय स्वाहा:*

षोडशाक्षर मंत्र- *ॐ श्री ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नम:।*

पंच त्रिंशदक्षर मंत्र- *ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन धान्याधिपतये धनधान्यासमृद्धि दोहि द्रापय स्वाहा।*

मंत्र जप समाप्ती के पश्चयात यंत्र को अपने पूजन स्थान में स्थापीत करके प्रतिदिन धूप-दीप इत्यादी से पूजन कर प्रतिदिन संभव होतो कम से कम एक माला जप करें। प्रतिदिन जप करने से अधिक लाभ प्राप्त होता हैं।

कुबेर अष्टलक्ष्मी **मंत्र-** *ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं कुबेराय अष्ट-लक्ष्मी मम गृहे धनं पुरय पुरय नम:॥*

धन वर्षाने वाली सात दुर्लभ लक्ष्मी साधनाएं

संकलन गुरुत्व कार्यालय

धन वर्षा का अर्थ यहां आसमान से धन की बारिश होना नहीं हैं। धन वर्षा का अर्थ यहां जीवन से धन अभाव को दूर करना मात्र हैं। अतः बुद्धिजीवी पाठकों से निवेदन हैं की अपनी बुद्धि विवेक से इस अर्थ के गूढ रहस्य को समझने का प्रयास करें। सच्चे धन की प्राप्ति मनुष्य को केवल पुरुषार्थ और पूर्ण परिश्रम से ही संभव हैं।

विद्वानों के मतानुसार की बिना परिश्रम से प्राप्त धन स्थिर नहीं रहता। धन की प्राप्ति किसी चमत्कार से नहीं होती, धन की प्राप्ति केवल परिश्रम से होती हैं। शास्त्रोक्त वर्णित उपायों से मनुष द्वारा किये गये परिश्रम के फल में वृद्धि संभव हैं। इन उपायों का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को होने वाले लाभ की प्राप्ति में आने वाले विघ्न-बाधा एवं रुकावटों को दूर करना एवं लाभ के फल में वृद्धि करना हैं।

धन लक्ष्मी साधना



साधना हेतु सामग्री:-

माला: कमलगट्टे की या स्फटिक की

दिशा: उत्तर | आसन: पीला | वस्त्र: पीला

प्रसाद: दूध से बने प्रसाद का भोग लगाये

मंत्र:–

ॐ श्रीं श्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मी आगच्छ आगच्छ ममंदे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ||

Om Shreem Shreem Kleem Shreem Lakshmi Aagachchha Aagachchha Mamamande Tishtha Tishtha Swaha

विधि:–

- यह साधना किसी भी शुक्रवार को शुरू कि जा सकती हैं, उक्त मंत्र का 11 माला जप 43 दिन तक करने से मंत्र सिद्ध होता है, लेकिन यदि अक्षय तृतीया, धन तेरस और दीपावली आदी शुभ मुहूर्त होत तो इसे 21 दिन करके सिद्ध कर सकते हैं।
- साधना हेतु संध्या 7 बजे से रात 10 बजे तक का समय श्रेष्ठ होता हैं। यदि समय के अनुकूलता नहो तो अपनी सुविधानुसार समय चून सकते हैं।
- पूजन के समय शुद्ध घी का दिपक जलाये जो साधना पूर्ण होने तक जलता रहे और सुगंधित अगरवती जलाये रखे।
- देवी लक्ष्मी जी को भोग में खीर या घर में बनी मिठाई का भोग लगाये।
- श्री गणेश जी और अपने गुरुदेव का स्मरण कर साधना में सफलता की कामना करते हुवे साधना करें।
- साधना की समाप्ति वाले दिन मंत्र का 11 माला अर्थात(1188) बार हवन करें, हवन में घी की आहुती दे। यदि किसी कारण से आहुति देने में असमर्थ हो तो आहुति की संख्या से दोगुना मंत्रजाप सम्प्पन कर सकते हैं।
- इस लक्ष्मी साधना के प्रभाव से व्यक्ति के पास किसी ना किसी माध्यम से धन आने लगता हैं। यह संभव नहीं की इस साधना के बाद भी व्यक्ति निर्धन रहें।

आर्थिक लाभ एवं कार्यसिद्धि हेतु लक्ष्मी मंत्र साधना

साधना हेतु सामग्री:

माला: स्फटिक की

दिशा: उत्तर या पूर्व

आसन: पीला

वस्त्र: सफ़ेद

प्रसाद: फल



मंत्र:

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हं सौ जगत्प्रसूत्यै नमः।

Om Aim Hreem Shreem Kleem Ham Sou Jagatprasootyai Namah

विधि:

- प्रातःकाल स्नानइत्यादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर पीले आसन पर बैठ जाये। लक्ष्मीजी के चित्र या मूर्ति को एक लकड़ी के चौकी पर रखदे।
- लक्ष्मीजी को धूप-दीप इत्यादि से विधिवत पूजन करें, साधन काल में धूप-दीप चालु रखें। पीले या स्वेत फूल लक्ष्मीजी को अर्पित करें। यदि संभव हो तो एक फल भी लक्ष्मीजी को अर्पित करें।
- फिर उपरोक्त मंत्र की 10 या 20 माला जाप करें। मंत्र की सिद्धि हेतु कुल 25000 जाप करें।
- मंत्र जाप पूर्ण होने के पश्चयात प्रतिदिन 1 माला जप जरे। इस साधना को करने से साधक को धनलाभ होता हैं और इच्छित कार्य में सफलता प्राप्त होति हैं (यदि अनुकूलता होतो प्रतिदिन 1000, 3000 या 5000 जाप भी कर सकते हैं।
- जाप जितना अधिक होगा उतना अधिक लाभ मिलेगा। मंत्र सिद्धि 25000 जाप पूर्ण होने के पश्चयात प्रतिदिन नियम से एक निश्चित मात्रा में ही जाप करें, जप संख्या को कम या अधिक करने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ग्रहण काल, दीपावली, होली, अक्ष्यतृतिया आदि अबूझ मुहूर्त मुहूर्त पर अधिक फल प्राप्ति हेतु एवं मंत्र के प्रभाव को बढ़ाने हेतु अधिक मात्रा में जप किया जा सकता हैं, क्योकि, प्रतिदिन किये जारहे मंत्र जप कि अपेक्षा इन अवसरों पर प्रतिकूल परिणामों की संभावना नहीं होती इस लिये इन अवसरों पर जप अधिक संख्या में किये जा सकते हैं।

अनुभूत महालक्ष्मी मंत्र साधना

साधना हेतु सामग्री:

मालाः कमल गट्टेकी या स्फटिक की
दिशाः उत्तर या पूर्व
आसनः पीला
वस्त्रः सफ़ेद
प्रसादः फल या मिश्री

मंत्र:

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

Om Shreem Hreem ShreeM Kamale Kamalalaye Praseeda Praseeda Shreem Hreem Om Mahalakshmyai Namah



विधि:

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से (या ग्रहण काल, दीपावली, होली, अक्ष्यतृतिया आदि किसी शुभ मुहूर्त) से मंत्र जाप शुरु करें। और एक मास में सवा लाख मंत्र जाप पूर्ण करें। फिर उपरोक्त मंत्र की प्रतिदिन 1 माला जप करें। इस साधना से अत्याधिक धन लाभ होने के योग बनने लगते हैं। लक्ष्मीजी को धूप-दीप इत्यादि से विधिवत पूजन करें, साधन के समय में धूप-दीप चालु रखें। सुगंधित फूल लक्ष्मीजी को अर्पित करें। यदि संभव हो तो एक फल या मिश्री भी लक्ष्मीजी को अर्पित करें। मंत्र जाप पूर्ण होने से पहले ही साधक को आर्थिक लाभ मिलना शुरु हो जाता हैं, इस में जरा भी संदेह नहीं हैं।

शीघ्र फलदायी लक्ष्मी मंत्र साधना

साधना हेतु सामग्री:

मालाः स्फटिक की
दिशाः उत्तर या पूर्व
आसनः पीला
वस्त्रः सफ़ेद

मंत्र:

ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मी महालक्ष्मीं सर्व काम प्रदे सर्व सौभाग्यदायिनी अभिमंत्र प्रयच्छ सर्व सर्वगते सुरुपे सर्वदुर्जय विमोचिनी ह्रीं सः स्वाहा।

Om Hreem Shreem Lakshmi Mahalakshmim Sarv Kam Prade Sarv Soubhagyadaayinee Abhimantra Prayachchha Sarv Sarvagate Surupe Sarvdurjaya Vimochini Hreem Sah Swaha

विधि:

प्रतिदिन नियमित समय पर मंत्र जप करें। लकड़ी की चौकी पर लक्ष्मीजी का चित्र स्थापित कर उसका धूप-दीप इत्यादि से विधिवत पूजन करें, साधन के समय में धूप-दीप चालु रखें। सुगंधित फूल लक्ष्मीजी को अर्पित करें। 20 दिन में एक लाख जाप पूर्ण करें। जाप पूर्ण होने के पश्चयात प्रतिदिन 1 माला जाप करें। इस साधना से साधन की आर्थिक स्थिति में सुधार होने लगता हैं, और उसे माँ लक्ष्मी की कृपा से सुख-संपत्ति और वैभव की प्राप्ति होती हैं।

चिंता मणि लक्ष्मी साधना

साधना हेतु सामग्री:

माला: स्फटिक की

दिशा: पश्चिम

आसन: पीला

वस्त्र: सफ़ेद

प्रसाद: दूध से बने प्रसाद का भोग लगाये

मंत्र:

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी मम ग्रहम् धनपूर चिंता दूर दूर सवाहा !

Om Hreem Shreem Shreem, Shreem, Shreem Shreem Shreem Shreem Lakshmi Mam Graham Dhanpur Chinta Door Door Swaha

विधि:

- श्री गणेश जी और अपने गुरुदेव का स्मरण कर साधना में सफलता की कामना करते हुवे साधना करें। ग्रहण काल, दीपावली, होली, अक्ष्यतृतिया आदि अबूझ मुहूर्त में देवी लक्ष्मी का धूप-दिप आदि से पूजन कर इस मंत्र को 108 बार जप करके सिद्ध कर ले।
- फिर जब कोई महत्वपूर्ण व्यवसायीक कार्य करना हो तो तब उक्त मंत्र का पुनः 108 बार जप करके कार्य स्थल पर जाने से व्यापार आदि महत्वपूर्ण कार्यों में बढ़ोतरी एवं अत्याधिक लाभ की प्राप्ति होती हैं।
- लक्ष्मी प्राप्ति के एकाधिक स्तोत्र बनने लगेंगे और यदि कोई बेरोजगार हो व्यक्ति को आमदनी का कोई साधन नजर नहीं आ रहा हो तो भी इस मंत्र को सिद्ध कर सकता हैं और सिद्ध करने के पश्चयात 11 दिन 108 बार जप करने से व्यक्ति को उत्तम रोजगार की प्राप्ति के योग बनने लगते है।
- यदि परिवार में कोई न कोई कमी रहती हैं या घर की प्रगति या उन्नति के मार्ग प्रसस्त नहीं हो पारहे हो या अत्याधिक कर्ज सर पर चढ़ गया हो तो भी इस मंत्र को सिद्ध कर सकते हैं।
- यदि अबूझ मुहूर्त के आने से पहले इस मंत्र को सिद्ध करने की आवश्यक्ता या इच्छा हो तो इस मंत्र का जाप 11 दिन तक 108 वार हर रोज जपने से भी मंत्र सिद्ध होता है।

ऋद्धि-सिद्धि प्रद पद्मावती साधना



साधना हेतु सामग्री: केसर,

यंत्र: मंत्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठित श्री यंत्र

माला: कमल गट्टेकी या स्फटिक की

दिशा: उत्तर

आसन: सफ़ेद

वस्त्र: सफ़ेद

मंत्र:

ॐ पद्मावती पद्मनेत्रे लक्ष्मीदायिनी सर्व कार्य सिद्धि
करि करि ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावत्यै नमः।

Om Padmavati Padmanetre Lakshmidayinee Sarv Karya Siddhi
Kari Kari Om Hreem Shreem Padmavatyai Namah

विधि:

किसी भी बुधवार से मंत्र जाप प्रारंभ करें। लकड़ी की चौकी पर सफेद वस्त बिछा कर उस पर मंत्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठित श्री यंत्र को स्थापित करें। यंत्र को शुद्ध जल से स्नान कराके, उसपर केसर लगाये, उसका धूप-दीप इत्यादि से विधिवत पूजन करें, साधन के समय में धूप-दीप चालु रखें।

उक्त मंत्र का 5 या 11 दिनों में सवा लाख जप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता हैं। मंत्र जाप पूर्ण होने पर कुंवारी कन्याओं को भोजन कराये, यथा शक्ति सामर्थ्य के अनुसार भेट में वस्त्र इत्यादि दें। फिर उस यंत्र को अगले दिन अपने व्यवसायेक प्रतिष्ठान या तिजोरी, कैश बोक्स या पूजा स्थान में स्थापित करदे इससे व्यवसाये मेम विद्धि होती हैं, समाज में चारों और साधन का यध कीर्ति चरों और फैलने लगती हैं। साधन दिन प्रति-दिन समृद्ध होता जाता हैं। जब तक यंत्र साधन के पास रहेगा तब-तब उसे जीवन में किसी चिज की कमी नहीं होगी।

लक्ष्मी प्राप्ति हेतु घंटाकर्ण महाविर साधना



साधना हेतु सामग्री: केसर, चंदन, वासकेप, गुलाब फूल

यंत्र: श्री घंटाकर्ण महाविर यंत्र अथवा घंटाकर्ण महाविर पताका यंत्र(यदि यंत्र की सामर्थ्यता न हो तो घंटाकर्ण महाविर जी का चित्र स्थापित करलें।)

माला: मूंगे की

दिशा: उत्तर

आसन: पीला

वस्त्र: लाल पीतांबर

मंत्र:

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ठं ॐ घण्टाकर्ण महावीर लक्ष्मी
पूरय पूरय सुख सौभाग्य कुरु कुरु स्वाहा।

Om Hreem Shreem Kleem Thah Om Ghantakarna Mahaveer Lakshmi
Pooray Pooray Sukha Soubhagya Kuru Kuru Swaha

विधि:

यह साधना यदि दीपावली में धन त्रयोदशी से आरंभ की जाये तो श्रेष्ठ हैं यदि अन्य काल में शुरु करनी पड़ेतो किसी भी गुरुवार से इसे आरंभ कर सकते हैं।

धन त्रयोदशी (धनतेरस) के दिन उक्त मंत्र की 40 माला, रुप चतुर्दशी (अर्थात नरकहरा चतुर्दशी, नरका चौदस, काली चतुर्दशी, काळीचौदस,) को 42, दीपावली के दिन 43, माला जाप करें। यदि अन्य दिन से आरंभ कर रहे हो तो गुरुवार को 40, शुक्र वार को 42 और शनिवार को 43 माला मंत्र जप करें। लकड़ी की चौकी पर सफेद वस्त बिछा कर उस पर मंत्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठित श्री घंटाकर्ण महाविर यंत्र या चित्र को स्थापित करें। शुद्ध चंदन और केसर का सुखा मिश्रण (वासकेप) छिड़के, यदि यह द्रव्य अप्राप्त हो तो अष्टगंध छिड़के(नोट:द्रव्य केवल सुखा छिड़के श्री घंटाकर्ण महाविर के पूजन में जल मिश्रित घोल का प्रयोग न करें।), उसका धूप-दीप (शुद्ध चंदन धूप का प्रयोग श्रेष्ठ)इत्यादि से विधिवत पूजन करें, साधन के समय में धूप-दीप चालू रखें। सुगंधित देशी लाल गुलाब फूल के प्राप्त हो जाये तो लगाये अन्यथा पीला, सफेद, गुलाबी रंग का गुलाब भी लागा सकते हैं। फिर श्री घंटाकर्ण महाविर के उपरोक्त मंत्र का पूर्ण श्रद्ध एवं निष्ठा से जाप करें। साधना पूर्ण होने पर श्री घंटाकर्ण महाविर प्रसन्न होते हैं शीध्र ही साधक को लक्ष्मी की प्राप्ति के योग बनने लगते हैं। साधना संपन्न होने पर प्रतिदिन उक्त मंत्र कि 1 माला जप करें।

विशेष नोट: श्री घंटाकर्ण महाविर का पूजन करने वाले साधको हेतु मासं-मदिरा, कुसंग इत्यादि निषेध हैं। अतः मांस-मछली, शराब इत्यादि का सेवन करने वाले व्यक्ति कृप्या यह प्रयोग न करें। अन्यथा श्री घंटाकर्ण महाविर के प्रकोप से साधना का प्रतिकूल परिणाम संभव हैं। श्री घंटाकर्ण महाविर इस कलियुग में शीघ्र प्रसन्न होने वाले साक्षात देव हैं, इस मे जराभी संदेह नहीं हैं। इस साधना के पश्चयात मासं-मदिरा, परस्त्री-पुरुष इत्यादिका सेवन करने पर साधन द्वारा सिद्ध किया गया मंत्र प्रभाव हीन हो जाता हैं।

कर्ज से होना हैं मुक्त तो कभी न ले मंगल वार को कर्ज

संकलन गुरुत्व कार्यालय

आज के आधुनिक युग में ऋण अमिर-मध्यम-गरीव हर वर्ग कि हैं। आज ज्यादातर व्यक्ति कर्ज के मक्कड़ जाल में उलझा हुआ हैं। आज कोई व्यक्ति धन उधार देकर रोते हुवे मिलता हैं तो कोई धन लेकर पछता ते हुवे आसानी से मिलता हैं। 10-20 वर्ष पहले किसी से कर्जा लेने के लिए रिस्तेदर-मित्र-साहुकार को ढेरों मिन्नतें करनी होती थीं पर अब समय बदल गया हैं गली-गली उधार देने के लिये बैंक वाले लोन/क्रेडिट कार्ड देते फिरते रहते हैं।

भरतीय ज्योतिष में कर्ज के लेन-देन से संबंधी इन समस्याओं से दूर रहने के उपाय बतलाये हैं। ज्योतिष के विशेष नियमो को अपना कर जीवन में कर्ज से संबंधित समस्याओं को अपने अनुकूल बनाया जा सकता हैं, व्यवसाय से जुडे लोगो को व्यवसाय से संबंधित लेनदेन तो रोज करने पडते हैं। एसे लोग यदि ज्योतिष के सिद्धांतो को अपना ने धन से संबंधितत लेन-देन अच्छा होता हैं।

लेनदेन के बडे भुगतान हेतु समय अवधि को ध्यान में रखते हुवे अग्रिम एवं पश्चयात भुगतान किया जाये तो विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

लेन-देन हेतु मुख्य नियम हैं।

ऋणे भौमे न ग्रहीयात, न देयम् बुधवासरे।
ऋणच्छेदनम् भौमे कुर्यात्, संचये सोम नंदने॥

अर्थातः धन के लेनदेन हेतु मंगलवार और बुधवार ब्रडे महत्व पूर्ण हैं। मंगलवार को उधार लेना अशुभ होता हैं तथा बुधवार को उधार देना अशुभ होता हैं।

कर्ज लेने कि आवश्यकता प्रड जाये तो मंगलवार को कभी कर्ज नहीं लेना चाहिये। मंगलवार को लिये उधार को चुकाने में ब्रडी कठिनाई आती हैं। कर्ज देने कि आवश्यकता प्रड जाये तो बुधवार को कर्ज नहीं देना चाहिये बुधवार को दिये गये कर्ज को प्राप्त करने में कठिनाई आती हैं।

यह ज्योतिष का एक सरल नियम हैं जो सरलता से याद रखा जा सकता हैं और दैनिक जीवन में उपयोग किया जा सकता हैं।

ज्योतिष मत से मंगलवार ऋण चुकाने के लिए श्रेष्ठ हैं। बुधवार धन संचय(सेविंग) के सर्व श्रेष्ठ दिन हैं। बुधवार को बैंक में धन जमा करना, फ़िक्स डिपोजीट इत्यादि हेतु श्रेष्ठ हैं।

यदि कर्ज लेने कि जरूरत होतो मंगलवार, सूर्य संक्रांति का दिन, वृद्धि योग, जिस रविवार को हस्त नक्षत्र हो, इन संयोग पर चाहे कितनी ही ब्रडी जरूरत हो इन दिनों में ऋण कभी नहीं लेना चाहिये, ऋण लेना अगले दिन पर टाल दें।

यदि कर्ज देने कि जरूरत होतो बुधवार, कृत्तिका, रोहिणी, आर्द्रा, आश्लेषा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद नक्षत्रों में, भद्रा, व्यतिपात और अमावस्या के संयोग पर दिया गया धन कभी वापस प्राप्त नहीं होता या धन प्राप्त करने में अत्याधिक कठिनाईया आती हैं। , धन प्राप्ति हेतु कोर्ट-केश, झग़डे इत्यादिके उपरांत भी धान प्राप्त नहीं होता। हमने अपने अनुभवो में इस संयोग पर धन लेने और धन देने वाले दोनो को परेशानीयां झेलते देखा गया हैं। इस संयोग पर धन लेने वाले का धन टिकता नहीं एवं उस्की आर्थिक स्थिती धन चुकाने लायक नहीं रहजाती। उसे कर्ज चुकाने हेतु और कर्ज लेने कि नौबत आन पड़ती हैं। इन सिद्धांतों को अपना कर जीवन में अपनाने से बहुत छोटे-ब्रडे विवादों से आसानी से बचा जा सकता हैं।

क्योकि आज के समय में विषम परिस्थितियों में भी जिसका लेनदेन अच्छा होता हैं, उसका समाज में अच्छा प्रभाव बन जाता हैं। इन नियमों को अपनाकर साधारण व्यक्ति भी असाधारण लाभ प्राप्त कर सकता हैं।

यदि धन का कहीं निवेश (जमीन-जायदाद, शेरमार्केट, इन्स्योरेंस, सोना, चांदि, विदेशी मुद्रा, इत्यादी) में करना हो तो मंगलवार और बुधवार के अतिरिक्त अन्य वारों का चुनाव करें। इसके अतिरिक्त पुनर्वसु-स्वाति-मृगशिरा-रेवती-चित्रा-अनुराधा-विशाखा-पुष्य-श्रवण-धनिष्ठा-शतभिषा और अश्विनी नक्षत्रों में किया गया निवेश शुभ रहता हैं। निवेश चर (मेष-कर्क-तुला-मकर) लग्नो में करना उत्तम होता हैं। निवेश करने से पूर्व यह देख ले कि लग्न से 8वें भाव में कोई ग्रह न हो, इस समय में किया गया पूंजि निवेश धन को बढ़ाता हैं।

जब इन्द्र मां लक्ष्मी को स्वर्ग लोक ले गए।

संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक बार की बात है, राजा बलि समय बिताने के लिए एकान्त स्थान पर गधे का वेश लेकर छिपे हुए थे। देवराज इन्द्र उनसे मिलने के लिए जगह-जगह उन्हें ढूँढ रहे थे।

एक दिन इन्द्र ने उन्हें खोज निकाला और उनके छिपने का कारण जानकर उन्हें काल का महत्व बताकर उन्हें तत्वज्ञान का बोध कराया।

तभी राजा बलि के शरीर से एक दिव्य तेज वाली स्त्री निकली। उसे देखकर इन्द्र ने पूछा दैत्यराज! यह स्त्री कौन है? यह देवी, मानुष्य अथवा आसुरी शक्ति में से कौन-सी शक्ति है?" राजा बलि बोले-"देवराज! ये देवी तीनों शक्तियों में से कोई नहीं हैं।

आप स्वयं इनसे पूछ लें। इन्द्र के पूछने पर वे शक्ति बोलीं देवेन्द्र! मुझे न तो दैत्यराज बलि जानते हैं और न ही तुम या कोई अन्य देवगण। पृथ्वी लोक पर लोग मुझे आदिकाल से अनेक नामों से पुकारते हैं। श्री, लक्ष्मी आदि मेरे नाम हैं। इन्द्र बोले देवी! आप इतने समय से राजा बलि के पास हैं लेकिन ऐसा क्या कारण है कि आप राजा बलि को छोड़कर मेरी ओर आ रही हैं?

लक्ष्मी बोलीं देवेन्द्र! मुझे मेरे स्थान से कोई भी हटा या डिगा नहीं सकता है। मैं सभी के पास काल के अनुसार आती-जाती रहती हूँ। जैसा काल का प्रभाव होता है मैं उतने ही समय तक उसके पास रहती हूँ। मैं समय के अनुसार एक को छोड़कर दूसरे के पास निवास करती हूँ।"

इन्द्र बोले देवी! आप असुरों के यहाँ निवास क्यों नहीं करतीं?" लक्ष्मी बोलीं देवेन्द्र! मेरा निवास वहीं होता है जहाँ सत्य एवं धर्म के अनुसार कार्य होते हों, व्रत और दान देने के कार्य होते हों।

असुर सत्यवादी थे, ब्राह्मणों की रक्षा करते थे, पहले इन्द्रियों को वश में कर सकते थे, अब इनके ये गुण नष्ट होते जा रहे हैं। असुर अब तप-उपवास नहीं करते, यज्ञ, हवन, दान आदि से इनका कोई संबंध शेष नहीं है।

पहले ये रोगी, स्त्रियों, वृद्धों, दुर्बलों की रक्षा करते थे, गुरुजन का आदर करते थे, लोगों को क्षमादान देते थे। लेकिन अब अहंकार, मोह, लोभ, क्रोध, आलस्य, अविवेक, काम आदि ने इनके शरीर में जगह बना ली है।

ये लोग पशु तो पाल लेते हैं लेकिन उन्हें चारा नहीं खिलाते, उनका पूरा दूध निकाल लेते हैं और पशुओं के बच्चे भूख से चीत्कारते हुए मर जाते हैं।

ये अपने बच्चों का लालन-पालन करना भूलते जा रहे हैं। इनमें आपसी भाईचारा समाप्त हो गया है। लूट, खसोट, हत्या, व्यभिचार, कलह, स्त्रियों की पतिव्रता नष्ट करना ही इनका धर्म हो गया है। सूर्योदय के बाद तक सोने के कारण स्नान-ध्यान से ये विमुख होते जा रहे हैं। इसलिए मेरा मन इनसे उचट गया।

देवताओं का मन अब धर्म में आसक्त हो रहा है। इसलिए अब मैं इन्हें छोड़कर देवताओं के पास निवास करूँगी। मेरे साथ श्रद्धा, आशा, क्षमा, जया, शान्ति, संतति, धृति और विजति ये आठों देवियाँ भी निवास करेंगी।

देवेन्द्र! अब आपको ज्ञात हो गया होगा कि मैंने इन्हें क्यों छोड़ा है। साथ ही आपको इनके अवगुणों का भी ज्ञान हो गया होगा।" तब इन्द्र ने लक्ष्मी को प्रणाम किया और उन्हें आदर सहित स्वर्ग ले गए।

सर्व ऐश्वर्य प्रद-लक्ष्मी-कवच

संकलन गुरुत्व कार्यालय

श्री मधुसूदन उवाच:-

गृहाण कवचम् शक्र सर्वदु:खविनाशनम्।
परमैश्वर्यजनकं सर्वशत्रुविमर्दनम्॥
ब्रह्मणे च पुरा दत्तम् संसारे च जलप्लुते।
यद् धृत्वा जगतां श्रेष्ठः सर्वैश्वर्ययुतो विधिः॥
बभूवुर्मनवः सर्वे सर्वैश्वर्ययुतो यतः।
सर्वैश्वर्यप्रदस्यास्य कवचस्य ऋषिर्विधि॥
पङ्क्तिश्छन्दश्च सा देवी स्वय पद्मालया सुर।
सिद्धैश्वर्यजपेष्वेव विनियोगः प्रकीर्तित॥
यद् धृत्वा कवचं लोकः सर्वत्र विजयी भवेत्॥

मूल कवच पाठ:

मस्तकम् पातु मे पद्मा कण्ठं पातु हरिप्रिया।
नासिकाम् पातु मे लक्ष्मीः कमला पातु लोचनम्॥
केशान् केशवकान्ता च कपालम् कमलालया।
जगत्प्रसूर्गण्डयुग्मं स्कन्धं सम्पत्प्रदा सदा॥
ॐ श्रीं कमलवासिन्यै स्वाहा पृष्ठं सदावतु।
ॐ श्रीं पद्मालयायै स्वाहा वक्षः सदावतु॥
पातु श्रीर्मम कंकालं बाहुयुग्मं च ते नमः॥
ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्म्यै नमः पादौ पातु मे संततम् चिरम्।
ॐ ह्रीं श्रीं नमः पद्मायै स्वाहा पातु नितम्बकम्॥
ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै स्वाहा सर्वांगं पातु मे सदा।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै स्वाहा मां पातु सर्वतः॥
इस मंत्र के पाठ से मां महालक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है।

फलश्रुति:

इति ते कथितम् वत्स सर्वसम्पत्करम् परम्।
सर्वैश्वर्यप्रदम् नाम कवचम् परमाद्भुतम्॥
गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् कवचम् शरयेत्तु यः।
कण्ठे वा दक्षिणे बांहौ स सर्वविजयी भवेत्॥
महालक्ष्मीर्गृहम् तस्य न जहाति कदाचन।
तस्य छायेव सततम् सा च जन्मनि जन्मनि॥
इदम् कवचमज्ञात्वा भजेल्लक्ष्मीं सुमन्दधीः।
शतलक्षप्रजप्तोऽपि न मन्त्रः सिद्धिदायकः॥
॥इति श्रीब्रह्मवैवर्ते इन्द्रम् प्रति हरिणोपदिष्टम् लक्ष्मीकवचम्॥ (गणपतिखण्ड २२।५-१७)

भावार्थ:- मधुसूदन जी बोले हें इन्द्र! (लक्ष्मी-प्राप्ति के लिये) तुम यह लक्ष्मीकवच ग्रहण करो। यह समस्त दुःखों का विनाशक, परम ऐश्वर्य का उत्पादक और सम्पूर्ण शत्रुओं का मर्दन करने वाला हैं। पूर्वकाल में जब सारा संसार जलमग्न हो गया था, उस समय मैंने इसे ब्रह्मा को दिया था। जिसे धारण करके ब्रह्मा त्रिलोकी में श्रेष्ठ और सम्पूर्ण ऐश्वर्यों के भागी हुए थे। देवराज, इस सर्वैश्वर्यप्रद कवच के ब्रह्मा ऋषि हैं, पङ्क्ति छन्द हैं, स्वयं पद्मालया लक्ष्मी देवी हैं और सिद्धैश्वर्य के जपों में इसका विनियोग कहा गया हैं। इस कवच के धारण करने से लोग सर्वत्र विजयी होते हैं। पद्मावती देवी मेरे मस्तक की रक्षा करो। हरिप्रिया कण्ठ की रक्षा करो। लक्ष्मी नासिका की रक्षा करो। कमला नेत्र की रक्षा करो। केशवकान्ता केशों की, कमलालया कपाल की, जगज्जननी दोनों कपोलों की और सम्पत्प्रदा सदा स्कन्ध की रक्षा करो।

ॐ श्रीं कमलवासिन्यै स्वाहा - मेरे पृष्ठ भाग का सदा पालन करो।

ॐ श्रीं पद्मालयायै स्वाहा- वक्षःस्थल को सदा सुरक्षित रखे। श्री देवी को नमस्कार हैं आप मेरे कंकाल तथा दोनों भुजाओं को बचाये।

ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्म्यै नमः- चिरकाल तक मेरे पैरों का पालन करो।

ॐ ह्रीं श्रीं नमः पद्मायै स्वाहा - नितम्ब भाग की रक्षा करो।

ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै स्वाहा - मेरे सर्वांग की सदा रक्षा करो।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै स्वाहा

भावार्थ: सब ओर से सदा मेरा पालन करो। वत्स, इस प्रकार मैंने तुमसे इस सर्वैश्वर्यप्रद नामक परमोत्कृष्ट कवच का वर्णन कर दिया। यह परम अद्भुत कवच सम्पूर्ण सम्पत्तियों को देने वाला हैं। जो मनुष्य विधिपूर्वक गुरु कि अर्चना करके इस कवच को गले में अथवा दाहिनी भुजा पर धारण करता हैं, वह सबको जीतने वाला हो जाता हैं। महालक्ष्मी कभी उसके घर का त्याग नहीं करती; बल्कि प्रत्येक जन्म में छाया की भाँति सदा उसके साथ लगी रहती हैं। जो मन्दबुद्धि इस कवच को बिना जाने ही लक्ष्मी की भक्ति करता हैं, उसे एक करोड़ जप करने पर भी मन्त्र सिद्धिदायक नहीं होता।

महालक्ष्मी कवच

नारायण उवाच

सर्व सम्पत्प्रदस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः।
ऋषिश्छन्दश्च बृहती देवी पद्मालया स्वयम्॥१॥
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।
पुण्यबीजं च महतां कवचं परमाद्भुतम्॥२॥
ॐ ह्रीं कमलवासिन्यै स्वाहा मे पातु मस्तकम्।
श्रीं मे पातु कपालं च लोचने श्रीं श्रियै नमः॥३॥
ॐ श्रीं श्रियै स्वाहेति च कर्णयुग्मं सदावतु।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै स्वाहा मे पातु नासिकाम्॥४॥
ॐ श्रीं पद्मालयायै च स्वाहा दन्तं सदावतु।
ॐ श्रीं कृष्णप्रियायै च दन्तरन्ध्रं सदावतु॥५॥
ॐ श्रीं नारायणेशायै मम कण्ठं सदावतु।
ॐ श्रीं केशवकान्तायै मम स्कन्धं सदावतु॥६॥
ॐ श्रीं पद्मनिवासिन्यै स्वाहा नाभिं सदावतु।
ॐ ह्रीं श्रीं संसारमात्रे मम वक्षः सदावतु॥७॥
ॐ श्रीं श्रीं कृष्णकान्तायै स्वाहा पृष्ठं सदावतु।
ॐ ह्रीं श्रीं श्रियै स्वाहा मम हस्तौ सदावतु॥८॥
ॐ श्रीं निवासकान्तायै मम पादौ सदावतु।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रियै स्वाहा सर्वांगं मे सदावतु॥९॥
प्राच्यां पातु महालक्ष्मीराग्नेय्यां कमलालया।
पद्मा मां दक्षिणे पातु नैर्ऋत्यां श्रीहरिप्रिया॥१०॥
पद्मालया पश्चिमे मां वायव्यां पातु श्रीः स्वयम्।
उत्तरे कमला पातु ऐशान्यां सिन्धुकन्यका॥११॥
नारायणेशी पातूर्ध्वमधो विष्णुप्रियावतु।
संततं सर्वतः पातु विष्णुप्राणाधिका मम॥१२॥
इति ते कथितं वत्स सर्वमन्त्रौघविग्रहम्।
सर्वैश्वर्यप्रदं नाम कवचं परमाद्भुतम्॥१३॥
सुवर्णपर्वतं दत्वा मेरुतुल्यं द्विजातये।
यत् फलं लभते धर्मी कवचेन ततोऽधिकम्॥१४॥
गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् कवचं धारयेत् तु यः।
कण्ठे वा दक्षिणे वाहौ स श्रीमान् प्रतिजन्मनि॥१५॥
अस्ति लक्ष्मीर्गृहे तस्य निश्चला शतपूरुषम्।
देवेन्द्रैश्चासुरेन्द्रैश्च सोऽत्रध्यो निश्चितं भवेत्॥१६॥
स सर्वपुण्यवान् धीमान् सर्वयज्ञेषु दीक्षितः।
स स्नातः सर्वतीर्थेषु यस्येदं कवचं गले॥१७॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं लोभमोहभयैरपि।
गुरुभक्ताय शिष्याय शरणाय प्रकाशयेत्॥१८॥
इदं कवचमज्ञात्वा जपेल्लक्ष्मीं जगत्प्सूम्।
कोटिसंख्यं प्रजप्तोऽपि न मन्त्रः सोद्धिदायकः॥१९॥
(गणपतिखण्ड ३८।६४-८२)

महालक्ष्मी स्तुति

नमस्तेस्तु महामाये श्री पीठे सुरपूजिते।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मी नमोस्तु ते॥१॥
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुर भयङ्करि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तु ते॥२॥
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयङ्करि।
सर्वदु:खहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तु ते॥३॥
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्ति मुक्ति प्रदायिनि।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मी नमोस्तु ते॥४॥
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरि।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मी नमोस्तु ते॥५॥
स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तु ते॥६॥
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्म स्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मत् महालक्ष्मी नमोस्तु ते॥७॥
श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मत् महालक्ष्मी नमोस्तु ते॥८॥
महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं य: पठेद्भक्ति मान्नर:॥
सर्वसिद्धिमवापनेति राज्यम् प्रापनेति सर्वदा॥९॥
एककाले पठेन्नित्यम् महापापविनाशनम्।
द्विकालं य: पठेन्नित्यम् धनधान्यसमन्वित॥१०॥
त्रिकालं य: पठेन्नित्यम् महाशत्रुविनाशनम्।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्म् प्रसन्ना वरदा शुभा ॥११॥
॥ इति महालक्ष्मी स्तुति सम्पूर्ण ॥

भावार्थ:- इन्द्र बोले- श्रीपीठपर स्थित और देवताओं से पूजित होने वाली हे महामाये। तुम्हें नमस्कार हैं। हाथ में शङ्ख, चक्र और गदा धारण करने वाली हे महालक्ष्मी तुम्हें प्रणाम हैं॥1॥ गरुडपर आरूढ हो कोलासुर को भय देने वाली और समस्त पापों को हरने वाली हे भगवति महालक्ष्मी तुम्हें प्रणाम हैं॥2॥ सब कुछ जानने वाली, सबको वर देने वाली, समस्त दुष्टों को भय देने वाली एवं सबके दु:खों को दूर करने वाली, हे देवि महालक्ष्मी तुम्हें नमस्कार हैं॥3॥ सिद्धि, बुद्धि, भोग और मोक्ष देने वाली हे मंत्रपूत भगवति महालक्ष्मी तुम्हें सदा प्राम हैं॥4॥ हे देवि! हे आदि-अन्त-रहित आदिशक्ति ! हे महेश्वरि! हे योग से प्रकट हुई भगवति महालक्ष्मी तुम्हें नमस्कार हैं॥5॥ हे देवि! तुम स्थूल, सूक्ष्म एवं महारौद्ररूपिणी हो, महाशक्ति हो, महोदरा हो और बडे-बडे पापों का नाश करने वाली हो। हे देवि महालक्ष्मी तुम्हें नमस्कार हैं॥6॥ हे कमल के आसन पर विराजमान परब्रह्मस्वरूपिणी देवि! हे परमेश्वरि! हे जगदम्ब! हे महालक्ष्मी तुम्हें मेरा प्रणाम हैं॥7॥ हे देवि तुम श्वेत वस्त्र धारण करने वाली और नाना प्रकार के आभूषणों से विभूषिता हो। सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त एवं अखिल लोक को जन्म देने वाली हो। हे महालक्ष्मी तुम्हें मेरा प्रणाम हैं॥8॥ जो मनुष्य भक्ति युक्त होकर इस महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्र का सदा पाठ करता हैं, वह सारी सिद्धियों और राज्यवैभव को प्राप्त कर सकता हैं॥9॥ जो प्रतिदिन एक समय पाठ करता हैं, उसके बडे-बडे पापों का नाश हो जाता हैं। जो दो समय पाठ करता हैं, वह धन-धान्य से सम्पन्न होता हैं॥10॥ जो प्रतिदिन तीन काल पाठ करता हैं उसके बडे-बडे शत्रुओं का नाश हो जाता हैं और उसके ऊपर कल्याणकारिणी वरदायिनी महालक्ष्मी सदा ही प्रसन्न होती हैं॥11॥

लक्ष्मी जी के इस स्तोत्र की रचना करने वाले देवराज इन्द्र हैं।

उपरोक्त स्तुति का प्रतिदिन तीन काल पाठ करता है, शत्रुओं का नाश होता हैं एवं उसे जीवन मे सभी प्रकार के सुखो की प्राप्ति होती है ।

॥ श्रीकमलास्तोत्रम् ॥

श्री लक्ष्म्यै नमः ।
श्री शङ्कर उवाच ।
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि लक्ष्मीस्तोत्रमनुत्तमम् ।
पठनात् श्रवणाद्यस्य नरो मोक्षमावाप्नुयात् ॥१॥
गुह्याद्गुह्यतरं पुण्यं सर्वदेवनमस्कृतम् ।
सर्वमन्त्रमयं साक्षाच्छृणु पर्वतनन्दिनि ॥२ ॥
अनन्तरूपिणी लक्ष्मीरपारगुणसागरी ।
अणिमादिसिद्धिदात्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥३॥
आपदुद्धारिणी त्वं हि आद्या शक्तिः शुभा परा ।
आद्या आनन्ददात्री च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥४॥
इन्दुमुखी इष्टदात्री इष्टमन्त्रस्वरूपिणी ।
इच्छामयी जगन्मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥५॥
उमा उमापतेस्त्वन्तु ह्युत्कण्ठाकुलनाशिनी ।
उर्वीश्वरी जगन्मातर्लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥६॥
ऐरावतपतिपूज्या ऐश्वर्याणां प्रदायिनी ।
औदार्यगुणसम्पन्ना लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥७॥
कृष्णवक्षःस्थिता देवि कलिकल्मषनाशिनी ।
कृष्णचित्तहरा कर्त्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥८॥
कन्दर्पदमना देवि कल्याणी कमलानना ।
करुणार्णवसम्पूर्णा शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥९॥
खञ्जनाक्षी खञ्जनासा देवि खेदविनाशिनी ।
खञ्जरीटगतिश्चैव शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥१०॥
गोविन्दवल्लभा देवी गन्धर्वकुलपावनी ।
गोलोकवासिनी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥११॥
ज्ञानदा गुणदा देवि गुणाध्यक्षा गुणाकरी ।
गन्धपुष्पधरा मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥१२॥
घनश्यामप्रिया देवि घोरसंसारतारिणी ।
घोरपापहरा चैव शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥१३॥
चतुर्वेदमयी चिन्त्या चित्ताचैतन्यदायिनी ।
चतुराननपूज्या च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥१४॥
चैतन्यरूपिणी देवि चन्द्रकोटिसमप्रभा ।
चन्द्रार्कनखरज्योतिर्लक्ष्मि देवि नमाम्यहम् ॥१५॥
चपला चतुराध्यक्षी चरमे गतिदायिनी ।
चराचरेश्वरी लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥१६॥
छत्रचामरयुक्ता च छलचातुर्यनाशिनी ।
छिद्रौघहारिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥१७॥
जगन्माता जगत्कर्त्री जगदाधाररूपिणी ।
जयप्रदा जानकी च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥१८॥
जानकीशप्रिया त्वं हि जनकोत्सवदायिनी ।
जीवात्मनां च त्वं मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥१९॥
झिञ्जीरवस्वना देवि ञ्झावातनिवारिणी ।
झर्झरप्रियवाद्या च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥२०॥
अर्थप्रदायिनींत्वं हि त्वञ्च ठकाररूपिणी ।
ढक्कादिवाद्यप्रणया डम्फवाद्यविनोदिनी॥
डमरूप्रणया मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥२१॥
तप्तकाञ्चनवर्णाभा त्रैलोक्यलोकतारिणी ।
त्रिलोकजननी लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥२२॥
त्रिलोक्यसुन्दरी त्वं हि तापत्रयनिवारिणी ।
त्रिगुणधारिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥२३॥
त्रैलोक्यमङ्गला त्वं हि तीर्थमूलपदद्वया ।
त्रिकालज्ञा त्राणकर्त्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥२४॥
दुर्गतिनाशिनी त्वं हि दारिद्र्यापद्विनाशिनी ।
द्वारकावासिनी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥२५॥
देवतानां दुराराध्या दुःखशोकविनाशिनी ।
दिव्याभरणभूषाङ्गी शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥२६॥
दामोदरप्रिया त्वं हि दिव्ययोगप्रदर्शिनी ।
दयामयी दयाध्यक्षी शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥२७॥
ध्यानातीता धराध्यक्षा धनधान्यप्रदायिनी ।
धर्मदा धैर्यदा मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥२८॥
नवगोरोचना गौरी नन्दनन्दनगेहिनी ।
नवयौवनचार्वङ्गी शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥२९॥
नानारत्नादिभूषाढ्या नानारत्नप्रदायिनी ।
नितम्बिनी नलिनाक्षी लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥३०॥
निधुवनप्रेमानन्दा निराश्रयगतिप्रदा ।
निर्विकारा नित्यरूपा लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥३१॥
पूर्णानन्दमयी त्वं हि पूर्णब्रह्मसनातनी ।
परा शक्तिः परा भक्तिर्लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥३२॥
पूर्णचन्द्रमुखी त्वं हि परानन्दप्रदायिनी ।
परमार्थप्रदा लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥३३॥
पुण्डरीकाक्षिणी त्वं हि पुण्डरीकाक्षगेहिनी ।

पद्मरागधरा त्वं हि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥३४॥
पद्मा पद्मासना त्वं हि पद्ममालाविधारिणी ।
प्रणवरूपिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥३५॥
फुल्लेन्दुवदना त्वं हि फणिवेणिविमोहिनी ।
फणिशायिप्रिया मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥३६॥
विश्वकर्त्री विश्वभर्त्री विश्वत्रात्री विश्वेश्वरी ।
विश्वाराध्या विश्वबाह्या लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥३७॥
विष्णुप्रिया विष्णुशक्तिर्बीजमन्त्रस्वरूपिणी ।
वरदा वाक्यसिद्धा च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥३८॥
वेणुवाद्यप्रिया त्वं हि वंशीवाद्यविनोदिनी ।
विद्युद्गौरी महादेवि लक्ष्मी देवि नमोऽस्तु ते ॥३९॥
भुक्तिमुक्तिप्रदा त्वं हि भक्तानुग्रहकारिणी ।
भवार्णवत्राणकर्त्री लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥४०॥
भक्तप्रिया भागीरथी भक्तमङ्गलदायिनी ।
भयादा भयदात्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥४१॥
मनोऽभीष्टप्रदा त्वं हि महामोहविनाशिनी ।
मोक्षदा मानदात्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥४२॥
महाधन्या महामान्या माधवस्यात्ममोहिनी ।
मुखराप्राणहन्त्री च लक्ष्मि देवि नमोऽतु ते ॥४३॥
यौवनपूर्णसौन्दर्या योगमाया तथेश्वरी ।
युग्मश्रीफलवृक्षा च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥४४॥
युग्माङ्गदविभूषाढ्या युवतीनां शिरोमणिः ।
यशोदासुतपत्नी च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥४५ ॥
रूपयौवनसम्पन्ना रत्नालङ्कारधारिणी ।
राकेन्दुकोटिसौन्दर्या लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥४६॥
रमा रामा रामपत्नी राजराजेश्वरी तथा ।
राज्यदा राज्यहन्त्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥४७॥
लीलालावण्यसम्पन्ना लोकानुग्रहकारिणी ।
ललना प्रीतिदात्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥४८॥
विद्याधरी तथा विद्या वसुदा त्वन्तु वन्दिता ।
विन्ध्याचलवासिनी च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥४९॥
शुभकाञ्चनगौराङ्गी शङ्खकङ्कणधारिणी ।
शुभदा शीलसम्पन्ना लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥५०॥
षट्चक्रभेदिनी त्वं हि षडैश्वर्यप्रदायिनी ।
षोडशी वयसा त्वन्तु लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥५१॥
सदानन्दमयी त्वं हि सर्वसम्पत्तिदायिनी ।
संसारतारिणी देवि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥५२॥
सुकेशी सुखदा देवि सुन्दरी सुमनोरमा ।
सुरेश्वरी सिद्धिदात्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥५३॥
सर्वसङ्कटहन्त्री त्वं सत्यसत्त्वगुणान्विता ।
सीतापतिप्रिया देवि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥५४॥
हेमाङ्गिनी हास्यमुखी हरिचित्तविमोहिनी ।
हरिपादप्रिया देवि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥५५॥
क्षेमङ्करी क्षमादात्री क्षौमवासोविधारिणी ।
क्षीणमध्या च क्षेत्राङ्गी लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥५६॥

॥फलश्रुति ॥

श्री शङ्कर उवाच ।

अकारादि क्षकारान्तं लक्ष्मीदेव्याः स्तवं शुभम् ।
पठितव्यं प्रयत्नेन त्रिसन्ध्यञ्च दिने दिने ॥ ५७॥
पूजनीया प्रयत्नेन कमला करुणामयी ।
वाञ्छाकल्पलता साक्षाद्भुक्तिमुक्ति प्रदायिनी ॥५८॥
इदं स्तोत्रं पठेद्यस्तु शृणुयात् श्रावयेदपि ।
इष्टसिद्धिर्भवेत्तस्य सत्यं सत्यं हि पार्वति ॥५९॥
इदं स्तोत्रं महापुण्यं यः पठेद्भक्तिसंयुतः ।
तञ्च दृष्ट्वा भवेन्मूको वादी सत्यं न संशयः ॥६०॥
शृणुयाच्छ्रावयेद्यस्तु पठेद्वा पाठयेदपि ।
राजानो वशमायान्ति तं दृष्ट्वा गिरिनन्दिनि ॥६१॥
तं दृष्ट्वा दुष्टसङ्घाश्च पलायन्ते दिशो दश ।
भूतप्रेतग्रहा यक्षा राक्षसाः पन्नगादयः॥
विद्रवन्ति भयार्ता वै स्तोत्रस्यापि च कीर्तनात् ॥६२॥
सुराश्च ह्यसुराश्चैव गन्धर्वकिन्नरादयः ।
प्रणमन्ति सदा भक्त्या तं दृष्ट्वा पाठकं मुदा ॥६३॥
धनार्थी लभते चार्थं पुत्रार्थी च सुतं लभेत् ।
राज्यार्थी लभते राज्यं स्तवराजस्य कीर्तनात् ॥६४॥
ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः ।
महापापोपपापञ्च तरन्ति स्तवकीर्तनात् ॥६५॥
गद्यपद्यमयी वाणी मुखात्तस्य प्रजायते ।
अष्टसिद्धिमवाप्नोति लक्ष्मीस्तोत्रस्य कीर्तनात् ॥६६॥
वन्ध्या चापि लभेत् पुत्रं गर्भिणी प्रसवेत्सुतम् ।
पठनात्स्मरणात् सत्यं वच्मि ते गिरिनन्दिनि ॥६७॥
भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनाकुङ्कुमेन तु ।
भक्त्या सम्पूजयेद्यस्तु गन्धपुष्पाक्षतैस्तथा ॥६८॥
धारयेद्दक्षिणे बाहौ पुरुषः सिद्धिकाङ्क्षया ।
योषिद्वामभुजे धृत्वा सर्वसौख्यमयी भवेत् ॥६९॥

विषं निर्विषतां याति अग्निर्याति च शीतताम् ।
शत्रवो मित्रतां यान्ति स्तवस्यास्य प्रसादतः ॥७०॥
बहुना किमिहोक्तेन स्तवस्यास्य प्रसादतः ।
वैकुण्ठे च वसेन्नित्यं सत्यं वच्मि सुरेश्वरि ॥७१॥
॥अथ लक्ष्मीकवच॥
लक्ष्मीर्मे चाग्रतः पातु कमला पातु पृष्ठतः ।
नारायणी शीर्षदेशे सर्वाङ्गे श्रीस्वरूपिणी ॥७२॥
रामपत्नी प्रत्यङ्गे तु सदावतु रमेश्वरी ।
विशालाक्षी योगमाया कौमारी चक्रिणी तथा ॥७३॥
जयदात्री धनदात्री पाशाक्षमालिनी शुभा ।
हरिप्रिया हरिरामा जयङ्करी महोदरी ॥७४॥
कृष्णपरायणा देवी श्रीकृष्णमनोमोहिनी॥
जयङ्करी महारौद्री सिद्धिदात्री शुभङ्करी ॥७५॥
सुखदा मोक्षदा देवी चित्रकूटवासिनी ।
भयं हरेत्सदा पायाद् भवबन्धाद्विमोचयेत् ॥७६॥
कवचन्तु महापुण्यं यः पठेत् भक्तिसंयुतः ।
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा मुच्यते सर्वसङ्कटात् ॥७७॥
पठनं कवचस्यास्य पुत्रधनविवर्धनम् ।
भीतिविनाशनञ्चैव त्रिषु लोकेषु कीर्तितम् ॥७८॥
भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनाकुङ्कुमेन तु ।
धारणाद्गलदेशे च सर्वसिद्धिर्भविष्यति ॥७९॥
अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम् ।
मोक्षार्थी मोक्षमाप्नोति कवचस्य प्रसादतः ॥८०॥

गर्भिणी लभते पुत्रं वन्ध्या च गर्भिणी भवेत् ।
धारयेद्यदि कण्ठे च अथवा वामबाहुके ॥८१॥
यः पठेन्नियतो भक्त्या स एव विष्णुवद्भवेत् ।
मृत्युव्याधिभयं तस्य नास्ति किञ्चिन्महीतले ॥८२॥
पठेद्वा पाठयेद्वापि शृणुयाच्छ्रावयेदपि ।
सर्वपापविमुक्तस्तु लभते परमां गतिम् ॥८३॥
विपदि सङ्कटे घोरे तथा च गहने वने ।
राजद्वारे च नौकायां तथा च रणमध्यतः ।
पठनाद्धारणाद्यस्य जयमाप्नोति निश्चितम् ॥८४॥
अपुत्रा च तथा वन्ध्या त्रिपक्षं शृणुयादपि ।
सुपुत्रं लभते सा तु दीर्घायुष्यं यशस्विनम् ॥८५॥
शृणुयाद्यः शुद्धबुद्ध्या द्वौ मासौ विप्रवक्रतः ।
सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वबन्धाद्विमुच्यते ॥८६॥
मृतवत्सा जीववत्सा त्रिमासं शृणुयाद्यदि ।
रोगी रोगाद्विमुच्येत पठनान्मासमध्यतः ॥८७॥
लिखित्वा भूर्जपत्रे च ह्यथवा ताडपत्रके ।
स्थापयेन्नियतं गेहे नाग्निचौरभयं क्वचित् ॥८८॥
शृणुयाद्धारयेद्वापि पठेद्वा पाठयेदपि ।
यः पुमान्सततं तस्मिन्प्रसन्ना सर्व देवताः ॥८९॥
बहुना किमिहोक्तेन सर्वजीवेश्वरेश्वरी ।
आद्या शक्तिः सदा लक्ष्मीर्भक्तानुग्रहकारिणी ।
धारके पाठके चैव निश्चला निवसेद् ध्रुवम् ॥९०॥
॥इति श्रीकमला स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥श्री लक्ष्मी सहस्रनामस्तोत्रम् ॥

श्रीस्कन्दपुराणे सनत्कुमारसंहितायाम् ।
श्रीगणेशाय नमः ।
नाम्नां साष्टसहस्रञ्च ब्रूहि गार्ग्य महामते ।
महालक्ष्म्या महादेव्या भुक्तिमुक्त्यर्थसिद्धये ॥१॥
गार्ग्य उवाच
सनत्कुमारमासीनं द्वादशादित्यसन्निभम् ।
अपृच्छन्योगिनो भक्त्या योगिनामर्थसिद्धये ॥२॥
सर्वलौकिककर्मभ्यो विमुक्तानां हिताय वै ।
भुक्तिमुक्तिप्रदं जप्यमनुब्रूही दयानिधे ॥३॥
सनत्कुमार भगवन्सर्वज्ञोऽसि विशेषतः ।
आस्तिक्यसिद्धये नृणां क्षिप्रधर्मार्थसाधनम् ॥४॥
खिद्यन्ति मानवास्सर्वे धनाभावेन केवलम् ।
सिद्ध्यन्ति धनिनोऽन्यस्य नैव धर्मार्थकामनाः ॥५॥
दारिद्र्यध्वंसिनी नाम केन विद्या प्रकीर्तिता ।
केन वा ब्रह्मविद्याऽपि केन मृत्युविनाशिनी ॥६॥
सर्वासां सारभूतैका विद्यानां केन कीर्तिता ।
प्रत्यक्षसिद्धिदा ब्रह्मन् तामाचक्ष्व दयानिधे ॥७॥
सनत्कुमार उवाच-
साधु पृष्टं महाभागास्सर्वलोकहितैषिणः ।
महतामेष धर्मश्च नान्येषामिति मे मतिः ॥८॥
ब्रह्मविष्णुमहादेवमहेन्द्रादिमहात्मभिः ।
सम्प्रोक्तं कथयाम्यद्य लक्ष्मीनामसहस्रकम् ॥९॥
यस्योच्चारणमात्रेण दारिद्र्यान्मुच्यते नरः ।
किं पुनस्तज्जपाज्जापी सर्वेष्टार्थानवाप्नुयात् ॥१०॥
अस्य श्रीलक्ष्मीदिव्यसहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य
आनन्दकर्दम चिक्लीतेन्दिरासुतादयो
महात्मानो महर्षयः अनुष्टुप्छन्दः ।
विष्णुमाया शक्तिः महालक्ष्मीः परादेवता ।
श्रीमहालक्ष्मीप्रसादद्वारा सर्वेष्टार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।
श्रीमित्यादि षडङ्गन्यासः ।
ध्यानम्-
पद्मनाभप्रियां देवीं पद्माक्षीं पद्मवासिनीम् ।
पद्मवक्त्रां पद्महस्तां वन्दे पद्मामहर्निशम् ॥१॥

पूर्णेन्दुवदनां दिव्यरत्नाभरणभूषिताम् ।
वरदाभयहस्ताढ्यां ध्यायेच्चन्द्रसहोदरीम् ॥२॥
इच्छारूपां भगवतस्सच्चिदानन्दरूपिणीम् ।
सर्वज्ञां सर्वजननीं विष्णुवक्षस्स्थलालयाम् ॥३॥
दयालुमनिशं ध्यायेत्सुखसिद्धिस्वरूपिणीम् ।
यथोपदेशं जपित्वा, यथाक्रमं देव्यै समर्प्य,
ततश्शाम्भवीमुद्रया लक्ष्मीमनुसन्धाय, नामसहस्रं जपेत् ।
नित्यागतानन्तनित्या नन्दिनी जनरञ्जनी।
नित्यप्रकाशिनी चैव स्वप्रकाशस्वरूपिणी ॥१॥
महालक्ष्मीर्महाकाली महाकन्या सरस्वती ।
भोगवैभवसन्धात्री भक्तानुग्रहकारिणी ॥२॥
ईशावास्या महामाया महादेवी महेश्वरी ।
हृल्लेखा परमा शक्तिर्मातृकाबीजरूपिणी ॥३॥
नित्यानन्दा नित्यबोधा नादिनी जनमोदिनी ।
सत्यप्रत्ययनी चैव स्वप्रकाशात्मरूपिणी ॥४॥
त्रिपुरा भैरवी विद्या हंसा वागीश्वरी शिवा ।
वाग्देवी च महारात्रिः कालरात्रिस्त्रिलोचना ॥५॥
भद्रकाली कराली च महाकाली तिलोत्तमा ।
काली करालवक्त्रान्ता कामाक्षी कामदा शुभा ॥६॥
चण्डिका चण्डरूपेशा चामुण्डा चक्रधारिणी ।
त्रैलोक्यजयिनी देवी त्रैलोक्यविजयोत्तमा ॥७॥
सिद्धलक्ष्मीः क्रियालक्ष्मीर्मोक्षलक्ष्मीः प्रसादिनी ।
उमा भगवती दुर्गा चान्द्री दाक्षायणी शिवा ॥८॥
प्रत्यङ्गिरा धरावेला लोकमाता हरिप्रिया ।
पार्वती परमा देवी ब्रह्मविद्याप्रदायिनी ॥९॥
अरूपा बहुरूपा च विरूपा विश्वरूपिणी ।
पञ्चभूतात्मिका वाणी पञ्चभूतात्मिका परा ॥१०॥
काली मा पञ्चिका वाग्मी हविःप्रत्यधिदेवता ।
देवमाता सुरेशाना देवगर्भाऽम्बिका धृतिः ॥११॥
सङ्ख्या जातिः क्रियाशक्तिः प्रकृतिर्मोहिनी मही ।
यज्ञविद्या महाविद्या गुह्यविद्या विभावरी ॥१२॥
ज्योतिष्मती महामाता सर्वमन्त्रफलप्रदा ।
दारिद्र्यध्वंसिनी देवी हृदयग्रन्थिभेदिनी ॥१३॥
सहस्रादित्यसङ्काशा चन्द्रिका चन्द्ररूपिणी ।
गायत्री सोमसम्भूतिस्सावित्री प्रणवात्मिका ॥१४॥
शाङ्करी वैष्णवी ब्राह्मी सर्वदेवनमस्कृता ।

सेव्यदुर्गा कुबेराक्षी करवीरनिवासिनी ॥१५॥
जया च विजया चैव जयन्ती चाऽपराजिता ।
कुब्जिका कालिका शास्त्री वीणापुस्तकधारिणी ॥१६॥
सर्वज्ञशक्तिश्श्रीशक्तिर्ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका ।
इडापिङ्गलिकामध्यमृणालीतन्तुरूपिणी ॥१७॥
यज्ञेशानी प्रथा दीक्षा दक्षिणा सर्वमोहिनी ।
अष्टाङ्गयोगिनी देवी निर्बीजध्यानगोचरा ॥१८॥
सर्वतीर्थस्थिता शुद्धा सर्वपर्वतवासिनी ।
वेदशास्त्रप्रमा देवी षडङ्गादिपदक्रमा ॥१९॥
शिवा धात्री शुभानन्दा यज्ञकर्मस्वरूपिणी ।
व्रतिनी मेनका देवी ब्रह्माणी ब्रह्मचारिणी ॥२०॥
एकाक्षरपरा तारा भवबन्धविनाशिनी ।
विश्वम्भरा धराधारा निराधाराऽधिकस्वरा ॥२१॥
राका कुहूरमावास्या पूर्णिमाऽनुमतिर्द्युतिः ।
सिनीवाली शिवाऽवश्या वैश्वदेवी पिशङ्गिला ॥२२॥
पिप्पला च विशालाक्षी रक्षोघ्नी वृष्टिकारिणी ।
दुष्टविद्राविणी देवी सर्वोपद्रवनाशिनी ॥२३॥
शारदा शरसन्धाना सर्वशस्त्रस्वरूपिणी ।
युद्धमध्यस्थिता देवी सर्वभूतप्रभञ्जनी ॥२४॥
अयुद्धा युद्धरूपा च शान्ता शान्तिस्वरूपिणी ।
गङ्गा सरस्वतीवेणीयमुनानर्मदापगा ॥२५॥
समुद्रवसनावासा ब्रह्माण्डश्रोणिमेखला ।
पञ्चवक्त्रा दशभुजा शुद्धस्फटिकसन्निभा ॥२६॥
रक्ता कृष्णा सिता पीता सर्ववर्णा निरीश्वरी ।
कालिका चक्रिका देवी सत्या तु वटुकास्थिता ॥२७॥
तरुणी वारुणी नारी ज्येष्ठादेवी सुरेश्वरी ।
विश्वम्भराधरा कर्त्री गलार्गलविभञ्जनी ॥२८॥
सन्ध्यारात्रिर्दिवाज्योत्स्ना कलाकाष्ठा निमेषिका ।
उर्वी कात्यायनी शुभ्रा संसारार्णवतारिणी ॥२९॥
कपिला कीलिकाऽका मल्लिकानवमल्लिका ।
देविका नन्दिका शान्ता भञ्जिका भयभञ्जिका ॥३०॥
कौशिकी वैदिकी देवी सौरी रूपाधिकाऽतिभा ।
दिग्वस्त्रा नववस्त्रा च कन्यका कमलोद्भवा ॥३१॥
श्रीस्सौम्यलक्षणाऽतीतदुर्गा सूत्रप्रबोधिका ।
श्रद्धा मेधा कृतिः प्रज्ञा धारणा कान्तिरेव च ॥३२॥
श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्धन्या भूतिरिष्टिर्मनीषिणी ।
विरक्तिर्व्यापिनी माया सर्वमायाप्रभञ्जनी ॥३३॥
माहेन्द्री मन्त्रिणी सिंही चेन्द्रजालस्वरूपिणी ।
अवस्थात्रयनिर्मुक्ता गुणत्रयविवर्जिता ॥३४॥
ईषणात्रयनिर्मुक्ता सर्वरोगविवर्जिता ।
योगिध्यानान्तगम्या च योगध्यानपरायणा ॥३५॥
त्रयीशिखा विशेषज्ञा वेदान्तज्ञानरूपिणी ।
भारती कमला भाषा पद्मा पद्मवती कृतिः ॥३६॥
गौतमी गोमती गौरी ईशाना हंसवाहनी ।
नारायणी प्रभाधारा जाह्नवी शङ्करात्मजा ॥३७॥
चित्रघण्टा सुनन्दा श्रीर्मानवी मनुसम्भवा ।
स्तम्भिनी क्षोभिणी मारी भ्रामिणी शत्रुमारिणी ॥३८॥
मोहिनी द्वेषिणी वीरा अघोरा रुद्ररूपिणी ।
रुद्रैकादशिनी पुण्या कल्याणी लाभकारिणी ॥३९॥
देवदुर्गा महादुर्गा स्वप्नदुर्गाऽष्टभैरवी ।
सूर्यचन्द्राग्निरूपा च ग्रहनक्षत्ररूपिणी ॥४०॥
बिन्दुनादकलातीता बिन्दुनादकलात्मिका ।
दशवायुजयाकारा कलाषोडशसंयुता ॥४१॥
काश्यपी कमलादेवी नादचक्रनिवासिनी ।
मृडाधारा स्थिरा गुह्या देविका चक्ररूपिणी ॥४२॥
अविद्या शार्वरी भुञ्जा जम्भासुरनिबर्हिणी ।
श्रीकाया श्रीकला शुभ्रा कर्मनिर्मूलकारिणी ॥४३॥
आदिलक्ष्मीर्गुणाधारा पञ्चब्रह्मात्मिका परा ।
श्रुतिर्ब्रह्ममुखावासा सर्वसम्पत्तिरूपिणी ॥४४॥
मृतसञ्जीविनी मैत्री कामिनी कामवर्जिता ।
निर्वाणमार्गदा देवी हंसिनी काशिका क्षमा ॥४५॥
सपर्या गुणिनी भिन्ना निर्गुणा खण्डिताशुभा ।
स्वामिनी वेदिनी शक्या शाम्बरी चक्रधारिणी ॥४६॥
दण्डिनी मुण्डिनी व्याघ्री शिखिनी सोमसंहतिः ।
चिन्तामणिश्चिदानन्दा पञ्चबाणाग्रबोधिनी ॥४७॥
बाणश्रेणिस्सहस्राक्षी सहस्रभुजपादुका ।
सन्ध्यावलिस्त्रिसन्ध्याख्या ब्रह्माण्डमणिभूषणा ॥४८॥
वासवी वारुणीसेना कुलिका मन्त्ररञ्जनी ।
जितप्राणस्वरूपा च कान्ता काम्यवरप्रदा ॥४९॥
मन्त्रब्राह्मणविद्यार्था नादरूपा हविष्मती ।
आथर्वणी श्रुतिशून्या कल्पनावर्जिता सती ॥५०॥
सत्ताजातिः प्रमाऽमेयाऽप्रमितिः प्राणदा गतिः ।
अवर्णा पञ्चवर्णा च सर्वदा भुवनेश्वरी ॥५१॥

त्रैलोक्यमोहिनी विद्या सर्वभर्त्री क्षराऽक्षरा ।
हिरण्यवर्णा हरिणी सर्वोपद्रवनाशिनी ॥५२॥
कैवल्यपदवीरेखा सूर्यमण्डलसंस्थिता ।
सोममण्डलमध्यस्था वह्निमण्डलसंस्थिता ॥५३॥
वायुमण्डलमध्यस्था व्योममण्डलसंस्थिता ।
चक्रिका चक्रमध्यस्था चक्रमार्गप्रवर्तिनी ॥५४॥
कोकिलाकुलचक्रेशा पक्षतिः पंक्तिपावनी ।
सर्वसिद्धान्तमार्गस्था षड्वर्णावरवर्जिता ॥५५॥
शररुद्रहरा हन्त्री सर्वसंहारकारिणी ।
पुरुषा पौरुषी तुष्टिस्सर्वतन्त्रप्रसूतिका ॥५६॥
अर्धनारीश्वरी देवी सर्वविद्याप्रदायिनी ।
भार्गवी याजुषीविद्या सर्वोपनिषदास्थिता ॥५७॥
व्योमकेशाखिलप्राणा पञ्चकोशविलक्षणा ।
पञ्चकोशात्मिका प्रत्यक्पञ्चब्रह्मात्मिका शिवा ॥५८॥
जगज्जराजनित्री च पञ्चकर्मप्रसूतिका ।
वाग्देव्याभरणाकारा सर्वकाम्यस्थितस्थितिः ॥५९॥
अष्टादशचतुष्षष्टिपीठिका विद्यया युता ।
कालिकाकर्षणश्यामा यक्षिणी किन्नरेश्वरी ॥६०॥
केतकी मल्लिकाशोका वाराही धरणी ध्रुवा ।
नारसिंही महोग्रास्या भक्तानामार्तिनाशिनी ॥६१॥
अन्तर्बला स्थिरा लक्ष्मीर्जरामरणनाशिनी ।
श्रीरञ्जिता महाकाया सोमसूर्याग्निलोचना ॥६२॥
अदितिर्देवमाता च अष्टपुत्राऽष्टयोगिनी ।
अष्टप्रकृतिरष्टाष्टविभ्राजद्विकृताकृतिः ॥६३॥
दुर्भिक्षध्वंसिनी देवी सीता सत्या च रुक्मिणी ।
ख्यातिजा भार्गवी देवी देवयोनिस्तपस्विनी ॥६४॥
शाकम्भरी महाशोणा गरुडोपरिसंस्थिता ।
सिंहगा व्याघ्रगा देवी वायुगा च महाद्रिगा ॥६५॥
अकारादिक्षकारान्ता सर्वविद्याधिदेवता ।
मन्त्रव्याख्याननिपुणा ज्योतिश्शास्त्रैकलोचना ॥६६॥
इडापिङ्गलिकामध्यासुषुम्ना ग्रन्थिभेदिनी ।
कालचक्राश्रयोपेता कालचक्रस्वरूपिणी ॥६७॥

वैशारदी मतिश्श्रेष्ठा वरिष्ठा सर्वदीपिका ।
वैनायकी वरारोहा श्रोणिवेला बहिर्वलिः ॥६८॥
जम्भिनी जृम्भिणी जृम्भकारिणी गणकारिका ।
शरणी चक्रिकाऽनन्ता सर्वव्याधिचिकित्सकी ॥६९॥
देवकी देवसङ्काशा वारिधिः करुणाकरा ।
शर्वरी सर्वसम्पन्ना सर्वपापप्रभञ्जिनी ॥७०॥
एकमात्रा द्विमात्रा च त्रिमात्रा च तथापरा ।
अर्धमात्रा परा सूक्ष्मा सूक्ष्मार्थाऽर्थपराऽपरा ॥७१॥
एकवीरा विशेषाख्या षष्ठीदेवी मनस्विनी ।
नैष्कर्म्या निष्कलालोका ज्ञानकर्माधिका गुणा ॥७२॥
सबन्ध्वानन्दसन्दोहा व्योमाकाराऽनिरूपिता ।
गद्यपद्यात्मिका वाणी सर्वालङ्कारसंयुता ॥७३॥
साधुबन्धपदन्यासा सर्वौको घटिकावलिः ।
षट्कर्मा कर्कशाकारा सर्वकर्मविवर्जिता ॥७४॥
आदित्यवर्णा चापर्णा कामिनी वररूपिणी ।
ब्रह्माणी ब्रह्मसन्ताना वेदवागीश्वरी शिवा ॥७५॥
पुराणन्यायमीमांसाधर्मशास्त्रागमश्रुता ।
सद्योवेदवती सर्वा हंसी विद्याधिदेवता ॥७६॥
विश्वेश्वरी जगद्धात्री विश्वनिर्माणकारिणी ।
वैदिकी वेदरूपा च कालिका कालरूपिणी ॥७७॥
नारायणी महादेवी सर्वतत्त्वप्रवर्तिनी ।
हिरण्यवर्णरूपा च हिरण्यपदसम्भवा ॥७८॥
कैवल्यपदवी पुण्या कैवल्यज्ञानलक्षिता ।
ब्रह्मसम्पत्तिरूपा च ब्रह्मसम्पत्तिकारिणी ॥७९॥
वारुणी वारुणाराध्या सर्वकर्मप्रवर्तिनी ।
एकाक्षरपराऽऽयुक्ता सर्वदारिद्र्यभञ्जिनी ॥८०॥
पाशांकुशान्विता दिव्या वीणाव्याख्याक्षसूत्रभृत् ।
एकमूर्तिस्त्रयीमूर्तिर्मधुकैटभभञ्जिनी ॥८१॥
सांख्या सांख्यवती ज्वाला ज्वलन्ती कामरूपिणी ।
जाग्रन्ती सर्वसम्पत्तिस्सुषुप्तान्वेष्टदायिनी ॥८२॥
कपालिनी महादंष्ट्रा भ्रुकुटी कुटिलानना ।
सर्वावासा सुवासा च बृहत्यष्टिश्च शक्वरी ॥८३॥

छन्दोगणप्रतिष्ठा च कल्माषी करुणात्मिका ।
चक्षुष्मती महाघोषा खड्गचर्मधराऽशनिः ॥८४॥
शिल्पवैचित्र्यविद्योता सर्वतोभद्रवासिनी ।
अचिन्त्यलक्षणाकारा सूत्रभाष्यनिबन्धना ॥८५॥
सर्ववेदार्थसम्पत्तिस्सर्वशास्त्रार्थमातृका ।
अकारादिक्षकारान्तसर्ववर्णकृतस्थला ॥८६॥
सर्वलक्ष्मीस्सदानन्दा सारविद्या सदाशिवा ।
सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च खेचरीरूपगोच्छ्रिता ॥८७॥
अणिमादिगुणोपेता परा काष्ठा परा गतिः ।
हंसयुक्तविमानस्था हंसारूढा शशिप्रभा ॥८८॥
भवानी वासनाशक्तिराकृतिस्थाखिलाऽखिला ।
तन्त्रहेतुर्विचित्राङ्गी व्योमगङ्गाविनोदिनी ॥८९॥
वर्षा च वार्षिका चैव ऋग्यजुस्सामरूपिणी ।
महानदीनदीपुण्याऽगण्यपुण्यगुणक्रिया ॥९०॥
समाधिगतलभ्यार्था श्रोतव्या स्वप्रिया घृणा ।
नामाक्षरपरा देवी उपसर्गनखाञ्चिता ॥९१॥
निपातोरुद्वयीजङ्घा मातृका मन्त्ररूपिणी ।
आसीना च शयाना च तिष्ठन्ती धावनाधिका ॥९२॥
लक्ष्यलक्षणयोगाढ्या ताद्रूप्यगणनाकृतिः ।
सैकरूपा नैकरूपा सेन्दुरूपा तदाकृतिः ॥९३॥
समासतद्धिताकारा विभक्तिवचनात्मिका ।
स्वाहाकारा स्वधाकारा श्रीपत्यर्धाङ्गनन्दिनी ॥९४॥
गम्भीरा गहना गुह्या योनिलिङ्गार्धधारिणी ।
शेषवासुकिसंसेव्या चषाला वरवर्णिनी ॥९५॥
कारुण्याकारसम्पत्तिः कीलकृन्मन्त्रकीलिका ।
शक्तिबीजात्मिका सर्वमन्त्रेष्टाक्षयकामना ॥९६॥
आग्नेयी पार्थिवा आप्या वायव्या व्योमकेतना ।
सत्यज्ञानात्मिकाऽऽनन्दा ब्राह्मी ब्रह्म सनातनी ॥९७॥
अविद्यावासना मायाप्रकृतिस्सर्वमोहिनी ।
शक्तिर्धारणशक्तिश्च चिदचिच्छक्तियोगिनी ॥९८॥
वक्त्रारुणा महामाया मरीचिर्मदमर्दिनी ।
विराड् स्वाहा स्वधा शुद्धा नीरूपास्तिस्सुभक्तिगा ॥९९॥

निरूपिताद्वयीविद्या नित्यानित्यस्वरूपिणी ।
वैराजमार्गसञ्चारा सर्वसत्पथदर्शिनी ॥१००॥
जालन्धरी मृडानी च भवानी भवभञ्जनी ।
त्रैकालिकज्ञानतन्तुस्त्रिकालज्ञानदायिनी ॥१०१॥
नादातीता स्मृतिः प्रज्ञा धात्रीरूपा त्रिपुष्करा ।
पराजिताविधानज्ञा विशेषितगुणात्मिका ॥१०२॥
हिरण्यकेशिनी हेमब्रह्मसूत्रविचक्षणा ।
असंख्येयपरार्धान्तस्वरव्यञ्जनवैखरी ॥१०३॥
मधुजिह्वा मधुमती मधुमासोदया मधुः ।
माधवी च महाभागा मेघगम्भीरनिस्वना ॥१०४॥
ब्रह्मविष्णुमहेशादिज्ञातव्यार्थविशेषगा ।
नाभौ वह्निशिखाकारा ललाटे चन्द्रसन्निभा ॥१०५॥
भ्रूमध्ये भास्कराकारा सर्वताराकृतिर्हृदि ।
कृत्तिकादिभरण्यन्तनक्षत्रेष्ट्यार्चितोदया ॥१०६॥
ग्रहविद्यात्मिका ज्योतिर्ज्योतिर्विन्मतिजीविका ।
ब्रह्माण्डगर्भिणी बाला सप्तावरणदेवता ॥१०७॥
वैराजोत्तमसाम्राज्या कुमारकुशलोदया ।
बगला भ्रमराम्बा च शिवदूती शिवात्मिका ॥१०८॥
मेरुविन्ध्यादिसंस्थाना काश्मीरपुरवासिनी ।
योगनिद्रा महानिद्रा विनिद्रा राक्षसाश्रिता ॥१०९॥
सुवर्णदा महागङ्गा पञ्चाख्या पञ्चसंहतिः ।
सुप्रजाता सुवीरा च सुपोषा सुपतिश्शिवा ॥११०॥
सुगृहा रक्तबीजान्ता हतकन्दर्पजीविका ।
समुद्रव्योममध्यस्था समबिन्दुसमाश्रया ॥१११॥
सौभाग्यरसजीवातुस्सारासारविवेकदृक् ।
त्रिवल्यादिसुपुष्टाङ्गा भारती भरताश्रिता ॥११२॥
नादब्रह्ममयीविद्या ज्ञानब्रह्ममयीपरा ।
ब्रह्मनाडी निरुक्तिश्च ब्रह्मकैवल्यसाधनम् ॥११३॥
कालिकेयमहोदारवीर्यविक्रमरूपिणी ।
वडबाग्निशिखावक्त्रा महाकबलतर्पणा ॥११४॥
महाभूता महादर्पा महासारा महाक्रतुः ।
पञ्जभूतमहाग्रासा पञ्चभूताधिदेवता ॥११५॥

सर्वप्रमाणा सम्पत्तिस्सर्वरोगप्रतिक्रिया ।
ब्रह्माण्डान्तर्बहिर्व्याप्ता विष्णुवक्षोविभूषणी ॥११६॥
शाङ्करी विधिवक्त्रस्था प्रवरा वरहेतुकी ।
हेममाला शिखामाला त्रिशिखा पञ्चमोचना ॥११७॥
सर्वागमसदाचारमर्यादा यातुभञ्जनी ।
पुण्यश्लोकप्रबन्धाढ्या सर्वान्तर्यामिरूपिणी ॥११८॥
सामगानसमाराध्या श्रोत्रकर्णरसायनम् ।
जीवलोकैकजीवातुर्भद्रोदारविलोकना ॥११९॥
तटित्कोटिलसत्कान्तिस्तरुणी हरिसुन्दरी ।
मीननेत्रा च सेन्द्राक्षी विशालाक्षी सुमङ्गला ॥१२०॥
सर्वमङ्गलसम्पन्ना साक्षान्मङ्गलदेवता ।
देहहृद्दीपिका दीप्तिर्जिह्मपापप्रणाशिनी ॥१२१॥
अर्धचन्द्रोल्लसद्दंष्ट्रा यज्ञवाटीविलासिनी ।
महादुर्गा महोत्साहा महादेवबलोदया ॥१२२॥
डाकिनीड्या शाकिनीड्या साकिनीड्या समस्तजुट् ।
निरङ्कुशा नाकिवन्द्या षडाधाराधिदेवता ॥१२३॥
भुवनज्ञानिनिश्श्रेणी भुवनाकारवल्लरी ।
शाश्वती शाश्वताकारा लोकानुग्रहकारिणी ॥१२४॥
सारसी मानसी हंसी हंसलोकप्रदायिनी ।
चिन्मुद्रालङ्कृतकरा कोटिसूर्यसमप्रभा ॥१२५॥
सुखप्राणिशिरोरेखा सदद‍ृष्टप्रदायिनी ।
सर्वसाङ्कर्यदोषघ्नी ग्रहोपद्रवनाशिनी ॥१२६॥
क्षुद्रजन्तुभयघ्नी च विषरोगादिभञ्जनी ।
सदाशान्ता सदाशुद्धा गृहच्छिद्रनिवारिणी ॥१२७॥
कलिदोषप्रशमनी कोलाहलपुरस्स्थिता ।
गौरी लाक्षणकी मुख्या जघन्याकृतिवर्जिता ॥१२८॥
माया विद्या मूलभूता वासवी विष्णुचेतना ।
वादिनी वसुरूपा च वसुरत्नपरिच्छदा ॥१२९॥
छान्दसी चन्द्रहृदया मन्त्रस्वच्छन्दभैरवी ।
वनमाला वैजयन्ती पञ्चदिव्यायुधात्मिका ॥१३०॥

पीताम्बरमयी चञ्चत्कौस्तुभा हरिकामिनी ।
नित्या तथ्या रमा रामा रमणी मृत्युभञ्जनी ॥१३१॥
ज्येष्ठा काष्ठा धनिष्ठान्ता शराङ्गी निर्गुणप्रिया ।
मैत्रेया मित्रविन्दा च शेष्यशेषकलाशया ॥१३२॥
वाराणसीवासरता चार्यावर्तजनस्तुता ।
जगदुत्पत्तिसंस्थानसंहारत्रयकारणम् ॥१३३॥
त्वमम्ब विष्णुसर्वस्वं नमस्तेऽस्तु महेश्वरि ।
नमस्ते सर्वलोकानां जनन्यै पुण्यमूर्तये ॥१३४॥
सिद्धलक्ष्मीर्महाकालि महलक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।
सद्योजातादिपञ्चाग्निरूपा पञ्चकपञ्चकम् ॥१३५॥
यन्त्रलक्ष्मीर्भवत्यादिराद्याद्ये ते नमो नमः ।
सृष्ट्यादिकारणाकारवितते दोषवर्जिते ॥१३६॥
जगल्लक्ष्मीर्जगन्मातर्विष्णुपत्नि नमोऽस्तु ते ।
नवकोटिमहाशक्तिसमुपास्यपदाम्बुजे ॥१३७॥
कनत्सौवर्णरत्नाढ्ये सर्वाभरणभूषिते ।
अनन्तानित्यमहिषीप्रपञ्चेश्वरनायकि ॥१३८॥
अत्युच्छ्रितपदान्तस्थे परमव्योमनायकि ।
नाकपृष्ठगताराध्ये विष्णुलोकविलासिनि ॥१३९॥
वैकुण्ठराजमहिषि श्रीरङ्गनगराश्रिते ।
रङ्गनायकि भूपुत्रि कृष्णे वरदवल्लभे ॥१४०॥
कोटिब्रह्मादिसंसेव्ये कोटिरुद्रादिकीर्तिते ।
मातुलुङ्गमयं खेटं सौवर्णचषकं तथा ॥१४१॥
पद्मद्वयं पूर्णकुम्भं कीरञ्च वरदाभये ।
पाशमङ्कुशकं शङ्खं चक्रं शूलं कृपाणिकाम् ॥१४२॥
धनुर्बाणौ चाक्षमालां चिन्मुद्रामपि बिभ्रती ।
अष्टादशभुजे लक्ष्मीर्महाष्टादशपीठगे ॥१४३॥
भूमिनीलादिसंसेव्ये स्वामिचित्तानुवर्तिनि।
पद्मे पद्मालये पद्मि पूर्णकुम्भाभिषेचिते ॥१४४॥
इन्दिरेन्दिन्दिराभाक्षि क्षीरसागरकन्यके ।
भार्गवि त्वं स्वतन्त्रेच्छा वशीकृतजगत्पतिः ॥१४५॥

मङ्गलं मङ्गलानां त्वं देवतानां च देवता ।
त्वमुत्तमोत्तमानाञ्च त्वं श्रेयः परमामृतम् ॥१४६॥
धनधान्याभिवृद्धिश्च सार्वभौमसुखोच्छ्रया ।
आन्दोलिकादिसौभाग्यं मत्तेभादिमहोदयः ॥१४७॥
पुत्रपौत्राभिवृद्धिश्च विद्याभोगबलादिकम् ।
आयुरारोग्यसम्पत्तिरष्टैश्वर्यं त्वमेव हि ॥१४८॥
पदमेव विभूतिश्च सूक्ष्मासूक्ष्मतरागतिः ।
सदयापाङ्गसन्दत्तब्रह्मेन्द्रादिपदस्थितिः ॥१४९॥
अव्याहतमहाभाग्यं त्वमेवाक्षोभ्यविक्रमः ।
समन्वयश्च वेदानामविरोधस्त्वमेव हि ॥१५०॥
निःश्रेयसपदप्राप्तिसाधनं फलमेव च ।
श्रीमन्त्रराजराज्ञी च श्रीविद्या क्षेमकारिणी ॥१५१॥
श्रीबीजजपसन्तुष्टा ऐं ह्रीं श्रीं बीजपालिका ।
प्रपत्तिमार्गसुलभा विष्णुप्रथमकिङ्करी ॥१५२॥
क्लीङ्कारार्थसवित्री च सौमङ्गल्याधिदेवता ।
श्रीषोडशाक्षरीविद्या श्रीयन्त्रपुरवासिनी ॥१५३॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१५४॥
पुनः पुनर्नमस्तेऽस्तु साष्टाङ्गमयुतं पुनः ।

सनत्कुमार उवाच-

एवं स्तुता महालक्ष्मीर्ब्रह्मरुद्रादिभिस्सुरैः ।
नमद्भिरार्तैर्दीनैश्च निस्स्वत्वैर्भोगवर्जितैः ॥१॥
ज्येष्ठा जुष्टैश्च निश्श्रीकैस्संसारात्स्वपरायणैः ।
विष्णुपत्नी ददौ तेषां दर्शनं दृष्टितर्पणम् ॥२॥
शरत्पूर्णेन्दुकोट्याभधवलापाङ्गवीक्षणैः ।
सर्वात्सत्त्वसमाविष्टांश्चक्रे दृष्टा वरं ददौ ॥३॥

महालक्ष्मीरुवाच-

नाम्नां साष्टसहस्रं मे प्रमादाद्वापि यस्सकृत् ।
कीर्तयेत्तत्कुले सत्यं वसाम्याचन्द्रतारकम् ॥४॥
किं पुनर्नियमाज्जप्तुर्मदेकशरणस्य च ।
मातृवत्सानुकम्पाहं पोषकी स्यामहर्निशम् ॥५॥
मन्नाम स्तवतां लोके दुर्लभं नास्ति चिन्तितम् ।
मत्प्रसादेन सर्वेऽपि स्वस्वेष्टार्थमवाप्स्यथ ॥६॥
लुप्तवैष्णवधर्मस्य मद्व्रतेष्ववकीर्णिनः ।
भक्तिप्रपत्तिहीनस्य वन्द्यो नाम्नां जरापि मे ॥७॥
तस्मादवश्यं तैर्दोषैर्विहीनः पापवर्जितः ।
जपेत्साष्टसहस्रं मे नाम्नां प्रत्यहमादरात् ॥८॥
साक्षादलक्ष्मीपुत्रोऽपि दुर्भाग्योऽप्यलसोऽपि वा ।
अप्रयत्नोऽपि मूढोऽपि विकलः पतितोऽपि च ॥९॥
अवशात्प्राप्नुयाद्भाग्यं मत्प्रसादेन केवलम् ।
स्पृहेयमचिराद्देवाः वरदानाय जापिनः ॥१०॥
ददामि सर्वमिष्टार्थं लक्ष्मीति स्मरतां ध्रुवम् ।

सनत्कुमार उवाच-

इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे लक्ष्मीर्वैष्णवी भगवत्कला ॥११॥
इष्टापूर्तं च सुकृतं भागधेयं च चिन्तितम् ।
स्वं स्वं स्थानं च भोगं च विजयं लेभिरे सुराः ॥१२॥
तदेतत् प्रवदाम्यद्य लक्ष्मीनामसहस्रकम् ।
योगिनः पठत क्षिप्रं चिन्तितार्थानवाप्स्यथ ॥१३॥

गार्ग्य उवाच-

सनत्कुमारोयोगीन्द्र इत्युक्त्वा स दयानिधिः ।
अनुगृह्य ययौ क्षिप्रं तांश्च द्वादशयोगिनः ॥१४॥
तस्मादेतद्रहस्यञ्च गोप्यं जप्यं प्रयत्नतः ।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां भृगुवासरे ॥१५॥
पौर्णमास्याममायां च पर्वकाले विशेषतः ।
जपेद्वा नित्यकार्येषु सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥१६॥
॥इति श्रीस्कन्दपुराणे सनत्कुमारसंहितायां
लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीलक्ष्मी नरसिंह सुप्रभातस्तोत्रम् ॥

। श्री यादगिरि लक्ष्मीनृसिंह सुप्रभातम्
श्री वङ्गीपुरम् नरसिंहाचार्यरचित ।
कौसल्या सुप्रजा राम पूर्वा संध्या प्रवर्तते ।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल! कर्तव्यं दैवमाह्निकम् ॥१॥
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविंद उत्तिष्ठ गरुडध्वज ।
उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मङ्गळं कुरु
॥२॥
यादाद्रिनाथशुभमन्दिरकल्पवल्लि
पद्मालये जननि पद्मभवादिवन्द्ये ।
भक्तार्तिभञ्जनि दयामयदिव्यरूपे
लक्ष्मीनृसिंहदयिते तव सुप्रभातम् ॥३॥
ज्वालानृसिंह करुणामय दिव्यमूर्ते
योगाभिनन्दन नृसिंह दयासमुद्र! ।
लक्ष्मीनृसिंह शरणागतपारिजात
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥४॥
श्रीरङ्गवेङ्कटमहीधरहस्तिशैल
श्री यादवाद्रिमुखसत्त्वनिकेतनानि ।
स्थानानि तेकिल वदन्ति परावरज्ञाः
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥५॥
ब्रह्मादयस्सुरवर मुनिपुङ्गवाश्च
त्वां सेवितुं विविधमङ्गळवस्तुहस्ताः ।
द्वारे वसन्ति नरसिंह भवाब्धिपोत
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥६॥
प्रह्लाद नारद पराशर पुण्डरीक
व्यासादिभक्तरसिका भवदीयसेवाम् ।
वाञ्छन्त्यनन्यहृदया करुणासमुद्र
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥७॥
त्वद्दास्यभोगरसिकाश्शठजिन्मुखार्याः
रामानुजादिमहनीयगुरुप्रधानाः ।
सेवार्थ मत्र भवदीयगृहाङ्गणस्थाः
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥८॥
भक्ता स्त्वदीयपदपङ्कजसक्तचित्ताः
काल्यं विधाय तवकन्दर मन्दिराग्रे ।
त्वद्दर्शनोत्सुकतया निबिडं श्रयन्ते
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥ ९॥
दिव्यावतारदशके नरसिंह ते तु
दिव्यावतारमहिमा नहि देवगम्यः ।
प्रह्लाददानवशिशोःकिल भक्तिगम्यः
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥१०॥
श्रीयादवाद्रिशिखरे त्वमहोबिलेऽपि
सिंहाचले च शुभमङ्गळशैलराजे ।
वेदाचलादि गिरि मूर्धसु सुस्थितोसि
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥ ११॥
काम्यार्थिनो वरदकल्पक कल्पकं त्वां
सेवार्थिनः स्सुजनसेव्यपदद्वयं त्वाम् ।
भक्त्या विनम्र शिरसा प्रणमन्ति सर्वे
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥१२॥
त्वन्नाममन्त्रपठनेन लुठन्ति पापाः
त्वन्नाममन्त्रपठनेन लुठन्ति दैत्याः ।
त्वन्नाममन्त्रपठनेन लुठन्तिरोगाः
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥१३॥
लक्ष्मीनृसिंह! जगदीश! सुरेश! विष्णो
जिष्णो! जनार्दन! परात्पर विश्वरूप ।
विश्वप्रभातकरणाय कृतावतार
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥१४॥
त्वन्नाममन्त्र पठनंकिलसुप्रभातं
अस्माकमस्तु तवचास्तु च सुप्रभातम् ।
अस्मत्समुद्धरणमेव विचित्रगाध
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥१५॥
त्वत् पूजका परिवृढा परिचारकाश्च
नित्यार्चनाय विधिवद्विहित स्वकृत्याः ।
यत्तस्त्वदीय शुभगह्वर मन्दिराग्रे
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥१६॥
प्राभातकीमुपचितिम् परिकल्पयन्तः
कुण्डाश्च पूर्णजलकुम्भमुपाहरन्तः ।
श्रीवैष्णवाः समुपयान्तिहरे! नृसिंह
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥१७॥
सूर्योऽभ्युदेति विकसन्ति सरोरुहाणि
नीलोत्पलानि हि भवन्ति निमीलितानि ।
प्राग्दिङ्मुखेरुणगभस्तिगणोऽभ्युदेति
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥१८॥
मन्दानिलस्सुर नदीकमलोदरेशु
मन्दंविगाह्य शुभसौरभ मादधानः ।
हर्षप्रकर्षमुपयाति च सेवितुं त्वां
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥१९॥
तारागणोवियति मज्जति सुप्रभाते
सूर्येणसाकमवलोकयितुं त्वदीयम् ।
श्रीसुप्रभातमवभासित सर्वलोकं
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥२०॥
पक्षिस्वनाश्चपरितःपरिसम्पतन्ति
कूजन्तिकोकिलगणाःकलकंठरावैः ।
वाचा विशुद्धकलयानुवदन्तिकीराः
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥२१॥
पल्लीषु वल्लवजनाःस्वगृहाङ्गणेषु
धेनूर्दुहन्ति विनिभान्ति विशेषदृष्ट्या ।
गोपालबाल इव भक्तहृदम्बुजेषु
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥२२॥
गाढांधकारपटलम् गगनंजहाति
मोहान्धकार इव सन्मनुजम् समस्तम् ।
रागोविराग इव संविशति प्रकामं
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥२३॥
निद्राजहाति हि जनान् सुमुनिं यथावत्
प्रज्ञाप्युदेति हि जनेषु मुनौयथावत् ।
सक्तिर्जनेषु हि यथा च मुनौविरक्तिः
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥२४॥
फुल्लानिपङ्कजवनानि विशुद्धसत्त्व
फुल्लानि सज्जनमनःकमलानि यद्वत् ।
भाश्शुद्धसत्वमिव भाति विदिक्षु दिक्षु
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥२५॥
ब्रह्मास्वयंसुरगणैस्सहलोकपालैः
धामप्रविश्य तव मण्डपगोपुराढ्यम् ।
पञ्चाङ्गशुद्धिमभिवर्णयति त्वदीयां
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥२६॥
विख्यातवैद्यजन वञ्चकरोगजाल
विख्यातवैद्य इति रोगनिपीडितास्त्वाम् ।
निश्चित्यधाम तव दूरत आपतन्ति
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥२७॥
भूतग्रहादि बलवत्तर तापयुक्ताः
बाणावतीमुख महोग्रपिशाच विद्धाः ।
स्नाताःप्रदक्षिणविधा वुपयान्तिनाथ
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥२८॥
सन्तानहीन वनितास्सरसि त्वदीये
स्नात्वाजलार्द्रवसनास्तव दर्शनाय ।
आयान्तिसन्ततिवरप्रद देवदेव
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥२९॥
यद्दुष्ट संहरणमुत्तमलोकरक्षा
दीक्षां व्यनक्ति तवरूप महोनृसिंह ।
तच्चात्र यादगिरिमूर्धनिसंविभाति
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥३०॥

प्रह्लाद पुण्यजनि पुण्यबलात्प्रतीतं
रूपं जनस्तवहरे निगमान्तवेद्यम् ।
प्रातःस्मरंस्तरति संस्मारणाम्बुराशिं
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥३१॥
श्रीसुप्रभातमिदमच्युतकैतवोक्त
मप्यच्युतं भवतुभक्तजनैकवेद्यम् ।
लक्ष्मीनृसिंह तव नामशुभप्रभावात्
यादाद्रिनाथ नृहरे! तव सुप्रभातम् ॥ ३२॥
इत्थं यादाद्रिनाथस्य सुप्रभात मतन्द्रिताः ।
येपठन्ति सदाभक्त्याते
नरास्सुखभागिनः॥३३॥
॥इति श्री लक्ष्मी नरसिंह सुप्रभातम् ॥

श्रीलक्ष्मीनारायणस्तोत्रम्

अथ श्रीलक्ष्मीनारायणस्तोत्रम् ।
सत्यव्रतक्षेत्रललामभूतो बाहासरित्तीरविराजमानः ।
मखिप्रकृष्टोद्घरशाणिपालै नारायणो यत विभाति लक्ष्म्या ॥१॥
आत्रेयगोत्राम्बुधिपूर्णचन्द्रैः आचारशीलैरभितो वरिष्ठैः ।
आशास्यमानः परभक्तियुक्तैः नारायणो भाति सहैव लक्ष्म्या ॥२॥
श्रीवैष्णवाग्रेसरमाननीयाः आचार्यवर्या जगति प्रसिद्धाः ।
सत्सम्प्रदायावनबद्धदीक्षाः त्वया प्रदात्ता जगतां विभान्ति ॥३॥
भाग्यं जगत्यामुपवर्णनीयं त्वदीयसेवाफलमामनन्ति ।
अस्तोकदिव्याध्वरवेदिभोग्ये जानेऽग्रहारे तव भाग्यमेतत् ॥४॥
इष्टार्थसिद्ध्यै भवतोपदिष्टमिष्ट्यादिकं भूरि कृतं हि यत्र ।
यज्ञो हि नारायणनामरूपः त्वमत्र भासीति विभावये त्वाम् ॥५॥
आत्रेयगोत्रैकजनिप्रकृष्टाः द्विजा द्विजत्वं प्रतिपद्यमानाः ।
भूयस्तरां विष्णुपदे चरन्तः
विभान्ति तुष्टस्त्वमिहासि भूत्यै ॥६॥
नारायण त्वं रमया समेतः प्राचीं दिशं वीक्ष्य मुहुः प्रसन्नः ।
कुतो न जाने परमं रहस्यं
यूपोज्ज्वलं स्तम्भमवेक्षसे किम् ! ॥७॥
यज्ञस्य साक्षी स्थिर एव लोके यज्ञस्थली चापि विभाति सुस्था ।
ततोऽभिजातावसतोऽग्रहारः विश्वप्रसिद्धोऽप्यधुना त्वयैव ॥८॥
काञ्च्युत्तराचोत्तमतां प्रणीता यज्ञैर्हि सज्जैः किल यायजूकैः ।
अत्र्यन्ववायान्वयविद्वदग्र्यैः सुस्वध्वरैरध्वरवेदिदीप्रैः ॥९॥
श्रीवादिहंसाम्बुदसूरिवर्य वंशावतंसैः किल विप्रवर्यैः ।
श्रीश्रीनिवासाध्वरिभिः प्रतिष्ठां प्राप्तोऽग्रहारोद्घरशाणिपालै ॥१०॥
प्रतिष्ठितस्त्वं निजभूम्नि नित्यं प्रतिष्ठितस्त्वं परमाग्रहारे ।
पुनः प्रतिष्ठा भवतः प्रशस्या
चिराय नारायण ! सन्निधत्स्व ॥११॥

यमप्पयं प्राह्वयतिस्म हृष्टो वरप्रदो वारणशैलमूर्ध्नि ।
देवाधिराजोऽप्पयदीक्षितोऽसौ कूटस्थ एवाभवदत्रिगोत्रे ॥ १२॥
कल्याणकुल्या कमनीययूपः कार्श्यं कुतः प्राप न वेद्मि तत्त्वम् ।
क्षमस्व सर्वानपराधवर्गान्
ऋद्ध्यै समीक्षस्व सुधाकटाक्षात्॥१३॥
कल्याणकुल्यामृतवाहिनी स्तात् यूपः समुच्छ्रायमुपैतु भूयः ।
त्वदीयधामोज्ज्वलतामुपेयात् आराधनं ते नवतां प्रदद्यात् ॥१४॥
काञ्चीघटाम्बिवत्यभिधानभाजः श्रीवेंकटाचार्यमुखाः कवीन्द्राः ।
यत्सन्निधानात् अतुलां प्रतिष्ठां
संप्राप्य नारायण संविभासि ॥१५॥
दभ्रेतरे धामनि वर्धमानो दभ्रं परं धाम समाश्रितोऽसि ।
अदभ्रदृष्ट्या स्वयमेधमानः भद्राणि नारायण संविधेयाः ॥ १६॥
विधिप्रणीते सुभगेऽश्वमेधे समुद्भवन् श्यामलहव्यवाहः ।
अस्तोकभोग्याध्वरहव्यभोक्ता
नयत्यहो तान् स्वपुरं स्मदेवः॥१७॥
कलिः प्रदुष्टः कवयोऽपि नष्टाः कल्याणकुल्याप्यमृतेन हीना ।
जाताश्च दूरे सुखजीविकायै परन्तु नारायण सुस्थिरोऽसि ॥ १८॥
पूतोऽग्रहारो मखजालकृत्या पूता स्थली सत्पदरेणुपूर्णा ।
पूता वयं ग्रामसुनामधृत्या वसेम नारायण ते कटाक्षैः ॥ १९॥
श्रीसूक्तहोमेन कृतेन भक्त्या ग्रामस्समृद्धिं सकलामुपैतु ।
देवस्समाराधनसम्प्रहृष्टः अभीष्टदायी सततं विभातु ॥ २०॥
अत्र्यन्ववाये जनिमेत्य सेवा रतेन मावासरघूत्तमेन ।
भक्त्या कृतं स्तोत्रमिदं पठन्तः
लक्ष्मीकटाक्षेण विभान्तु लोके ॥२१॥
लक्ष्मी नारायणं देवं मन्दिरं नूतन निर्मितम् ।
रक्षितां यागशालां च दृष्ट्वा तुष्टिं भजेमहि ॥ २२॥

॥ इति श्रीनिवासराघवन् विरचितं
श्रीलक्ष्मीनारायणस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीलक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावली ॥

वन्दे पद्मकरां प्रसन्नवदनां
सौभग्यदां भाग्यदां
हस्ताभ्यां अभयं प्रदां
मणिगणैर्नानाविधैर्भूषिताम् ।
भक्ताभीष्ट फलप्रदां हरिहर
ब्रह्मादिभिः सेवितां पार्श्वे
पङ्कजशङ्खपद्म निधिभिर्युक्तां
सदा शक्तिभिः ॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवल तरांशुक
गन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद
मह्यम्॥

ॐ प्रकृत्यै नमः ।
ॐ विकृत्यै नमः ।
ॐ विद्यायै नमः ।
ॐ सर्वभूतहितप्रदायै नमः ।
ॐ श्रद्धायै नमः ।
ॐ विभूत्यै नमः ।
ॐ सुरभ्यै नमः ।
ॐ परमात्मिकायै नमः ।
ॐ वाचे नमः ।
ॐ पद्मालयायै नमः ।
ॐ पद्मायै नमः ।
ॐ शुचये नमः ।
ॐ स्वाहायै नमः ।
ॐ स्वधायै नमः ।
ॐ सुधायै नमः ।
ॐ धन्यायै नमः ।
ॐ हिरण्मय्यै नमः ।
ॐ लक्ष्म्यै नमः ।

ॐ नित्यपुष्टायै नमः ।
ॐ विभावर्यै नमः ।
ॐ अदित्यै नमः ।
ॐ दित्यै नमः ।
ॐ दीप्तायै नमः ।
ॐ वसुधायै नमः ।
ॐ वसुधारिण्यै नमः ।
ॐ कमलायै नमः ।
ॐ कान्तायै नमः ।
ॐ कामाक्ष्यै नमः ।
ॐ क्रोधसम्भवायै नमः ।
ॐ अनुग्रहप्रदायै नमः ।
ॐ बुद्धये नमः ।
ॐ अनघायै नमः ।
ॐ हरिवल्लभायै नमः ।
ॐ अशोकायै नमः ।
ॐ अमृतायै नमः ।
ॐ दीप्तायै नमः ।
ॐ लोकशोकविनाशिन्यै नमः।
ॐ धर्मनिलयायै नमः ।
ॐ करुणायै नमः ।
ॐ लोकमात्रे नमः ।
ॐ पद्मप्रियायै नमः ।
ॐ पद्महस्तायै नमः ।
ॐ पद्माक्ष्यै नमः ।
ॐ पद्मसुन्दर्यै नमः ।
ॐ पद्मोद्भवायै नमः ।
ॐ पद्ममुख्यै नमः ।
ॐ पद्मनाभप्रियायै नमः ।
ॐ रमायै नमः ।
ॐ पद्ममालाधरायै नमः ।

ॐ देव्यै नमः ।
ॐ पद्मिन्यै नमः ।
ॐ पद्मगन्धिन्यै नमः ।
ॐ पुण्यगन्धायै नमः ।
ॐ सुप्रसन्नायै नमः ।
ॐ प्रसादाभिमुख्यै नमः ।
ॐ प्रभायै नमः ।
ॐ चन्द्रवदनायै नमः ।
ॐ चन्द्रायै नमः ।
ॐ चन्द्रसहोदर्यै नमः ।
ॐ चतुर्भुजायै नमः ।
ॐ चन्द्ररूपायै नमः ।
ॐ इन्दिरायै नमः ।
ॐ इन्दुशीतलायै नमः ।
ॐ आह्लादजनन्यै नमः ।
ॐ पुष्टायै नमः ।
ॐ शिवायै नमः ।
ॐ शिवकर्यै नमः ।
ॐ सत्यै नमः ।
ॐ विमलायै नमः ।
ॐ विश्वजनन्यै नमः ।
ॐ तुष्टायै नमः ।
ॐ दारिद्र्यनाशिन्यै नमः ।
ॐ प्रीतिपुष्करिण्यै नमः ।
ॐ शान्तायै नमः ।
ॐ शुक्लमाल्याम्बरायै नमः ।
ॐ श्रियै नमः ।
ॐ भास्कर्यै नमः ।
ॐ बिल्वनिलयायै नमः ।
ॐ वरारोहायै नमः ।
ॐ यशस्विन्यै नमः ।
ॐ वसुन्धरायै नमः ।

ॐ उदाराङ्गायै नमः ।
ॐ हरिण्यै नमः ।
ॐ हेममालिन्यै नमः ।
ॐ धनधान्यकर्यै नमः ।
ॐ सिद्धये नमः ।
ॐ स्त्रैणसौम्यायै नमः ।
ॐ शुभप्रदाये नमः ।
ॐ नृपवेश्मगतानन्दायै नमः ।
ॐ वरलक्ष्म्यै नमः ।
ॐ वसुप्रदायै नमः ।
ॐ शुभायै नमः ।
ॐ हिरण्यप्राकारायै नमः ।
ॐ समुद्रतनयायै नमः ।
ॐ जयायै नमः ।
ॐ मङ्गळा देव्यै नमः ।
ॐ विष्णुवक्षस्स्थल स्थितायै नमः ।
ॐ विष्णुपत्न्यै नमः ।
ॐ प्रसन्नाक्ष्यै नमः ।
ॐ नारायणसमाश्रितायै नमः ।
ॐ दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः ।
ॐ देव्यै नमः ।
ॐ सर्वोपद्रव वारिण्यै नमः ।
ॐ नवदुर्गायै नमः ।
ॐ महाकाल्यै नमः ।
ॐ ब्रह्मा विष्णु शिवात्मिकायै नमः ।
ॐ त्रिकाल ज्ञानसम्पन्नायै नमः ।
ॐ भुवनेश्वर्यै नमः ।
॥ इति श्रीलक्ष्म्यष्टोत्तरशत नामावलिः ॥

श्री लक्ष्मी सहस्त्रनामस्तोत्रम्

ध्यानम
भूयाद्भूयो द्विपद्माभयवरदकरा तप्तकार्तस्वराभा
शुभ्राभ्राभेभयुग्मद्वयकरधृतकुम्भाद्भिरासिच्यमाना ।
रक्तौघाबद्धमौलिर्विमलतरदुकूलार्तवालेपनाढ्या
पद्माक्षी पद्मनाभोरसि कृतवसतिः पद्मगा श्रीः श्रियै नः ॥
स्तोत्रम्
श्रीः पद्मा प्रकृतिः सत्त्वा शान्ता चिच्छक्तिरव्यया ।
केवला निष्कला शुद्धा व्यापिनी व्योमविग्रहा ॥१॥
व्योमपद्मकृताधारा परा व्योमामृतोद्भवा ।
निर्व्योमा व्योममध्यस्था पञ्चव्योमपदाश्रिता ॥२॥
अच्युता व्योमनिलया परमानन्दरूपिणी ।
नित्यशुद्धा नित्यतृप्ता निर्विकारा निरीक्षणा ॥३॥
ज्ञानशक्तिः कर्तृशक्तिर्भोक्तृशक्तिः शिखावहा ।
स्नेहाभासा निरानन्दा विभूतिर्विमला चला ॥४॥
अनन्ता वैष्णवी व्यक्ता विश्वानन्दा विकाशिनी ।
शक्तिर्विभिन्नसर्वार्तिः समुद्रपरितोषिणी ॥५॥
मूर्तिः सनातनी हार्दी निस्तरङ्गा निरामया ।
ज्ञानज्ञेया ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेयविकाशिनी ॥६॥
स्वच्छन्दशक्तिर्गहना निष्कम्पार्चिः सुनिर्मला ।
स्वरूपा सर्वगा पारा बृंहिणी सुगुणोर्जिता ॥७॥
अकलङ्का निराधारा निःसंकल्पा निराश्रया ।
असंकीर्णा सुशान्ता च शाश्वती भासुरी स्थिरा ॥८॥
अनौपम्या निर्विकल्पा नियन्त्रा यन्त्रवाहिनी ।
अभेद्या भेदिनी भिन्ना भारती वैखरी खगा ॥९॥
अग्राह्या ग्राहिका गूढा गम्भीरा विश्वगोपिनी ।
अनिर्देश्याप्रतिहता निर्बीजा पावनी परा ॥१०॥
अप्रतर्क्या परिमिता भवभ्रान्तिविनाशिनी ।
एका द्विरूपा त्रिविधा असंख्याता सुरेश्वरी ॥११॥
सुप्रतिष्ठा महाधात्री स्थितिर्वृद्धिर्ध्रुवा गतिः ।
ईश्वरी महिमा ऋद्धिः प्रमोद उज्ज्वलोद्यमा ॥१२॥
अक्षया वर्धमाना च सुप्रकाशा विहङ्गमा ।
नीरजा जननी नित्या जया रोचिष्मती शुभा ॥१३॥
तपोनुदा च ज्वाला च सुदीप्तिश्चांशुमालिनी ।
अप्रमेया त्रिधा सूक्ष्मा परा निर्वाणदायिनी ॥१४॥
अवदाता सुशुद्धा च अमोघाख्या परम्परा ।
संधानकी शुद्धविद्या सर्वभूतमहेश्वरी ॥१५॥
लक्ष्मीस्तुष्टिर्महाधीरा शान्तिरापूरणेन वा ।
अनुग्रहाशक्तिराद्या जगज्ज्येष्ठा जगद्विधिः ॥१६॥
सत्या प्रह्वा क्रिया योग्या अपर्णा ह्लादिनी शिवा ।
सम्पूर्णा ह्लादिनी शुद्धा ज्योतिष्मत्यमृतावहा ॥१७॥
रजोवत्यर्कप्रतिभाऽऽकर्षिणी कर्षिणी रसा ।
परावसुमती देवा कान्तिः शान्तिर्मतिः कला ॥१८॥
कला कलङ्करहिता विशालोद्दीपनी रतिः ।
सम्बोधिनी हारिणी च प्रभावा भवभूतिदा ॥१९॥
अमृतस्यन्दिनी जीवा जननी खण्डिका स्थिरा ।
धूमा कलावती पूर्णा भासुरा सुमतीरसा ॥२०॥
शुद्धा ध्वनिः सृतिः सृष्टिर्विकृतिः कृष्टिरेव च ।
प्रापणी प्राणदा प्रह्वा विश्वा पाण्डुरवासिनी ॥२१॥
अवनिर्वज्रनलिका चित्रा ब्रह्माण्डवासिनी ।
अनन्तरूपानन्तात्मानन्तस्थानन्तसम्भवा ॥२२॥
महाशक्तिः प्राणशक्तिः प्राणदात्री रतिम्भरा ।
महासमूहा निखिला इच्छाधारा सुखावहा ॥२३॥
प्रत्यक्षलक्ष्मीर्निष्कम्पा प्ररोहाबुद्धिगोचरा ।
नानादेहा महावर्ता बहुदेहविकासिनी ॥२४॥
सहस्राणी प्रधाना च न्यायवस्तुप्रकाशिका ।
सर्वाभिलाषपूर्णेच्छा सर्वा सर्वार्थभाषिणी ॥२५॥
नानास्वरूपचिद्धात्री शब्दपूर्वा पुरातना ।
व्यक्ताव्यक्ता जीवकेशा सर्वेच्छापरिपूरिता ॥२६॥
संकल्पसिद्धा सांख्येया तत्त्वगर्भा धरावहा ।
भूतरूपा चित्स्वरूपा त्रिगुणा गुणगर्विता ॥२७॥
प्रजापतीश्वरी रौद्री सर्वाधारा सुखावहा ।
कल्याणवाहिका कल्या कलिकल्मषनाशिनी ॥२८॥
नीरूपोद्भिन्नसंताना सुयन्त्रा त्रिगुणालया ।
महामाया योगमाया महायोगेश्वरी प्रिया ॥२९॥
महास्त्री विमला कीर्तिर्जया लक्ष्मीर्निरञ्जना ।
प्रकृतिर्भगवन्माया शक्तिर्निद्रा यशस्करी ॥३०॥
चिन्ताबुद्धिर्यशःप्राज्ञाशान्तिराप्रीतिवर्धिनी ।
प्रद्युम्नमाता साध्वी च सुखसौभाग्यसिद्धिदा ॥३१॥
काष्ठा निष्ठा प्रतिष्ठा च ज्येष्ठा श्रेष्ठा जयावहा ।
सर्वातिशायिनी प्रीतिर्विश्वशक्तिर्महाबला ॥३२॥
वरिष्ठा विजया वीरा जयन्ती विजयप्रदा ।
हृद्गृहा गोपिनी गुह्या गणगन्धर्वसेविता ॥३३॥
योगीश्वरी योगमाया योगिनी योगसिद्धिदा ।
महायोगेश्वरवृता योगा योगेश्वरप्रिया ॥३४॥
ब्रह्मेन्द्ररुद्रनमिता सुरासुरवरप्रदा ।
त्रिवर्त्मगा त्रिलोकस्था त्रिविक्रमपदोद्भवा ॥३५॥
सुतारा तारिणी तारा दुर्गा संतारिणी परा ।
सुतारिणी तारयन्ती भूरितारेश्वरप्रभा ॥३६॥
गुह्याविद्या यज्ञविद्या महाविद्या सुशोभिता ।
अध्यात्मविद्याविघ्नेशी पद्मस्था परमेष्ठिनी ॥३७॥
आन्वीक्षिकी त्रयीवार्ता दण्डनीतिर्नयात्मिका ।
गौरी वागीश्वरी गोप्त्री गायत्री कमलोद्भवा ॥३८॥
विश्वम्भरा विश्वरूपा विश्वमाता वसुप्रदा ।
सिद्धिः स्वाहा स्वधा स्वस्ति सुधा सर्वार्थसाधिनी ॥३९॥
इच्छा सृष्टीर्द्युतिर्मूर्तिः कीर्तिः श्रद्धा दयामतिः ।
श्रुतिर्मेधा धृतिर्ह्रीः श्रीर्विद्या विबुधवन्दिता ॥४०॥

अनसूया घृणा नीतिर्निर्वृतिः कामधुक्करा ।
प्रतिज्ञा संततिर्भूतिर्द्यौः प्रज्ञा विश्वमानिनी ॥४१॥
स्मृतिर्वाग्विश्वजननी पश्यन्ती मध्यमा समा ।
संध्या मेधा प्रभा भीमा सर्वाकारा सरस्वती ॥४२॥
काङ्क्षा माया महामाया मोहिनी माधवप्रिया ।
सौम्या भोगा महाभोगा भोगिनी भोगदायिनी ॥४३॥
सुधौतकनकप्रख्या सुवर्णकमलासना ।
हिरण्यगर्भा सुश्रोणी हारिणी रमणी रमा ॥४४॥
चन्द्रा हिरण्मयी ज्योत्स्ना रम्या शोभा शुभावहा ।
त्रैलोक्यमण्डना नारी नरेश्वरवरार्चिता ॥४५॥
त्रैलोक्यसुन्दरी रामा महाविभववाहिनी ।
पद्मस्था पद्मनिलया पद्ममालाविभूषिता ॥४६॥
पद्मयुग्मधरा कान्ता दिव्याभरणभूषिता ।
विचित्ररत्नमुकुटा विचित्राम्बरभूषणा ॥४७॥
विचित्रमाल्यगन्धाढ्या विचित्रायुधवाहना ।
महानारायणी देवी वैष्णवी वीरवन्दिता ॥४८॥
कालसंकर्षिणी घोरा तत्त्वसंकर्षिणी कला ।
जगत्सम्पूरणी विश्वा महाविभवभूषणा ॥४९॥
वारुणी वरदा व्याख्या घण्टाकर्णविराजिता ।
नृसिंही भैरवी ब्राह्मी भास्करी व्योमचारिणी ॥५०॥
ऐन्द्री कामधेनुः सृष्टीः कामयोनिर्महाप्रभा ।
दृष्टा काम्या विश्वशक्तिर्बीजगत्यात्मदर्शना ॥५१॥
गरुडारूढहृदया चान्द्री श्रीर्मधुरानना ।
महोग्ररूपा वाराही नारसिंही हतासुरा ॥५२॥
युगान्तहुतभुग्ज्वाला कराला पिङ्गला कला ।
त्रैलोक्यभूषणा भीमा श्यामा त्रैलोक्यमोहिनी ॥५३॥
महोत्कटा महारक्ता महाचण्डा महासना ।
शङ्खिनी लेखिनी स्वस्थालिखिता खेचरेश्वरी ॥५४॥
भद्रकाली चैकवीरा कौमारी भवमालिनी ।
कल्याणी कामधुग्ज्वालामुखी चोत्पलमालिका ॥५५॥
बालिका धनदा सूर्या हृदयोत्पलमालिका ।
अजिता वर्षिणी रीतिर्भरुण्डा गरुडासना ॥५६॥
वैश्वानरी महामाया महाकाली विभीषणा ।
महामन्दारविभवा शिवानन्दा रतिप्रिया ॥५७॥
उद्रीतिः पद्ममाला च धर्मवेगा विभावनी ।
सत्क्रिया देवसेना च हिरण्यरजताश्रया ॥५८॥
सहसावर्तमाना च हस्तिनादप्रमोदिनी ।
हिरण्यपद्मवर्णा च हरिभद्रा सुदुर्धरा ॥५९॥
सूर्या हिरण्यप्रकटसदृशी हेममालिनी ।
पद्मानना नित्यपुष्टा देवमाताऽमृतोद्भवा ॥६०॥
महाधना च या श्रृङ्गी कार्दमी कम्बुकन्धरा ।
आदित्यवर्णा चन्द्राभा गन्धद्वारा दुरासदा ॥६१॥
वरार्चिता वरारोहा वरेण्या विष्णुवल्लभा ।
कल्याणी वरदा वामा वामेशी विन्ध्यवासिनी ॥६२॥
योगनिद्रा योगरता देवकी कामरूपिणी ।
कंसविद्राविणी दुर्गा कौमारी कौशिकी क्षमा ॥६३॥

कात्यायनी कालरात्रिर्निशितृप्ता सुदुर्जया ।
विरूपाक्षी विशालाक्षी भक्तानां परिरक्षिणी ॥६४॥
बहुरूपा स्वरूपा च विरूपा रूपवर्जिता ।
घण्टानिनादबहुला जीमूतध्वनिनिःस्वना ॥६५॥
महादेविन्द्रमथिनी भ्रुकुटीकुटिलानना ।
सत्योपयाचिता चैका कौबेरी ब्रह्मचारिणी ॥६६॥
आर्या यशोदा सुतदा धर्मकामार्थमोक्षदा ।
दारिद्र्यदुःखशमनी घोरदुर्गार्तिनाशिनी ॥६७॥
भक्तार्तिशमनी भव्या भवभर्गापहारिणी ।
क्षीराब्धितनया पद्मा कमला धरणीधरा ॥६८॥
रुक्मिणी रोहिणी सीता सत्यभामा यशस्विनी ।
प्रज्ञाधारमितप्रज्ञा वेदमाता यशोवती ॥६९॥
समाधिर्भावना मैत्री करुणा भक्तवत्सला ।
अन्तर्वेदी दक्षिणा च ब्रह्मचर्यपरा गतिः ॥७०॥
दिक्षा वीक्षा परीक्षा च समीक्षा वीरवत्सला ।
अम्बिका सुरभिः सिद्धा सिद्धविद्याधरार्चिता ॥७१॥
सुदीक्षा लेलिहाना च कराला विश्वपूरका ।
विश्वसंधारिणी दीप्तिस्तापनी ताण्डवप्रिया ॥७२॥
उद्भवा विरजा राज्ञी तापनी बिन्दुमालिनी ।
क्षीरधारा सुप्रभावा लोकमाता सुवर्चसा ॥७३॥
हव्यगर्भा चाज्यगर्भा जुहृवतो यज्ञसम्भवा ।
आप्यायनी पावनी च दहनी दहनाश्रया ॥७४॥
मातृका माधवी मुख्या मोक्षलक्ष्मीर्महर्द्धिदा ।
सर्वकामप्रदा भद्रा सुभद्रा सर्वमङ्गला ॥७५॥
श्वेता सुशुक्लवसना शुक्लमाल्यानुलेपना ।
हंसाहीनकरी हंसी हृद्या हृत्कमलालया ॥७६॥
सितातपत्रा सुश्रोणी पद्मपत्रायतेक्षणा ।
सावित्री सत्यसंकल्पा कामदाकामकामिनी ॥७७॥
दर्शनीया दृशा दृश्या स्पृश्या सेवा वराङ्गना ।
भोगप्रिया भोगवती भोगीन्द्रशयनासना ॥७८॥
आर्द्रा पुष्करिणी पुण्या पावनी पापसूदनी ।
श्रीमती च शुभाकारा परमैश्वर्यभूतिदा ॥७९॥
अचिन्त्यानन्तविभवा भवभावविभावनी ।
निश्रेणिः सर्वदेहस्था सर्वभूतनमस्कृता ॥८०॥
बला बलाधिका देवी गौतमी गोकुलालया ।
तोषिणी पूर्णचन्द्राभा एकानन्दा शतानना ॥८१॥
उद्याननगरद्वारहर्म्योपवनवासिनी ।
कूष्माण्डा दारुणा चण्डा किराती नन्दनालया ॥८२॥
कालायना कालगम्या भयदा भयनाशिनी ।
सौदामनी मेघरवा दैत्यदानवमर्दिनी ॥८३॥
जगन्माताभयकरी भूतधर्त्री सुदुर्लभा ।
काश्यपी शुभदात्री च वनमाला शुभा वरा ॥८४॥
धन्या धन्येश्वरी धन्या रत्नदा वसुवर्धिनी ।
गान्धर्वी रेवती गङ्गा शकुनी विमलानना ॥८५॥
इडा शान्तिकरी चैव तामसी कमलालया ।
आज्यपा वज्रकौमारी सोमपा कुसुमाश्रया ॥८६॥

जगत्प्रिया च सरथा दुर्जया खगवाहना।
मनोभवा कामचारा सिद्धचारणसेविता ॥८७॥
व्योमलक्ष्मीर्महालक्ष्मीस्तेजोलक्ष्मीः सुजाज्वला।
रसलक्ष्मीर्जगद्योनिर्गन्धलक्ष्मीर्वनाश्रया ॥८८॥
श्रवणा श्रावणी नेत्री रसनाप्राणचारिणी।
विरिञ्चिमाता विभवा वरवारिजवाहना ॥८९॥
वीर्या वीरेश्वरी वन्द्या विशोका वसुवर्धिनी।
अनाहता कुण्डलिनी नलिनी वनवासिनी ॥९०॥
गान्धारिणीन्द्रनमिता सुरेन्द्रनमिता सती।
सर्वमङ्गल्यमाङ्गल्या सर्वकामसमृद्धिदा ॥९१॥
सर्वानन्दा महानन्दा सत्कीर्तिः सिद्धसेविता।
सिनीवाली कुहू राका अमा चानुमतिर्द्युतिः ॥९२॥
अरुन्धती वसुमती भार्गवी वास्तुदेवता।
मायूरी वज्रवेताली वज्रहस्ता वरानना ॥९३॥
अनघा धरणिर्धीरा धमनी मणिभूषणा।
राजश्री रूपसहिता ब्रह्मश्रीर्ब्रह्मवन्दिता ॥९४॥
जयश्रीर्जयदा ज्ञेया सर्गश्रीः स्वर्गतिः सताम्।
सुपुष्पा पुष्पनिलया फलश्रीर्निष्कलाप्रिया ॥९५॥
धनुर्लक्ष्मीस्त्वमिलिता परक्रोधनिवारिणी।
कद्रूर्धनायुः कपिला सुरसा सुरमोहिनी ॥९६॥
महाश्वेता महानीला महामूर्तिर्विषापहा।
सुप्रभा ज्वालिनी दीप्तिस्तृप्तिर्व्याप्तिः प्रभाकरी ॥९७॥
तेजोवती पद्मबोधा मदलेखारुणावती।
रत्ना रत्नावली भूता शतधामा शतापहा ॥९८॥
त्रिगुणा घोषिणी रक्ष्या नर्दिनी घोषवर्जिता।
साध्यादितिर्दितिर्देवी मृगवाहा मृगाङ्कगा ॥९९॥
चित्रनीलोत्पलगता वृषरत्नकराश्रया।
हिरण्यरजतद्वन्द्वा शङ्खभद्रासनस्थिता ॥१००॥
गोमूत्रगोमयाक्षीरदधिसर्पिर्जलाश्रया।
मरीचिश्चीरवसना पूर्णा चन्द्रार्कविष्टरा ॥१०१॥
सुसूक्ष्मा निर्वृतिः स्थूला निवृत्तारातिरेव च।
मरीचिर्ज्वालिनी धूम्रा हव्यवाहा हिरण्यदा ॥१०२॥
दायिनी कालिनी सिद्धिः शोषिणी सम्प्रबोधिनी।
भास्वरा संहतिस्तीक्ष्णा प्रचण्डज्वलनोज्ज्वला ॥१०३॥
साङ्गा प्रचण्डा दीप्ता च वैद्युतिः सुमहाद्युतिः।
कपिला नीलरक्ता च सुषुम्णा विस्फुलिङ्गिनी ॥१०४॥
अर्चिष्मती रिपुहरा दीर्घा धूमावली जरा।
सम्पूर्णमण्डला पूषा स्त्रंसिनी सुमनोहरा ॥१०५॥
जया पुष्टिकरीच्छाया मानसाहृदयोज्ज्वला।
सुवर्णकरणी श्रेष्ठा मृतसंजीवनी रणे ॥१०६॥
विशल्यकरणी शुभ्रा संधिनी परमौषधिः।
ब्रह्मिष्ठा ब्रह्मसहिता ऐन्दवी रत्नसम्भवा ॥१०७॥
विद्युत्प्रभा बिन्दुमती त्रिस्वभावागुणाम्बिका।
नित्योदिता नित्यहृष्टा नित्यकामकरीषिणी ॥१०८॥
पद्माङ्का वज्रचिह्ना च वक्रदण्डविभासिनी।
विदेहपूजिता कन्या माया विजयवाहिनी ॥१०९॥
मानिनी मङ्गला मान्या मानिनी मानदायिनी।
विश्वेश्वरी गणवती मण्डला मण्डलेश्वरी ॥११०॥
हरिप्रिया भौमसुता मनोज्ञा मतिदायिनी।
प्रत्यङ्गिरा सोमगुप्ता मनोऽभिज्ञा वदन्मतिः ॥१११॥
यशोधरा रत्नमाला कृष्णा त्रैलोक्यबन्धनी।
अमृता धारिणी हर्षा विनता वल्लकी शची ॥११२॥
संकल्पा भामिनी मिश्रा कादम्बर्यमृता प्रभा।
अगता निर्गता वज्रा सुहिता सहिताक्षता ॥११३॥
सर्वार्थसाधनकरी धातुर्धारणिकामला।
करुणाधारसम्भूता कमलाक्षी शशिप्रिया ॥११४॥
सौम्यरूपा महादीप्ता महाज्वाला विकाशिनी।
माला काञ्चनमाला च सद्वज्रा कनकप्रभा ॥११५॥
प्रक्रिया परमा योक्त्री क्षोभिका च सुखोदया।
विजृम्भणा च वज्राख्या श्रृङ्खला कमलेक्षणा ॥११६॥
जयंकरी मधुमती हरिता शशिनी शिवा।
मूलप्रकृतिरीशानी योगमाता मनोजवा ॥११७॥
धर्मोदया भानुमती सर्वाभासा सुखावहा।
धुरन्धरा च बाला च धर्मसेव्या तथागता ॥११८॥
सुकुमारा सौम्यमुखी सौम्यसम्बोधनोत्तमा।
सुमुखी सर्वतोभद्रा गुह्यशक्तिर्गुहालया ॥११९॥
हलायुधा चैकवीरा सर्वशस्त्रसुधारिणी।
व्योमशक्तिर्महादेहा व्योमगा मधुमन्मयी ॥१२०॥
गङ्गा वितस्ता यमुना चन्द्रभागा सरस्वती।
तिलोत्तमोर्वशी रम्भा स्वामिनी सुरसुन्दरी ॥१२१॥
बाणप्रहरणा बाला बिम्बोष्ठी चारुहासिनी।
ककुद्मिनी चारुपृष्ठा दृष्टादृष्टफलप्रदा ॥१२२॥
काम्याचरी च काम्या च कामाचारविहारिणी।
हिमशैलेन्द्रसंकाशा गजेन्द्रवरवाहना ॥१२३॥
अशेषसुखसौभाग्यसम्पदां योनिरुत्तमा।
सर्वोत्कृष्टा सर्वमयी सर्वा सर्वेश्वरप्रिया ॥१२४॥
सर्वाङ्गयोनिः साव्यक्ता सम्प्रधानेश्वरेश्वरी।
विष्णुवक्षःस्थलगता किमतः परमुच्यते ॥१२५॥
परा निर्महिमा देवी हरिवक्षःस्थलाश्रया।
सा देवी पापहन्त्री च सांनिध्यं कुरुतान्मम ॥१२६॥

॥ फलश्रुतिः ॥

इति नाम्नां सहस्त्रं तु लक्ष्म्याः प्रोक्तं शुभावहम्।
परावरेण भेदेन मुख्यगौणेन भागतः ॥१२७॥
यश्चैतत् कीर्तयेन्नित्यं श्रृणुयाद् वापि पद्मज।
शुचिः समाहितो भूत्वा भक्तिश्रद्धासमन्वितः ॥१२८॥
श्रीनिवासं समभ्यर्च्य पुष्पधूपानुलेपनैः।
भोगेश्च मधुपर्काद्यैर्यथाशक्ति जगद्गुरुम् ॥१२९॥
तत्पार्श्वस्थां श्रियं देवीं सम्पूज्य श्रीधरप्रियाम्।
ततो नामसहस्रेण तोषयेत् परमेश्वरीम् ॥१३०॥
नामरत्नावलीस्तोत्रमिदं यः सततं पठेत्।
प्रसादाभिमुखीलक्ष्मीः सर्वं तस्मै प्रयच्छति ॥१३१॥
यस्या लक्ष्म्याश्च सम्भूताः शक्तयो विश्वगाः सदा।

कारणत्वेन तिष्ठन्ति जगत्यस्मिश्चराचरे ॥१३२॥
तस्मात् प्रीता जगन्माता श्रीर्यस्याच्युतवल्लभा ।
सुप्रीताः शक्तयस्तस्य सिद्धिमिष्टां दिशन्ति हि ॥१३३॥
एक एव जगत्स्वामी शक्तिमानच्युतः प्रभुः ।
तदंशशक्तिमन्तोऽन्ये ब्रह्मेशानादयो यथा ॥१३४॥
तथैवैका परा शक्तिः श्रीस्तस्य करुणाश्रया ।
ज्ञानदिषाड्गुण्यमयी या प्रोक्ता प्रकृतिः परा ॥१३५॥
एकैव शक्तिः श्रीस्तस्या द्वितीयात्मनि वर्तते ।
परा परेशी सर्वेशी सर्वाकारा सनातनी ॥१३६॥
अनन्तनामधेया च शक्तिचक्रस्य नायिका ।
जगच्चराचरमिदं सर्वं व्याप्य व्यवस्थिता ॥१३७॥
तस्मादेकैव परमा श्रीर्ज्ञेया विश्वरूपिणी ।
सौम्या सौम्येन रूपेण संस्थिता नटजीववत् ॥१३८॥
यो यो जगति पुम्भावः स विष्णुरिति निश्चयः ।
या या तु नारीभावस्था तत्र लक्ष्मीर्व्यवस्थिता ॥१३९॥

प्रकृतेः पुरुषाच्चान्यस्तृतीयो नैव विद्यते ।
अतः किं बहुनोक्तेन नरनारीमयो हरीः ॥१४०॥
अनेकभेदभिन्नस्तु क्रियते परमेश्वरः ।
महाविभूतिं दयितां ये स्तुवन्त्यच्युतप्रियाम् ॥१४१॥
ते प्राप्नुवन्ति परमां लक्ष्मी संशुद्धचेतसः ।
पद्मयोनिरिदं प्राप्य पठन् स्तोत्रमिदं क्रमात् ॥१४२॥
दिव्यमष्टगुणैश्वर्यं तत्प्रसादाच्च लब्धवान् ।
सकामानां च फलदामकामानां च मोक्षदाम् ॥१४३॥
पुस्तकाख्यां भयत्रात्रीं सितवस्त्रां त्रिलोचनाम् ।
महापद्मनिषण्णां तां लक्ष्मीमजरतां नुमः ॥१४४॥
करयुगलगृहीतं पूर्णकुम्भं दधाना
क्वचिदमलगतस्था शङ्खपद्माक्षपाणिः ।
क्वचिदपि दयिताङ्गे चामरव्यग्रहस्ता
क्वचिदपि सृणिपाशं बिभ्रती हेमकान्तिः ॥१४५॥
॥ इति ब्रह्मपुराणे श्रीलक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अष्टलक्ष्मी स्तोत्र

सुमनसवंदित सुंदरि माधवि चंद्र सहोदरि हेममये ।
मुनिगण वंदित मोक्षप्रदायिनि मंजुळभाषिणि वेदनुते ॥
पंकजवासिनि देवसुपूजित सदगुणवर्षिणि शांतियुते ।
जय जय हे मधुसूदन कामिनि आदिलक्ष्मि जय पालय माम् ॥1॥
अयिकलि कल्मषनाशिनि कामिनि वैदिकरूपिणि वेदमये ।
क्षीरसमुद्भव मंगलरूपिणि मंत्रनिवासिनि मंत्रनुते ॥
मंगलदायिनि अंबुजवासिनि देवगणाश्रित पादयुते ।
जय जय हे मधुसूदन कामिनि धान्यलक्ष्मि जय पालय माम्
॥2॥
जयवर वर्णिनि वैष्णविभार्गवि मंत्रस्वरूपिणि मंत्रमये ।
सुरगण पूजित शीघ्र फलप्रद ज्ञानविकासिनि शास्त्रनुते ॥
भवभयहारिणि पापविमोचनि साधुजनाश्रित पादयुते ।
जय जय हे मधुसूदन कामिनि धैर्यलक्ष्मि जय पालय माम् ॥3॥
जय जय दुर्गतिनाशिनि कामिनि सर्वफलप्रद शास्त्रमये ।
रथगज तुरग पदादिसमानुत परिजनमंडित लोकनुते ॥
हरि-हर ब्रह्म सुपूजित सेवित तापनिवारिणि पादयुते ।
जय जय हे मधुसूदन कामिनि श्री गजलक्ष्मि पालय माम् ॥4॥
अयि खगवाहिनि मोहिनि चक्रिणि राग विवर्धिनि ज्ञानमये ।
गुणगणवारिधि लोकहितैषिणि सप्तस्वरवर गाननुते ॥
सकल सुरासुर देव मुनीश्वर मानववंदित पादयुते ।
जय जय हे मधुसूदन कामिनि संतानलक्ष्मि पालय माम् ॥5॥
जय कमलासनि सदगतिदायिनि ज्ञान विकासिनि गानमये ।
अनुदिनमर्चित कुंकुमधूसर भूषितवासित वाद्यनुते ॥
कनक धरा स्तुति वैभव वंदित शंकर देशिक मान्य पते।
जय जय हे मधुसूदन कामिनि विजयलक्ष्मि जय पालय माम् ॥6॥
प्रणत सुरेश्वरि भारति भार्गवि शोकविनाशिनि रत्नमये ।
मणिमय भूषित कर्णविभूषण शांतिसमावृत हास्यमुखे ॥
नवनिधि दायिनि कलिमलहारिणि काम्य फलप्रद हस्तयुते ।
जय जय हे मधुसूदन कामिनि विद्यालक्ष्मि पालय माम् ॥7॥
धिमि धिमि धिम् धिमि धिंधिमि धिंधिमि दुंदुभिनाद सुपूर्णमये ।
घुमघुम घुंघुम घुंघुम घुंघुम शंखनिनाद सुवाद्यनुते ॥
वेदपुराणेति हास सुपूजित वैदिकमार्ग प्रदर्शयुते ।
जय जय हे मधुसूदन कामिनि श्री धनलक्ष्मि पालय माम् ॥8॥

देवकृत लक्ष्मी स्तोत्रम्

क्षमस्व भगवंत्यव क्षमाशीले परात्परे।
शुद्धसत्वस्वरूपे च कोपादिपरिवर्जिते॥
उपमे सर्वसाध्वीनां देवीनां देवपूजिते।
त्वया विना जगत्सर्वं मृततुल्यं च निष्फलम्॥
सर्वसंपत्स्वरूपा त्वं सर्वेषां सर्वरूपिणी।
रासेश्वर्यधि देवी त्वं त्वत्कलाः सर्वयोषितः॥
कैलासे पार्वती त्वं च क्षीरोदे सिन्धुकन्यका।
स्वर्गे च स्वर्गलक्ष्मीस्त्वं मर्त्यलक्ष्मीश्च भूतले॥
वैकुंठे च महालक्ष्मीर्देवदेवी सरस्वती।
गंगा च तुलसी त्वं च सावित्री ब्रह्मालोकतः॥
कृष्णप्राणाधिदेवी त्वं गोलोके राधिका स्वयम्।
रासे रासेश्वरी त्वं च वृंदावन वने- वने॥
कृष्णा प्रिया त्वं भांडीरे चंद्रा चंदनकानने।
विरजा चंपकवने शतशृंगे च सुंदरी॥
पद्मावती पद्मवने मालती मालतीवने।
कुंददंती कुंदवने सुशीला केतकीवने॥
कदंबमाला त्वं देवी कदंबकाननेऽपि च।
राजलक्ष्मी राजगेहे गृहलक्ष्मीगृहे गृहे॥
इत्युक्त्वा देवताः सर्वा मुनयो मनवस्तथा।
रूरूदुर्नम्रवदनाः शुष्ककंठोष्ठ तालुकाः॥
इति लक्ष्मीस्तवं पुण्यं सर्वदेवैः कृतं शुभम्।
यः पठेत्प्रातरूत्थाय स वै सर्वं लभेद् ध्रुवम्॥
अभार्यो लभते भार्यां विनीतां सुसुतां सतीम्।
सुशीलां सुंदरीं रम्यामतिसुप्रियवादिनीम्॥
पुत्रपौत्रवतीं शुद्धां कुलजां कोमलां वराम्।
अपुत्रो लभते पुत्रं वैष्णवं चिरजीविनम्॥
परमैश्वर्ययुक्तं च विद्यावंतं यशस्विनम्।
भ्रष्टराज्यो लभेद्राज्यं भ्रष्टश्रीर्लभते श्रियम्॥
हतबंधुर्लभेद्बंधुं धनभ्रष्टो धनं लभेत्।
कीर्तिहीनो लभेत्कीर्तिं प्रतिष्ठां च लभेद् ध्रुवम्॥
सर्वमंगलदं स्तोत्रं शोकसंतापनाशनम्।
हर्षानंदकरं शश्वद्धर्मं मोक्षसुहृत्प्रदम्॥
॥ इति श्रीदेवकृत लक्ष्मीस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

ऋणमोचक मंगल स्तोत्र

श्रीगणेशाय नमः

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।

स्थिरासनो महाकयः सर्वकर्मविरोधकः ॥१॥

लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।

धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः॥२॥

अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।

व्रुष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः॥३॥

एतानि कुजनामनि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।

ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्॥४॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।

कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥५॥

स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत्पठनीयं सदा नृभिः।

न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित्॥६॥

अङ्गारक महाभाग भगवन्भक्तवत्सल।

त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय॥७॥

ऋणरोगादिदारिद्रयं ये चान्ये ह्यपमृत्यवः।

भयक्लेशमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥८॥

अतिवक्त्र दुराराध्य भोगमुक्त जितात्मनः।

तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुश्टो हरसि तत्ख्शणात्॥९॥

विरिंचिशक्रविष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा।

तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः॥१०॥

पुत्रान्देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः।

ऋणदारिद्रयदुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः॥११॥

एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरासुतम्।

महतिं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा॥१२॥

॥इति श्री ऋणमोचक मङ्गलस्तोत्रम् सम्पूर्नम्॥

॥ लक्ष्मी स्तुति-पाठ ॥

पद्मानने पद्मिनि पद्म-हस्ते पद्म-प्रिये पद्म-दलायताक्षि।

विश्वे-प्रिये विष्णु-मनोनुकूले, त्वत्-पाद-पद्मं मयि सन्निधत्स्व॥

पद्मानने पद्म-उरु, पद्माक्षी पद्म-सम्भवे।

त्वन्मा भजस्व पद्माक्षि, येन सौख्यं लभाम्यहम्॥

अश्व-दायि च गो-दायि, धनदायै महा-धने।

धनं मे जुषतां देवि, सर्व-कामांश्च देहि मे॥

पुत्र-पौत्र-धन-धान्यं, हस्त्यश्वादि-गवे रथम्।

प्रजानां भवति मातः, अयुष्मन्तं करोतु माम्॥

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।

धनमिन्द्रा वृहस्पतिर्वरुणो धनमश्नुते॥

वैनतेय सोमं पिब, सोमं पिबतु वृत्रहा।

सोमं धनस्य सोमिनो, मह्यं ददातु सोमिनि॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं, न लोभो नाशुभा मतीः।

भवन्ती कृत-पुण्यानां, भक्तानां श्री-सूक्तं जपेत्॥

विधिः-

उक्त महा-मन्त्र के तीन पाठ नित्य करे। 'पाठ' के बाद कमल के श्वेत फूल, तिल, मधु, घी, शक्कर, बेल-गूदा मिलाकर बेल की लकड़ी से नित्य १०८ बार हवन करे। ऐसा ६८ दिन करे। इससे मन-वाञ्छित धन प्राप्त होता है।

हवन-मन्त्रः- "ॐ श्रीं ह्रीं महा-लक्ष्म्यै सर्वाभीष्ट सिद्धिदायै स्वाहा।"

श्री लक्ष्मी चालीसा

॥ दोहा ॥

मातु लक्ष्मी करि कृप, करो हृदय में वास ॥

मनोकामना सिद्ध करि, पुरवहु मेरी आस ॥

॥सोरठा ॥

यही मोर अरदास,हाथ जोड विनती कंरु ।

सबविधि करौ सुवास, जय जननि जगदंबिका ॥

सिंधु सुता मैं सुमिरौं तोही ।

ज्ञान बुद्धि विद्या दो मोही ॥

तुम समान नहिं कोई उपकारी ।

सब विधि पुरवहु आस हमारी ॥

जय जय जगत जननि जगदम्बा ।

सबकी तुम ही हो अवलम्बा ॥

तुम ही हो घट घट की वासी ।

विनती यही हमारी खासी ॥

जगजननी जय सिंधु कुमारी ।

दीनन की तुम हो हितकारी ॥

विनवौं नित्य तुमहिं महारानी ।

कृपा करौ जग जननि भवानी ॥

केहि विधि स्तुति करौं तिहारी ।

सुधि लीजै अपराध बिसारी ॥

कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी ।

जगजननी विनती सुन मोरी ॥

ज्ञान बुद्धि जय सुख की दाता ।

संकट हरो हमारी माता ॥

क्षीरसिंधु जब विष्णु मथायो ।

चौदह रत्न सिंधु में पायो ॥

चौदह रत्न में तुम सुखदासी ।

सेवा कियो प्रभु बनि दासी ॥

जब जब जन्म जहां प्रभु लीन्हा ।

रुप बदल तहं सेवा कीन्हा ॥

स्वंय विष्णु जब नर तनु धारा ।

लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा ॥

तब तुम प्रगट जनकपुर माहीं ।

सेवा कियो हृदय पुलकाहीं ॥

अपनाया तोहि अन्तर्यामी ।

विश्व विदित त्रिभुवन की स्वामी ॥

तुम सम प्रबल शक्ति नहिं आनी ।

कहं तक महिमा कहौ बखानी ॥

मन क्रम वचन करै सेवकाई ।

मन इच्छित वांछित फल पाई ॥

तजि छल कपट और चतुराई ।

पूजहिं विविध भांति मन लाई ॥

और हाल मैं कहौं बुझाई ।

जो यह पाठ करै मन लाई ॥

ताको कोई कष्ट न होई ।

मन इच्छित पावै फल सोई ॥

त्राहि त्राहि जय दुःख निवारिणि ।

त्रिविध ताप भव बंधन हारिणि ॥

जो यह चालीसा पढै पढावै ।

ध्यान लगाकर सुनै सुनावै ॥

ताको कोई न रोग सतावै ।

पुत्र आदि धन सम्पति पावै ॥

पुत्रहीन अरु संपति हीना ।

अंध बधिर कोढी अति दीना ।

विप्र बोलाय कै पाठ करावै ।

शंका दिल में कभी न लावै ॥

पाठ करावै दिन चालीसा ।

ता पर कृपा करैं जो गौरीसा ॥

सुख सम्पति बहुत सी पावै ।

कमी नहीं काहू की आवै ॥

बारह मास करैं जो पूजा ।

तेहि सम धन्य और नहिं दूजा ॥

प्रतिदिन पाठ करै मन माहीं ।

उन सम कोई जग में कहुं नाही ॥

बहुविधि क्या मैं करौं बडाई ।

लेय परीक्षा ध्यान लगाई ॥

करि विश्वास करैं व्रत नेमा ।

होय सिद्ध उपजै उर प्रेमा ॥

जय जय जय लक्ष्मी भावानी ।

सब में व्यापित हो गुण खानी ॥

तुम्हरो तेज प्रबल जग माही ।

तुम सम कोउ दयालु कहुं नाहिं ॥

मोहि अनाथ की सुधि अब लीजै ।

संकट काटि भक्ति मोहि दीजै ॥

भूल चूक करि क्षमा हमारी ।

दर्शन दीजै दशा निहारी ॥

बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी ।

तुमहि अक्षत दुःख सहते भारी ॥

नहिं मोहिं ज्ञान बुद्धि है तन में ।

सब जानत हो अपने मन में ॥

रुप चतुर्भुज करके धारण ।

कष्ट मोर अब करहु निवारण ॥

केहि प्रकार मैं करौं बडाई ।

ज्ञान बुद्धि मोहि नहिं अधिकाई ॥

॥ दोहा ॥

त्राहि त्राहि दुख हारिणी,हरो वेगि सब त्रास।

जयति जयति जय लक्ष्मी, करो शत्रु का नाश ॥

रामदास धरि ध्यान नित, विनय करत कर जोर ।

मातु लक्ष्मी दास पर, करहु दया की कोर ॥

तुलसी और शालिग्राम विवाह की पौराणिक कथा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक कथा के अनुसार पूर्व जन्म में तुलसी का नाम वृंदा था, वृंदा का जन्म राक्षस कुल में हुआ था। वृंदा बचपन से ही भगवान विष्णु की भक्त थी। वृंदा पूर्ण विश्वास और निष्ठा से भगवान विष्णु की भक्ति में ही अपना समय व्यतित होता।

लेकिन एक बार वृंदा ने जंगल से गुजरते हुए उसे तपस्या करते हुए गणेश जी को देखा । गणेश जी के दिव्य रुप को देख वृंदा नें उनके सामने विवाह प्रस्ताव रखा। लेकिन गणेशजी ने वृंदा के प्रस्ताव से इनकार कर दिया।

इस पर क्रोधित होकर वृंदा गणेश जी को श्राप दे दिया और गणेश जी ने भी वृंदा पर क्रोध करते हुए उसका दैत्य के साथ विवाह होने का श्राप दे दिया। जिसके फलस्वरुप वृंदा का विवाह दैत्य राज जालंधर के साथ हुआ। वृंदा वृंदा बड़ी ही पतिव्रता थी सदा निष्ठा से अपने पति की सेवा किया करती थी और अपने पति के प्राणों की रक्षा के लिए विधि-विधान से इष्ट आराधना किया करती थी।

जब भी जालंधर किसी युद्ध के लिए जाता, तो वृंदा उसकी रक्षा के लिए और विजय की कामना से अपने इष्ट का पूजन करती। जिस कारण दैत्य जालंधर सभी जगह युद्ध में विजयी रहता था।

एक बार देवता और दानव में युद्ध हुआ, जलंधर के युद्ध पर जाते समय वृंदा ने कहा स्वामी आप युद्ध पर जा रहे हैं, लेकिन आप जब तक युद्ध भूमि से आप वापस नहीं आ जाते में आपकी रक्षा एवं विजय प्राप्ति हेतु पूर्ण भक्ति-भाव से इष्ट आराधना करुंगी।

जलंधर युद्ध में चला गया और वृंदा संकल्प ले कर इष्ट आराधना करने लगी। जिससे देवता भी जलंधर को हराने में असमर्थ हो रहे थे, पतिव्रता स्त्री की आराधना के प्राभाव को देख देवता भी चिंतित हो गये और भगवान विष्णु की शरण में गये और इसका समाधान पूछा सबकी प्रार्थना की तो विष्णुजी कहने लगे वृंदा मेरी परम भक्त है, में उसकी आराधना में विध्न नहीं डाल सकता। इस पर सभी देवगणों ने पुनः अनुरोध करते हुए कहां भगवान ! दूसरा और कोई उपाय भी तो नहीं है, अतः कृप्या आप ही हमारी मदद कर सकते है। इस पर विष्णुजी ने वृंदा की आराधना में विध्न उत्पन्न करने का उपाय निकाला।

जब जालंधर युद्ध पर था और वृंदा इष्ट आराधना में तल्लीन थी तब विष्णुजी जालंधर का वेश धारण कर वृंदा के पास गये । वृंदा ने अपने पति स्वरुप में आये विष्णुजी को देख अपनी इष्ट आराधना पूर्ण कर उनकी सेवा में लग गई। दूसरी और युद्ध में जालंधर की शक्ति क्षीण होने लगी तो, देवताओ ने जलंधर का सिर काट कर उसे मार दिया। जलंधर का कटा सिर उसी के महल में आकर गिरा, जिसे देख वृंदा चौंक गयी और उसके मन में प्रश्न हुवा मेरे पति का सिर तो यहां कटकर पडा है, तो फिर ये मेरे सामने कौन खड़े है? वृंदाने पूछा आप कौन हो जिसकी मेने पति के स्वरुप में सेवा की हैं, उसके प्रश्न के उत्तर में भगवान विष्णु ने अपने स्वरुप में दर्शन दिए। वृंदा अपने साथ हुए छल की सारी बात समझ गई, वृंदा ने क्रोधित होकर भगवान को श्राप दे दिया, आप पत्थर स्वरुप हो जाओ और अपनी पत्नी का वियोग सहो, जिससे भगवान विष्णु तत्क्षण पत्थर (शालिग्राम) के हो गये।

यह देख कर देवलोक में हाहाकार मच गया, मातालक्ष्मी जी यह देख रोने लगीं और वृंदा से प्रार्थना करने लगी। माता लक्ष्मी और देवताओ की विनती पर वृंदा ने भगवान को वापस वैसा ही कर दिया और अपने पति का सिर लेकर वे सती हो गयीं।

उसकी राख से एक पौधा उत्पन्न हुआ तब भगवान विष्णु ने इस पौधे का नाम तुलसी रखा।फिर भगवान

बोलें, वृंदा के श्राप स्वरूप पत्थर (शालिग्राम) का विवाह तुलसी के साथ हर साल कार्तिक मास में देव उठनी एकादशी को होगा। मेरे शालिग्राम स्वरुप के साथ तुलसी का पूजन भी समान रुप से होगा। तुलसी विष्णु प्रिय रहेगी । बिना तुलसी मेरी पूजा अपूर्ण होगी।

तभी से हर वर्ष देव उठनी एकादशी को तुलसी और भगवान विष्णु स्वरुप शालिग्राम का विवाह किया जाता है ।

अन्य कथा

हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी अर्थात देवोत्थानी या देवउठनी एकादशी का पर्व मनाया जाता है। हिंदू धर्म की परंपरा के अनुसार इस दिन तुलसी और शालिग्राम का विवाह किया जाता है। शालिग्राम को साक्षात भगवान विष्णु का ही स्वरुप माना जाता है।

पौराणिक की कथा के अनुसार तुलसी और शालिग्राम के विवाह का उल्लेख मिलता हैं जो इस प्रकार है। एक समय में दैत्यों के राजा दंभ हुवा, जो भगवान विष्णु का परम भक्त था। विवाह के बहुत समय बाद भी उसके यहां पुत्र नहीं हुआ, दंभ ने दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य को अपना गुरु बनाकर, उनसे पुत्र प्राप्ति की इच्छा व्यक्त कर उनसे इसका उपाय पुछा। शुक्राचार्य ने उसे पुत्र की कामना हेतु श्रीकृष्ण की विधि-वत आराधना करने का सुझाव दिया। पुत्र प्राप्ति की कामना से दंभ श्रीकृष्ण की आराधना के लिए पुष्कर में जाकर घोर तप करने लगा। दंभ की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु प्रकट हुए और वर मांगने के लिए कहा, तो उसने पुत्र प्राप्ति की कामना व्यक्ति और भगवान ने उसे पुत्र होने का वरदान दिया।

भगवान विष्णु के आशिर्वाद से दंभ के यहां पुत्र संतान का जन्म हुआ। जिसका नाम शंखचूड़ रखा गया, शंखचूड़ ने बड़े होकर पुष्कर जाकर ब्रह्माजी को प्रसन्न करने के लिए घोर तप किया। शंखचूड़ की तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी प्रकट हुए और वर मांगने को कहा। शंखचूड़ ने वरदान में मांगा कि मैं देवताओं के लिए अजेय हो जाऊं। ब्रह्माजी ने उसे वरदान देकर कहा तुम बदरीवन जाकर, वहां धर्मध्वज की पुत्री तुलसी है, तुम उसके साथ विवाह कर लो।

ब्रह्माजी के कहने पर शंखचूड़ बदरीवन गया। बदरीवन में तपस्या कर रही तुलसी को देखकर शंखचूड़ उसकी और आकर्षित हो गया। तब ब्रह्माजी ने वहां प्रकट होकर उन्होंने दोनों को गंधर्व विवाह करने के लिए कहा। दोनों ने ऐसा ही किया। फिर शंखचूड़ व तुलसी सुख पूर्वक रहने लगे। ब्रह्माजी का वरदान था कि देवता भी शंखचूड़ को हरा नहीं पाएंगे। उसने अपने बल से तीनों लोक पर विजय प्राप्त कर ली।

शंखचूड़ सदैव भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति करता था। देवता के हाथ से स्वर्ग की सत्त निकल जाने पर सब ब्रह्माजी को साथ लेकर भगवान विष्णु के पास गए। भगवान विष्णु ने कहां शंखचूड़ की मृत्यु भगवान शिव के त्रिशूल से होगी। यह जानकर सभी देवता भगवान शिव के सामने अपना सुझाव लेकर गये। भगवान शिव ने अपने एक गण को दूत बनाकर शंखचूड़ के पास भेजा।

शिवजी के आदेश से शिवगण ने शंखचूड़ को समझाया कि वह देवताओं को उनका राज्य वापस लौटा दे। लेकिन शंखचूड़ ने कहा कि मैं बिना युद्ध के देवताओं को राज्य नहीं लौटाऊंगा। इस अपर भगवान शिव अपनी सेना लेकर शंखचूड़ से युद्ध के लिए निकल पड़े। जिससे देवता व दानवों में युद्ध होने लगा। वरदान के कारण का युद्ध सैकड़ों सालों तक चलता रहा।

अंत में भगवान शिव ने शंखचूड़ का वध करने के लिए अपना त्रिशूल उठाया ही था कि तभी आकाशवाणी हुई जब तक शंखचूड़ के पास में श्रीविष्णु का कवच है और इसकी पत्नी युद्ध के दौरान अविरत आराधना में लगी रहती थी। है, तब तक इसका वध संभव नहीं होगा।

आकाशवाणी सुनकर भगवान विष्णु वृद्ध ब्राह्मण का रूप धारण कर शंखचूड़ के पास जाकर उस्से श्रीविष्णु कवच को दान में मांग लिया। शंखचूड़ ने वह कवच को दान कर दिया। कवच लेकर भगवान विष्णु शंखचूड़ का स्वरूप बनाकर उसकी तुलसी के पास गए।

भगवान विष्णु ने तुलसी को विजयी होने की सूचना दी। जिसे सुनकर तुलसी ने अपनी आराधना संपन्न करली, और प्रसन्नता से पति रूप में आए भगवान विष्णु का पूजन कर उनकी सेवा करने लगी। जिसके फलस्वरुप तुलसी के पूजन में भंग हो गया, और शिवजी ने युद्ध में त्रिशूल से शंखचूड़ का वध कर दिया। तुलसी को कुछ समय पश्चात तुलसी को संदेह हुआ कि यह मेरे स्वामी शंखचूड़ नहीं है, तब भगवान भगवान विष्णु ने अपने मूल स्वरूप उपस्थित हुए। शंखचूड़ की पत्नी उसके साथ छल हुआ ज्ञात होते ही रोने लगी। तुलसी ने कहा आपने छलपूर्वक मेरी इष्ट आराधना में विघ्न उत्पन्न किया है और मेरे स्वामी को मार दिया। मेरे श्राप से अब आप पत्थर होकर पृथ्वी पर रहेंगे।

तब भगवान विष्णु ने कहा देवी, तुम बहुत तपस्या कर चुकी हो। अब तुम इस शरीर का त्याग दों, और दिव्य देह धारणकर मेरे साथ आन्नद पूर्वक रहो। तुम्हारा यह शरीर नदी रूप में बदल जायेगा और तुम गंडकी नामक नदी के रूप में प्रसिद्ध प्राप्त होगी। तुम पुष्पों में श्रेष्ठ तुलसी बन जाओगी और सदा मेरी प्रिय होकर मेरे साथ रहोगी। तुम्हारे श्राप को सत्य करने के लिए मैं पत्थर (शालिग्राम) बनकर पृथ्वी रहूंगा। गंडकी नदी के तट पर मेरा वास होगा। और नदी में रहने वाले असंख्य कीड़े पत्थर में मेरे चक्र चिह्न का निर्माण करेंगे। शायद तब से तुलसी व शालिग्राम के विवाह की परंपरा रही हो!

***

तुलसी सेवन करें लेकिन सावधानी के साथ !

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू धर्म में तुलसी के पौधे को पवित्र माना जाता है। माना जाता है कि जिस घर के आंगन में तुलसी का पौधा लगा होता हैं उस घर से कलह और दरिद्रता दूर होजाते हैं। धर्मग्रंथों में तुलसी को हरि प्रिया कहा गया हैं। पुराणों में भी भगवान विष्णु और तुलसी के विवाह का वर्णन मिलता हैं।

आयुर्वेद शास्त्र के अनुशार तुलसी को संजीवनी बूटी भी कहा जाता है। क्योकि तुलसी के पौधे में अनेको औषधीय गुण पाये जाते हैं। तुलसी का सेवन कफ द्वारा पैदा होने वाले रोगों से बचाने वाला और शरीर कि रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाला माना गया हैं। इसलिए तुलसी के पत्तों का सेवन करना लाभकारी होता हैं।



हमारे शास्त्रों में तुलसी के पत्तों का उचित तरीके से सेवन करने का वर्णन किया गया हैं। जिसका पालन न करने पर यही तुलसी के पत्ते का सेवन हानिकारक भी हो सकते हैं।

तुलसी सेवन का शास्त्रोक्त तरीका हैं कि जब भी तुलसी के पत्ते मुंह में रखें, उन्हें दांतों से न चबाकर सीधे ही निगल लेने चाहिये।

इसका विज्ञान कारण हैं, कि तुलसी के पत्तों में पारा (धातु) के अंश होते हैं। जिस कारण तुलसी चबाने पर बाहर निकलकर दांतों कि सुरक्षा परत को नुकसान पहुंचाते हैं। जिससे दंत और मुख रोग होने का खतरा बढ़ जाता है।

यदि तुलसी के पत्ते चबाकर खाने कि आत्याधिक आवश्यकता होतो, तुलसी सेवन के पश्चयात तुरंत कुल्ला कर लें। क्योकि इसका अम्ल दांतों के एनेमल को खराब कर देता हैं।

इसलिए ध्यान रहे कि विष्णुप्रिया की आराधना कर धर्म लाभ तो पाएं लेकिन उसका सेवन सावधानी से कर स्वास्थ्य लाभ भी पाएं।

तुलसी के प्रकार:

तुलसी दो तरह की होती है। काली तुलसी व कपूर तुलसी (बेल तुलसी)

तुलसी सेवन के लाभ

- तुलसी भोजन को शुद्ध करने वाला माना जाता हैं, इसी कारण ग्रहण लगने के पूर्व भोजन में डाला जाता हैं जिससे सूर्य या चंद्र कि विकृत किरणों का कुप्रभाव भोजन पर न पडे।
- तुलसी के पत्तो को मृत व्यक्ति के मुख में डाला जाता हैं, धार्मिक मत के अनुसार उस व्यक्ति को मोक्ष कि प्राप्ति होती हैं।
- तुलसी रक्त कि कमी के लिए रामबाण हैं। तुलसी के नियमित सेवन से हीमोग्लोबीन तेजी से बढ़ता हैं, शारीर कि स्फूर्ति बनी रहती हैं।
- तुलसी के सेवन से अस्थि भंग(टूटी हड्डियां) शीघ्रता से जुड़ जाती हैं।
- गृह निर्माण के समय नींव में घड़े में हल्दी से रंगे कपड़े में तुलसी कि जड़ रखने से भवन पर बिजली गिरने का डर नहीं होता।
- तुलसी कि सेवा करने वाले व्यक्ति को कभी चर्म रोग नहीं, चर्म रोग हैं तो उसमें सुधार होता हैं।

उपयोग में सावधानी बरतें-

- तुलसी कि प्रकृति गर्म हैं, शरीर से गर्मी निकालने के लिये। तुलसी को दही या छाछ के साथ सेवन करने से, उष्ण गुण हल्के हो जाते हैं।

- तुलसी संध्या एवं रात्री में नहीं तोड़ें, एका करने से शरीर में विकार उत्पन्न होते हैं। क्योकि अंधेरे में तुलसी से उठने वाली विद्युत तरंगे तीव्र हो जाती हैं।
- तुलसी के सेवन के बाद दूध पीने से चर्म रोग होता हैं।
- तुलसी के साथ दूध, नमक, प्याज, लहसुन, मूली, मांसाहार, खट्टे पदार्थ सेवन करना हानिकारक होता हैं।
- तुलसी के पत्ते दांतो से चबाकर ना खायें, अगर खायें हैं तो तुरंत कुल्लाकर लें। कारण इसका अम्ल दांतों के एनेमल को खराब कर देता है।



तुलसी सेवन का तरीका

- तुलसी के प्रातः खाली पेट सेवन से अत्याधिक लाभ प्राप्त होता है।
- तुलसी के पत्तों को या किसी भी अंग को सुखाना हो तो केवल छाया में सुखाएं। धुप में सुखाने से तुलसी के गुणों में कमी आती हैं।
- तुलसी के फायदे को देखते हुए एक साथ अधिक मात्रा में सेवन करना हानिकारक होता हैं।

अन्य लाभ

- तुलसी की माला धारण करने वाले व्यक्ति को टांसिल में लाभ होता।
- स्त्री रोग- मासिक धर्म, श्वेत प्रदर यदि मासिक धर्म ठीक से नहीं आता तो एक ग्लास पानी में तुलसी बीज को उबाले, आधा रह जाए तो इस काढ़े को पी जाएं, मासिक धर्म खुलकर होगा।
- मासिक धर्म के दौरान यदि कमर में दर्द भी हो रहा हो तो एक चम्मच तुलसी का रस सेवन करें।
- तुलसी का रस 10 ग्राम चावल के उबले पानी के साथ सात दिन पीने से प्रदर रोग ठीक होगा। इस दौरान दूध भात ही सेवन करें।
- तुलसी के बीज पानी में रातभर भिगो दें। सुबह मसलकर छानकर मिश्री के मिलाकर सेवन करें, प्रदर रोग ठीक होता हैं।
- तुलसी के रस में शहद मिलाकर नियमित कुछ दिनों तक सेवन करने से स्मरण शक्ति बढ़ती हैं।
- तुलसी के पत्तों का दो तीन चम्मच रस प्रातःकाल खाली पेट सेवन करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।
- तुलसी कि पिसी पत्तियों में एक चम्मच शहद मिलाकर नित्य एक बार सेवन कर ने से शरीर निरोगी रहता हैं, चहरे पर चमक आती हैं।पानी में तुलसी के पत्ते डालकर भिगोकर रखने से एवं यह पानीका सेवन करने से यह टॉनिक का काम करता हैं।

दीपावली पर करे सर्व कार्य सिद्धि के 6 अचूक उपाय

कार्य सिद्धि के 225 सरल उपाय से ✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

मंत्र सिद्ध वास्तु कलश



- वास्तु कलश एक दिव्य प्रतीक माना जाता है।
- वास्तु कलश का प्रयोग वास्तु दोष निवारण के लिए किया जाता है, यह सभी प्रकार के वास्तु दोषों को दूर करता है।
- यह विशेष रूप से घर, व्यवसायीक प्रतिष्ठान और उद्योग में वास्तु शांति के लिए प्रयोग किया जाता है।
- यदि आप जिस घर में रहते हैं, वह आपके दुर्भाग्य का कारण बन जाता है, बीमार स्वास्थ्य, निर्धनता या आपको व्यवसाय में नुकसान होता हैं, तो वास्तु शास्त्र के अनुसार घर में कोई वास्तु दोष होता है।
- इस समस्या से छुटकारा पाने का बहुत ही सरल और प्रभावी तरीका है अपने फ्लैट, घर, अपार्टमेंट, दुकान, कार्यालय और उद्योग में वास्तु कलश को स्थापित करना।
- मंत्र सिद्ध वास्तु कलश का प्रयोग घर या किसी भी प्रकार की भूमि / संपत्ति के सभी वास्तु दोषों के निवारण के लिए किया जाता है।
- यदि भूमि में कुछ दोष हो, यदि दिशाएँ दोषपूर्ण हो, ईशान जैसे कुछ कोण उनके सही स्थान पर न हो, अव्यवस्थित हो और कुछ अतिरिक्त बड़े हो, वास्तु की दृष्टि से ये सब दोष का कारण हो सकते है।
- अधिक तोड़-फोड़ के बिना इन दोषों को दूर करने के लिए, यह "मंत्र सिद्ध वास्तु कलश" सर्वश्रेष्ठ समाधान है
- कुल मिलाकर समृद्धि बढ़ाने के लिए वास्तु कलश सर्वश्रेष्ठ है।

कालसर्प योग एक कष्टदायक योग !

काल का मतलब है मृत्यु । ज्योतिष के जानकारों के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अशुभकारी कालसर्प योग मे हुवा हो वह व्यक्ति जीवन भर मृत्यु के समान कष्ट भोगने वाला होता है, व्यक्ति जीवन भर कोइ ना कोइ समस्या से ग्रस्त होकर अशांत चित होता है।

कालसर्प योग अशुभ एवं पीड़ादायक होने पर व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दुःखदायी बना देता है।

कालसर्प योग मतलब क्या?

जब जन्म कुंडली में सारे ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित रहते हैं तो उससे ज्योतिष विद्या के जानकार उसे कालसर्प योग कहा जाता है।

कालसर्प योग किस प्रकार बनता है और क्यों बनता हैं?

जब 7 ग्रह राहु और केतु के मध्य मे स्थित हो यह अच्छि स्थिति नहि है। राहु और केतु के मध्य मे बाकी सब ग्रह आजाने से राहु केतु अन्य शुभ ग्रहों के प्रभावों को क्षीण कर देते हों!, तो अशुभ कालसर्प योग बनता है, क्योकि ज्योतिष मे राहु को सर्प(साप) का मुह(मुख) एवं केतु को पूंछ कहा जाता है।

कालसर्प योग का प्रभाव क्य होता है?

जिस प्रकार किसी व्यक्ति को साप काट ले तो वह व्यक्ति शांति से नही बेठ सकता वेसे ही कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन पर्यन्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी का सामना करना पडता है। विवाह विलम्ब से होता है एवं विवाह के पश्च्यात संतान से संबंधी कष्ट जेसे उसे संतान होती ही नहीं या होती है तो रोग ग्रस्त होती है। उसे जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव रहता है। जातक को कालसर्प योग के कारण सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ताअ है। उसकी रोजी-रोटी का जुगाड़ भी बड़ी मुश्किल से हो पाता है। अगर जुगाड़ होजाये तो लम्बे समय तक टिकती नही है। बार-बार व्यवसाय या नौकरी मे बदलाव आते रेहते है। धनाढय घर में पैदा होने के बावजूद किसी न किसी वजह से उसे अप्रत्याशित रूप से आर्थिक क्षति होती रहती है। तरह-तरह की परेशानी से घिरे रहते हैं। एक समस्या खतम होते ही दूसरी पाव पसारे खडी होजाती है। कालसर्प योग से व्यक्ति को चैन नही मिलता उसके कार्य बनते ही नही और बन जाये आधे मे रुक जाते है। व्यक्ति के 99% हो चुका कार्य भी आखरी पलो मे अकस्मात ही रुक जात है।

परंतु यह ध्यान रहे, कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नही पड़ता। क्योकि किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां स्थित हैं और दृष्टि कर रहे है उस्का प्रभाव बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका जानकार या कुशल ज्योतिषी से ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए। उपाय से कालसर्प योग के कुप्रभावो को कम किया जा सकता है।

यदि आपकी जन्म कुंडली मे भी अशुभ कालसर्प योग का बन रहा हो और आप उसके अशुभ प्रभावों से परेशान हो, तो कालसर्प योग के अशुभ प्राभावों को शांत करने के लिये विशेष अनुभूत उपायों को अपना कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाए।

***

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

विद्या प्राप्ति हेतु सरस्वती कवच और यंत्र



आज के आधुनिक युग में शिक्षा प्राप्ति जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। हिन्दू धर्म में विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती को माना जाता हैं। इस लिए देवी सरस्वती की पूजा-अर्चना से कृपा प्राप्त करने से बुद्धि कुशाग्र एवं तीव्र होती है।

आज के सुविकसित समाज में चारों ओर बदलते परिवेश एवं आधुनिकता की दौड में नये-नये खोज एवं संशोधन के आधारो पर बच्चो के बौधिक स्तर पर अच्छे विकास हेतु विभिन्न परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धाएं होती रहती हैं, जिस में बच्चे का बुद्धिमान होना अति आवश्यक हो जाता हैं। अन्यथा बच्चा परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धा में पीछड जाता हैं, जिससे आजके पढेलिखे आधुनिक बुद्धि से सुसंपन्न लोग बच्चे को मूर्ख अथवा बुद्धिहीन या अल्पबुद्धि समझते हैं। एसे बच्चो को हीन भावना से देखने लोगो को हमने देखा हैं, आपने भी कई सैकडो बार अवश्य देखा होगा?

ऐसे बच्चो की बुद्धि को कुशाग्र एवं तीव्र हो, बच्चो की बौद्धिक क्षमता और स्मरण शक्ति का विकास हो इस लिए सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक हो सकता हैं।

सरस्वती कवच को देवी सरस्वती के परंम दूर्लभ तेजस्वी मंत्रो द्वारा पूर्ण मंत्रसिद्ध और पूर्ण चैतन्ययुक्त किया जाता हैं। जिस्से जो बच्चे मंत्र जप अथवा पूजा-अर्चना नहीं कर सकते वह विशेष लाभ प्राप्त कर सके और जो बच्चे पूजा-अर्चना करते हैं, उन्हें देवी सरस्वती की कृपा शीघ्र प्राप्त हो इस लिये सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक होता हैं।

सरस्वती कवच और यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

सर्व कार्य सिद्धि कवच



जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

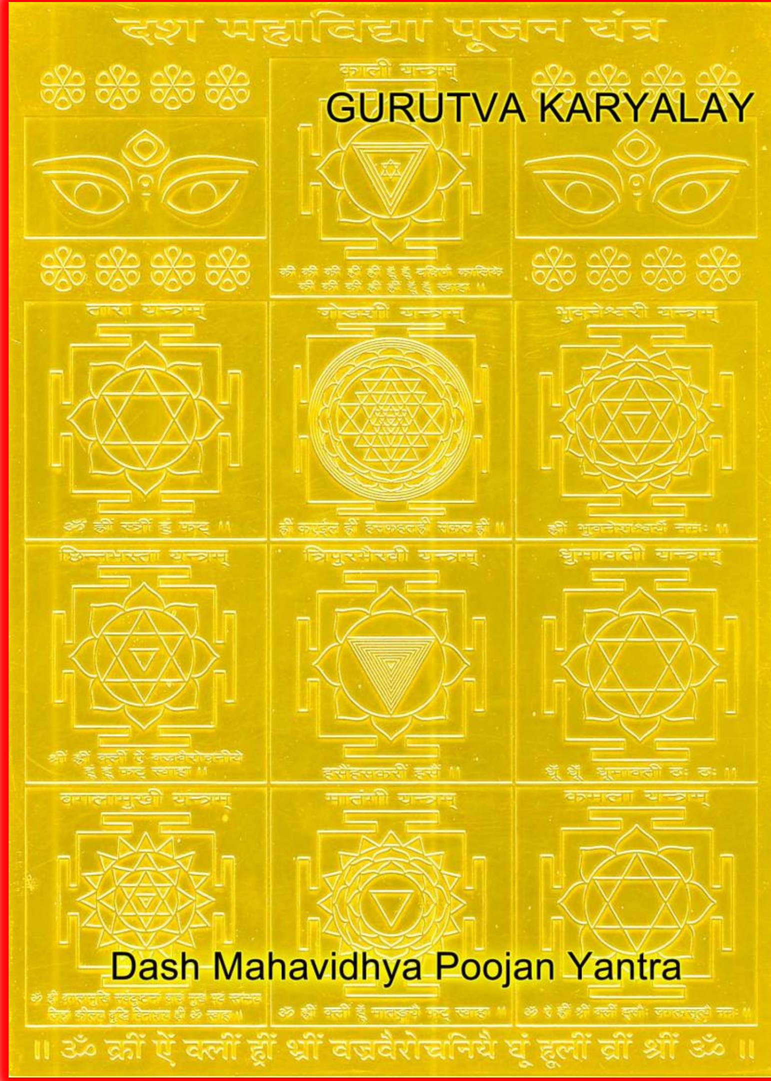
श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : लक्ष्मी गणेश यंत्र | गणेश यंत्र | गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | गणेश सिद्ध यंत्र | एकाक्षर गणपति यंत्र | हरिद्रा गणेश यंत्र भी उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं।

दस महाविद्या पूजन यंत्र



दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्ति संपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इसलिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

आर्थिक लाभ एवं सुख समृद्धि हेतु 19 दुर्लभ लक्ष्मी यंत्र >> Shop Online | Order Now

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र > Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY :Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इसलिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र-** 8200/-

>> **Shop Online** | **Order Now**

(नोटः इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

>> Shop Online | Order Now

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित 22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

पुरुषाकार शनि यंत्र

पुरुषाकार शनि यंत्र (स्टील में) को तीव्र प्रभावशाली बनाने हेतु शनि की कारक धातु शुद्ध स्टील(लोहे) में बनाया गया हैं। जिस के प्रभाव से साधक को तत्काल लाभ प्राप्त होता हैं। यदि जन्म कुंडली में शनि प्रतिकूल होने पर व्यक्ति को अनेक कार्यों में असफलता प्राप्त होती है, कभी व्यवसाय में घटा, नौकरी में परेशानी, वाहन दुर्घटना, गृह क्लेश आदि परेशानीयां बढ़ती जाती है ऐसी स्थितियों में प्राणप्रतिष्ठित ग्रह पीड़ा निवारक शनि यंत्र की अपने को व्यपार स्थान या घर में स्थापना करने से अनेक लाभ मिलते हैं। यदि शनि की ढ़ैया या साढ़ेसाती का समय हो तो इसे अवश्य पूजना चाहिए। शनियंत्र के पूजन मात्र से व्यक्ति को मृत्यु, कर्ज, कोर्टकेश, जोडो का दर्द, बात रोग तथा लम्बे समय के सभी प्रकार के रोग से परेशान व्यक्ति के लिये शनि यंत्र अधिक लाभकारी होगा। नौकरी पेशा आदि के लोगों को पदौन्नति भी शनि द्वारा ही मिलती है अतः यह यंत्र अति उपयोगी यंत्र है जिसके द्वारा शीघ्र ही लाभ पाया जा सकता है।

मूल्य: 1370 से 15400 >> Shop Online | Order Now

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित

22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

शनि तैतिसा यंत्र

शनिग्रह से संबंधित पीडा के निवारण हेतु विशेष लाभकारी यंत्र।

मूल्य: 730 से 15400 >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र



शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं।

Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> **Shop Online | Order Now**

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 370 से 15400 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 370 से 15400 तक

विभिन्न देवताओं के यंत्र

गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र

मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रह्माण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	595	1" X 1"	460	1" X 1"	370
2" X 2"	955	2" X 2"	820	2" X 2"	595
3" X 3"	1630	3" X 3"	1360	3" X 3"	1000
4" X 4"	2710	4" X 4"	2350	4" X 4"	1360
6" X 6"	4150	6" X 6"	3700	6" X 6"	2800
9" X 9"	9550	9" X 9"	8200	9" X 9"	4600
12" X12"	15400	12" X12"	12700	12" X12"	10000

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	Diamond (Special)	Green Emerald (Special)	Naturel Pearl (Special)	Ruby (Old Berma) (Special)	Green Emerald (Special)
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	Red Coral (Special)	Y.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	Y.Sapphire (Special)
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्र: 2800 >>Order Now

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 1000 से Rs. 15400 तक उप्लब्द्ध >> **Shop Online**

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रुत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)



घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्‍भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2800 से Rs. 15400 तक उप्लब्द्ध**

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रह्मांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रह्मांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है | अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach ………………………………….	12900	अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach ………………………………...	2800
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach …………………….	12700	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach ………………………………...	2800
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach ……………………………….	7300	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach ……………………………	2800
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach …………………………………….	2800
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach …………………...	7300	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach …………………………………….	2800
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach …………………………….	7300	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach ……………………………….	2800
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach ……………………………….	7300	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach ……………………………………….	2800
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach …………………………….	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach …………………………………….	2800
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach …………………………….	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach ……………	2800
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach …………………………….	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach ……………………………………….	2800
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach …………………….	5500	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach …………………………………...	2800
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach ………………………………..	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach ……………………………….	2800
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach ……………	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach …………………………………….	2800
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach ……………………………………….	3250	कैलाश धन रक्षा कवच Kailash Dhan Raksha Kawach…………………………….	2800
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach ……….....	2800	शनि साड़ेसाती और ढ़ैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach …..	2350
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach ……………………………………….	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach …………………………	2350
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach ………………………………..	2800	श्रापित दोष निवारण कवच Pitru Dosh Yog Nivaran Kawach…………………………	2350

विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach ……..……………………	2350	ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach ……..………………………	1450
सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach ……..……………………	1900	शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach ………………………………..	1250
सिद्धि विनायक गणपति कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach ……..……………..	1900	विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach ………………………..	1250
सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach ……..………………	1900	स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach ……..…………………………	1250
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach ……..……………………	1900	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach ……..……………..	1250
वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach ……..……………………..	1900	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1250
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach ……..…………………………	1900	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) ……………..	1090
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach ……..………………	1900	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) ……………	1450
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach ……..………………..	1900	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..………………...…...	1090
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) …………	1900	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..……………...…………	1090
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach ……..……………………..	1450	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ………………………………	1090
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach ……..……………..	1450	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ……..………………………...	1090
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach ……..……………	1450	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ……………………………...	1090
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach ……..……………………..	1450	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach …………………………...	1090
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach ……..………………………	1450	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ……………………...	1090
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach ……..……………………	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………....	1000
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach ……..………………..	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ………………………………	1000
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach ……..……………………..	1450	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	1000
कामदेव कवच Kamdev Kawach ……..……………………………	1450	मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach ……………………	1000
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach ……..…………………………..	1450	वाणी पृष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach ………………………	1000
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach ……..………………………	1450	कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach ………………………………	1000

विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach ……………………………….	1000	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach …………………………………..	1000
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach ……………………………….	1000	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach ………………………………...	1000
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach …………………………….	1000	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach ……………………………...	910
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja) ………………………	1000	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach ……………………………….	910
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach ……………………………….	1000	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah …………………………	910
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach ……………………………..….	1000	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah ……………………………………	910
सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach …………………………….	1000	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak …………………………………….	820
सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach ……………………………….	1000		





उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and www.gurutvajyotish.com

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire **Bangkok**	**(बैंकोक** पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजवंत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : **Bangkok** (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 370 to 15400 and Above…..

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका

नवम्बर-2020

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।

जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 9338213418, 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com



GURUTVA JYOTISH

Monthly

Nov-2020

